

## প্রথম ও দিতীয় শাখা।

अथम भए।

শ্রীসতীশচন্দ্র রায় এম্, এ, কর্তৃক

সম্পাদিত।

ইপ্রিয়ান পাব্লিকেশন্ সোসাইটি অর্থাং ভারত-প্রস্থ-প্রচার-সমিতি কর্তৃক প্রকাশিত।

## কলিকাতা।

১৭নং মদন মিত্রের লেন, "বেঙ্গল প্রেদে" জীগভাপতক বোব-বারা মৃত্রিত।

# সূচীপত্র।

## প্রথম শাখা।

### अथर्न नहिंद

| বিবর।                         |  |                    |               | পৃষ্ঠান্ক। |
|-------------------------------|--|--------------------|---------------|------------|
| মক্কাচরণ                      |  |                    |               | 255 50     |
| <b>্লোক</b> শ <sup>্ৰ</sup> হ | N  | i e                | · Septe       | 815 (3°    |
| শ্ৰী <b>ওক</b> -বন্দৰা        |  | .a <sup>35</sup> - | · ••• * :     | 100 101    |
| ত্রীরোক-বন্দনা                | . Y  | Sec. 3 5           |               | the open   |
| শীৰিত্যানন্দ-বন্দনা           |  |                    | 444           | 44 AD 1    |
| স্থাগণ সহ গৌররূপী             | Name of the last o |                    |               |            |
| শ্ৰীকৃঞ্জের বন্দনা            |  |                    | Sec. Walter 5 |            |
| व्यदेक्ट-वस्त्रना             | 49 NO  |                    | and the same  | 55 5 G     |
| নিজ্যানৰ ও অবৈতাদিং           | व व म  | 7995               | sca.i e       | TO THE     |
| অক্সান্ত ভক্তগণের বন্দন       | 1  | • • • •            | ,*& S *       | 518498     |
| নরোভ্য-বন্দনা                 |  | · 31 6.            | 1. N. 1. W    | 71 TE      |
| ্বিশ্বাপতি-বন্দনা             | •••  | ···                | ******        | 505 Fa.    |
| <b>ब्रिक्ट्सना</b> करता व     | P  | 98 7 58            | <b>F3</b> 7   | . 50.      |
| क्रीवाधा, - न                 |  | •••                |               | 40. 32 E   |
|                               | ভীনাসের ব  | नन ः               |               | - 1530     |

| বিষয়।                           |            | <           |                   | शृष्ठीक । |
|----------------------------------|------------|-------------|-------------------|-----------|
| ণারিষদগণ সহ <b>শ্রী</b> গুৌর     | 103 37     | 16          | ·                 | >8        |
| গ্ৰীকৃষ্ণ-বন্দনা                 | 3),        | CON         |                   | >>        |
| রাধা-বন্দনা                      |            | >           |                   | २०        |
| ক্বীর্ত্তনের অধিবাদ              | 16:12      | 16.68       |                   | २२        |
|                                  | পূৰ্বর     | 111-1       |                   |           |
| erin.<br>Lauti                   | দ্বিতীয়   | পল্লব।      |                   | 66        |
| পূর্ব্বরাগ,—গৌরচ <del>স্</del> র |            |             |                   | **        |
| খ্রীরাধার পূর্বরাগ,—             | স্থীগণের   | পরস্পর উবি  | ₹                 | ₹1:*,     |
| স্থীর প্রতি শ্রীরাধার            |            |             |                   | <b>25</b> |
| সধীর প্রতি শ্রীরাধার             | সাকাৎ দৰ্শ | নোক্তি      | 44.55             | 10 mg -   |
| লাশসা,—গৌর <del>চন্ত্র</del>     |            |             | 5 947 - W         |           |
| দথীকৰ্ত্বক শ্ৰীকৃষ্ণের বি        | नक है जी त | ধার         | 多合物:              | es gris . |
| লালসোহেগ-বর্ণ                    | ۹          | ;           | 477. <b>1</b> 497 | ₹ ± "     |
| সৰীকৰ্তৃক শ্ৰীক্ষণ্ডের বি        | নকট শ্রীরা | ধার জাগরণ   | -বর্ণন ः          | - 166°    |
| সগ্নীর প্রতি শ্রীক্লঞ্চের        | কৃত্রিম ঔদ | াদীক        | (53 <b>.7</b> e   |           |
| শ্রীদ্বাধার শেষ দশা              |            |             | ed to the         | 6         |
| শ্রীরাধার প্রতি সধীর             | উক্তি      | •••         | •••               | - 3 8 8 4 |
| শ্রিক্সফের অমৃতাপ                |            |             |                   | -31 85    |
| मधीत निकर श्रीकृष्क              | র পরিহার   | ও শ্রীরাধার | কুঞ্চে অধি        | 391-6     |
| সন্থী-শিক্ষা                     |            | ***         |                   | 1         |
| गत्रान्य नया                     |            |             | 140               |           |

# পূৰ্ববাদ। ভূতীয় পদ্ধব।

| विषय ।   |                 |   | পৃঠাৰ।            |
|--|-----------------|---|-------------------|
| শ্রীক্ষের পর্বাগ,—গৌরচন্দ্র  |                 | \$25 IJ -                                 | 86                |
| প্রীকৃষ্ণের পূর্বরাগ,—গৌরচন্দ্র<br>প্রীকৃষ্ণের পূর্বরাগ,—স্ববদের সহি | ं डेक           | প্রভাৱি                                   | कुर (क).<br>-     |
| অপ্তি-দৃতী,—গৌরচক্র ···  | • • •           | •••                                       | € ∘               |
| শীক্ষের আপ্ত-দৃতীর সঙ্গে শীরাধ                                       | ার              | op o Sa.                                  |                   |
| উক্তি প্রত্যুক্তি  | • : 5 . 29      | 67 to 4 19                                |                   |
| শীরাধা,—দংকিপ্ত-নবোঢ়া   | • • • •         | * * * *                                   | • 0               |
| - % ·  |                 | \$1. 1. E. S.                             |                   |
| চতুর্থ প   | পল্লব।          | 7 . a 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 57875-6           |
|  | (♥, 5           |   | 1 2 3             |
| <b>এরাধার পূর্বরাগ,—গৌরচ<del>ত্র</del></b>                           |                 | . 5490 5                                  |                   |
| শীরাধার প্রতি স্থীর গ্রন্ন   |                 | •••                                       | 69                |
| শীরাধার প্রত্যুত্তর  |                 | •••                                       | er                |
| শ্রীক্ষকের পূর্ব্বরাগ,—গৌরচ <del>ন্ত্র</del>                         |                 | •••                                       | 65                |
| শ্রীরাধার নাম প্রবণে শ্রীকৃঞ্বের উ                                   | <b>লালে</b> গতি | P   | 1. 1 1 1 1 m      |
| नवीकर्षक श्रीकृत्कत्र निकरे श्रीता                                   | ধার রক্তঃ       | <b>শকি</b> :                              | 51818.8           |
| ক্লপ বর্ণন · · ·   | ****            | 22.600                                    | 5 5 5             |
| শ্ৰীর প্রতি শ্রীকৃষ্ণের উক্তি  | The s           | e Larbe                                   | 50.50 g <b>Vš</b> |
| জীরাধা দর্শনে ঐক্তঞ্চের উক্ত   | ***             | 435                                       | 91619 <b>3</b>    |
| স্থীকর্ত্ক শ্রীরাধার নিকট জীক্স                                      | <b>***</b>      | 5 : 3 4 PM                                | 5183632           |
| ू <b>मन मना कॉन</b> २ जनाव्य ११                                      | 35.56           | · (444)                                   | STATE OF          |
| अबेक्सक्त (भव नमा अवटन बितार   | ার অভি          | गांबल जन्म                                | 8 15 <b>88</b>    |
| নীরাধা, সংক্রিপ্ত-নবোড়া   | W/S             | The Property -                            |                   |

## **98**3 |

| विषय ।   |            |   |  | शृक्षात्र ।    |
|--|------------|---|--|----------------|
| বয়ঃসন্ধি,—গৌরচক্র   | •••        | ****************                        | 4  | 99             |
| সধীকর্ত্ক শীক্ষাকুর বি   | কট শীর     | ধার বয়ংস্থি                            | क्र वर्गन  | 91             |
| বয়ংশন্ধি,—গৌরচক্স<br>দ্বীকর্ত্ক শ্রীকুফের বি<br>দ্বীর প্রতি শ্রীকুফের | উক্তি      |   |  | 95             |
| শ্ৰীরাধার নিকটে স্থীর  | র গমন,     | ** <b>*</b> 5% 5.                       | <b>;</b> ija   | , <b>, , ,</b> |
| শ্রীরাধার প্রতি সধীর   | প্রহোচনা   | •••                                     |  | 5 10           |
| সধীর প্রতি শীরাধার   | উক্তি      | • | •••  | 44             |
| শ্রীরাধার প্রতি সধীর   | শিকা বচৰ   |   |  | <b>F</b> 2     |
| শ্রীরাধার কৃষ্ণাভিসার  | 1 85 8     | Sec. 11.                                |  | 40             |
| ত্রীরাধা,— সংক্ষিপ্ত-নবে   |            |   |  | b-8            |
| গ্রন্থকারের প্রার্থনা  | ٠          | •••                                     | r.ç* >   | 49             |
| 15   |            | 4% 5                                    |  | (6) × 34.      |
| · · · · · · ·  | ষষ্ঠ প     | लितं।                                   | 1919/01/11   | 15.5           |
| \$4.   | . 10       |   |  | 4-4            |
| এীরাধার পূর্বরাগ,—   | গৌৰচক্ৰ    | S                                       | ,  | **             |
| শ্ৰীরাধার প্রতি সধীর   | প্ৰশ্ন 🕒 🦠 | A 40 0 5                                | 1957 <b>-18</b> -18-18-18-18-18-18-18-18-18-18-18-18-18- | * <b>&gt;</b>  |
| ঞ্জীরাধার প্রভাত্তর  |            | ·                                       | ••••   | a <b>bb</b>    |
| শ্রীরাধার প্রতি দথীর   | অনুযোগ     | V 6                                     | ನ⊗ಕೆ ಕ್  | > <b>D</b>     |
| ঞ্জিরাধার উক্তি  |            |   |  |                |
| শ্রীরাধার প্রতি সধীর   | প্ৰবোৰ ৰ   | 57                                      |  | s , 30         |
| শীরাধার নিকট শীক্ল   |            |   |  |                |
| <b>জীরাধার ক্রফাভিদার</b>  |            |   |  |                |
| बीवाश,-नःकश्चनत  |            |   | E ex .   |                |

#### সপ্তম পল্লব।

2141

| मश्रम পा          | বৰ।   |   | I EFF   |
|-------------------|---|---|---|
|                   |   | er refe   | 984   |
| গার <b>চন্ত্র</b> |   | *35 Di  | 54  |
| উ <del>ক</del> ি  | •••   |   | ` > >   |
| <b>F</b>          |   | 197   | >>  |
| <b>উ</b> ₩        | •••   | **!!!>  | 3.5   |
| ংগদোকি            |   | *   | 7.52  |
| धरवाथ वहन         | ••  | m. NA   | 338   |
| ধার উব্তি         |   | 4 B.  | 7.5   |
| ধার উক্তি         |   | 1 to 1 to 1   | > 5   |
| নে এরাধার         | উক্তি   | ٠٠  | 7.8   |
| শ্ৰীরাধার উনি     | •   | *** ***   | 7.6   |
| रिन वित्राश       | উন্তি   |   | >>>   |
|                   |   |   |   |
|                   |   |   |   |
| 1516              | •••   |   | 336   |
|                   |   |   |   |
|                   |   |   |   |
| भार १४८.d         |   |   |   |
| •••               | 16.23   | *** A   | 353   |
| 1.53.9 1          | संह   |   |   |
| •••               | (m+1) -   | Tarible A   | a, 30   |
| 3 f 8             | de de la  |   | 18.8  |
| F. 65 . 5 . 5 . F | 18 18 p   | :: *** / <del>*</del>   | <b>&gt;24</b>   |
|                   | গাঁরচন্দ্র ভিক্তি ভিক্তি ভিক্তি থেলোক্তি প্রবেধ বচন ধার উক্তি ধার উক্তি নে প্রীরাধার উর্ ি ভিক্তি না প্রীরাধার না প্রীরাধ | গারচন্দ্র উক্তি  বেদোক্তি  বেদোক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  বে জীরাধার উক্তি  জীরাধার উক্তি  কালসা দলা  নালসা  নালসা | গাঁরচম্ম  উক্তি  উক্তি  বেদোকি  শার উক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  থার উক্তি  কি শ্রীরাধার উক্তি  তি শীরাধার উক্তি  তি শীরাধার উক্তি  কি শীরাধার কি শীরাধার কি শীরাধার কি শিরাধার কি শীরাধার কি শিরাধার কি শীরাধার কি শীরাধা |

| বিষয়।                          | मध्य भवता                          | शृंशीक ।                              |
|---------------------------------|------------------------------------|---------------------------------------|
| জ্বাধার কড়িমা দশা              |                                    | ···                                   |
| বৈষুগ্রা,—গৌরচন্ত্র             | <b></b> ≝85 000-                   | नैर्वेशाव श्रृ शंवाध                  |
| জ্বিরাধার বৈষ্ণ্যা দশা          | ari€ 51                            | संबाधात संवि:पुनत                     |
| ঝুঃধি,—গৌরচ্জ                   | %                                  | र्व्यक्तियव भाग्यांव हे               |
| জীরশার ব্যাধি দশা               | ··· <b>'स</b> िर्ह ।               | र्देश्यान द्वांत्र कार्या             |
| উন্ধান,—গৌরচন্দ্র               | ··· कोल्ला हा                      | पार्टि शिक्टी रेडिंग                  |
| জীৱধার উন্মান দুশা              | শ দেশে ।<br>শংক্ষা ।               | इतिशव लिक्षिको                        |
| <b>মোহ,</b> —গোরচ <del>্র</del> | केटि काला                          | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| জীর্ধার মোহ দশা                 | 235.8.                             | F POPERTY.                            |
| मृत्यकी मना, — द्रशोत्रहन       | कोई अभादलेखा                       | 4-0845 537 300                        |
| <b>এ</b> রাধার দশমী দশা         | ··•कोई श्राहर्ते ।                 | 1 - 1 Pr - WA 208                     |
| खीताथात मन मना अवट              | क्षित्र कृतिक क्षेत्र              | TERRESTE                              |
| আপুদ্তীমুখে প্ৰত্যাৰ            | নবাৰ্তা শ্ৰহণ শ্ৰীয়াধা            | Million attended                      |
| মুক্রিন্তে সধীর প্রতি           | শীরাধার উক্তি                      | * CO 209                              |
| 🍓 রাধার প্রতি স্থীর             | প্ৰবোধ বাক্য                       | an interest singles                   |
| শ্রীক্লকের অনুতাপ               | · PRETERN                          | करावान डेटबर्शनील                     |
| मिकृत्कत निक्रे श्नः            |                                    | डेटबर्स, - ट्योबड्ड                   |
| 🛶 ও শীরাধার নিক্                | <ul> <li>श्रीकृष्णत गमन</li> </ul> | अर्दाशाय डेज्यम वन                    |
| 👰 বাধা,— সংক্রিপ্ত-ন            |                                    | westien water                         |
| •                               | অ্কুম পল্ব।                        | के नागांव काश्रावन व                  |
| জিক্ষের পূর্বরাগ,-              |                                    | क्राम्य — ८पोन्डक                     |
| अताशात क्रम वर्गान              |                                    | नेवाराव कास्तु वर्गा                  |
| अर्जनाटक श्रीनाधान न            |                                    |                                       |
| नामाध्य व्याप्तावात्र श्री      | ा गणात ज्याक्षरकात्र छ             | 4.2                                   |
|                                 |                                    |                                       |
|                                 |                                    |                                       |

| विवसं।                              | 155121          | NR BO        |               | शृशिष ।                               |
|-------------------------------------|-----------------|--------------|---------------|---------------------------------------|
| সার্কালে এরা                        | ধার ক্লপ দর্শনে | ঐক্ষের উ     | ·             | 1110                                  |
| अवाधा-ममानरम                        | त कम्र जीकृरक   | व अकार करी   | 1151375 6     | 100                                   |
| ঞ্জিককের প্রতি                      |                 |              |               |                                       |
| প্রক্রিকর প্রভ্যা                   |                 |              |               |                                       |
| জীয়াধার প্রতি                      |                 |              |               |                                       |
| <b>क्षेत्राधात्र निकृत्य</b>        |                 | -            |               |                                       |
| वीकाथा,—मःकि                        |                 |              |               |                                       |
|                                     |                 | drie builb   |               |                                       |
| kg                                  |                 | कार्वि ।     |               |                                       |
| **:                                 |                 |              | er sect       |                                       |
|                                     | নব্ম            | পল্লব।       | 114 11 244, 1 | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| শ্রীরাধার রসোদ                      | वाद रूक्षेत्रहर | 15.3         | •••           | 259                                   |
| শ্রীরাধার রসোদ<br>শ্রীরাধার প্রতি য | দ্বীর প্রস      | S            | •••           | ,,                                    |
| ত্রীরাধার প্রসূত্র                  |                 |              |               | 396                                   |
| শীরাধার প্রতি :                     |                 |              |               | `>93                                  |
| পুন: এীরাধার                        |                 |              | •••           |                                       |
| দৈয়াশিনী বেশে                      |                 |              | 6 3.5 953c    |                                       |
| জীৰাধাৰ মিলন                        |                 |              |               |                                       |
| स्त्रापात्र । नगन                   |                 | া দুকু দুকুই |               |                                       |
| (05                                 |                 | পল্লব ।      |               |                                       |
|                                     |                 |              |               |                                       |
| শীরাধার প্রতি                       |                 |              |               | 363                                   |
| দধীর নিকট শ্রী                      | রাধার কৌশলৈ     | সৰ্পাই উত্ত  | ī             | 2 PKQ                                 |
| দ্ধীয় অবিখাস                       | স্চক উক্তি      | E            | 143           | SESHI                                 |
| न्योत निकंत्र औ                     | রাধার প্র: স    | ৰণট উক্তি    | A 31, 25      | 59177                                 |

| একাদশ পল্লব  | \$6p]  |
|--|--|
| ं विषय । १९३० - १९३० - १००० १००  | ाना वर्षे वर्षे स्थान्त्रेशक   |
| श्रीवाधात तरमानगाव श्रीक्रक कर्म   | e expense of spen  |
| রদোলগার,—নুবদীপ-নাগ্রীর উক্তি  |  |
| শীরাধার প্রতি স্থীর জিজ্ঞাসা   |  |
| স্থীর প্রতি শ্রীরাধার উত্তর 💨 🗀 কল   | one on the second  |
| পুর: স্থীর প্রশ্ন 😶 🕞  | Codd to a second   |
| মুগ্ধা-রদোলগার, — খ্রীরাধার প্রত্যুত্তর  | ८ को रः ्ष्र्रे  |
| স্থবলের নিকট শ্রীক্লঞের রসোলগার  | 727  |
| শীরাধার স্থানচ্ছলে অভিনার  | >>8  |
| শ্রীরাধাক্তফের মিলন 🔐 🛒 💍 🚎 📆  | >>¢  |
| দ্বিতীয় শাখ   | 1 7 320 0 3  |
|  | ভিদার।   |
| রূপানুরাগ ও রূপা   | ভিসার।   |
| রপাত্রাগ ও রপা<br>প্রথম প্রব   | ভিসার। । । । ।<br>। । । । । । । । । । । । । । ।                          |
| রূপাত্রাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>এটগারচন্ত্রের সংক্ষীর্কুন্রবর্ধন  | ভিসার। ০০৯<br>০০৯ ০১৯ ১৯ ১৪<br>০০৯ ০১১ ১৯ ১৯৪<br>১০ ৮৮ ১৮১৯              |
| রপাত্রাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>শীগোরচক্রের সংকীর্কনবর্গন  | ভিসার। ১৯৯৪<br>১ - ১ ১ ১ ১ ১৪<br>১ - ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ |
| রূপাতুরাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>শ্রীগৌরচন্দ্রের সংকীর্কনবর্ধন<br>শ্রীগৌরচন্দ্রবিরক কপাহরাগ<br>শ্রীরাধাকর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের রূপ বর্ণনা                             | ভিসার।   |
| রূপাতুরাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>শ্রীগৌরচন্দ্রের সংকীর্ভন্নর্থন<br>শ্রীগৌরচন্দ্রবিররক রূপাত্রাগ<br>শ্রীরাধকর্ত্ক শ্রীকৃষ্ণের রূপ বর্ণনা<br>শ্রীরাধিকার রূপাতিসার | ভিসার।   |
| রূপাতুরাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>শ্রীগৌরচন্দ্রের সংকীর্ভন্নর্থন<br>শ্রীগৌরচন্দ্রবিররক রূপাত্রাগ<br>শ্রীরাধকর্ত্ক শ্রীকৃষ্ণের রূপ বর্ণনা<br>শ্রীরাধিকার রূপাতিসার | ভিসার।   |
| রূপাতুরাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব।<br>প্রিগোরচন্দ্রের সংকীর্কুন্নর্বান<br>প্রিগোরচন্দ্রব্যক কপাত্রাগ<br>প্রীরাধিকার রূপাতিসার  | © 기 기   1   1   1   1   1   1   1   1   1                                |
| রূপাতুরাগ ও রূপা<br>প্রথম পল্লব ।<br>শ্রীগৌরচন্দ্রের সংকীর্ভন্নর্থন<br>শ্রীগৌরচন্দ্রবিররক রূপাত্রাগ<br>শ্রীরাধকর্ত্ক শ্রীকৃষ্ণের রূপ বর্ণনা<br>শ্রীরাধিকার রূপাতিসার | (a) (b) (b) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c                       |

| विसम्र ।  | পৃষ্ঠাত্ম ৷        |
|---|--------------------|
| শ্রীক্লফের রূপান্থরাগে শ্রীরাধার উক্তি 🐭 🐎 🔠    | K+b                |
| কুঞ্জ-গৃহে শ্রীরাধার অভিসার 😁 😁 🗝               | : * % * <b>;</b> ; |
| বাসকসজ্জা,—শ্রীরাধা ক্রান্ত স্থান ক্রান্ত       |                    |
| উৎকৃষ্টিতা, শীরাধা                              |                    |
| স্থীকর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের নিকট শ্রীরাধার বাসক্সজা  |                    |
| ভাৰবৰ্ণন ১১.                                    |                    |
| শ্রীরাধার কুঞ্জে শ্রীকৃষ্ণের প্রমন 📑 👵 💛 👵      | ₹ - ₹\$₹           |
| শ্রীক্লকের প্রতি শ্রীরাধার সাম্রাগোক্তি         | × ,                |
| শীরাধার প্রতি শীক্ষের সাত্রাগোক্তি              | \$ 520             |
| প্রীরাধারুষ্ণের মিলন · · · · · · · · ·          | 4.                 |
| তৃতীয় <b>পল্লব</b> ।                           |                    |
| রপাভিসার,—গৌরচক্র                               | ₹ \$ \$            |
| শীক্ষকের রূপানুরাগে শীরাধার উক্তি · · ·         | २३१                |
| অভিসারিকা,—শ্রীরাধা                             | २२•                |
| निकृत्व धीक्रकंकर्ज्क जीतावात गान्त्राण्डार्थना | २२১                |
| জীরাধারুফের বুগলরূপ                             | "                  |
| সম্ভোগ  | 550                |
| त्रष्ठांवनानिक                                  | **8                |
| অফ নারিকা।                                      | i Byth             |
| tree days                                       | · 146.51           |
| চতুর্থ প্রলব ৷                                  | िप्रकृ             |
| বসস্ত-কালোচিত অফ্টনায়িকা-প্রকর্ণ               | h. rej             |
| পৌরচক্র . ১১ সহল ১৯,৪৬ সংক্রম প্র               | <b>?&gt; ₹₹</b> €  |
| শ্ৰীৰাধাৰ গুকাভিদাৰ                             | 8-5 8 THE          |

| विषय । १००० विषय ।  | পृष्ठीः । |
|---|-----------|
| শীক্ষের গতি খণ্ডিতা শীরাধার সাভিমান বিজপ বাকা             | २७৯       |
| 5 5 5   | 15.4      |
| ধণ্ডিতা শ্রীরাধা কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের প্রত্যুধান            | 29.       |
| খণ্ডিতা ধীরা।   |           |
| অন্তম পল্লব ।   | )†:       |
| ধীয়া-লক্ষণ ও দৃষ্টান্ত (শ্লোক)                           | ২৭৩       |
| শন্তিতা ধীরা,— গৌরচক্র                                    |           |
| খণ্ডিতা-রদোচিত একুফের বন্দনা                              |           |
| দৰীৰ প্ৰতি থণ্ডিতা শ্ৰীকাৰাৰ উক্তি · · · · · ·            |           |
| শ্রীকৃষ্ণের প্রতি শ্রীরাধার সা <b>ভি</b> মার বিজ্ঞপ বাক্য |           |
| ও দোৰ-পরিহারার্থ শ্রীকুঞ্জের সক্পট উক্তি                  | 299       |
| শ্রীকৃষ্ণকর্ত্ত্ক কৌশলক্রমে শ্রীরাধার মান-ভঞ্জন           | ₹७०       |
| নব্ম প্লব ৷   |           |
| খঞ্জিতা ধীরা,—গোরচক্র                                     |           |
| খণ্ডিতা শীরাধার সাভিমান বিজ্ঞাপ বাক্য ও ক্লঞ্চের          |           |
| , সকপট উব্জি  | . 20      |
| मानिनी, भीत्रांश  | Rhe       |
| যোগী-বেশে মান-ভঞ্জনান্তে শ্রীরাধার সহিত শ্রীক্ককের .      |           |
| ूर् भिनम  | 244       |
| দ <b>শ্ম পল্লব ।</b> তিন্তু                               |           |
| থপ্তিতা,—গৌরচক্র  |           |
| ৰঞ্জিতা প্ৰীরাধার সাজিমান বিজ্ঞান বাক্য ও শ্রীকৃত্তের     | . 17.6.7  |
| স্কপট উক্তি   |           |

विषम् ।

## একাদশ পল্লব। খণ্ডিতা অধীরা,—গৌরচক্র থাজিতা রাধার সাভিয়ান বিজ্ঞপ ও ক্রেক্সর স্কণ্ট উক্তি খণ্ডিতা শীরাধার হর্জর বান थीकृष्णकर्त् क (को**न्स्वकृत्य जी**त्रातात बान्यस्थान .....

#### খণ্ডিতা ধী**রাকীরা**

| পাপ্ততা ধারাণ       | भीत्रा,—रशाव्रहङ         | •••          | •••      | .000           |
|---------------------|--------------------------|--------------|----------|----------------|
| ধঙিতা শ্ৰীরা        | ধার সাভিমান বি           | দ্ৰপু ক্ৰফের | সকপট উবি | <b>5</b> 0 • 8 |
| मानिनी, 🖺           | नाश …                    | •••          | •••      | 9.9            |
| <b>बिक्कवर्ड्</b> क | এ রাধার <del>শহর</del> র | g sjeak      | ••• * *  | *              |
| থপ্তিতা শীরা        | धांक ईक जैक्सक           | বভাগান       | · · · .  | 5.F            |
| ঞ্জীয়াধার কুঞ      | रहेट जीकृत्कत            | ক্তিয়ানে এ  | য়াৰ     | - C. 2         |

## কলহান্তরিতা।

#### कर्योक्न शहर ।

| 446101301-14-1 ( CHIT )      | ***            | 6.1.0 | 93.   |
|------------------------------|----------------|-------|-------|
| কলহান্তরিভা, —গৌরচক্র        | ***            | ***   | **    |
| কশহান্তরিতা ত্রীরাধা ও স্বীর | डेकिं श्रजांकि |       | **    |
| জীক্তাকের নিকট দখীর গ্রহন    |                |       | AL 10 |

### অফীদশ পল্লব।

| বিষয়। সংগ্ৰেট চন্দ্ৰ হ             | era gara       | . * - 732             | পৃষ্ঠাস্ক      |
|-------------------------------------|----------------|-----------------------|----------------|
| মান,—গোরচক্র …                      | •••            | •••                   | .७१४           |
| স্থীর মুখে শ্রীকুষ্ণের চন্দ্রানদী-স | ৰাগম শ্ৰং      | le: ≼3 💃              | 3 134          |
| শ্ৰীরাধার মান · · ·                 |                |                       | نة وون العالم  |
| এরাধার প্রতি স্থী-শিক্ষা বচন        | 44 K           | , <b>**</b> ***;. *   | ້້າລົງສາ       |
| वनस्तिवीत मूर्थ श्रीताशांत मान अ    | বণে ঐক্ল       | कर्ड्क ्              | . 41 Z         |
| শ্রীরাধার নিকট সধী-প্রেরণ           | 4,181.8.       | ca*** * a             | . ob •         |
| ঞীরাধার প্রতি স্থীর প্রবোধ উ        | <b>₹</b>       | •••                   | or?            |
| স্থীর প্রতি শীরাধার প্রত্যক্তি      | •••            | •••                   | 045            |
| শীকৃষ্ণের প্রতি দথীর উক্তি          |                |                       |                |
| শ্রীকুষ্ণের ব্রন্ধগরী-বেশে          |                |                       |                |
| শ্ৰীরাধার কুঞ্জে গমন                |                |                       | €৮8            |
| ব্ৰজনাগরী-বেশে এক্সঞ্কর্ক           | শীরাধার মান    | -ভ <b>ঞ্</b> ন        | ৩৮৫            |
| ंदेनति॰¥                            | পুলুর।         | 19 119 N              | 170            |
|                                     | প্লুব ।        |                       |                |
| শ্ৰীৰাধাৰ প্ৰতি দুতীকৰ্ত্ক শ্ৰীকৃ   |                |                       |                |
| দ্তীর প্রতি খ্রীরাধার উক্কি         |                |                       |                |
| ঞ্জিকের নিকট দৃতীঃ প্রত্যাগ         | মন ও উক্তি     | 2 30                  | 3 3 A          |
| श्रीकृत्कत नवनागत्री-त्वत्न क्रित   | । धात्र निक्रि | <b>198</b>            |                |
| <b>এীরাধার মান-ভঞ্জন</b> ···        |                | e <sup>ll</sup> sage. | ac <b>⇔≥</b> 3 |
| মানান্তে জীরাধাকৃষ্ণের মিলুন        |                |                       |                |
| বৰ্ষাকালোচিত্ত-বাসকসজ্জা শ্ৰীর      |                |                       |                |
| <b>औक्ररकत्र विनास मान</b>          |                |                       |                |
| শীরাধার প্রতি সধীর উক্তি            | 200            |                       |                |

#### মান্ত্র

## বিংশ-পল্লব ৷

| বিষয়।  | शृशंइ ।                               |
|---|---------------------------------------|
| ছীরাধার নিকট শ্রীকৃষ্ণের দৃতী-প্রেরণ 😁                | • • • • • • • • • • • • • • • • • • • |
| জীরাধার নিকটে দৃতীর গমন <b>ও উক্তি</b> :              |                                       |
| দৃষ্ঠীর প্রতি শ্রীরাধার উক্তি 🕾 👑 👑 💮                 |                                       |
| শ্রীরাধার প্রতি দৃতীর প্ররোচনা :                      | ,,,                                   |
| দৃতীর বাক্যে শ্রীক্লঞ্চের কুঞ্জে শ্রীরাধার অভিসার     | @ <b>&gt;&gt;</b> >                   |
| অভিসারে শ্রীরাধার সঙ্কোচ দর্শনে দৃতীক্ক প্ররোচনা      |                                       |
| শ্রীক্ষাক্তর নিকটে শ্রীরাধার গমন                      |                                       |
| শ্রীকৃষ্ণের প্রতি শ্রীরাধার উক্তি ···                 | 8•\$                                  |
| মীরাধার প্রতি শীক্ষের অমুনয়                          | ,,                                    |
| মানান্তে শ্রীরাধাক্ষের স্থীর্ণ-সঞ্জোগ                 | **                                    |
| ভক্ষুপে শীক্ষের পদ্মা-সমাগ্য শ্বণে শীরাধার মান        | 8 • @                                 |
| দৃতীর মুখে এীরাধার মান প্রবণে শীরাধার কুঞে            |                                       |
| শ্রীকৃষ্ণের গমন ও শ্রীরাধার মান-ভঞ্জন · · ·           | 8 • 5                                 |
| ঞ ক্ষের বংশী-ধ্বনিতে চক্রাবলীর নাম প্রবণে .           |                                       |
| শ্রীরাধার মান   |                                       |
| সধীর মুখে শ্রীরাধার মান শ্রবণে শ্রীরাধার কুঞা শ্রীকুল |                                       |
| গমন ও অভুনয়  |                                       |
| শীরাধার মান-ভঞ্জন                                     |                                       |
| শ্ৰীক্ষেত্ৰ বাক্য-শ্বৰে শ্ৰীৱাধার মান                 |                                       |
| ও শ্রীকৃষ্ণকর্ত্ব মান-ভঞ্জন                           |                                       |
| ব্বপ্লে অন্ত নারীর সহিত শ্রী ক্লফের বিহার-দর্শনে      |                                       |
| श्रीवाधात भाग · · · ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः   |                                       |

#### একবিংশ পদ্মব।

| विषय ।                               |                                     | ्रश्वाक             |
|--------------------------------------|-------------------------------------|---------------------|
| क्रिकक्षक वंक शनक-द्वरण श्रीश्रावाड  | মান-ভঞ্জন .                         | . / · · · · · · 854 |
| মানিনী শীরাধার প্রতি দৃতীর উদি       | gn,,,                               |                     |
| মানিনী শ্রীরাধার ও দ্তীর উক্তি       | প্রভূতি                             | .: 898              |
| দতীর প্ররোচনায় শ্রীক্ষের দক্ষে      | -क्रक                               | *1.4 \$HE2H         |
| শ্ৰীরাধার গমৰ                        | 1                                   |                     |
| <b>এক্সফক র্থক জীরাধার জমুনৰ</b>     | way is                              | 625                 |
| শ্রীরাধার মান-ভঞ্জন                  |                                     | ., ,,               |
| মানান্তে শ্রীরাধাক্তফের মিলন         | ė., ·                               | 468                 |
|                                      |                                     | w                   |
| **                                   |                                     |                     |
| দ্বাবিংশ                             | পদ্মব ।                             | 1 * 5 - 2           |
|                                      |                                     |                     |
| কারণাভা                              | म मान ।                             |                     |
| কারণাতীস মার্ন, গৌরতজ্ঞ              | ***                                 | .r. 84.             |
| শ্ৰীপ্ৰাধাৰ কাৰণাভাগ মান             | '.                                  | ,                   |
| শ্ৰীরাধার শ্রতি দ্বীগণের উক্তি       | 3                                   | F 1845              |
| শীরাধার প্রতি শ্রীকৃষ্ণের উক্তি      | ··· ***                             | • 8২২               |
| वी शांधांत्र मान-स्थन                |                                     | B\$ 5               |
| শ্ৰীকৃষ্ণের অঙ্গে নিজ-প্রন্তিবিশ্ব দ | ৰ্ণনে অন্ত নারি                     | <b>41</b>           |
| ্ৰমে শ্ৰীরাধার মান                   | · · · · · · · · · · · · · · · · · · | weeks "             |
| স্থীকর্তৃক শ্রীরাম্বার ভ্রমাণনায়দ   | 18.00 × 11.5                        | FF8                 |
| প্রীক্ষকর্তক শীরাধার মার-ছঙ্গ        |                                     | er and in the       |

| र्मान ।                               |                              | 5d.         |
|---------------------------------------|------------------------------|-------------|
| विवग्न ।                              |                              | शृशिह ।     |
| পরস্পরের অঙ্গে নিজ প্রতিবিশ্ব দর্শনে  | <u> এ</u> রাধাক্ <i>ষে</i> র |             |
| মান ও মান-ভঞ্জন                       | •••                          | <b>8</b> २७ |
| ত্রয়োবিংশ পর                         | व ।                          |             |
| অকারণ মান                             | T I                          |             |
| শ্রীরাধাক্ষের অকারণ মান ও মান-ভ       | अ;न ∙∙                       | 8२४         |
| শীকৃষ্ণ ও শীরাধার যথাক্রমে প্রেম-ক্র  | াহ-জনিত                      |             |
| অকারণ মান                             | •••                          | 822         |
| গ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীরাধার অকারণ মান ও ম   | नि-इक्षन                     | १७०         |
| অকারণ-মানিনী শ্রীরাধার প্রতি স্থীর    | উক্তি                        | 807         |
| শ্রীরাধার প্রেম-কলহহেতু অকারণ মান     |                              | 8७३         |
| শ্রীরাধার প্রতি স্থীগণের উক্তি        |                              | 800         |
| শীরাধার প্রতি শীক্ষণের সামুরাগ উর্    | ₹                            | 808         |
| অকারণ-মানাত্তে শ্রীরাধাক্তফের মিলন    | •••                          | 19          |
| চতুর্বিংশ প                           | <b>झ</b> र ।                 |             |
| সঙ্কীর্ণ-সম্ভোগ-রয়ে                  | नानभात्र ।                   |             |
| সধীগণের নিকট শ্রীরাধার সন্ধীর্ণ-সম্ভে | গি রধোদগার                   | 8.9€        |
| যমুনা-পানে এরাধাক্তকের মিলন           |                              | 895         |
| গ্ৰহ্মাৰেৰ প্ৰাৰ্থনা                  |                              | 882         |



## বিজ্ঞাপন।

## ইণ্ডিয়ান পাব্লিকেশন্ সোসাইটি

বা

ভারত গ্রন্থ-প্রচার সমিতি কর্তৃক প্রকাশিত গ্রন্থাবলি ৷

পদ কল্প তক্ত — ৰণ্ডাকারে প্রকাশিত হইতেছে। সমগ্র গ্রন্থ
আনদাল ২৫০০ আড়াই হাজার পৃঠায় সম্পূর্ণ
হইবে। যাঁহারা বর্তমান দালের জ্যৈঠ মাদ
মধ্যে অগ্রিম মূল্য দিয়া গ্রাহক হইবেন
তাঁহারা উক্ত গ্রন্থ নিয়লিখিত স্থলভ মূল্য
পাইবেন। পরে মূল্য দিগুণ হইবে।

অগ্রিমমূল্য।———স্থলভ সংস্করণ ২ ্রাজ্ব সংস্করণ ৩

পদকরতক ১ম থপ্ত প্রকাশিত ইইরাছে। ইহাতে পূর্ব্রাগ, সংক্ষীর্ণসন্তোগ, মান, বাসকসজ্জাদি অইনায়িকা বর্ণন ও রসোলগার ইত্যাদি নানা বিষয়ক ৬০০ শতের অধিক পদাবলি আছে ও প্রায় সাড়ে চারি শত পৃঠায় সম্পূর্ণ ইইয়াছে।

সুলভ সংস্করণ মূল্য ॥৵৽, রাজ সংস্করণ ৸৵৽ আনা।

গীতগোবিন্দ — মৃল, পৃজারি গোস্বামিকত বালবোধিনী টীকা,
মৃলের অবিকল প্রাঞ্জল বঙ্গামুবাদ ও স্থ প্রসিদ্ধ
পাশ্চাত্য পণ্ডিত-শ্রেষ্ঠ সার উইলিয়ম জোন্দ্ কৃত ইংরেশী অনুবাদ ও বিস্তৃত সমালোচনা-পূর্ণ উপক্রমণিকা সহিত উৎক্ষ্ঠ কাগজে—

অগ্রিমমূল্য।--- সুলভ সংস্করণ ১ ্রাক সংস্করণ ১॥।

মেঘদূত ---- মূল, মরিনাধক্ত সঞ্জীবনী টীকা, মূলের অবিকল প্রাঞ্জন বলায়বাদ ও পাশ্চাত্য পণ্ডিত- শ্রেষ্ঠ উইল্সন সাহেব ক্বত ইংরেজী প্রায়বাদ ও বিস্তৃত সমালোচনা-পূর্ণ উপক্রমণিকা সহিত উৎ হট্ট কাগজে--

4

অগ্রিম্না।--- সুলভ সংকরণ ১ রাজ সংকরণ ১।।। অমরকোষ- অমরসিংহ কৃত মূল, অকারাদি ক্রমে সম্প্র শন্ধাবলির স্চীপত্র, বাংপত্তি, প্রকৃতিপ্রতায়, বালালা ও ইংরেজী প্রতিশব্দ সহিত স্থরই প্রকাশিত হইবে। ইহা বারা একাধারে উৎকই সংস্কৃত অভিধান, ও Sanskrit to English 43 Bengali to English অভিধানের সমস্ত প্রয়োজন সিদ্ধ হইবে। অগ্রিম্মলা ... ২ ।

পুর্বোক্ত সকল গ্রন্থের অগ্রিম মূল্যই বর্ত্তমান ১৩০৪ সনের জৈষ্ঠমাদ মধ্যে দিতে হইবে। গ্রন্থ প্রকাশিত হইলে দকল গ্রন্থের মুলাই দিগুণ হইবে।

## পুস্তক প্রাপ্তির ঠিকানা।

ইণ্ডিয়ান পাইওনিয়ার কোম্পানি লিমিটেড ১৮নং শ্রামাচরণ দের ষ্ট্রীট। বেঙ্গল মেডিকেল লাইত্রেরী শ্রীযুক্ত গুরুদাস চট্টোপাধ্যায়ের পুস্তকালয় २०१नः कर्व अवानिन है है। সংস্কৃত **প্রেস** ডিপজিটরি ২০নং কণ্ডরালিস ব্রীটু।

## বিজ্ঞাপন।

পদকরতক প্রকৃতপক্ষেই কাবারদের করতক। প্রাচীন কবি বৈঞ্চৰদাস কর্ত্ব সঙ্কলিত এই সংগ্রহ-গ্রন্থে, জ্বাদেব, বিভা-পতি, চঙীদাদ, দনাতন গোস্বামী, গোবিন্দ দাদ, বাস্থ ঘোষ, বলরাম দাস, জ্ঞান দাস রায় শেখর, বসস্ত রায় প্রভৃতি সুপ্রসিদ্ধ প্রাচীন বৈষ্ণৰ কবিগণের রচিত তিন সহস্রের অধিক উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট পদাবলি সংগৃহীত হইয়াছে। ফলতঃ পদকল্পতক্র-গ্রন্থে দেখিতে না পাওয়া যায় এইরূপ উৎকৃষ্ট্ পদাবলির সংখ্যা নিতাভুই বিরল। বৈষ্ণব কবিগণের পদাবলির কবিজ, মাধুর্য্য ও ভাব-বৈচিত্রা প্রশংসা করিয়া শেষ করা যায় না। বস্ততঃ ভাঁহারাই বাঙ্গালার আদিগীতিকাব্যের রচয়িতা। প্রেমের মাধুর্য্য ও বৈচিত্র্য যদি কোন কবির রচনায় পূর্ণমাত্রায় পরিবাক্ত হুইয়া থাকে, তবে এই বৈষ্ণব কবিগণের মধুর, প্রাঞ্জল ও সুললিত ভাষায়ই তাহা দেখিতে পাওয়া যায়। প্রেমের উচ্ছাসে, বৈঞ্চব কবিগণের কবিতায় চারি পাঁচ শতান্দীকাল পূর্ব্বে বাঙ্গালির প্রাণের বে আশা, আকাজ্ঞা ও ব্যাকুণতার ভাষা প্রস্কৃতিত হইয়াছিল, আজিও বাঙ্গালির প্রাণের মর্ম্মকণা কোন নব্য কৰি তদপেক্ষা প্রক্ট ও চিত্তোমাদক ভাষার বলিতে পারেন নাই; স্তরাং বলিতে হয় যে বৈষ্ণৰ কবির কবিতা হইতে বাঙ্গালির সম্পূর্ণ নিজক্ত ও প্রাণের সামগ্রী আরু কিছু নাই। তাই বঙ্কিম বাবু, রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর, অক্ষরুমার সরকার প্রভৃতি ইংরেজী সাহিত্যে স্থপণ্ডিত সমালোচকগণও বৈক্ষব কবির পদাবলি পাঠে

মোভিত হট্যা একবাকো তাঁহাদিগকে বাঙ্গালার সর্বশ্রেষ্ঠ গীতি-কাবারচয়িতা বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন। কিন্তু কোভের विषय এই यে. वाञ्चानिता कानिया अनिया मिर श्रीतित किनिय শ্বলিকে অয়ত্ত্বে ফেলিয়া রাখিয়াছেন। ফলতঃ কেবল বিদ্যাপতি, **ह** छीनाम ७ शादिन नारमत भनावनि इं छिशुर्ख এक छ व्यथत। স্বতন্ত্র পুস্তকাকারে সংগৃহীত হইগা মুদ্রিত হইগাছে কিন্তু সমগ্র বৈষ্ণৰ কৰিগণের পদাৰ্থলি আর ইতিপূর্ব্বে বিশুদ্ধরূপে মুদ্রিত হয় নাই। শিক্ষিত ব্যক্তিগণের অনেকেই জ্ঞানেন যে, সনাতন গোস্বামী, জ্ঞানদাস, রায় শেখর, চম্পতি পতি, বসস্ত রায়, বলুরাম দাস, লোচন দাস ইত্যাদি কবিগণ বৈষ্ণব কবিগণের মধ্যে প্রথম শ্রেণীর অন্তর্গত বটে স্কুতরাং তাঁহাদের ও অক্সান্ত শতাধিক কবির উৎকৃষ্ট পদাবলি ভূষিত এই প্রাচীন সংগ্রহ-গ্রন্থ থানি যে সহৃদয় পাঠকগণের নিকট সবিশেষ উপাদেয় **হইবে তাহা বলা** বাহুল্য। বৈষ্ণুব কবিগণের পদাবলি মুদ্রুণে প্রবৃত্ত হইয়া আমরা মুরুহৎ ও মর্কোৎকৃষ্ট বলিয়া পদকলতক গ্রন্থথানিই প্রথমে মুদ্রিত করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি। পদকল্পতক গ্রন্থ খানি চারি শাখার সম্পূর্ণ ও প্রত্যেক শাধায় কতকগুলি করিয়া পল্লব আছে। ইহার প্রথম ও দিতীয় শাথা একত্রে প্রথম খণ্ডে প্রকাশিত হইল। ইহাতে পূর্ব্বরাগ, লালসাদি দশদশা,আপ্রদৃতী,সঙ্কীর্ণ সম্ভোগ, মান, वामकमञ्जानि ष्रहे-नांत्रिका वर्गन ও द्रामानाांद्रानि विषयक ७०० শতের অধিক পদাবলি আছে ও প্রায় সাড়ে চারি শত পৃষ্ঠায় শেষ হইয়াছে। তৃতীয় ও চতুৰ্থ শাথা পৃথক্ পৃথক্ থণ্ডে সদ্বরই মুদ্রিত হইবে। পদকরতক গ্রন্থের সংগ্রহপ্রণালী এইরূপ স্থকৌশল সম্পন্ন যে সকল শাখা ও পল্লব গুলিই স্বতঃসম্পূৰ্ণ অৰ্থাৎ উত্তাদের

একটির অর্থবাধ ও রসগ্রহের জন্ত অন্তটির কোন অপেকারাথে না, তবে ইহা অবশ্রই বলিতে হইবে যে তৃতীয় ও চতুর্থ শাখা ঘরে ও পূর্ব্বোক্ত কবিগণের উৎকৃষ্ট পদাবলি যথেষ্ট পরিনাণে পাওয়া যায় স্থতরাং বৈক্ষব কবিগণের কবিতাপাঠের পূর্ণ ফল লাভ করিতে হইলে সমগ্র গ্রন্থখানিই অধায়ন করা উচিত। পদকল্পতক্রর সম্পূর্ণ গ্রন্থ শারদীয় পূজার পূর্বেই প্রকাশিত হইবে ও সম্পূর্ণ গ্রন্থে গ্রাহকদিগকে উক্ত গ্রন্থের সহিত বৈক্ষব-কবিগণের কবিতার ইতিহাস, ভাষাতত্ত্ব ও কবিছের স্ববিত্ত সমালোচনা-পূর্ণ স্থলীর্ঘ উপক্রমণিকা, সমস্ত পদাবলির প্রথম ছত্রের স্থিতিত, অকারাদিক্রমে ছক্রহ শব্দাবলির অর্থ ও ছক্রহ বাক্যাবলির টীকা প্রদত্ত হইবে। আমাদিগের এই ক্ষুদ্র প্রয়াস নারা বদি বৈক্ষব-কবিগণের পদাবলিপাঠে বাক্ষালি পাঠকগণের কিয়ৎ পরিমাণেও দৌকর্য্য সাধিত হয় তাহা হইলে আমরা শ্রম সফল জ্ঞান করিব। ইতি—

সম্পাদক।



#### প্রথম-শাখা

## প্রীক্রিকফুটেতগুচন্দার নমঃ॥

বন্দেহহং শ্রীগুরোঃ শ্রীযুতপদক্ষলং শ্রীগুরুন বৈষ্ণবাংশ্চ শ্রীরপং সাগ্রজাতং সহগণরঘুনাথা বিতং তং সজীবম। मारेषडः मार्वशृङः পরিজনসহিতং কৃষ্ণচৈতভাদেবং শ্রীরাধাকৃষ্ণপাদান সহগণললিতান জীবিশাখান্বিতাংশ্চ।১

জয়জয় শ্রীপ্রক

প্রেম-কল্পতরু

অম্বত যাক প্রকাশ।

হিয় অগেয়ান- তিমির বর-জ্ঞান-

সুচন্দ্র-কিরণে করুনাশ।

ইহ লোচন আনন্দ ধাম

অষাচিত এ হেন পতিত হেরি যো পহঁ

যাচি দেয়ল হরিনাম ॥ এ ॥

তুরগতি অগতি অসত-মতি যোজন

নাহি সুক্ষতি-লব-লেশ।

শীবৃন্দাবন যুগল ভজন ধন

তাহে করত উপদেশ।

নিরমল গৌর- তেখমরস-সিঞ্চনে হাৰণ সৰ মনোআৰা 1 সো চরণাম্বজে ইতি নাহি হোয়ল রোয়ত বৈষ্ণবদাস॥ ১॥ জয় রে জয় রে পোরা শ্রীশচী-নন্দন মঙ্গল নটন সুঠাম। কীর্ত্তন আনন্দে ত্রীবাস রামানন্দে बुकुम वीख् छनेशीन ॥ দাং ত্রিমিকি ত্রিমি তিমি মাদল বাজত মধুর মন্দীর রদাল রে। শভা করতাল ঘণ্টারব ভেল মিলন পদতলে তাল রে **॥** কো দেই গোরা অঙ্গে স্থগন্ধি চন্দন কো দেই মালতী মাল রে। পিরীতি ফুলশরে মরম ভেদল ভাবে সহচর ভোর রে॥ কোই কহত গোরা জানকী-বল্লভ রাধার প্রিয় পাঁচবাণ। নয়নাননের মনে আন নাহি জানে গদাধরের প্রাণ ॥ ২॥ চম্পৰ শোণ কুন্থম কনকাচল জীতল গৌর-তমু-লাবনিরে। উন্নত গীম সীম নাহি অভুক্তব জগমনোমোহন ভাঙনীরে॥

জয় শচী-নন্দন বিজুবন-বন্দন
কলিযুগ কাল-ভূজগ-ভয়-খঞ্চন রে॥ জ্ ॥
বিপ্ল পুলক-কুল- আকুল কলেবর
গরপর অন্তর প্রেম ভরে।
লহু লহু হাসনী গদগদ ভাষণী
কত মন্দাকিনী নয়নে ঝরে॥
নিজরসে নাচত নয়ন চূলায়ত
গায়ত কত কত ভকতহিঁ মেলি।
ধােরসে ভাসি অবশ মহী-মগুল
গোবিন্দলাস তহি প্রশ নাভেলি॥ ৩॥

#### নী নিত্যানন্দচন্দ্রতা

#### বেলোয়ার ।

জয় জগ-তারণ কারণ-পাম।

আনন্দ-কন্দ নিত্যানন্দ নাম॥ জ ॥

ডগমগ লোচন কমল ঢুলায়ত

সহজে অথির গতি জিতি মাতোয়ার।
ভাইয়া অভিরাম বলি ঘন ঘন ডাকই

গৌর-প্রেম ভরে চলই না পার॥

গদগদ আধ মধুর বচনামৃত

লহু লহু হাস বিকাশিত গও।

পাষত্ত-পণ্ডন

কনক-পচিত অবলম্বন-দণ্ড॥

কলি-যুগ-কাল ভূজক্স দংশল দগধল স্থাবর জন্ম দেখি। প্রেম স্থা-রস জগভরি বরিথল গোবিন্দদাসকে কাহে উপেথি॥ ৪ ॥

## গোরী। নশ-নশন গোপীজন-বলভ

রাধা-নায়ক নাগর খাম। সো শচী-নন্দন निष्या-श्रुतन्त्र স্থর-মূনিগণ-মনোমোহন-ধাম॥ জয় নিজ কাস্তা- কাস্কি-কলেবর জয় জয় প্রেয়সী-ভাব-বিনোদ। জয় ব্রজ-সহচরী- লোচন-মঞ্চল নদীয়া বধুজন-নয়ন-আমোদ। জয় জয় শ্ৰীদাম সুদাম সুবলাৰ্জ্ন প্রেম-প্রবর্জন নবখন-ক্লপ। জন্ম রামানি স্থলর প্রিয় সহচর জয় জয় মোহন গৌর অফুপ। জয় অতিবল বলরাম প্রিয়ামূজ জয় জয় নিত্যানক আনক। জয় জয় সজ্জন- গুণ-ভয়-ভঞ্জন গোবিন্দাস-আশ-অহুবন্ধ ॥ ৫ ॥

#### धाननी।

জয় অদভূত সোপছ অবৈত স্থরধনী-সন্নিধানে।

আথি মূদি রহে প্রেমে নদী বহে বসন তিতিল ঘামে॥

নিজ পহ মনে ঘন গরজনে উঠি জোড়ে জোড়ে লক্ষণ । ডাকে বাহ তুলি কাঁদে ফুলি ফুলি দেহে বিপরীত কম্পা॥

আংকত হকারে স্থারধনী-তীরে স্থাইলা নাগর-রাজ। ডাহার পিরীতে আইলা তুরিতে উদয় নদীয়া মাঝ॥

জয় সীতানাথ করল বেকত নন্দের নন্দন হরি। কহে বৃন্দাবন অহৈত-চরণ

হিয়ার মাঝারে ধরি॥ ७॥

#### , তথা।

জয় জয় নিত্যানন্দ চক্র বর।
জয় শান্তিপুর-নগর-স্থাকর॥
জয় বস্থজায়ুবীদেবী-হৃদয়-হর।
জয় জয় সীতামোদ-কলেবর॥

#### এ এপদকলতর ।

বীর তাত জয় জীব-পিয়স্কর। জয় জয় অচ্যত-জনক মহেখর॥ জয় জয় পৌর-অভিয়-কলেবর। ফুকরই কাতর দাস মনোহর॥ ৭॥

#### তথা।

জন্ন জন্ম শ্রীনব- দ্বীপ-স্থাকর প্রভু বিশ্বস্তর দেব।

জয় পল্লাবতী- নন্দন প্ছঁমঝু - জীৰস্কাহুবী সেব ॥

ानस्याद्गरा दगरा

জন্ম জন্ম শ্রী- অহৈত সীতাপতি স্থাদ শান্তিপুর-চন্দ্র ।

জয় জয় শ্রীল-রসময় আনন্দ-কন্দ ॥

জর মালিনীপতি সদর-হৃদর অতি পণ্ডিত শ্রীবাস উদার।

গৌর ভকত জয় পরম দরাময় শিরে ধরি চরণ সবার ॥

ইহ সব ভুবনে প্রেমরস-সিঞ্চনে পুরল জগজন-আশ।

আপন করম- দোবে ভেল বঞ্চিত হুরমতি বৈষ্ণবৃদাস ॥ ৮॥

## তথা রাগ।

জয় জয় অতিশয় দীন দয়াময় স্তরপ রামানক রায়। হুমধুর নিগৃঢ় গৌর-রস জগ-জন জানল থাঁক কুপায়। জয় নরহরি গদাধর খ্রীনিবাস। জয় বক্রেশ্বর দাস গদাধর মুকুন্দ-মুরারি হরিদাস II বস্থ রামানন্দ সেন শিবানন্দ (गांविन मांधव वाञ्चरघांव। জয় রুন্দাবন-দাস দাস গৌর-রসে জগজনে করল সম্ভোষ॥ জয় জয় অনস্ত- দাস নয়নানন্দ জ্ঞানদাস যহনাথ। শীমজপ স্নাতন জয় জয় ভট্ট যুগল রঘুনাথ ৷ জয় জয় কৃষ্ণ- দাস কবি-ভূপতি গৌর ভকতগণ আর।

জন্ম জন্ম শ্রীশ্রীনিবাস গুণধাম। দীন-হীন-তারণ প্রেম-রসান্ন গ্রছন মধুরিম নাম॥ গ্রু॥

বৈষ্ণবদাস আশ পরিপুরহ দেহ চরণ-রজ∴সার ॥ ৯ ॥

#### জীজীপদকলতের ।

কাঞ্চনবরণ- হরণ তমু স্থলালত
কৌষিক বসন বিরাজে।
প্রেম-নাম কহি কহত ভাগবতে

ঐচ্ছে বরণ তমু সাজে॥

নিজ নিজ ভকত পারিষদ সঙ্গ হি
প্রকটিই চরণারবিদ্দ।

নিরবধি বদনে নাম বিরাজিত
রাধে ক্লম্ভ গোবিন্দ।

যুগল-জন্ধ গুণগ্রন্থ কর্তক হাতে।
তুরা বিনে অধ্যে
গোবিন্দাস অনাথে॥ ১ • ॥

#### ভাটিয়ারি

জর রে জয় রে জয় ঠাকুর নরোভ্য
থেম-ভকতি-মহারাজ।
বাকে মন্ত্রী অভিয়-কলেবর
রামচক্র কবিরাজ। জ ॥
থেশ্রম-মুকুট-মণি ভূষণ ভাবাবলি
অলহি অল-বিরাজ।
নৃপ-আসন থেভুর-মাহা বৈঠত

শঙ্গহি ভকত-সমাজ।

সনাতন-রূপ-কৃত- গ্রন্থ ভাগবত

অমুদিন করত বিচার।

রাধা-মাধ্ব যুগল উজ্জল-রস

পরমানন স্থ-সার॥

শ্রীসংকীর্ত্তন- বিষয়-রসে উনমত

ধৰ্মাধৰ্ম নাহি মান।

যোগ-দান-ব্ৰত- আদি ভয়ে ভাগত

রোয়ত করম-গেয়ান॥

ভাগবত শাস্ত্রগণ যো দেই ভকতি-ধন

তাক গৌরব আপ।

সাংখ্য মীমাংসক তর্কাদিক যত কম্পিত দেখি পরতাপ।

অভকত চৌর দূরহিঁ ভাগি রহ

নিয়তে নাহি পরকাশ।

দীন হীন জনে দেয়ল ভকতি-ধনে

বঞ্চিত গোবিন্দদাস ॥ ১১ ॥

#### মঙ্গল !

বিষ্ঠাপতিপদ- যুগল-সরোক্তহ-

নিস্তান্দিত-মকরন্দে।

তছু মঝু মানস মাতল মধুকর পিবইতে কর অফুবল্কে॥

হরি হরি আর কিরে মঙ্গল হোয়।

রসিক-শিরোমণি নাগর-নাগরী লীলা করব কি মোয়। জ্ঞ জমু বাঙন করে ধরত সুধাক্তর পঙ্গু চড়ব গিরি-শিখরে। অন্ধ ধাই কিয়ে দশদিগে খোঁজব মিলব কল্পতক-নিকরে॥ ভকত-নথর-মণি-ইন্দু। কিরণ-ঘটায় উদিত ভেল দশদিশ হামকি না পাওব বিন্দু। দোই বিন্দু হাম যেথানে পায়ব তৈখনে উদিত নয়ান। গোবিন্দদাস অতয়ে অবধারল ভকত-কুপা-বলবান ॥ ১২ ॥ জয়জয়জয়- দেব দয়াময় পিরীতি-রতন-থনি। প্রমুপ্তিত পূজা গুণগণ-মণ্ডিত চতুর-মণি॥ মধুর সূর্তি অতি অমুপম বিদিত-চরিত-রীতি রসিক-শেথর স্থময় পদ্মা-বতীর পরাণ-পতি ॥ বিপ্র-বংশ-অব- তংস করি-ভূষণ ভূবনে কে সম তার। প্রেম-রুসে মহা- মন্ত সদা কেন্দু-বিৰেতে বসতি যার॥

শ্ৰীরাধা-মাধব- সেবা-স্থবিগ্রহ কেবা না হেরিয়া ভূলে। সেরস অমিয়া পিরাদিবানিশি ভাসয়ে আনন্দ-জ্বে। পদ্মাবতী-সহ গানে বিচক্ষণ স্থানে কি উপমা সাজে। পশু পক্ষী ঝুরে শুনিয়া গন্ধর্ম কিরের মরয়ে লাজে। যার বিরচিত 🕺 শ্রীগীতগোবিন্দ গ্ৰন্থ স্থাকোমল তাতে। গোবিন্দ আনন্দে "দেছি পদপল্লব"-আদি বৰ্ণিলেন যাতে॥ প্রেমে মাথি রাখি- লেন যেন স্ব এ দৰ অন্তত ভাঁতি। নীলাচল-চক্র জগরাথ যাহা শুনয়ে আনন্দে মাতি॥ ব্রজেক্স-নন্দন গৌরচক্স নব-দ্বীপে অবতরি রঙ্গে। ধার কাব্য-রদ আস্বাদে স্বরূপ রায় রামানক সঙ্গে॥ পর-হ:থে হথী পদাবতী-নাথ পদে যে করয়ে আশ। যুগল-পিরীতি রনে নে ভাসমে

ভণে **बद्रहिनाम ॥ ১**୭ ॥

# <sub>্রেইনে ইন্টেম্</sub> **তথা।** সাহার ১৯৯

জয়জয়চণ্ডী- দাস দয়াময় মণ্ডিত সকল গুণে। অনুপম যার গাওত জগত-জনে॥ বিপ্র-কুল-ভূপ ভূবনে পুঞ্জিত অতৃল আনন্দাতা। যাঁর তমুমন- রঞ্জন না জানি কি দিয়া করিল ধাতা॥ **সতত সে রুসে** ডগমগ নব-চরিত বুঝিবে কে। যাহার চরিতে ঝুরে পশুপাথী পিরীতে মজিল যে॥ শ্ৰীরাধা-গোবিন্দ কেলি-বিলাস যে বর্ণিলা বিবিধ মতে। কবি-বর চারু নিরূপম মহী ব্যাপিল যাহার গীতে॥ শ্ৰীনন্দ-নন্দন নবদ্বীপ-পতি শ্রীগৌর আনন্দ হৈয়া। যার গীতামৃত আম্বাদে স্বরূপ রায় রামানক লৈয়া॥ পর্ম পণ্ডিত সঙ্গীতে গদ্ধর্ম জিনিয়া যাঁহার গান। चारक कीर्छन वामत्म मर्गन পর্ম করুণাবান ॥

বৃন্দাবনে রতি ধার তার সঞ্চে
সতত সে স্থথে ভোর।
রসিক জনার প্রণ-ধন গুণ
বর্ণিতে নাহিক জোর॥
চণ্ডীদাস-পদে যার রতি সেই
পিরীতি মরম জানে।

পের।তি শর্ম জালে। পিরীতি বিহীন জনে ধিক্রছ দাস নরহরি ভণে॥১৪॥

### शानशी।

জয় জয়দেব কবি- নৃপতি-শিরোমণি
বিস্থাপতি রসধাম।

জয় জয় চণ্ডী- দাস রস-শেথর
অথিল ভূবনে অস্থুপাম॥

যাকর রচিত মধুর-রস নিরমল
গত্ত-পত্তময় গীত।
প্রভূমোর গৌর- চন্দ্র আম্বাদিলা
রায় স্বরূপ সহিত॥

যবহুঁ ষে ভাব উদয় করু অন্তরে
তব গাওই ছহুঁ মেলি।
ভূমইতে দারু পাষাণ গলি যায়ত
উদ্দুৰ স্বস্ধুর কেলি॥

আছিল গোপত যতন করি পহ**ঁমো**র জগতে করল পরকাশ। সোরদ শ্রবণে পরশ নাহি হোয়ল বোয়ত বৈষ্ণবদাস ॥ ১৫॥

### শ্রীরাগ।

প্রভু মোর গৌরচক্র প্রভু মোর নিত্যানন্দ প্রভূ দীতানাথ আর। পণ্ডিত গোসাঞি শীবাস রামাই ঠাকুর শ্রীসরকার॥ মুরারি মুকুন্দ <u> शिक्रशनानम</u> দামোদর বক্তেশ্র। সেন শিবানন্দ বহু রামানন্দ সদাশিব পুরন্দর : আচাৰ্য্য নন্দন বৃদ্ধিমস্ত থান ছোট বড হরিদাস। বাস্থদেব দত্ত রাঘব পণ্ডিত জগদীশ তার পাশ॥ আচার্যা রতন গুপু নারায়ণ বিভানিধি শুক্লাম্বর। শ্রীধর বিজয় শ্ৰীমান সঞ্জয় চক্রবর্তী নীলাম্বর ॥

পণ্ডিত গৰুড় <u>শ্রীচন্দ্রশেখর</u> হলায়ুধ গোপীনাথ। গোবিন্দ মাধব ঘোষ বাস্থদেব স্থানিধি আদি সাথ॥ পণ্ডিত ঠাকুর দাস গদাধর উদ্ধারণ অভিরাম। রামাই মহেশ ধনঞ্জন্স বুন্দাবন অমুপাম॥ <u> এরিঘুনন্দন</u> ঠাকুর মুকুন্দ চিরঞ্জীব স্মলোচন। বৈশ্ব বিষ্ণুদাস দ্বিজ হরিদাস গঙ্গাদাস স্থদর্শন ॥ গোবিন্দ শঙ্কর আর কাশীখর রামাই নন্দাই সাথ। রায় ভবানন্দ-স্থুত রামানন্দ গোপীনাথ বাণীনাথ ॥ নীলাচলবাসী সার্বভৌম কাশী-মিশ জনার্দন আর্ া শ্রীশিথী মাহাতি ক্রন্ত গজপতি ক্ষেত্র সেবা অধিকার॥ গোসাঞি স্বরূপ সনাতন রূপ ভটুযুগ রঘুনাথ ৷ শ্ৰীক্ষীব ভূগৰ্ভ গোদাঞি রাঘৰ লোকনাথ আদি সাথ।

বতেক মহাস্ত কে করিবে অস্ত গৌরাঙ্গ সবার প্রাণ। গোরাটাদ হেন সবে ক্লপাবান প্রোম-ভক্তি করে দান।

ইহ সবাকার যত পরিবার সস্তান আছরে যার। গৌর-ভকত আর যত যত

সবে কর অঙ্গীকার।

অধম দেখিরা করণা করিয়া সবে পূর মোর আশ। কাতর হইয়া গুণ সোঙ্রিয়া কালয়ে বৈঞ্চবদাস॥ ১৬॥

তথা ৷

গৌরচক্রের প্রির্কর হিজ হরিদাস নাম।

কীর্ত্তন-বিলাসী প্রেম-ক্রথ-রাশি

যুগল-রদের ধাম॥

তাঁহার নন্দন প্রভু ছইজন শ্রীদাস গোকুলানন্দ। প্রেমের ম্রতি ফ্রান্টি প্রতির সের কন্দা। গোরা-গুণময় সদয়-হৃদয় প্রেমময় শ্রীনিবাস। আচার্য্য ঠাকুর খেয়াতি যাহার ছহু রহে তার পাশ। পিতৃ অনুমতি জানিয়া হুহুঁ হইলা তাঁহার শাখা। শাথা গণনাতে প্রভুর সহিতে অভেদ করিয়া লেখা॥ গৌরাঙ্গ-চাঁদের প্রিয় অনুচর জয় দিজ হরিদাস। জয় জয় মোর আচার্য্য ঠাকুর খাতি নাম শ্রীনিবাস॥ জয় জয় মোর শ্রীদাস ঠাকুর জয় শ্রীগোকুলানন্দ। ক্রণা করিয়া বহ উদ্ধারিয়া অধম পতিত মন্দ ॥ ইহা সবাকার বংশ পরিবার যতেক ঠাকুরগণ। দবার চরণে রতি মতি মাগে देवस्ववनारमत् भन ॥ २१ ॥ তথা। জয় জয় শ্রী শ্রী- নিবাস নরোত্তম রামচক্র কবিরাজ। জয় জয় এীগতি গোবিন্দ রসময়

জয় তছু ভকত-সমাজ 🏻

জয় কবিরাজ বিজ্ঞানস-সায়র শ্রীযুত গোবিন্দদাস। ঐছন কতিহোঁ। না হেরিয়ে ত্রিভূবনে প্রেম-মুরতি-পরকাশ। যাকর গীতে স্থারদ বরিখয়ে কবিগণ চমকয়ে চিত। শুনইতে গৰ্ক থৰ্ক তব হোয়ত ঐছন রসময় গীত॥ জয় জয় বুগল পিরীতিময় শ্রীযুত চক্রবর্ত্তী গোবিনা। গৌর-শুণার্ণবৈ ঘুরত অহনিশি জন্ম মন্দর গিরীক্র ॥ জয় জয় শ্রীযুত ব্যাস রূপাময় শ্রামদাস প্রভু আর। জয়জয় পহুঁমোর রামচরণ শর-ণাগত কর আপনার॥ জয় জয় রীম- ক্লা মুকুলানল দ্বিজ-কুল-তিলক দয়াল। ক্র্ম জয় রূপ ঘটক ষ্টর্সময় মঙ্গল ঠাকুর ভাল॥ কর জয় নূপবর মল-বংশধর শ্রীবীর হাম্বির নাম। জর জয় শ্রীকবি- রাজ কর্ণপূর

গোকুল শ্রীভগবান ॥

জয় জয় শ্রীগোপী- রমণ রসায়ন উজ্জ্বে মূরতি নিতাস্ত। জয় জয় শ্রীনর- সিংহ রুপাময়

জয় জয় শ্রীবল্লভীকান্ত ॥

জয় জয় শ্রী- বল্লভ পরমাদূত

প্রেম-মূরতি-পরকাশ।

প্রভু-স্থতা-চরণ- সরোক্তহ-মধুকর

জয় বহুনন্দন দাস।।

কবি নৃপবংশজ ভুবনে বিদিত যশ খনশ্রাম বলরাম।

ঐছন ছহ<sup>\*</sup>জন নিরূপম গুণগণ গৌর প্রেমময় ধাম।।

ইহ সব প্রভূগণ চরণ বাক ধন ভাক চরণে করি আশ।

অতিহঁ অসতমতি পামর হ্রগতি রোয়ত বৈঞ্বদাস ॥ ১৮ ॥

ইতি মঙ্গল-জনিত পূর্ব পূর্বে গীতকর্তৃগণ-শ্রীচরণ-স্মরণম।।

### স্থহই |

জয় জয় যত্ত্বজলনিধি চক্র । বজকুল-গোকুল-আনন্দ-কন্দ ।। জয় জয় জলধর শ্রামর অঙ্গ। হেলন করতক্র-ল্লিভ ত্রিভঙ্গ। শ্বধই স্থামর মুরলী-বিলাস।
জগজন-মোহন মধুরিম হাস।।
অবনী-বিলম্বিত বনি বনমাল।
মধুকর ঝকক ততহি রদাল।।
তরুণ অরুণ-কৃচি পদ অরবিন্দ।
নথমণি নিছনি দাস গোবিন্দ।। ১৯॥

### এীরাগ।

জয় জয় জগ-জন-লোচন ফান্দ। রাধা-রমণ বৃন্দাবন চাঁদ॥ জ ॥

অভিনৰ নীল জলদ-তত্ত চল চল
পিঞ্জ মুকুট শিরে সাজনী রে।
কাঞ্চন বসন রতনময় আভরণ
নুপুর-রণরণি বাজনী রে।

ইন্দীবর যুগ স্থভগ বিলোচন অঞ্চল চঞ্চল কুস্তম শরে।

অবিচল কুল-রমণীগণ মানস জর জর অভিটের মদন ভরে॥

বনি বন্মান আকান্থ লছিত পরিমনে অনিকুল মাতি রহ'। বিষাধর পর মোহন মূরলী গাওত গোবিদ্দাস প্রত'॥ ২০॥

### ार्ड कर **धाननी** । कि

জয়তি জয় বৃষ্টামু-নন্দিনী স্থাম-মোহিনী রাধিকে। বেণী শশ্বিত বৈছে ফণি-মণি বেঢ়ৰ মাৰতী-মাৰিকে 🛚 শারদ বিধুবর ও মুখ-মগুল ভাবে সিন্দুর বিন্দুরে। ভাঙ-গঞ্জিত জিনিয়া কাম-ধুমু চিবৃকে মৃগমদ বিন্দু রে॥ গরুড়-চঞ্ জিনি নাসিকা স্থবলনী তাহে শোহে গজ-মোতি রে। রাতা উতপল অধর যুগল দশন মোতিক পাঁতি রে॥ হাদর উপর শোহে কুচ যুগ লাজে চকোরিণী ভোর রে। নাভি সরোবরে লোম ভূজগিনী বিহুরে কুচ-গিরি কোররে॥ কণ্ঠে শোভিত হার মণিমর सन्दर्भ नामिनी विस्हे । কনক-দণ্ড জিনি বাছ স্থবলনী ক্তহঁ আভরণ সাজই ॥ ক্ষীণ কটা-ভটে নীল শাটা শোহে কনক কিৰিণী বোলই। চন্দ্ৰণে নৃপুর পৰদ স্থলর रिष्ट छिकिनी व्यानहें।।

যাবক-রঞ্জিত ও নথ-চন্দ্রিক কাম রোরত তা হেরে। দীন বলরাম ক্ষুত্রত পরিহার

(मरु-शन-यूग-ছोरु (त ॥ २১ ॥

### কানড়া।

বন্দে শ্রীর্ষভান্ধ-স্থতাপদম্।
কঞ্জনয়ন-লোচন-স্থ-সম্পদম্ ॥
কমলাবিত-সৌভগ-রেথাঞ্চিত্র্।
ললিতাদিক-কর-বাবক-রঞ্জিত্র্।।
সংসেবয় গিরিধর মতি-মণ্ডিত্র্যা
রাস-বিলাস-নটন-রস-পণ্ডিত্র্যা
নথর-মুকুর-জিত-কোটি-স্থাকরম্।
মাধব-হৃদয়-চকোর-মনোহরম্॥ ২২ ॥

অথ সংকীর্ত্তনস্ত অধিবাসঃ।। ধানশী ।

এক দিন পছঁ হাসি অবৈত মন্দিরে বসি
বলিলেন শচীর কুমার।
নিত্যানন্দ করি সঙ্গে অবৈত বসিয়া রঙ্গে
মহোৎসবের করিলা বিচার।।
ভনিয়া আনন্দে হাসি সীডা ঠাকুরাণী আসি
কহিলেন মধুর বচন।
তা ভনি আনন্দ মনে মহোৎসবের বিধানে
বোলে কিছু শচীর নন্দ্রন।

শুন ঠাকুরাণী সীতা বৈষ্ণব আনিয়ে এখা আমন্ত্রণ করিব যতনে।

বেবা গায় বে বাজায় আমন্ত্রণ করি তায় পুথকু পুথকু জনে জনে॥

এত বলি গোরা রায় আজ্ঞা দিল স্বাক্রয় বৈক্ষৰ কর্ছ আমন্ত্র।

খোল করতাল লৈয়া অঞ্জক চলন দিয়া পূর্ণ ঘট করহ স্থাপন।।

আবোপণ কর কলা তাহে বান্ধ ফুলমালা কীর্ত্তন মণ্ডলী কুতৃহলে।

মালা চন্দন শুয়া ছত মধু দুধি দিয়া থোল মঙ্গল সন্ধ্যাকালে।।

গুনিয়া প্রভুর কথা প্রীতে বিধি কৈল যথা নানা উপহার গন্ধবাদে।

সবে হরি হরি বোলে থোল মঙ্গল করে প্রমেশ্বর দাস ভাষে ॥ ২৩ ॥

#### মঙ্গল রাগ

নানা দ্রব্য আরোজন করি করে নিমন্ত্রণ
কুপা করি কর আগমন।

তোমরা বৈক্ষরগণ মোর এই নিবেদন
দৃষ্টি করি কর সমাপন।

করি এত নিবেদন আনিল মহাস্করণ কার্ত্তনের করে অধিবাস। অনেক ভাগ্যের বলে বৈষ্ণব আসিয়া মেলে কালি হবে মহোৎসব-বিলাস।।

শ্রীকৃষ্ণের দীলা গান করিবেন আসাদন পূরিবে দবার অভিলাষ। শ্রীকৃষ্ণ চৈতক্সচন্দ্র দক্ষণ ভকতবৃদ্দ

अन शांत्र वृन्तिवन्तां ।। २८।।

# বরাড়ি ।

আম পল্লব সারি।

অাম পল্লব সারি সারি।

বিজে বেদধ্বনি করে নারীগণ জয়কারে

আর সবে বলে হরি হরি।।

দধি ঘৃত মঙ্গল করি সবে উত্রোল করয়ে আনন্দ পরকাশ।

আনিয়া বৈষ্ণবগণ দিয়া মালা চন্দন কীৰ্ত্তন মঙ্গল অধিবাস।।

স্বার আনন্দ-মন বৈষ্ণবের আগমন কালি হবে চৈতস্ত-কীর্ত্তন। আকৃষ্ণ চৈতস্ত নাম শ্রীনিভ্যানন্দ ধাম গুণ গার দাস স্থনাবন। । ২৫।।

### কামোদ।

জর জর নবছীপ মার ।

পৌরাস আদেশ পাঞা ঠাকুর অহৈত বাঞা করে থোল মজলের সাজ ।

আনিরা বৈঞ্চব সব হরিবোল কলরব মহোৎসবের করে অধিবাদ।

আপনি নিতাই খন দেই মালাচন্দন করে শ্রির বৈঞ্চব সম্ভাব ॥

পোবিল মূলস লৈরা বাজার তাতা থৈয়া থৈয়া করতালে অবৈত চপল ।

হরিদাস করে গান শ্রীবান মজল ॥

চৌদিকে বৈঞ্চবগপে হরি বোলে ঘনে ঘনে কালি হবে কীর্তন মহোৎসব ।

জ্ঞাজি খোল মজলি বাধিরে আনন্দ করি বংশী বলে দেহ জর রব ॥ ২৬ ॥

## **ष्ट्र**भागी ॥

প্রীপদ কমল স্থারস পানে।
প্রীবিগ্রহ গুণগণ করি গানে।
প্রীমুখ কমে স্থারস সদী।
অন্তবি কড ভেল প্রেম ডরবী।
রে মন কাহে করবি অনুভাগে।
পূর্ব কেরাসময় কম মারণে। বা

বে কিছু বিচারি মনোরখে চড়িব।
পত্ঁক চরপর্গ সার্থি করিব ॥
রথ বাহন করু প্রাণ ছ্রক।
আনপান পড়ি মোহ ভক।
লীলাজলিধি তীরে চলু ধাই।
প্রেমতরকে অক অবগাই॥
রক তরকী সলী হরিদাসে।
রতিমণি দেই পুরব অভিলাবে॥
সো রসজলিধি মাঝে মণিগেহ।
তহিঁ রহু গোবিক স্কোম দেহ॥
সারথি লেই মিলায়ব তার।
গোবিক্লাস গৌরগুণ গার॥ ২৭॥
ইত্যাদি মকলাচরণম॥
ইত্ত প্রথমঃ প্রবঃ।

অথ পূর্ববরাগ। তত্ত্তিত শ্রীগোরচন্দ্র।

कारमाम ।

নাগরী উক্তি।

নিরমণ গোরা জন্ধ কৃষ্টিত কৃষ্টিক কৃষ্ট্ বেরইডে গড়ি গেলু ভোর। ভাঙ ভূজসমে বংগল মনু মন অস্তর কাঁপরে মোর। সজনি বব হাম পেণনু গোরা। আকুল দিপ বিদিপ নাহি পাইরে यहननानरम् यन ट्रोडो । अ ॥

অঙ্গণিতনয়নে তেরছ অবলোকনে বরিং কুমুমশর সাধে। জীবইতে জীবনে প্রেছ নাহি পারসূ **फुवनू शका अशास्त्र**॥

মন্ত্ৰ মহৌৰধি তুহ জানসি যদি মৰু লাগি করবি উপায়। বাস্থানৰ ঘোৰ কহে ভন ভন এ সৰি গোরা লাগি প্রাণ মোর যার॥ ১॥ ২৮॥

### शाननी ।

## পরশপর সধ্যক্তি।

খরের বাহিরে দত্তে শতবার ভিলে ভিলে আইদে যায়। मन छेठाটन निवास स्वय

बादे क्षमन द्वारन वा देशन।

শ্বক ভুকজন জৰ নাহি মন কোৰা বা কি দেব পাইল। জ।

महादे हक्त के किल के किल के किल जरून मध्रम नाहि करत । বসি থাকি থাকি ভূষণ থসাঞ। পরে । বিরুদে কিশোরী রাজার কুমারী ভাহে কুলবধু বালা। কিবা অভিবাবে আছরে লালসে না বুঝি তাহার ছলা। এ ভাহার চরিতে হেন বুঝি চিতে .. হাত বাড়াইল চাঁদে। চণ্ডীদাস কয় করি অভুনর **ट्रिक्ट् कानिया कात्म ॥ २ ॥ २३ ॥** 🍹 সিশ্বড়া। রাধার কি হৈল অন্তরে ব্যথা। ৰসিয়া বিরলে পাকরে একলে না ওনে কাহার কথা : C नमारे (अप्रात्न ) हाट्ड (सव शास्त्र না চলে নরনভারা। বিরতি আহারে বালা বাল পরে যেমত বোগিনী পারা। এলাইরা বেণী ফুলরে গাখনী দেখরে থসাঞা চুলি। হসিত বৰনে চাহে দেব পাহৰ কি কৰে ছহাত ছুলি।

धक निर्व कति । भारत महती

कर्छ करत विशेकान । চণ্ডীৰাস ক্ষ

নৰ পরিচয়

कानिया बच्चत्र महत्व ॥ ०॥ है ।॥

আড়ানা স্থহিনি।

কহ কহ সুবদ্ধি বাথে। কি তোর হইল বিয়াবে ॥ কেন তোরে আন মন দেখি। কাহে নথে ক্ষিতিতলে লিখি ॥ হেমকান্তি ঝামর হইল। রাকা বাস থসিয়া পড়িল॥ আখিবুগ অৰুণ হইল। মুখপন্ম ভ্রখাইয়া গেল॥ এমন হইলা कি লাগিয়া। ना कहिल कां है यात्र हिया ॥ এত ভনি কহে ধনী রাই। এर्ड नन्त्र मुक् कारे । 8 म ०० ॥

সিশ্বুড়া।

স্থী প্রতি রাধার উক্তি।

क्षार्थंत्र बटन

থাকে কোন জনে

क्यान नका चानि।

একি আচ্বিতে

लेशान्त्र भरव

महत्य प्रकृत गणि।

বোড় ভুক্ক বেন কাম্বের কামনি কেলা কৈল নিব্ৰহাণ। তরণ নয়নে তেরছ চাহনি

্ত বিষয় কুমুদ বা**ণ** ॥

সুন্দর অধরে মধুর মূরলী হাসিরা কথাটা কর। দিজ তীমে কহে ও রূপ নাগর

(मिश्रित भन्नोग तत्र ॥ १ ॥ ७८ ॥

### কামোদ।

কালিয়া রূপ মরুমে লাগিয়া

সোয়ান্তি না হয় মনে। বিরলে বসিয়া স্থীরে কৃত্ই

प्रवाहरन त्रव् थारन ॥

এ বোল ভনিয়া বিশাখা ধাইরা শ্রাম কলেবর দেখি।

রাইরের গোচরে দেখাবার তরে গটের উপরে কেখি ।

শানি চিত্ৰপট বাইরের নিকট সমূপে ইহিলা স্থী। শে রূপ দেখিরা মূর্ইছিত হৈর। গড়িলা কমল মুখী ৮

মন্দাকিনী পারা শত শত শত ধারা ও হটি নরানে বছে।

করহ চেত্র পাবে দর্শন
দাস উদ্ধবে করে॥ ৮ ॥ ৩৫ ॥

did odica dodina nas

### ऋश्नी।

ষে দেখেছি যমুনার তটে। সেই দেখি এই চিত্ৰপটে # বার নাম কহিল বিশাখা। ति **बेरे भारे बाह्य तिशा !** यादात्र मूत्रनी स्वनि छनि। সেই বটে এ বুসিকমণি ॥ ভাট মুখে যার গুণ গাথা। দুতী মুখে তুনি বার কথা।। এই মোর হরিরাছে প্রাণ। ইহা বিনে নহে কেই আন # এত কহি মুরছি পড়ার। স্থীপ্ৰ ধরিয়া তেলাবার ॥ পুন: কহে পাইয়া চেতনে। कि स्थित स्था अस्त म স্থীগণ কররে আখাস। खर्ण बस्धायत मात्र ॥ ३ ॥ ७६ ॥

# ्रशास्त्र १७ **वाला शन्नी**ाः हेळील र

রাইক ক্রছে দশা দেখি এক সখী ভূরিতহি করল পরান।

নিরজনে নিজগণ সঞ্জে বাঁহা মাধ্ব বাই মিলিল সেই ঠাম॥

তন মাধৰ, আর হাম কি বোলৰ ভোর।

সে। ব্ৰভান্থ কুমারী বর স্থলরী কর স্থলরী কর স্থলরী কর বিশি ভুৱা লাগি রোর ॥ গু॥

ভূরা অমুরপ এক পটে লিখিয়া

দেয়ল তাকর আগে।

সোরপ হেরি

মানরে করম অভাগে #

আকাশে নৰ জ্ব- ধর ছেরি সোধনী কাতরে ককু প্রলাপ ৷

নীলাম্বর অব সহই না পারই

অৰুণাছরে তত্ত্বাপ।

ঐছে দশা হেরি সকল স্থীগণ
ব্যাহত বামিনী ভাগি ।

কতে বছনন্দন শুন নন্দনন্দন মিলাই সব জন ভাগি॥ ১০॥ ৩৭॥

The state size with

नानत्त्राद्यम् साम्बाजान्यः स्मृष्ट्रिमाज्या । देवत्राग्यः नामिक्नमात्मा त्यारमाकूग्रमंभावन ॥ कार्य लालमा

তহচিত শ্ৰীমহাপ্ৰভু শ্ৰীরাধা ভাব ভাবিত **॥** 

कारमाम ॥

কুমুমিত কানন হেরি শচীনন্দন

ডারত কাঁহে ঘনখাস।

কণে করতলে অব- সম্বশনী,

ক্ষণে ক্ষণে রহত উদাস ॥

দেখ নব ভাবতরঙ্গ।

যো অভিনাসহি প্রকট নবদ্বীপে

তাক নাহিক ভঙ্গ ॥ ধ্ৰু ॥

চঞ্চল নয়নে চাহ চপ্লমতি

জিত গতি মন্ত গল্পরাজ।

পুন: পুন: ঐছন হেরভ ফুলবন

कडू नाहि त्याय काक ॥

ঐছন ভাতি করি তারণ ত্রিভূবন

ভাওল প্রেমায়ত দানে।

রাধামোহন বিন্দু না পাওল

আপন করম বিধানে ॥ ১১ ॥ ৩৮ ॥

বড়াডি।

नानदर्गादश ।

इक द्रांष्टि ग्रेश वहन ।

ভন্ইতে চমকই গৃহপতি রাব।

ভুৱা মন্ত্ৰীয় ববে উনম্ভি ধাব ।

ৰাহ না চিত্ৰই কাল কি গৌর। क्नम त्नराति नव्रत्न अक त्नात ॥ কাহাঁ ভূহ গৌরী আরাধলি কান। জানমু রাই তোহে মন মান ॥ স্বামীক শরন মন্দিরে নাহি উঠই॥ একলি গহন কুঞ্জ মাহা লুঠই ॥ পতি কর পরশে মানয়ে জঞ্চাল। বিজনে আলিক্ই তরুণ তমাল ॥ মুর্লী নিসান শ্রবণ ভরি পিবই। खक्रकन वहन चनहें नाहि चनहें॥ ঐছন মরম যতহ অভিলাব। के उन्न निर्दितिय शाविन्समात्र ॥ ১२ ॥ ७२ ॥

লোচন স্থামর

বচনহি ভাষর

ভামর চাঞ্চিচোল।

ভামর হার ভামর

शामत म्थी कक कात ॥

बाधव हेटच, आमि द्यानिव जान। মচপদ কুলবতী মতি উদভারণি কিলে তুহ বোহিনী জান । এ।

মরমহি ভামর

ঝর ঝর লোর

পরিজন পাগর

वामत्र मूथ व्यत्रिका

লোলিভ কাজর

বিগলিত লোচন নিন্দ ।

রজনী উজাগর

নাগর তুহঁ কিয়ে ভোর।

গোবিনদাস কতত আনোয়াসব

মিলব হু নন্দকিশোর॥ ১৩॥ ৪০॥

#### গান্ধার ॥

সহজে স্থানিক প্তলি গোরী।
জারল বিরহ আনলে তোরি ॥
বরণ কাঞ্চন এ দশবাণ।
শ্রামরি সোঙরি তোহারি নাম ॥
শুনহ মাধব কহিছ তোর।
শ্রমতি না দেই দিন রজনী রোর ॥ গুল ।
শাঙ্র তৈ গেল ধুজুর তুল ॥
মূরল কবরী উরহি লোল।
শ্রমেক উপরে চামর ডোল ॥
গলার এ গজমোতিম হার ।
বর্ল বহিতে গুকুর ভার ॥
আক্রণ আকুরি বল্রা তেল ।
আক্রণ আকুরি বল্রা তেল ।
আকুল আকুরি বল্রা তেল ।
আকুল আকুরি বল্রা তেল ।

### সুহই॥

আপুরুপ জুয়া মুরলী ধরনি।
লালসা বাড়ল শবদ শুনি ॥
কি রূপে এরপে দেবিরা সেই।
উবেগে ধনী না ধরে দেই ॥
আগিরা ইইল শরীর কীণ।
অসিত চালের উদর দিন ॥
জড়িত হাদরে করত ভেদ।
অতি বেরাকুল করত খেদ॥
পাণুর বরণ বিয়াধি বাধা।
মুরছি নিখাস হরল রাধা ॥
অব যদি তুই মিলই তায়।
গোকুল মঙ্গল স্বাই গায় ॥
আনাদাস কহে শুন হে শুাম।
औবন স্থাদ তোহারি নাম॥ ১৫॥ ৪২॥

ঐকৃষ্ণ প্রপ্রাক্তি:।

### মলার ॥

রাইক রাগ কহলি বহু মোর।
কৈছনে ঐছন সাহস হোর।
পরনারীগ্রহণ দহন সম তাপ।
ধরম মরমজ্ঞানী কো কফ পাপ।
তাহে বলি সঙ্গী সব দেখে নব লোধ।
জাগর দুরে বহু সপন্তি রোধ ।

্তাত্তলী রথি কাছ বচন অন্থবন। ্ ভাত কহ রাধানোহন লাগল ধন ॥১৬॥৪৩॥

গুলা প্রান্ধ বাদ**্রোরাগ ।** ত্রালা প্রা

কাছক জছন বাত।
তানি সধী অবন্ত মাথ।
কিছু না কহল কেরি।
লোরে পছ না হৈরি॥
মালিন বদন ভেল।
ধীরে ধীরে চলি গেল॥
আঙল রাইক পাশ।
কি কহব জ্ঞান হরিদাস॥১৭॥৪৪॥

#### গান্ধার ॥

০ নিজ সধী বদন হেরি হংগামুখী বৃঝি কহে গদগদ বাত।

রসিক স্থনাহ মোহে যদি উপেধন কাহে তাপায়সি গাত॥

মঝুলাগি যতন কয়লি তঃখ পায়লি দৈবহি যদি নহ কাজ।

ভূত কাহে বিরুস্ বদুন ঘন রোমসি কিরে পুন কর্মি অকাজু। এ স্থি কর ভূত পর উপকার।

हेर बुम्मावरम स्म अध्यक्ष

मृज छन् संस्थित स्मातः॥ अ ॥

কবহু খাম ওছ পদ্ধিন পাওব তবহু মনোরথ পৃষ। ইহ সব বচন ভিনই নাহি পারই রত রাধামোহন দুর #১৮/48##

সখ্যকি:

### বরাড়ী।

মধুর মধুর তুরা রূপ।
জগজন লোচন অমিয়া স্কর্মপ ॥
রূপ চাহি গুণ নহে উন।
সো তম্থ তেজবি কাইে মহী করি শূন॥
ফুলরি মোহে না কর আন ছল।
হাম বলি জাঙ তুরা মুখচনা ॥
তবহু সফল দিন মোর।
রাই লিউঁ অব যব কামুক কোরা ॥
হাম পৈঠব কালিন্দী বারি।
তবহু পুরব মনোর্থ তোরি ॥
যতন করব হাম সোই।
কামু বৈছে তুরা বশ হোই॥
গোবিন্দান ভালে জান।
কামুক জনত প্রাণ ৪ ১৯ ॥৪৬॥

অথ এক্ষতাপুতাপঃ ।

### শ্রীগান্ধার॥

হামারি নিঠুরপনা ভনই ইন্দুম্থী

ভাক্ই প্রেম অঙ্কুর।

হ:থিত হদয়মাহা ধৈরজ করি পুন

সোরস করে জানি দুর ॥

কিয়ে জানি পাপহি মদন কদন শরে

তেজই নিরুপম দেহ।

হাহা মনোরণ সব কৈল আনমত

কি করব অব হাম থেই॥

অব মঝু অন্তর জলত তুষানল সহই নাপারই অকে।

হোই সমীরণ বাচুই পুন: পুন:

দারণ মদন তরকে॥

ধিক যৌবন ধন জীবন আভরণ

ধিক মোর এ সুথ সকল।

কহ রাধামোহন অহুগত বঞ্চিলে

পরিনাম ঐছন ফল॥ ২০॥ ৪৭॥

সুহই॥

যাহা বিলপয়ে বর কান। তাহা স্থী করল প্রান ॥ মিলল নাগর পাশ। দীঘল তেজই নিশাস। নাগর ছেরি কিভোর। নয়**সহি আনন্দ লোর** । ি

কাফু কহই মুহভাষ। পুরব কি মুঝু অভিলাম্যা -क्षेत्र काइए धनी बाहे। . छनदेरा मञ्जू निर्वृतारे ॥ . হাম কয়ল পরিহাস। তাকর বিরহ হতাস ॥ অতয়ে গমন করু ভাই। ত্রিত হিঁ আনবি রাই॥ এত ভূনি সো স্থী গেল। রাইক সমুখ হি ভেল॥ কাত্তক ইহ রস ভাষ। স্বহ ক্রল ধনী পাশ। সচকিত সো ৰবনারী তৰহ করল অভিসারি॥ ভভক্ষণে আওল কুঞ্জ। স্থীগণ আনন্দ পুঞ্জ। हेर यष्ट्रनम्नमात्र । ধায়ল কাত্ৰক পাশ। ২১॥ ৪৮॥

ততঃ স্থীশিক্ষাব্চন্ম্॥

# ভূপালী।

খন খন এ ধনি ৰচন বিশেষ। আজু হাম দেশ্বৰ তোহেছ উপলেশ। হৈছিলছি বৈঠবি শ্বনক দীম।
হেরইতে পিরা মুখ নোছেবি শীম।
পরনিতে হুই করে বারবি পারি।

নান করবি পহা করইছে বারী।

যব হাম গোঁপর করের কর আপি।

সাধনে ধরবি উলাট মোহে কাঁপি।

বিজ্ঞাপতি কহ ইহ রস্ ঠাট।

কাম শুক্ত হই শিখারব পাঠ। ২২॥ ৪৯॥

### ু কামোদ। े

রাইক কুঞ্জ প্রমন্ শুরি মাধ্ব অচপল প্রেম অস্থ্যানি। মিলইতে গ্রম করল বর নাগরী আপানি আপনা না জানি॥

চলইতে থলই চলই নাহি পারই

ক্ত কত ভাব বিগারি।

পুগদে পদে হেম- কদলী হেরি আকুল
গদগদ পুছে সেই নারী॥

ঐছন বছত হড়ৰে পছ মিলল
হুছ হৈছি ছুছ ভেল ভোৱ।
ছুছ মন মানঃ সকল ভেল জীবন

ধৈরজ ধরি হরি অঞ্চল পরশিতে ধনিক মুগধি পরকাশ। রাধামোহন পর্ক চিতে ক্ষণ সংশয়

পিছে ব্যল পরিহাস ॥ ২৩ ॥ ৫০ ॥

তিতঃ সংক্ষিপ্ত নবোঢ়া।
থরথরি কাপরে গনগদ ভাষ।
লাজে বচন নাহি করে পরকাশ ॥
শুন শুন কাহ কররে ধনী জীত।
কবহ না জানই স্বরতিক রীত ॥
ভূহ হোয়বি চক্ষদ সম্ম শীত।
তোহে সোপল ইহ বালচরিত ॥
রিউস করবি বুঝি বিদগধ রায়।
বৈছনে স্কুমারী হৃংখ নাহি পায় ॥

নিরত্রে রাখি ইহ হাম সব বাই।
এত কহি সব স্থী রহল ছাপাই॥
ছহ ক কেলি দরশক পাশে।

তথা ৷

কব হোয়ৰ রাধামোহন দাসে # ২৪ ॥ ৫১ <sub>#</sub>

পরিচর ক্রাধামাধ্য মেলি।
পরিচর ক্লাহ দূরে রছ কেলি।
পরিচর ক্লাহ দূরে রছ কেলি।
ভাষ্ট্রকর করইতে অবনত বরনী।
চকিত বিলোকমে নধে লিখু ধরণী।

অঞ্চল পর্যলিতে চঞ্চল কাম।
রাই করল পদ আধ পরাদি॥
বিদর্গধ মাধক অন্তত্তক জাদি।
রাইক চরলে গদারল পাণি॥
করে কর বারইতে উপজ্জর প্রেম।
দারিদ ঘট ভরি পাওল হেম॥
হাসি দরশি মুধ আগোরলি গোরী।
দেই রতন পুন লেয়ল চোরি॥
ঐছন নিরূপম পহিল বিলাস।
আনন্দে হেয়ত পোধিনদাস॥ ২৫॥ ৫২॥

### ভূপালী।

হারত পিয়াসে ধরল পছ' পাণি।
করে কর বারই তরল নরানী॥
হঠপরিরস্তণে পরশিত গাত।
নহি নহি বলি চুলারত মাথ॥
অভিনব মদন তরজিনী রাই।
ভাম মাতক রক অবগাই॥ জ॥
চুছনে সকোচ লোচম-তার।
পিবইতে অধর রচই সীতকার॥
নথর পরশে ধনি চমকই গোরী।
দংশেইতে চমকি উঠারে তই মোরি॥
কহইতে কই সদসদ পদ আমা।
আন মতম জনসিজ উমানান

তৈধনে রোধত বহি প্রসাদ ।
গোবিন্দাস কহ রস্ মরিঘার ॥ ২৬॥ ৫০॥
ইতি সংক্ষিপ্ত সম্ভোগঃ দ্বিতীরপ্রবর ।

স এব পূর্ববরাগঃ। প্রকারান্তরমাহ। শ্রীকৃষ্ণস্থ পূর্ববাগঃ॥ তহচিত শ্রীমহাপ্রভুঃ॥ সুহই। জয়জয়স্কী॥

জাবে মোর পোরা বিজ্ঞানি ।
রাধা রাধা বলি কান্দে লোটার ধরণী ।
রাধা নাম জপে গোরা পরম যতনে ।
হরধুনী ধারা বহে অরুণ নয়ানে ॥
কণে কণে গোরা অল ভূমে গজি যার ।
রাধা নাম বলি কণে কণে মুক্ছার ॥
পুলকে পুরুল তন্তু গদ গদ বোণ।
বাহু কহে গোরা কেন এত উত্তরোল ॥ ১ ॥ ৫৪

### বালা ধানশী।

অস্কৃণ হেরিরে তোহে আন চিত।
দূরে গেও মুরদী আলাপন গীত।
নরম না ক্ কাতে প্রাণ সালাভি।
তুরা মুধ হেরি জনত মুকু হাতি।

মরকত জিনির বা কলেবর কাঁতি।
সো অব ঝামর কুবলর ভাঁতি॥
হেরইতে নির্মল লোচন জার।
কো জানে কৈছে করত হির মোর॥
গুনইতে ঐছন সুহচর বাণী।
ছোড়ি নিখাস উলটায়ল পাণি॥
দুর্জবগাহ মদন অভিলাষ।
সুম্ঝিয়া কহ ঘল শ্রামর দাস॥২॥৫৫॥

#### গান্ধার।

কালিদমন দিন মাহ।
কালিদা কুল কদৰক ছাহ॥
কত শত ব্ৰজ নব বালা।
পেথলু জম্ব থিব বিজ্বিক মালা॥
তোহে কহো স্বৰণ সাঙ্গাতি।
তব্ধবি হাম না জানি দিবা ঝাতি॥
তহি ধনী মণি ছই চারি।
তহি মনমোহিনী এক নারী॥
সোরহ মঝু মনে পৈঠি।
মনসিজ ধুমে ঘুম নাহি দীঠি॥
অকুক্ষণ তহিক সমাধি।
কো জানে কৈছন বিরহ বিরাধি॥
দিনে দিনে কীণ ভেল দেহা।
গোবিক্দ দাস কহ এছে নবলেহা॥ ০॥ ৫৬॥

## ুল্ভ প্ৰাৰশী 📭 🔻 ১৯১১

গেলি কাৰ্মিনী গঞ্জ গামিনী

বিহসি পালটি নৈহারি।

रेख जीनक কুহকী ভেলি বর নারী।

কুৰুম সায়ক

জোরি ভূজধুগ মোরি বেঢ়ল

তত্হি বয়ান সূছনা।

কাম পূৰুল দাম চম্পকে रेयरक भात्रम हम्म॥

উরহি অঞ্চল ঝাঁপি চঞ্চল

আধ পয়োধর হেরু।

প্রবন পরাভবে শরদ খন জন্ম

বেকত করল স্মেক।

পুনহি দরশনে জীবন জুড়ায়ব

টুটব বিরহক ওর।

চরণে যাবক

দহই সব অঙ্গ মোর।

ভণরে বিভাপতি 🚈 ্ ্রান্ত যুবতি

চিত খির নাহি হোর।

्राहर श्रेम कि विलय स्थाप ॥ इ. ॥ ६ १ ॥

#### প্রীপ্রদক্ষতক ।

#### সুহই।

রতন মন্দির মাহা বৈঠল ফুলরী
সধী লয়ে রস পরচার।

হসইতে-থসরে কত বে মণি মোতিম
দলন কিরণ অব ছার॥
ভন সঞ্জনি কহইতে না রহে লাজ।
সোবর নারী হামারি মন-বারণ
বান্ধল কুচগিরি মাঝ॥
মঝু মুখ হেরি ভরম ভরে ফুলরী
ঝাপই ঝাপল দেহা।
কুটিগ কটাক বিশিপে তমু অব অব
ভাবনে না বান্ধই থেহা॥
করে কর জোরি মোরি তমু ফুলরী
মোহে হেরি সধী করু কোর।
গোবিল্লদাস ভণ ভেই নন্দনন্দন
গোলভ মদন হিলোর। ৫॥ ৫৮॥

তিরোতা ধানশী।

অপরূপ পেথলু রামা।
কলক লতা অব- লহনে উরল
হরিণীহীন হিমধাযা॥
বঙ্গন সলিমী সৌ অঞ্চনে রঞ্জিত
ভাঙ বিজ্ঞলী বিলাস।
চিকিড চক্ষোর জোর বিধি বারুল
কেবল কাজর পাশ।

| গিরিবর গুরুষা 🚜 🐯 প্রোধর পরশিতে                       |
|---|
| িলেওীম গুৰুমতি হারা।                                  |
| কাম কমু ভবি   |
| ্রারক স্বধুনী ধারা ॥                                  |
| পরসি প্রয়াগে ক্রিন্ত ক্রাপ শৃত্ জাগই                 |
| সো পাওৰে বহু ভাগী।                                    |
| বিভাপতি কহ গোকুল নায়ক                                |
| গোপী-জন অমুরাগী॥ ৬॥ ৫৯।                               |
| অত্ত-যব ধরি পেখলু রামা ইত্যাদি                        |
| र्नाः यथा म <b>खदः (क्यूम्</b> ॥ 🚟                    |
| ্ৰ স্থে শ্ৰীকৃষ্ণস্থাপূতী।                            |
| তছচিত গৌর্চ <b>ক্রো</b> য <b>থা</b> ॥                 |
| ্রক্ত ১৮ ে প্রাহিড়া। ১৯৮১                            |
| কি মধ্র মধ্র ব্রহমে নর কৈশোর                          |
| <sub>ক্রনা</sub> মুর্ভি জ্গমনোহারী। 👵 🌼 🐃             |
| কি দিয়া কেমনে বিধি নির্মিল গোরা তমু                  |
| আকুল কুলবতী নারী॥ ঞ্।                                 |
| विकटन छेन्द्र करते श्रीशास्त्र श्रीशास्त्र तम मामस्टत |
| গোরা রূপে আনা তিন লোকে।                               |
| তাহি এক অপরপ যেবা দেখে চাঁদ মুখ                       |
| মনের আঁধার:নাহি থাকে:                                 |
| <b>हन</b> ेहनद्रश्चममनि क्रिय शित शामिनी              |
| এছন বরপক আন্তা 🖅 💮                                    |
| ভাটেই নাগরালি ওবল ভ্লাইল সৰ দেশ                       |
| THE STATES CONTENT IN                                 |

যতি সতী মতি হত গেল মেনে কুলব্রত
আইশু ভুবন চিত চোর।
হরেক্ষ দাস কয় গোরা না ভ্রিলে নয়
এ ঘর করণে দেয় ডোর ॥ এ॥ ৯০ ॥

ভিয়োভা খান্দী धनि धनि वर्गान कन्य धनि (कार । সব জন কারু কর করি কুরিং সো ভুরা ভাবে বিভার ॥ জ ॥ চাতক চাতি তিয়াসল অখন চকোর চাহি রহ চনা। ওয়া লভিকা অবলয়নকারী মঝুমনে বাগল ধনা। কেশ পদারি যুবহু উহু আছিলি উর পর অম্বর আধা। সৌ সব হেরি কামু ভেল আকুল कर धनि हैए कि नगधी। হস্টতে কব তহঁ দশন দেখায়লি করে কর জোরতি মোর। অলখিতে দিঠি কব ক্লায়ে পদার্গল পুন হেরি সুখী করি কোর ॥ এত हैं निर्म् कहत द्वादि समित कानि हेर करूर विशान হ্বর পুত্রি তুরু নো শুন কলেবর

কবি বিভাগতি ভাগ ॥ 🗷 ॥ ৬১ ॥

# বরাড়ী॥

কত রে কলাবতী বুবতী স্থম্রতি
নিবসতি গোক্ল মাহ।

হরি উপহাসি রভসরসে কাহক
কুটিল নরনে লাহি চাহ॥
স্থারি অতরে করিরে অক্সমান।
ভঙ্কণে বামি বরত তুহঁ হোড়লি
নারীবরত নিল কান ॥ জ্ঞ ॥
ত্যা নিজ নাম গান ঘন গাবই
সো এক আখর রক।
ভনইতে রাতি রতন রতি রাড়ল
চমকই তোহারি আভক্ষ॥
ত্যা গুণ গান ঘন কত গাবই
আর কত মুরলী নিদান।
সহচরী কোরে ভোরি তোহেঁ ডাকই
গোবিক্লান পরমাণ ॥ ১॥ ৬২ ॥

## ভূপালী।

জীবন চাহি যৌবন বড় রক।
তব বৌবন বব স্পুক্ষ সক।
স্পুক্ষ ত্রেম কবছ জানি ছাড়ি।
দিনে দিনে চান্দ কলা সম বাঢ়ি।
তৃহ বৈছে নাগরী কান্থ রস্বস্ত।
বড় পুণো রস্বস্তি মিলে রস্বস্ত॥

তৃহ ধনি কহিপি করিরে অফুসঙ্গ।
চৌরি পিরীতি হরে সাধ গুণ রঙ্গ।
সংপ্রুপ ঐছন নাহি জগ মাঝ;
আর তাহে অফুরত বরজ সমাজ।
বিশ্বাপতি কই ইথে নাহি সাজ।
রূপ গুণবতিকা ইহ বড় কাজ। ১০॥ ১০॥

প্রত্যুক্তিঃ ৷ বিশ্ব বিশ্ব

🖲 রাগ 🛭

না জানি প্রেম রস নাহি রতিরক।
কেমনে নিশব হাম স্থাক্তব সঙ্গ ॥
তোহারি বচনে যদি করব পিরীত।
হাম শিশুমতি তাছে অপষশ ভীত ॥
সধি হে হাম অব কি বোলব তোর।
তা সঞ্জে রভস কবহু নাহি হোর॥
সো বর মাগরু নব অনুরাগ।
পাঁচ শরে মদন মনোরখ জাগ॥
দরশে আলিঙ্গন দেরব সোই।
জাউ নিকসব যব্ রাধর কোই॥
বিদ্যাপতি কহু মিছাই তরাস।
ভনহ ঐছে নহু তাক বিলাশ॥ ১১॥ ৬৪॥

হামারি বচন গুণারাই।

দূরহিঁ তাক পরণ বিনে অব তুহুঁ

মন্দিরে ভর অবগাই।

বিদগধ রসিকদরশে ব্রবি ব্যবহার।

বৈছন সংশয় আরু তুর্ছ না করবি
শুভকণে কর অভিদার॥

বৈছন বচন শুনিয়া বর মুগধিনী
নিজ প্রিয় সহচরী মেলি।

বেশ বনাই কত যে মনে সংশয়
কালিনী তীরহি গৈলি॥

অপরপ কুঞ্জ কুটীরে নব নাগর
পথ হেরি আকুল পরাণ।
সকল সধী পরবোধি মিলায়ল
বহুনন্দন রস্ গান॥ ১২॥ ৬৫॥

#### कारमान ।

একে ধনী পছমিনী সহজেই ছোটি।
করে ধরইতে কত করুপা কোটী।
হঠ পরিরস্তাণে নহি নহি বোল।
হরি ভরে হরিণী হরি-হিরে ভোল।
বাবি বিলাসিনী আকুল কান।
মদন কৌজুকী কিরে হঠ নাহি মান।
মরনক অঞ্চল চঞ্চল ভাণ।
ভাগল মনমধ্য মুদিত সম্বান।
বিভাগতি কহ এছন রজ।
মাধামাধ্য পছিলহিঁ সল্ব ৪,৩%। ৬৬।

অত্র স্থরত পিরাদে ধরল পহ'পাণি ইত্যাদি शहर यथामस्यरतस्य ॥ ইন্তি কৃতীয় পলব: ॥ অথ পূৰ্মবাগঃ প্ৰকাৰান্তৱ মাহ ॥ षाध শ্রীরাধিকারা: यथा ॥ তছুচিত শ্রীমহাপ্রভ:। ্রীরাগ।

नीत्रम नशास्त नत घन जिक्करन

পুরল মুকুল অবলম্ব।

त्यम भकत्रम विम् विम् हम्रङ

বিক্সিত ভাৰক্ষম ৷৷

কি পেধনু মটবর গৌর কিশোর।

অভিনব হেম ক্লপতক সঞ্জ

স্বধুনী তীরে উলোর ॥ ঞ।

চঞ্চল চরণ- ক্ষলতলে ঝক্ক

ভক্ত ভ্রমরগণ ভোর।

পরিমল লুবধ কুরান্থর ধাবই

অহনিশি রহত আগোর॥

অবিরত প্রেম রজন ফল বিভরণে

अधिन मनात्रथ शृत्र।

তাকর চরণে - শীনহীন বঞ্চিত

ल्यांक्सिमां उड़ मृत्रः॥ > ॥ ७० ॥

কাসড়া ৷

আছু হাম কি পেখনু নম্বীপচন্ত্ৰ। कर्यक्रमा करा विद्यान करावा ॥

পুন: পুন: প্রতাগতি করু বর পছ।
কণে থেলে কুলবনে চলই একান্ত॥
ছল ছল নয়ন-কমল ক্রিলাস।
নব নব ভাব করত পরকাশ।
পূলক-মুকুলবর ভরু সব দেই।
রাধামোহন কছু না পাওল থেই॥ ২॥ ৬৮॥

অথ শ্রীরাধিকাং প্রতি স্থ্যক্তিঃ

्रवानाशनभी।

त्रांट्य निशम निखर शम बुण् উদয়ভি ভমু মমু . ি কিমিভি পুলক-কুল া অপুকৃত-বিটপ-মুকৃলং ॥ ঞ্জ ॥ .. প্রচুর-পুরন্দর- গোপ-বিনিন্দিত-কাস্তি-পটল মহুকুলং। ক্ষিপসি বিদূরে স্থান মৃছকং মৃছ রপি সংস্তৃত মুরসি ছকুলং ॥ ্ । ः অভিনন্দি নহি চন্দ্র-রজোভব-া বাসিভমপি তামুলং। 🔾 🕚 ইদমপি বিকির্নি সালা বর-চম্পক-ক্রড ্ৰভূপম-দাম সচুলং ॥ ভজনবহিতি ক্ষা ক্ষাৰীল-পদে স্থি नशिम विकृतिक-कृतः। কলিত-সনাভন- 🐃 🤝 কৌতুক মপি তব श्वादर क बेंडि जन्नर ॥ ७॥ ५৯ ॥

## 🖖 🔭 বড়াড়ি। 😽 🦠

নিশ্সি নিহারসি কৃটল কদ্ম।
করতলে বদন সঘন অবলম্ম।
করতলে বদন সঘন অবলম্ম।
করেণ তমু মোডসি করি কভ ভক।
অবিরল-পূল্ক-মুকুল ভক অক ॥
এ ধুনি মোহে না কক অক ছলা।
ভাব কি গোপসি গোপত না রহই।
মরমক বেদন বদনে সব কহই॥
যভনে নিবারসি নয়ানক লোল।
গাদগদ শবদে কহসি আধু বোল॥
আন ছলে অক নয়ান ছলে পছ।
সঘনে গভাগতি করসি একান্ত॥
দ্রে রহু শুকুজন গৌরব লাজ।
গোবিন্দাস কহু পড়ল অকাজ॥৪॥৭০॥

## ধানশী।

তোহারি বেদন ছেদন কারণ
পুন: পুন: পুছি তোর।
তৃহ উর বরি ধরি মরি মরি মরি বোলসি
ভব ব্য সব খোর।
আলিরি হামরা ভোহারি কিরে নহিরে।
বৈ তুরা ছাখে ছবারত শত শুণ
ভাহারে কি বেদনা না কহিছে।

এ তুরা সন্ধিনী
কৃতিবে কি আওব লাজে।
ফণি-মণি ধরব শমন ভবনে যাব
বৈছে দিধারব কাজে॥
হাম আগুরানি আগুনি পৈঠব
বৈঠব ঘোলিনী লাজে।
তন্ত্র মন্ত্র ব্যুব লাগর মাঝে॥
ভাবনা অব তুরা অন্তরে অন্তর
কৃতিবে কি রহে ভাপ লেশ।
বিন্দু ইন্মুখী সিন্ধু উভারব

ত্ত স্বয়স্কি:।

#### পাহিড়া।

কুটিলং মামবলোকা নিবাৰ্জ মুপরি চুচুৰ স রঙ্গী।
তেন হঠানত মতবং বেপপু মঞ্ল-সঞ্জনদঙ্গী ॥
ভাবিনি পৃদ্ধ ন বারংবারং ।
তেন বিমুক্তি বীক্ষা মনো মূল ব্রুক্ ব্যুক্ত মারং ॥ এ
দাভিম-লতিকাম্ম নোভন কল-নিমতাং স দধে হত
ভদ্মতার ক্ষম ঘর্ত্বলোকার বিশ্বনিশ্বনং গত মতং।
স্মান্তব্যুক্ত বিশ্বনিশ্বন্ত কারিক-কর্মা॥
তদহ মরেক্ষা বছর হিন্ধা বৃত্ব বিশ্বিক কারিক-কর্মা॥

1 8 88 889 - **গান্ধার** (৪ ৪৯০) ১৪৯ তল তল সঞ্জল <sup>কি কি কি</sup> জলদ উন্ন শোহন মৈহিন চরণ সাজ। অৰুণ নয়ন গতি বিজুরি-চুমক জিতি দগ্ধল কুলবতী লাভ ॥ সজনি হাইতে পেখল কান। তব্ধরি জগভরি ভরল কুতুম-শর नेत्रारन नो दर्शतिरत योन ॥ अ । মঝুমুথ দর্শি বিহিদি তফু মোডই বিগলিত মোহন বংশ। না জানিয়ে কোন মনোরথে আকুল কিশলুয় দলে ক্ল দংশ ॥ অত্যে সে মুখুমন অল্ডহি অফুকণ দোলত চপল পরাণ। গোৰিক দাস মিছাই আশোয়াসল অবট নামিলল কান ॥ ৭ ॥ ৭০ ॥ श्रानमा ॥ চূড়ক চূড়ে মুখুৰ শিখওক মপ্তিত যাগতী-মালে। সৌরতে উনুষ্ত ্র ব্যরা ব্যরী কত ्ट्रोहिटक कड्र अक्रांट्ड ॥ मक्ति दका करह काम सनत्र। কেলি ক্ষম তত্ত্বে ব্যাহিত-নাগক प्रमाण विश्वम् तिवृद्धः अस्ति । विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम

কতত্ঁ বিষম শর নরন তৃণ ভর
সঞ্জ ভাঙ কামানে এ
নাগরী নারী যুরম মাহা হানই
লথই না পারই আনে এ
ক্রতিমূলে চঞ্চল মণিমর কুওল
দোলত মকর আকার ।
গোবিল্লাস অভরে অফুমানল
মলনমাহন অবভার এ ৮ ॥ ৭৪ ॥

#### ত্রীরাগ।

মরুক্ত দরপণ বরণ উজোর।
হেরইতে প্রতি অক অনক আপোর।
না ব্রল কি কহল অরুণ নরানে।
হানত অতয়ে কুস্থম শরবাণে॥
এ স্থি কাহে ভেটল নন্দ-নন্দন।
মন্দির গহন দহন তেল চন্দন॥ জা।
তৈথনে দক্ষিণ পরন ভেল বাম।
সহই না পারিয়ে হিমকর নাম।
সাজহ শেল কমলদল পাতি।
কুলবতী ব্রতী লেউ নিজ শাতি।
বৈরজ্ঞ লাজ গোল হুই ভাগি॥
কি ফল একল বিজ্ঞা প্রাণ।
গোবিন্দাল কহু মিলব কান॥ ৯॥ ৭৪॥

**অধ্যক্তিক্রকেন্দ্র-পূর্বক্রাপঃ**ন র তক্ত তক্তে**জিনোক্তিক্রেন্দ্র** লৈ চালা দক চালিক্রেন্দ্র লোক সমান র কামোদ। বাহার দেয়া করা ব্যাস্থ

দেশ নৃশ্লি প্লোক্-ন্ত্ৰৰ ক্ৰিক্সান্ত।
শৈশৰ তাকণ ক্ৰিক্তৰ ক্ৰোট ক্ৰাৰণা ত্ৰক ক্ৰিতৰ ক্ৰোট ক্ৰাৰণা অৱশ্বনী তীকে ক্ৰিক্স বলা নিৰ্বিহন্তৰ ক্ৰোত্তক বলা।

কবহু চঞ্চল গতি কবহু ধীরমতি নিশিক্ত গ্লগতি ভক্তী॥

ধীর নয়নে কণে ভোরি নেহারই কণে পুন কুটিল কটাক।

কবর্ত ধৈরজ্ঞার বাধ । করি কবর্ত কর্ত কর্ত কর্ত কর্ত বাধে লাখ ।

রাধামোহন দাস কুত্ই মুক্তি সতি ইহ্নব রয়সে বিশাস।

যছ্ক আগি কলিব্দে কৰি শুচীহ্ৰত নোই ভাব পরকাশ॥ ১০ ॥ ৭৬॥

व्याप्ती नामज्ञवत् यथा।

স্থিত্ত্বাধা নাম কে কহিলে। ভাৰি মন কাশ কুড়াইকে॥৩১৪৩ আন শ্বাধাই আই বাং প্লাশে।
আন সন্থাৰি আদ্দ পরিহাসে।

ত্তন শুন শুন নাধ্য ভেই ক্ছাতৃত্ব।

ক্রিব্রে বিধি পরসঙ্গ কিরে প্রতিকৃত্য ।
বাজনেহি নয়ন কোশে-নাহি হেরি।
মুকুলিচ কর্জ-কুম্ম নাহি ভেল।
হেরি হেরি ত্তমর নিরাশ ভৈ গোল।
কুবলর কর চিব্র চিকুর চিয়াব।

ক্রিব্রে প্রক্তিভ কিরে ভাব বুঝাব।

অপর রে আন সঞ্জে প্রিয়ন্থী সঙ্গে।
ভানদান কহে বুঝাল-অন্তে ৮১৫॥ ৮১॥

## তিরোতা॥

শৈশক যৌবন হক্ত মেলি গেল।
বানপক পথ চ্ছ্ লোচন নেল।
বানপক গাড়ু রি লাভ লাভ কাল।
বানক চাড়ু রি লাভ লাভ কাল।
ধরণীরে চাল ভেলভ পর কাল।
মৃত্র কেই সেব করত নিজার।
স্থীরে পুত্ই কৈছে স্কৃত বিহার।
নিরক্তন উরজ হেলভ কত বেরি।
হাসত আপেন গালাইবর হেরি।
কাহিল বেররী বীন পুন নব্রজা।
ছিলে বিয়ন জনক আহ্বাহনে অল।

্তে মাজন প্রথম্ কাপুন্তশ কালনি । শৈশব দ্বোবন-ছার্ট এক কেন্দ্রান বিয়াপতি কর ভূতা-অগ্যেদী। ে হুই এক বোগ ইয়-ক্ষেত্র-সেম্বানী ॥১৬॥ ৮২ ॥

কণে কণে ন্য়ন কোণে অনুসরই।
কণে কণে বসন ধূলি তকু ভরই।
কণে কণে বসন ধূলি তকু ভরই।
কণে কণে দশন হটাছটি হাস।
কণে কণে অধর আগে করু বাস।
চৌডকি চলরে কণে কণে চলু মন্দ।
মমমথ পাঠ পহিল অনুবর।
হাসরজ মকুল হেরি হেরি খোর।
কণে আচল দেই কণে হরে ভোর।
বালা শৈশব তারুল ভেট।
লথই না পারিরে জেঠ কনেঠ।
বিস্থাপতি কহে ভুন বর কান।
তর্জনিম শৈশব চিহুই না জান॥ ১৭॥ ৮৩॥
আত্র "দিনে দিনে উরল প্রোধ্র" ইত্যাদি পদং জ্ঞেরং॥

"দিনে দিনে উৰল পৰোধৰ" ইত্যাদি পদং জেৰং ॥ আক্স্পস্য উক্তিঃ ॥ তথা ।

রাধা বরস কর্স ভূর্ত থোর।

মন মাহা ঘনসিজ তব কাঁহে মোর॥

। বা ক্রেক বলি সজনি ক্রেস নানা ক্রম।

বা ব্যুক্ত মোনা ক্রমি বলা ।

হামারি-পশক্ষিটেটাকে কছ ক্ষমি রূপ।
প্রবাদন্তমারক ক্ষমির পরিপার :
নামহি আক্ষ ক্ষমির ক্রমির ।
ক্রমার ক্ষমির ক্রমির ক্রমির ।
ক্রমার বিশ্বমান ক্রমির ক্রমির ।
ক্রমার বিশ্বমান কর্মির ।
ক্রমার বিশ্বমান বিশ্বমান কর্মির ।
ক্রমার বিশ্বমান ব

ততো দৰ্শনং ॥

वाला शाननी।। হেরইতে হেরি না হেরি। পুছুইতে কছই না কছ পুন বেরি॥ চতুর সখী সঞ্চে বসই। রস পরিহাসে হসই না হসই 🛚 পেখলু ব্ৰহ্ম নব নারী। তক্ষণিম শৈশব লখই না পারি॥ হৃদয় নয়ন গতি রীতে। সো কিয়ে আন নহত পরতীতে ॥ ঐছন হেরইতে গোরী। হঠ সঞ্জে পৈঠল মন মাহা মোরি॥ তবৃহিঁ কুসুম শর জোরি। कूछेन वान क्छेन शिख (माति ॥ গোবিন্দাস চিতে জাগ। চাঁদকি লাগি স্বয় উপবাগ ॥ ১৯॥ ৮৫॥

र के के **या शक्ती** नाहर है।

্ৰ্বাহানীহা বিকননৈ ভক্তভকু জ্যোতি। তাঁহা তাঁহা বিভূমি চহকাম কোতি।

## **ेशिंगमक्रारुत**ः।

বাহা যাহা অবল চরক বুগ চলই।
তাহা তাহা থল কমল দল ধলই।
দেখ স্থি কো ধলী সহচরী স্থেলি।
হামারি জীবল সঞ্জে কর্ডছি পেলি। জ ॥
বাহা যাহা ভবুর ভাঙ বিলোল।
তাহা তাহা উছলই কালিলী হিলোল॥
বাহা যাহা তরল বিলোচন পড়ই।
তাহা তাহা নীল উৎপল বন ভরই॥
বাহা বাহা হেরিয়ে মধুরিম হাস।
তাহা তাহা কুল কুমুদ পরকাল॥
গোবিল্লাস কহ মুগধল কান।
চিহুই রাই চিহুই নাহি জান॥ ২০॥ ৮৬॥

#### তথা ॥

ভন ভন এ সথি কর অবধান।
সে বে রমণী নিঁল হামারি পরাণ॥
বব বরি না দেখিরে সো চাঁদ মুখা।
তব ধরি মদম বিশুল দেই ছখা।
বার বার অক্তর না যার পরাণা।
তা সক্ষে রছস রস যদি নাহি হোরা।
নিচয় না জীয়াব কহলবো হোরা।
হাই কেই প্রাকে বিশি ব্যারিখাং ২১॥ ৮৭॥

## ं कर क्**ष्ट्रशामीता** को खा

এত শুনি দোতী চলিল ধনী পাশ।
বৈচনে নহিক পুরুরে আশু॥
বচনক ভাতি আপন হিরে সাঁচি।
মিললি মুগধি সঞ্জে গুরুজনে বাচি॥
হৈরি স্থামুখী হরিণী নর্মানী।
পুছইতে না পুছরে তা সঞ্জে বাণী॥
কহ বহুনন্দন কর অবধান।
ভোহারি নিরজে মুঝে ভেজল কান॥ ২২ ॥৮৮॥

অথ শ্ৰীকৃষ্ণত দশদশা।

লালনোৰেগ জাগ্ৰাা তানবং জড়িমা তথা।
বৈবরাগ্যং ব্যাধিকুমাদো মোহোমৃত্যুদশা দশ।

ष्यव क्रांट्स्न ॥

# স্থহই।

চম্পাৰদান হৈরি। ি চিড অভি কম্পিত
লোচনে বহুছ অনুরাগ।

তুরা রপ অন্তর্গ দিল জাগান্তে নিরন্তর
ধনি ধনি ভোষারি সোহাগা।

ব্যভান্থ-নন্ধিনী কি অপারে রাভি দিনি
ভারমে না বোলরে আন ৮ বলে
লাখ কাখ ধনী চিত্র কাল চলকে

"রা" কহি "ধা" পাছ কহই না পারই
ধারা ধরি বহে লোর।
সোই পুরুথমণি লোটার ধরণী পুনি
কো কই অর্ডি ওর ।
গোবিন্দদাস তুরা চরণে নিবেদল
কান্ত্র উচ্ছে স্থাদ।
নিচয়ে জানহ

#### WIND THE

কেবল তুরা পরসাদ।। ২৩॥ ৮৯॥

কাঞ্চন যুথী কুষ্ম লই গোরি।
নিরমই মুরতি বতন করি ভোরি।
ত্রা অম্ভাবে আলিকই তার।
সো তম্ তাপে ভসম ভই বার॥
ভন ভন ও র্বভামু-কুমারি।
ত্রা বিরহানলে জলত মুরারি॥
ঝামর নীল-উতপল-লা জলত।
বোরে মী হেরবে ক্যনাভরক।
বিগতি মুরলী কুরলী রহু পুর।
ভক্তকব মদন দহন পরিপুর।
বিহুরল পিঞ্জ মুকুট পরিপাটি।
সহচরে কেনি মন্ত জীউ কাটি।
জীউ রহুত অব ত্রী রস আশে।
ভৌহারি চরলে কহে গৌবিক্লানে। ২৪॥৯০

## युर्हे ।

গৃহন বিরহক লাগি।

রন্ধনী পোহারই জাগ্নি॥

করত হিঁ তোহারি ধেরান।
তো বিনে আফুল কান ॥

শীতল গীত নিচোল।
তোহারি ভরমে কুকু কোর ॥
সো রস পরশ না পাই।

মূরছিত ধর্মী লোটাই॥

মন মাহা মদন তর্ক।
বন বন মোডুই অক ॥

কহতহিঁ গ্রু গুদু ভাব।
না বুঝল গোবিক্লাস॥ ২৫॥ ১১॥

#### ভখা

ভন ভান ভাগৰতি রাবে।

মাধব বহিলে কি সাধনি সাবে।

চাঁদ দিনহি দীনহীলা।

সো পুন পালাট কলে কৰে কীপা॥

অকুনি বদ্যা পুন কেন্দ্র ।

ভালি পাঁচারৰ ব্বি কত কেরি।
ভোগারি চরিত নাহি কারি।

বিভাগতি পুন বিরে কর হালি॥ ২৬॥ ১২

#### WISHI IS TO SEE

মূদিত নরনে হিরা ভূজবুগ চাপি।
ততি রহণ হরি কছু না আনাপি ॥
পরসঙ্গে কহলহি নামহি তোরি।
তবহি মেলিরা অংশি চাহে মুখ মোরি॥
হলরি ইপ্রেনাহি কছু আনু ছলা।
তোহে অহরত ভেল স্থামর চলা।
যোই নরান ভলী না সহে অনজ।
সোই নরান ভলী না সহে অনজ।
সোই নরনে অবে লোর তরজ ॥
বোই অধ্যে সদা মধুরিম হাস।
সোই নীরস জেল নীর্ঘ নিশাস॥
বিভাপতি কহ মিছ নহ ছাতি।
গোবিলদাস্ রহ তহি জ্বন্ধ মাথি। ২৭॥ ৯৩॥

## ি তিরোভা ধানশী।

সে বে ৰাগ্র প্রথাম ।
কপনে কোহারি নাম ॥
গুনিতে ভোহারি বাত ।
পূলকে ভররে গাত ॥
অবনত করি শির্ম
লোচনে কারে নীর ॥
যদি বা পৃছিরে বাকী ।
উলটি ক্রমে প্রশিশা

কহিনে তাহাৰি ৰীকে।
আনু না বুঝিবি চিতে।
আনু না বুঝিবি চিতে।
বৈজ্ঞ নাহিক তায়।
বিজ্ঞানি গায়॥ ২৮॥ ৯৪॥

Company of some of the state of the

তন তন গুণবৃতি রাই।
তা বিশ্ব আকুল কানাই ॥ জ ॥
সোঁ তুরা পরশক লাগি ॥
ছটফটি বামিনী জাগি।
কীণতত্ব মদন হতাশে।
তেজই উত্থত খানে ॥
চিত-পৃতলী সম দেই।
মরম লা ব্রুছে কেই ॥
পৃছিতে কুহুরে আধ ভাঝি।
কিবরে বরুরে হটি আঁবি॥
জ্ঞান কুহুরে তোহে সার।
করহ গমন উপচার॥ ২৯॥ ১৫॥

তুড়ি॥

এ ধনি কর অবধানাক ভালান তো বিনে উন্মত্তকান #০০০০ কারণ বিহু কণে হাল্ডা ৮ টি আকৃল অজি উন্ধাৰ্কন ।
"হা ধিক" "হা ধিক" বোল ॥
কাঁপরে চরবল দেহ ।
ধরই না পারই কেই ॥
বিদ্যাপতি ক্ষ ভাষি।
কপনাবাৰণ বাণী ॥ ৭০ ॥ ১৮ ॥

#### গান্ধার ।

স্থারি তুহঁ বড়ি হনর প্রাণ। কান্তক নবমী দশা হেরিয়ে সহচরী ধরই নাহি প্রাণ॥

কত যে ক্ষীণতার কহিলে না পাররে ভেজত তাহে বনবাসে। তেজত পরাণ জৈছে ক্ষমুমানিরে

রহত জোহারি আলোয়াসে॥

কি জানিয়ে কি কণে নিহারণ ভূরা রপ তব বরি আফুল ভেনি ।

কণে কণে চমকি কান কান স্বছার হেরি রোক্তু স্থী মেলি॥

কোই যব তোহারি নাম করে প্রবণহি
তরহি নমুদ্ধ পরকাশ।

বে তুছ নিছেল ক্র্কিন্ত ক্র্কিন্ত হলরি পান্তি বলকদার ৪-২১ ৯-২১ ৪

#### শ্রীরাগ ।

निमान (मिश्री चारेक श्रन ॥ দেখিতে দেখিতে বাচন ব্যাধি। যত তত করি নহিরে ওধি॥ ना वीत्क हिकूब ना शदब हींब । না খার আহার,না পিরে নীর ॥ সোণার বরণ হইল খ্রাম। সোঙ্রি সোঙ্রি ভোহারি নাম ॥ ना हिट्ड मारूथ निश्चिथ नारे। কাঠের পুতলী রৈয়াছে চাই॥ पूर्वा चानि पिन नानिका भारता তবে সে বৃধিত্ব শৌহাস আছে।। পাছরে পোরাস না রহে জীব্। विलय ना कर आमात्र निव ॥ . **ठ:खीमाम करह दिवह दाथा**। क्वन मत्रम देवन तांथा ॥ ७२ ॥ **२৮** ॥

🗦 🐃 हेि नमन्मा 🖟

## ज्ञानी।

क्रिक लेव मना छनि ब्राहे काउन वर्गनि गर्बी भूष ठाहे॥ थेहन रेनिये गहरुती भीरे। धानत्म निम्मान देवन वनाहि। প্ৰথমৰ কুঞ্ছি করল প্রান।
প্ৰতি কত্ৰিথ কক অন্ধান ॥
আকুল নামর হাম অতি ছীত।
না জানি রজস্বস প্রিল পিরীত ॥
ঐছন ভাবিতে মিলল আর।
খাই কহল দোড়ী নাগর পার॥
দ্র কছা বিরহ আওল ধনি রাই।
চমকি উঠল অন্থ জীবন পাই॥
আনন্দে আগুসরি আওল কান।
কুঞ্জ মাঝে স্বে ক্রল প্রান॥
স্কারী মুগ্ধিনী বচন না কহই।
সহচরী আঁচর ধনি তহি রহই॥
পহিল স্মাগ্ম রাধা কান।
মোহন দ্রহি ছহঁক গুণ গান॥ ৩০॥ ১৯॥

## क्मार्त ।

ধরি সধী আঁচর ভই উপচক।
বৈঠি না বৈঠনে হরি পরিবছঃ
চলইতে আলী চলই পুন চাহ।
রস অভিলাবে আগোরল নাহ।
ল্বধ মাধ্ব মুগ্রিনী নারী।
ও অতি বিদগ্ধ এ অতি কোনারি।
পরশিতে তর্মি কর্মি কর ঠেলই।
হেরইতে ব্যন নর্মক্ত শ্বই।

হঠ পরিরপ্তলে খরহার কাঁপি।
চুক্তন বন্ধন পটাফলে খাঁপি।
ভূজনে বন্ধন পটাফলে খাঁপি।
ভূজনি তীত প্তলী পদ গোঁরী।
চিত্ত-নিশনী আজি রহই আসোরি।
গোঁবিদ্যান কহই পরিধান।
রগাইক কুপে নগন তেল কান । ০৪॥১০০॥
স্বী প্রতি দ্বী উত্তি।

उदा ।

সৌরভে আগরি

রাই স্থনাগরী

কনকণতা সম সাজ।

হরি চন্দ্র বলি কোরে আগোরল

কুঞ্জে ভূজসমরাজ। অব কিয়ে করব উপায়।

কাল ভূলগ কোরে ছোড়ি মুগধ সখী

গমন যুগতি না হুয়ার॥

চক্রক চারু ফল

ফণাগণ মণ্ডিত

विर्वेश क्रिक क्रीर्ड कि विर्वेश क्रियोनिट व

र्गमक प्रत्यम बीठ ।

এক সৰ্বেছ ক্ৰিন্ত না শীতকৈ ভীতহি

श्रीकियी किसेक् जोर । लीकिसेकिक कर किसेकिक मधी

न्बहि को जवशहि ॥ अव ॥ ५०० ॥

ইতি চতুৰ পরব:॥

## ত্ৰ প্ৰৱাগঃ ।

(करनवमःमिकः।

তত্ত্ব পুরুর্কাক গৌরচক্রত দথ দেথ গৌর পরম অনুপাম" ইত্যাদি পদং জেরং।

## শীরাগ

পৌগণাও বছন শেৰে গোরাক ক্ষার ।

ভূরর নাচনি করে কিবা সে অন্তর ।

লাজে অবনত মুখ আর আঁখি ছটা।

ব্ঝিতে নারিছ এই ভার-গরিসাটি॥

বাম নয়নে পুন কটাক করর।

মধুর মধুর ঝিত করে ব্ঝিক না হয়।

কুদান কনরা জিনি অক বলমান।

ভাগামোহন প্র ভাবে কুডুহুলী ॥ ১॥ ১০২॥

#### शाननी ।

মো মেনে মন্ত গোরাচালেরে দেখির। অপরপ রাল কাচা কাঞ্চন-জিনিরা। কাপে শীজগতি চলে মারে মালসাট। কাণে থিক হৈরা চলে ছবাবুনী বাটার অরণ নরানে খন চাহে অনিবার। তানিলে নরান বাণ ছিরার শাবার। তালাছলবিত ভূজ লোকে চুই বিশো ত্যুবতী বোকন দিতে চাহে অকুরারো।

কণে মদ মনা হাসি কণ্ট উত্তরোগ। নাবুঝিয়ানরহরি হইল বিজোল॥২॥১০৩

ভিরোতা ধানশী।

শৈশব যৌবন দরশন ভেল।

হুহুঁ দল বলে ধনি দিক পড়ে গেল॥

কবহুঁ আনুৱে কুচ কবহুঁ বিধারি।

কবহুঁ আনুৱে অক কবহুঁ উমারি॥

থির নরান নাহি অথির ভেল।

উরজ উন্নর্গল নালিম দেল॥

চঞ্চল চরণ চিত চঞ্চল ভান।

জাগল মনসিজ মুদিত-নরান ॥

বিস্থাপতি কহে ভন বরকান।

বৈয়ল ধরহ মিলায়ব আন ॥ ৩॥ ১ ০৪॥

#### তথা ৷

না রহে শুরুজন মাঝে ।
বেকত শাল না ঝাঁগরে লাজে ।
বালা জন সঞ্জে ঘক রহই ।
তকণী লাই পরিহাস তহি করইগ
মাধব ভুরা লাগি ভেটলু সমণী ।
কো কহে বালা লো কহে ভঙ্গণী ॥
বিলি প্রক্রম বর শুরে ।
আনত হেরি ভত্তি সেই কালে ।

ইথে বৃদ্ধিংকাই ক্ষয়ের পর্যাকি। না কাদন মাথি কাসি দেই গারি ।। স্কবি বিভাপতি ভাগে। বিভাগ নিত্র বালাচরিত রসিক ক্ষম জানে । ৪ ॥ ১৮৫ ॥

## পঠমঞ্জরী

শৈশব যৌবন দরশন তেল।

হছঁ পৃথ হেরইতে মনসিজ গোল।

মদন কি তার পহিল প্রচার।

ভিন জনে দেরল ভিন অধিকার ॥

কটিকে গৌরব পাওল নিতম।

ইন্হকে ক্ষীণ উর্জই অবলম।

প্রেক্ট হাস অব গোপত ভেল।

বরণ প্রেকট ফের উর্জকে নেল॥

চরণ চঞ্চল গতি লোচন পাব।

লোচনক ধৈরক্ষ পদতলে মাব।

নব কবিশেধর কি কহিতে পার।

ভিন ভিন রাজ ভিন বাবহার॥ ৫॥ ১০৬॥

## বরাড়ি।

রাধা বয়স হেরি ভূঁছ থোছ।

মন মাহা মনসিজ ওর কাছে বোর ।

ইংগ্রেম্বি জানি করু নানা ছল।

বুধানমো জহনি সকল পুন্ধানা ।

হামারি শপথি তোহে কহু ক্থি রপ। প্রবণ-রনারন অমিরা বিরূপ।
নামহি যাক অবশ ভেল অর ।
ক্রেম্বর্ডার্ডার্ডার ১৩ এ।

#### शन्त्री

মাধব জৈছে বচন শুন লো স্থী
চললিচ্ রাইক শাশ।
মন মাহা বচন রচন করি বৈছনে
নাহক প্রয়ে আলা॥
অপরপ দোতীক রীত।
স্থীগণ সঙ্গে রাই বাহা বৈঠনে
তাহি যাই উপনীত ॥ জা।
শুন শুন রম্পী- শিরোমণি মুগধিনি
তুরা অমুগত ভেল গ্রাম।
তুরা রুপ হেরি নোই ভেল আকুল
কহঁই দাস বলরাম॥ ৭॥১০৮॥

#### শক্তরাভ্রণ ৷

এ ধনি কমলিনি জন হিত বাণী।
প্রেম করবি অব অপুক্ত জানি॥
অজনক প্রেম হেম সমত্যা।
বাবিতে কাক বিত্তৰ বৃদ্ধ গুল ॥
টিটাইতে বাহিত সুনাকক প্রেম আকত্ত।
বৈহনে বাহিত সুনাকক প্রেম ।

সবহ সভসকে ব্যক্তি দাহি থানি।
সকল কঠে নাহি কোকিল বাৰী বা
সকল সময় সহে আছু বসন্ত ।
সকল প্ৰথপ নাৱী নহে ভগবন্ত ।
ভগকে বিভাগতি ভাৰ ব্যবারি।
প্রেমক রীতি অব ব্যহ বিভারি কাল । ১০৯ ॥

## **ज्ञानी** ।

জীবন চাহি বোবন বড় বল ।
তব বৌবন বব স্পুক্লণ সল ॥
স্পুক্লণ প্রম কবছ জানি ছাড়ি ।
দিনে দিনে চাদকলা সম বাঢ়ি ॥
ত্হ বৈছে নাগরী কাস্থ বসবস্ত ॥
বড় পূণ্যে বসবস্তি মিলে বসবস্ত ॥
ত্হ বদি কহসি করিরা অস্পুল ।
চৌরি পিরীতি হবে বাণ গুণ বল ॥
স্পুক্লণ গ্রহন নাহি জগমার ।
আর তাহে অস্থ্রত বরজ সমাজ ॥
বিভাগতি কহে ইপে নাহি লাজ ।
ক্রপগুণবতীকা ইহু বড় কাজ ॥ ৯ ॥ ১১০ ॥

कार्षिमानी का

## াঞীৰাধিকা উন্তিত্য -

পরিহর এ'স্থিতিভাহে শর্মীন। হাম নাজি লাঙ্গ লো'শিলা ঠাম ॥ বচন চাত্রী হাম কছু রাহি জান।
ইপিত না ব্যিরে না জানিরে মান ॥
সহচরী মেনি বনারত বেখা।
বান্ধিতে না জানিরে আপন কেশ ॥
কভু নাহি শুনিরে ছরত কি বাত।
কৈছনে মিলই মাধ্য সাখা॥
সো বরনাগর রসিক স্কান।
হাম অবলা অতি অলপ পেরান ॥
বিভাপতি কহে কি বোলৰ তোর।
অব্কে মিলন সমুচিত হোর॥ ১০॥ ১১১॥

मशीशिका वहनः।

কানড়া।

ভন ভন মুগ্ধিনি মুকু উপদেশ।
হাম শিথায়ৰ চরিত বিশেব।
পহিলহি অলকা তিলক করি সাল।
বহিম গোচনে কাজর রাজ।
বারবি বসনে বাঁপি সৰ অল।
দূরে রহবি জন্ম বাত-বিভক্ত।
সজনি পহিলহি নিমুজে না বাবি।
কুটিল নমকেইজি মন্ত জাগাবি।
কুটিল বিশ্বে ক্রান্তবিক্র কল।
দূচ করি বারবি নীরিক্র বর্ম।

া সান করবি কছু রাখবি ভাব। রাথবি রস জমু পুন পুন আব ॥ ভণায়ে বিস্থাপতি প্রথমক ভাব ৷ ে যো গুণবন্ত সেই হল পাব ॥ ১১ ॥ ১১২ ॥ कारमाम । স্থীগণ সঙ্গে চলছি ব্রুবজিণী শোভা বরণি না হোয়। কত কত চাল চরণ তলে নিছই লাথ মদন তহি রোর ॥ দেখ দেখ পহিল সমাগম রঙ্গ। পদ ছই চারি চল্ভ পুন ফিরুই ্ৰীত্হি কম্পিত অস্ব ঐছন ভাতি আৰু বাহা মাধ্ব ্ৰার্হি রহ পুন ঠারি। অদভূত মনহি বিশাসন উশুখ তবহি নম্বন ঝক বারি॥ পুন পরবোধিয়া নিকটইি আনিয়া करह मधी समयुत्र वानी। বুঝি করবি রতি অগত চুল ও অতি ক্মলিনী সোপিছ আনি ॥ আপন কৰি তোঁহে ইহ বৈছে মানত এছন করবি আচার বিক मक्रमन पून - ठक्क विज्ञानन वत-क्सरम स्नित्रीक मान

কহ রাধামোহন স্মার কিলে শুচ্চদিন এছন হোলন মোরি ৮০

নিজজন জানি কেবনে নিজেপিব স্বর্জনর সোহে গোলী ৪০২ ॥ ১১৩।

## িভাম গুঁ⊅ <sub>১০ বাক</sub>ু **বিহাগড়া ।** ভূ ় ভারত :

সকল বুখী পর বোধি কামিনী আনি দিল পিয়া পাশ। 
ভক্ত বাদ্ধি আধ বিপিনে সোম্গী 
ভক্ত বাদ্ধি আধ বিপানে সোম্গী

বৈঠল শর্ম- সমীপে ত্রুবদ্নী যতনে সমুখ নাহি হোর। ভেলি মানস ভ্রমই দশ দিশ

দেহ মনোরথ কোর॥

নিরিছ নীবিরক কৃতিন কঞ্ক অধরে অধিক নিরোধ। কঠিন কাম কঠোর কামিনী

মানে নাছি পরবোধ।

সকল রাজ হুকুল দৃঢ় ক্ষতি
কথিহ" নাহি: পরদান ।
পানি-পরদিতে পরাধ-পরিকর

/ शृत्रव कि प्रक्रि काम b

কান্ত কাতৰে প্ৰতিপ্ৰত ক্লাক্তি ব্যৱস্থা ক্ষাৰ্থী পাৰ ৮১ ব

কি আনি জি প্ৰকাৰ অব হহ'

कहरे नाहि बन्धां ।

দিবস চারি ্রিক্র বিশ্বর বিশ্

वज्रहे कांबरम निःहजूभकि ज्ञान ॥ २०॥ २०॥ ॥

#### 

অভিনব গোরী বসৃতি গতিগেই।

ঘর সঞ্জে করবরে নবীন স্থানহ ॥

নিরসরে নরপতি পতিভর সাজ।

দোতীক পৈঠারে এহেন অকাজ॥

কি কহব রে সধি কহব না জান।

পহিল সমাসম রাধা কান॥ জ ॥

যব ধনী বজনে কাজসঞ্জে ভেট।

অবনত নরানে বরান কর হেট॥

যব ছব গোপল করে কর আপি।

সাধনে ধরল ইই ক জরু কাঁপি॥

বর ছব পোরল মানকার্যারানা।

বা ভানিয়ে কৈছে সাক গোঁচবাণ॥

বি ক্রেমিকালান কর তুর্ত কে কোনানী।

वृद्धि सुद्दश्च दर्नीक्षिक कृष्टिने-नशांनी ॥ ১৪ ॥ ১১৫॥

ত ক অত প্রার্থনা।

শীগোরজিচাদ হৈর নর্মনের কোণে।
শর্ণ নইছ তোমার শীউন চরণে ।
দিরাছি তোমার দার আমার কেহ নাই।
তুমি দরা না করিলে বাব কার ঠাকি॥
প্রভু নিতানিশ্লচাদ কেরহ করণা।
কাঁজর হইরা ডাকি দীনহীন জনা॥
পূর্বে পাপী ভরাইলে এবে না তরাও।
পাপিন্ঠ-উদ্ধার ক্রেনে জ্রগতে দেখাও॥
তোমার কুপা না পাইরা বেডাই কান্দিরা।
প্রবে দিরাছ প্রেম জগতে বাচিরা॥
বে করণা প্রকাশিয়া উদ্ধারহ মোরে।
ভনিরাছি দরার ঠাকুর দেখুক সংসারে॥১৫॥১১৬
ইতি পুর্বরায়ত্ত সংক্রিপ্রস্ক্রোগঃ॥

रेकि नक्षम शहरः ॥

ে**পূর্বকাস**ে চ

শ্রীগৌরচন্দ্র: 1

A STORY

कि करन रामिक्व क्षिणका है असरी बटकरण रह रहे हैं। कार मिल्लिक्व क्षेत्र है कि असरी क्षेत्र कार कार मिल्लिक्व क्षेत्र है कि असरी क्षेत्र कार्य कार्य के विकास क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र कार्य বিধি তো-নিবে কৰিছে কেছ নাই।

যত শুক্র-গর্মধক্ত কিছে কিছিল ক্রান্ত নাহি ঠাই ॥ এল ॥

অরুণ-নয়ানের কোপে চাঞ্চিরাছির ক্রামা পানে
পরাণে বছুলি দ্বিস্লা টানে।

কুলের ধরম মোর ছারেখারে ঘাউক্ গো
না জানি কি হবে পরিক্রামে ॥

আপনা আপনি থাইক বহির হৈছ

# পঠमञ्जूती खर्ष्यती।

লন্দ্রীকান্ত দাস কয় স্কুল স্বরুমে বার লাগয়

কি করিরে কুল-পরিবাদ ॥ ১ ॥ ১১৭ ॥

এইত গোক্লবাসী কেই কিছু জানসি
তাহার চরতে কর সেকা।
তোমরা আসিরা দেও বাইরের বেয়াধি লথ
রাইরেরে পাঞাছে কোন দেবা॥
নর দেব হাকারিয়া কুকে ক্ষান্তি ইটি হ
কালিয়া কোডারের নামে কামিরা পি উঠে॥
আলিয়া কোডারের নামে কামিরা পি উঠে॥
আলিয়া কোডার পাকে ক্রেন্ডেরন্ডারে।
সক্ষানী রেছিয়া গাঞাছে পিডকালে॥
ভারারে শানিয়া সবে কার ক্ষান্তির কর।
প্রাধারে শানিয়া সবে কার ক্ষান্তির স

्यः नीपकृतः कृष्टः अवे कथा नह । निक्र भूका ना भारता भन्नमान वर्णः॥ २ ॥ ১১৮

ञ्हरे ।

রাই কেন বা এমন হৈলা।
কিরপ দেখিরা আইলা॥
মরম কহনা মোর।
বেরাধি ঘুচাঙ তোর ॥
না পারি বৃঝিতে রীত।
সব দেখি বিপরীত ॥
সোণার বরণ তহু।
কাজর ভৈগেল জহু॥
নরানে বহুরে ধারা।
কহিতে বচন হারা॥
জ্ঞানদাস মনে জাপ।
কহিলে ঘুচিবে তাপ॥ ৩॥ ১১৯ ॥

তুড়ি।

কেনে গেলাম জল ভরিবারে।

যাইতে বমুনার বাটে সেধানে ভূলিল বাটে
তিমিরে গরাসিল মোরে॥ এ ॥

রসে তমু চর চর তাহে নইবর বেশ।

চ্ডার টালনি বামে মধুর-চক্রিকা ঠামে

শলিত লাবণা ক্লপ-শেব॥

ললাটে চন্দন-পাঁতি নৰ-পোরোচনা-ভাঁতি
ভার মাঝে পৃনিমক চাঁদ।
অলকা-বিলিত মুখ ত্রিভঙ্গ-ভঙ্গিম রূপ
কামিনী জনের মন কান্দ॥
লোকে তারে কাল কয় সহজ দে কাল নয়
নীলমণি মুক্তার পাঁতি।
চাহনি চঞ্চল বাঁকা কদম্ব গাছেতে ঠেকা
ভ্বন-মোহন রূপ-ভাঁতি॥
সঙ্গে ননদিনী ছিল সকল দেখিয়া গেল
ভঙ্গ কাঁপে থ্রহরি ডরে।

জ্ঞানদাসেতে কয় তারে তোমার কিবা ভয় সেকি সতী বোলাইতে পারে॥৪॥ ১২০॥

তথা 🛚

আলো সই কি হইল মোরে প্রেম জালা।
মো মেনে আপনা থাইছ কেনে বা যম্না গেছ
শরনে লপনে দেখি কালা॥
সাত পাঁচ সথী সঙ্গে নানা আভরণ অঙ্গে
সাধে গেলাম জল ভরিবারে।
তেমাথা পথের ঘাটে সেখানে ভূলিত্ব বাটে
কালামেঘে খাঁপিয়াছিল মোরে॥
ধর্না যাইতে পথে দোসারি কদম্ব আছে
ভাতে চরে সে কোন দেবতা।
ভার গলার মালা দিলে আচম্বিতে মোর গলৈ
সেই হৈতে মরমে হৈল বাথা॥

সে কালা কালিয়া ক্লাম কালিয়া কালেয়া কালিয়া ক্লাম কালিয়া কালেয়া নাম কালিয়া কালি

## ভাটিয়ারি।

তথনি বলিল তোরে যাইদ না যদ্না-জলে
চাইদ না দৈ কদৰের তলে।
তুমি এখনে কেন বা বোল, ভন না গোবড়ি মাই
গা মোর কেমন কেমন করে॥

রাক হাত রাকা পা মেঘের বরণ গা রাকা দীঘল ছটি আঁথি। কাহার শক্তি উহার দিঠিতে পড়িলে গো ঘরে আইনে আপনাকে রাখি॥

কাণে মকর-কুগুলে আন্ত মাহ্র গিলে
কাচা পাকা কিছু সাহি বাছে।
আমরা উহার ডরে সদাই ডরাই গো
বাহির না হই বাডীর সাচে ॥

আন সনে কথা কয় আন জনে মূর্ছার ইহা কি শুনেছ সথী কাগে। একুল পুকুল মোরা হু কুল থাঞাছি গো হয় নয় বংশীদাস জানে॥ ৮॥ ১২২॥ আলো সুক্তি কানোনা, জানিলে ঘাইতাম না ক্রছের তলে।
চিত মোর হরিয়া নিলে ছলিয়া নাগর ছলে॥ জ ॥

বাংশর পাখারে জাঁথি ডুবি লে রহিল।
বাংলনের বনে মন হারাইনা গেল।
মরে বাইলে পথ মোর হৈল অকুরাণ।
সাল্রের বিদরে হিরা কি জানি করে প্রোণ।
চলল টালের মাঝে মুগমনে ধারা।
তার মাঝে হিরার প্রতলী রৈল বারা।
কটি পীত-বসন রসনা তাহে জড়া।
বিধি নির্মিল কুল কলন্তের কোঁড়া।
জাতি কুল শীল সব হেন বুঝি গেল।
ভূবন ভরিয়া মোর ঘোষণা রহিল।
কুলবতী সতা হৈরা ছ কুলে দিন্তু ছ্থ।
জ্ঞানদাস কহে দঢ় করি থাক বুক। গা ১২০।

## युक्रे ।

শ্রামপানে চাহিয়া অকান্ধ করিছ।
দিবস রজনী আন নাহি জানি
ভাবিতে গুণতে মসু ॥ ধ্র ॥

ক্ষাড়াইরা তরুমূলে আকুল করিল মোরে
ক্ষাত ৰছিম দিঠে চাঞা।

মর মাইতে নালর মন বাউক কাতি কুল ধন

চিকণ খামের বালাই লৈয়া॥

অল-ভদিমা দেখি প্রেত আখি মোর মনে আন নাহি ভার। চিত নিবারিতে যদি বির্লে বসিয়া থাকি ষৰ কেব জাম পাৰে থায়। থাইতে শুইতে না লয় চিতে, শুনিরা বংশীর গীতে না জানি কি হৈল হিয়া মাঝে। মনে অকুমান করি ছাড়িতে নারিত্ব হরি তিলাঞ্জলি দিমু কুল লাজে॥ কি ক্ষণে জলেরে গেমু কিরূপ দেখিয়া আইমু ঘরেতে আসিয়া হৈতু জ্রী। গোপতে অনম্ভ কহে অর আলা কিছু নহে কালা করিয়াছে মন চুরি॥৮॥ ১২৪॥ শ্ৰীরাগ п কি হেরিফু কদম্ব তলাতে বিনি পরিচয়ে মোর পরাণ কেমন করে

গোপতে অনম্ভ কহে অর আলা কিছু নহে
কালা করিয়াছে মন চুরি ॥ ৮ ॥ ১২৪ ।

শ্রীরাগ ॥

কি হেরিয়ু কদম্ব তলাতে

বিনি পরিচয়ে মোর পরাণ কেমন করে
জিতে কি পারিয়ে পাসরিতে ॥ এ ॥
কপালে চন্দন-চাঁদ কামিনী-মোহন ফান্দ
আন্ধারেতে করিয়াছে আলা ।

মেঘের উপরে চাঁদ সদাই উদয় করে
নিশিদিশি শশী যোলকলা ॥

কিশোর বয়েস বেশ আর তাহে রসাবেশ
আর তাহে ভাতিয়া চাহনি ।

হাসির হিলোলে মোর পরাণ-পুতলী দোলে
দিতে চাই যৌবন নিছনি ॥

যে দেখনে একবার সে কি পাসরয়ে আর
শুধুই স্থার তমুথানি।
দাস অনস্ত বলে ক্লপ ছেরি কেনা ভূলে
স্ক্রপতে নাহিক হেন প্রাণী॥ ৯॥ ১২৫॥

शानणी।

রাই মুখে শুনলহি ঐছন বোল।
স্থীগণে কহে ধনি নহ উতরোল।
তুরা মুখ দরশন পাওল সেহ।
কৈছে আছল কছু সমঝল এহ।
তুহাঁ কাঁহে এত উৎক্টিত ভেল।
তোহে হেরি সো আকুল ভৈগেল।
ঐছে বিচার করত যাঁহা রাই।
তুরিতহিঁ এক সথী মিলল তাঁই।
এ ধনি পহমিনি কর অবধান।
তোহারি নিয়ড়ে মুঝে ভেজল কান॥১০॥১২৬॥
কামোদ।

নাগর নিকট- সঞ্জে দোতী আওল রাই স্থনাগরী ঠাম। শুমক কত হুঃথ দেখিতে না পারিয়ে

কহইতে আওহু হাম।

কো জানে কখন দেখল তোহে ভামর তুরা রূপ করত ধেরান।

রাধা নামে বিশুণ তম্ মোড়ই

देशब्द मा शतरत्र शतान ॥

ন্তন কহি কুদ্দরি তোর।

সো হেন স্থাগর সবগুণ-সাগর

ভেচিছে সে পুরুষ-বধ ছোম্ব ॥এল।

তুত রমণি ধনী সুকুট-শিরোমণি

তোহে না কর সান ছল।

কহ ব্ৰজ আনন্দ বিলম্ব না কর ধনি

ट्रिक्ट आयि 5क #>> # >२१ H

शननी।

স্পরি তুর্বিভি হদর পাকাণ।

তুয়া লাগি মদন- শরানলৈ পীড়িত

জীবইতে সংশয় কান। ধা।

বৈঠলি তক্ষতলে

পন্থ নেহারই

নয়ানে গলয়ে ঘন লোর।

"রাই" "রাই" করি সঘনে জপয়ে হরি

তুয়া ভাবে তরু দেই কোর।।

শীতল-নলিনী-দল - তাহে মলয়ানিল

আগোরে লেপই অঙ্গ।

চমকি চমকি হরি উঠত কৃত বেরি

হানত মূদন্-তর্ক ॥ इसर विशिद्ध धनि अमरी-शिक्षांप्रशि

বাটকরি ভেটক কান।

গোবিল দাসের বাণী তুরিতে চলুত্ব ধনি

काञ्च (जन बङ्ख निमान ॥ )२ ॥ )२৮ ॥

### বালা ধানশা।

দ্তীয়ুথে শুনইতে ঐছন রীত।
সব অক পুত্রকিত চমকিত চিত ॥
কহইতে গদ গদ কঠ হি বোল।
সবী মুখ নিরথই অস্তর দোল॥
ইকিত জানি বনাওল বেশ।
দিল্ম দেওল বারল কেশ॥
সব স্বীগণ মেলি কয়ণ পয়ান।
নিশবদে চললিহাঁ কোই না জান॥
চলইতে পদ ছই থরহেরি কাঁপ।
বৈরেইতে পন্থ নয়ন্যুগ ঝাঁপ॥
বৈছনে মিলল নাগর পাশ।
পহিল মিলন কহে বিজ হরিদাস॥ ১০॥ ১২৯॥

#### **क्नात** ॥

হ্বরত পিরাদে ধরল পর্গাণি।
করে কর বারই তরল-নরানী॥
হঠ-পরিরভণে পরিশিতে গাত।
"নহি" "নহি" বলি ঢুলায়ত মাথ॥
অভনব মদন-তর্কিনী রাই।
শ্রাম তরকে রকে অবগাই॥
চুম্বনে সক্ষোচ লোচন-ভার।
পিবইতে অধর রচই সীতকার॥

নথর পরকো ধনি চমকই গোরী।
দংশইতে চমকি উঠরে তমু মোড়ি॥
কহইতে কহে গদগদ পদ আধ।
আন মনে মনসিজ উনমাদ॥
তৈথনে রোধত তহি পরসাদ।
গোবিদ্দাস কহে রস-মরিবাদ॥ ১৪॥ ১৩০॥

#### তথা রাগ।

বালা রমণী রমণে নাহি স্থ।
অন্তরে মদন বিশুণ দেই হুওঁ॥
সব সথী মেলি শুতায়ল পাশ।
চমকি চমকি ধনি ছাড়েরে নিখাস॥
করইতে কোরে মোড়ই সব অঙ্গ।
মর না শুনরে জহু বাল-ভূজক॥
বেরি এক করে ধনী মূদিত নয়ান।
বেরিগী কররে জহু ঔবদ পান॥
তিল আধ হুংওঁ জনম ভরি স্থধ।
ইথে কাঁহে ধনি ভূহুঁ মোড়িসি মুও॥
ভণরে বিশ্বাপতি শুনহ মুরারি।
ভূহ রস-সাগর মুগধিনী নারী॥১৫॥ ১৩১॥

ইতি সংকীর্তনামুদারে পূর্বারাগন্ত সংক্ষিপ্রসম্ভোগ

ইতি ষ্ঠ পলবঃ ॥

व्यथं भूर्त्तत्रागण अकारा हरमा । वदा की मत्नोत्रहता:।

কামোদ।

গোর বরণ তত্ত শোহন মোহন স্থলর মধুর স্থঠাম।

অনুপম অরুণ- কিরণ জিনি অহর

স্কর চারু বয়ান॥

্পেখলু গৌরাঙ্গচক্র বিভার।

কলি-বুগ-কলুম- তিমির-বর-নাশক

নবরীপ চাদ উজোর । এ।

ভাৰহি ভোর বোর ছহঁ লোচন

মোচন-ভব-নদ-বন্ধ।

নব নব প্রেমভর বর-তহু স্থলর

উন্তৰ ভকত জন স্কু

লহ লছ হাস ভাৰ সুহ বোলত

শোহত গতি অতি মৃদ্য

দীন-জনে নিজ বীজ কৈই পব তারল

े विकित मात्र (शाविन्स ॥ ३ ॥ ১०१॥

শ্রীরাগ।

শচীর কোঙর সেীরাঙ্গ স্থলর

বেশিক কাঁশিক কোনে।

অলমিছে চিত হৰিয়া দুইল

अक्ष-भवान-बार्टण

্ নই সত্ৰৰ জহিছ ছোৱে। এতেক দিবসে 🐷 🚎 নদীয়া নগরে নাগরী নারবে ঘরে ॥ এল ॥ রমণী দেখিয়া হাসিয়া হাসিয়া तुम-मग्र कथा कर्य। ভাবিরা চিভিয়া মনে দঢ়াইস্ পরাণ রহিবার নয়॥ কোন পুণাবতী যুবতী ইহার व्यदं त्रम-विनाम। তাহার চরণে হাদর ধরিয়া কহমে গোবিন্দাস ॥ ২ ॥ ১৩৩ ॥ মুখরা উক্তি। সোণার নাজিনী এমনি যে কেনি হুইকা বাউরী পারা। मनाई त्राम्ब वित्रम वमन লা বুঝি কেমন ধারা॥ যমুনা হইতে কন্দ্ৰ তলাতে দেখিলে সে কোন জনে। বুবতী জনার ধর্ম-নাশক ু বিদি থাকে সেই থা**লে ৷** নে ক্ৰ পতে তেপি মনে। কলির কুলের কলক মানিংল চাহিৰা আহল সালে গ্ৰহ

একে কুলনারী কুল আছে বৈরী
তাহে বড়ুয়ার বধু।
কহে চঙীলাদে কুল শীল নাশে
কালিয়া প্রেমের মধু॥ ৩॥ ১৩৪॥

धामनी ।

কালিয়া বরণ হিরণ পিদ্ধন

যখন পড়ারে মনে।

মুরছি পড়িয়া কালারে ধরিয়া

সব সধী জনে জনে॥

কেহ কৰে মাই ওঝারে ঝাড়াই রাইরেরে গাইঞাছে ভূতা। কাঁশি ৰ'শি উঠে কহিলে না টুটে দে যে ব্যভাস্থতা।

রক্ষা-মত্ত পড়ে নিজ্ঞ চুলে থাড়ে

- ক্রেক্ বা কহরে ছলে।

আনি দিব ভোকে নিক্ষয় কহিরে

- ক্রাকার গলার ফুলেনা

কহে চণ্ডীদাসে আন উপদেশে
কুটেন্দেন্টবরী ফে ট্রানান।
দেশাও বতনে প্রাইবে চেতনে
যুচিবে অক্টের জালা ॥ ৪ ॥ ১৩৫ ॥

ব্ৰাইতে বুৰই আন। পুছইতে গদ গদ 💮 উত্তর না নিকসই কহইতে স**ৰ**লে নয়ান। স্থি হে কি ভেল এ বর-নারী। করহ কপোল থকিত রহ ঝামরি জ সুধন-হারী জুয়ারি ॥ এছ ॥ বিছুর্ল হাস রভস রস চাতৃরী বাউরী জমু ভেল গোরী। ক্ষণে ক্ষণে দীরঘ নিশসি তমু মোড়ই, সুখন ভরমে ভেলি ভোরি॥ কাতর-কাত্র- নয়নে নেহারই কাতর-কাতর রাণী। না জানিয়ে কোন হথে দারুণ বেদন ঝরঝর এ ছই নয়ানি॥ । । । । খন ঘন নয়নে নীর ভরি আওত খন ঘন অধরহি কীপন বি বলরাম দাস কই জাকীত জগমাহ ১ বিষয় সন্তাপ ॥ ৫ ॥ ১৩৬ ॥ ে ১০৮ বিষয়

স্থা উক্তি । ত্রুত্ত । বি রুপ দেখিবে আইলা। মরম না কছ ছোক।
বোরাধি ঘুডার্ড গুতার ॥
না পারি বুঝিতে রীত।
সব-দেখি বিপরীত ॥
সোণার বরণ ক্তম ।
কাল্লর ভৈগেল জম ॥
নরানে বহুরে ধারা।
কহিতে বচন হারা॥
জ্ঞানদাস মনে আপ।
কহিলে ঘুচিবে তাপ ॥ ৬ ॥ ১৩৭॥

# थाननी ।

নয়ানক নীর থির নাহি বারই

ঘন ঘন মেটসি তাই।

গচকিত লোচনে জ্বাদ নেহারসি
মান্সি হাত বাড়াই ॥

ক্বেণ ঘর বাহির ক্রসি নিরস্তর

কণে কণে কণে দশ দিশ হেরি।

ময়র ময়রী সনে হাসি সম্ভাবসি

কণ্ঠ হেরসি কেরি ফেরি॥

কেলি-কদম্ব শ্লাই পুন হেরসি

ভালনী নামে রোই উভরোলসি

ভল্লনী ভানর ধানী । গা ১০৮॥

# ততো **বিজোজিং ।** া

मक्ति मैत्रण मामिएत वर जीने। কুলবতী তিন- পুরিখে ভেল আরতি कौरन किरम स्थ मीति। পহিলে ভনল হাম তাম ইই আখর टेज्थरन मन गुँति देवन। না জানিয়ে কো এছে বুরুলী জানাপই চমকই শুভি হরি নেলা मा कार्नित्त देका केंद्र भटि नर्जमाश्रम নব জলধর জিনি ক'াতি। চকিত হইয়া হাম যাঁহা যাঁহা ধাইয়ে তাঁহা তাঁহা রোধয়ে মাতি॥ গোবিন্দ দাস কিইরে উন স্থনর অভয়ে করহ বিশোদ্যাস। যাকর নাম মুর্লী-র্ব তাকর भरि एक मा भन्ना । है । इंके ॥ श्रनः मथाकिः।

## **स्ट्र**े

কেষন উদিলা নাম কেমন মুর্বী। কিরপ কেথিবা পটে লব গেলা ভূলি॥ কেমন দেখিলা ভারে কিবা: অভিনাম। ভানিয়া সকল ভোরু পুরাইব আল॥ তিন জন নছে লোনুনিক কন দিয়া। উপার করিয়া ভেটেরে দিব মিলাইরা॥ থির হৈয়া স্থবদনি কহ সব বাত। কহরে মাধুরী মোর শিরে ধর হাত॥ ২॥ ১৪০॥

भूनः निक्लांकिः।

कारमान।

িশই কৈবা ভ্রনহিলে ভাষ নাম। কাপের ভিতরে দিয়া মরমে পশিল গো ভাকিল করিল মোর শ্রাণ॥ এ ॥

্মা আৰু কিতেক মধু প্ৰাম নামে আছি গো বদন ছাড়িতে নাহি পারে। জ্বিতে জ্বিতে নাম অবশ ক্রিল গো ক্ষেনে পাইব সই তারে॥

নাম-পরতাপে যার ঐছন করিল গো অঙ্গের পরশে কিবা ২য় । বেখানে বসতি তার নমানে দেখিয়া গো যুৰ্তী-ধ্রম কৈছে রম্ন ॥

পাসরিতে করি মনে পাসরা না যায় গো

কি করিব কি হবে উপায়।

কহে বিজ চঙীদাসে কুলবতী কুল নাশে

আপনার যৌবন যাচায়। ১০॥ ১৪১ ৪

# वश्नी-ध्वनि-खंबगः यथा। । । सुद्धे हे

কদৰের বন হৈতে কিবা শব্দ আচ্ছিতে আসিয়া পশিল মোর কাণে। অমৃত নিছিয়া কেলি কি মাধুর্য্য পদাবলী কি জানি কেমন করে মনে॥

স্থি হে নিশ্চয় ক্রিয়া কহি জোরে। কাঁহা কুলাঙ্গনা-মন গ্রাহ্ববাদ্ধে ধ্যান্ত্রণ মাহে হেন দশা হৈল মোরে॥ ধ্রু॥

শুনিরা ললিতা কহে অস্ত কোন শব্দ নহে
মোহন মুরলী-ধ্বনি এই।
সে শব্দ শুনিরা কেনে হৈলা তুমি বিমোহনে
রহ নিজ চিতে ধরি ছেই॥

রাই কহে কেবা হেন মুরলী বাজ্ঞার যেন বিধামতে একত্র করিয়া। জল নহে হিমে জন্ম কাঁপাইছে সব তন্ন প্রতি-তন্ন শীতল করিয়া॥

অন্ত নতে মন ফুটে কাঁটারিতে বেন কাটে ছেদন না করে হিরা খোর। ভাপ নহে উষ্ণ অতি পোড়রে আমাস মতি বিচারিতে না পারিষে ওর॥ ১১॥ ১৪২॥

# पर्मन - किखशाने वर्धा। ি তিরেভি।।

शंक (न चेंबला कृत्य अथना

ভাল মন্দ নাহি জানি।

বিশ্বলে ক্ষিত্ৰা পটেতে লিখিয়া

বিশাখা দেখাল আনি ॥

ইরি হরি এমন কেন বা হৈল।

বিষম বাড়বা- অনল মাঝারে আমারে ভারিয়া দিল।

বয়স কিশোর বেশ মনোহর

অতি স্মধুর রূপ।

নয়ন-যুগল করেছে শীতৰ

বড়ই রদের কৃপ্।

নিম্ব পরিজন সে নহে আপন

বচনে বিখাস করি।

চাহিতে তা পানে 🔩 পশিল পরাণে

বক বিদ্বিষা সরি ॥

চাহি ছাড়াইডে ছাড়া নহে চিতে

এখন করিব কি।

करहे ह जीमारम श्रीम-नव-इरम

किमा बार्कात वि ॥ **२२ ॥ २**८०॥

# জৰ আন্তৰ্গন কৰ

মন্দের মর্ম কথা তোমারে কহিছে এবা ভন ভন পরাপের সই । বুণানে দেবিছু যেহ ভামল বরণ দেহ তাহা বিশ্ব আরু কারো নই॥

রজনী শাগুল ঘন ঘন দেয়া-ধারজন রিমিঝিমি শবদে বরিবে। পালকে শরন রজে বিগলিত চীর অকে নিক্ষাই মনের হরিবে ॥

শিখরে শিখণ্ড রোল মন্ত দাছরী বোল কোকিল কুহরে কুত্হলে। ঝিজা ঝি ঝিনিকি বাজে ডাহকী সে গরজে স্বপন দেখিত্ব হেন কালে।

মরমে পৈঠল সেহ হৃদরে লাগল দেছ শ্রবণে ভরল দেই বাদী। দেখিরা ভাহার রীড বে করে দারুণ চিঙ ধিক্রত কুলের কামিনী।

রপে ওবে রস-নিক্ মৃথ হটা জিনি ইন্দু
মানতীর মানা গলে এমানে।
বনি মোর পদত্রে গারে হাত দেই হলে
"আমা কিন, বিকাইক্" বোলে।

ক্ষিয়া সে ভ্ৰম্ম ভল ভ্ৰমণ-ভূমিত আল কাম মোকে ন্যাচনক কোণে। হাসি ক্ষিক্তিকথা কর প্রাণ কাড়িয়া লয় ভূকাইতে কঠ বল জানে॥

রসাবেশে দেই কোল, মুথে নাহি সরে বোল অধরে অধর পরশিল। অল অবশ ভেল লাজ ভর মান গেল জ্ঞানদাস ভাবিতে লাগিল। ১৩॥ ১৪৪॥

তোমারে কহিবে স্থি স্থপন-কাহিনী। পাছে লোক্ষাঝে মোর হয় জানাজানি॥ জ ॥

শাঙন মাদের দে রিমি ঝিমি বরিথে
নিবেশ জকু নাহিক বসন।
ভাম-বরণ এক পুরুষ আসিরা গো
মুখে ধরি করারে চ্ছন ॥

বলি হৃমধুর বোল পুন পুন দেই কোল লাজে মুথ রহিত্ব মোড়াই। আপনা করয়ে পণ সবে মাগি প্রেমধন বলে "ধনি যাচিয়া বিকাই"॥

চমকি উঠিছ জাঝি কাঁপিতে কাঁপিতে সথি ্ৰে দেখিছে সেই লহে সতি।

স্মান্ত্ৰণ প্ৰকাশ যোৱ হনজনে কৰে লোৱ ক্ষান্ত্ৰণ কাৰ্যাণ কাৰ্যা ্তিবা কে মধুর বাণী ে অন্ধিয়ার জন্মিনী

ক্ত রক-অধিয়া চানার।

কহে বস্থ রামানশে আনন্দে আছিছ নিজে

কেন বিধি চিয়াইল ভার ৪ ১৪ ৪ । ১৪৫ ॥

মলার।

কিশোর বয়স কত বৈদগ্যি ঠাম।
মূরতি য়য়কত অভিনব কাম॥
প্রতিঅঙ্গ কোন বিধি নির্মিশ্য কিসে।
দেখিতে দেখিতে কত অমিয়া বরিষে॥
মন্ত্র মন্ত্র কাপ দেখিত্ব অপনে।
খাইতে শুইতে মোর লাগিরাছে মনে॥ জা॥
অরুণ অধর মৃত্র মন্দ মন্দ হালে।
চঞ্চল নয়ন-কোণে জাতিকুল নাশে।
দেখিয়া বিদরের বৃক ছাট ভূর-ভলী।
আই আই কোথা ছিল সে নায়র রলী।
মহর চলন থানি আধ আধ যায়।
পরাণ যেমন করে কি কহিব কায়॥
পাষাণ মিলাঞা যায় গায়ের বাতাসে।
বলরাম দাসে বলে অবশ পরশে॥ ১৫॥ ১৪৬॥
ততঃ সাক্ষাক্ষনিং যথা।

কি শেখল যুদ্দার ভারে। কালির বর্ম এক আহম আকার গো

ে ব চাটা ক'লে প্র**ক্তির।** প্রাই কামর

বিকাইছ ভার কাৰি ঠারে॥

নিজি নিতি জানি বাই, এমৰ কছু দেখি নাই
ক কণে বাজাইগাম পা ববে।
গুৰুৱা গ্ৰমক ছুল
কলক চুলিয়া আগে কিছুৱ ॥
কামের কামান নিনি ভুকর ভঙ্গিমা গো
হিসুলে বেড়িয়া ছাট আঁথি।
কালিয়ার নয়ান বাণ মরমে হানিল গো
কালাময় আমি সব দেখি॥
চিকণ কালার রূপে আকুল করিল গো

ধরণে না যার মোর হিয়া।
কত চাদ নিকাড়িয়া মুখানি মাজিল গো

যত্ কহে কত হ্যা দিরা গঠেচ ৪১৪৭ ॥

সিক্ষুড়া ।

সঞ্জনি ও কে নাগর তরু-মূলে।

এত দিনে নাহি জানি জোকমুথে নাহি ভানি

হেন জন আছরে গোকুলে ॥ জ ॥

মুরলীর আলাপনে পবন রহিয়া ভনে

যমুনায় বহরে উজান।

না চলে রবির রথ বাজী নাহি পায় পথ

দরবয়ে দারু পাবাণ॥

রমণী-রবণ-কর গতি জতি মছর

মনোহরের মনোহর বেশ।

মৃগমৰ চন্দ্ৰন ত ভছ খন ৰেপন প্ৰিমলে ভুলারল দেশ ॥ अभिन्नो युत्रमी-ध्वनि भाग छाटफ रेख यूनि ্জপ তপ কিছুই না ভার। তৃণ মুখে শেষ্টামত উদ্ধান্তে রহত

বাছুরে হন্ধ মাহি পায়।

ময়ুর পাথার চূড়া মালতীর মালে বেড়া ভূবন-মোহন তার বেশ।

অগোর চন্দ্র তত্ত্ব ঘন লেপন সৌরতে ভরল সব দেশ॥

বজরাজ-নন্দ্র অন্ত-জীবন-ধন নাম তার হলর কানাই। তাহার আঁথির ঠারে, এ দেশে তাহার ডরে ঘরের বাহির হৈতে নাই ॥ ১৭ ॥ ১৪৮

## টিক প্রত্যা**নির বিভাগ** বিভাগ ব

চিকণ কালা গ্লায় মালা বাজন নৃপুর পায় চুড়ার ফুলে ভ্রমর বুলে তেরছ নয়ানে চায়॥

কালিকীর কুলে কি পেথফু দই ভুলিয়া মাগর কাৰ া ্ষর মুনাইতে নারিভুগেই আকুল করিল প্রাণ॥

্টাদাৰ্কামৰি ময়ুৱের পাখা

ह्म्पाय छेर्फ्टर बायः।

ভাৰত হালিয়া মধুর বাঁশরি

া মধুর অধুর সায় ॥

রসের ভরে অঙ্গ না ধরে কেবি-কদম্বের হেবা।

কুলখতী সতী যুবতী জনার

পরাণ লইয়া খেলা।

শ্রবণে চঞ্চল মকর-কুওল

পিন্ধন পিঙল বাস।

রাঙ্গা উত্তপল চরণ যুগল

নিছনি গোবিন্দ দাস্যা ১৮॥ ১৪৯॥

কামোদ ৷

সহজেই বিষম অরুণ দিঠি ভাকর

আর তাহে কুটিল কটাকি। হেরইতে হামারি ভেদি উর অন্তর

ছেনক ধৈৱজ-শাখী॥

এ স্থি বিহরমে কো পুন এই।

পীত-বসন জমু বিজুরী বিরাজিত

मकन-कनम-क्रि एम् ॥

মৃত্ব মৃত্ব ভাষি হাসি উপজারণ

माकृश ममजिक-आशि।

याक्ष्म ध्रम ध्रम-र्भर कुनर्स्टी

হেরই রহ পুন ভাগি॥

তর্ছি পুন বেশু অধ্যান্ত করি কুক রই मरहेराक दशोक्न मामा। দাস থকি ঐছন কছ বনপ্ৰাৰ-व्यान्ड संस्त्रकः मासागः ३२॥ ১৪०॥

शानगी।

ব্দুপ্তিত গ ত জিতি বিছুৱী-বৃঞ্চার। চৌদিকে ভাৰই বোচন-ভার॥ এ কৰি অভয়ে না পায়লু ওয়। কৈছন চিত চোৰাইল ৰোই॥ জাললু অবহু কয়ল মুঝে বাত। অভয়ের অবশ ভেন্ন সর গাত। লোচন যুগলে লোক পরিপুর: কহইটে ব্যৱন কথন নাহি ছুবা। চলইতে চরণ অচল সব ভেল। কুলবজী ধরম-করম দুরে গেল র পুন কিয়ে আছুরে আছু অভিলাব। ना क्षित्र किर घनअभित्र मोग ।। २०॥ ১৫১॥

## A SUPERIOR STORY OF THE STORY OF THE এবাগ ।

क्रमा क्रमा

ेप्राक्रमः नां क्री

भवती बदिशाः संब

ক্রক হাবির: তরক ক্রিমালে

मनम मुज्ञका शांक।।

কিবা সে নাগর কি খেনে দেখিত देशब्दा बह्म पृद्धः। নিরবধি মোর চিত বেয়াকুল কেন বা সদাই ঝুরে ॥ হাসিয়। হাসিয়া অঙ্গ দোলাইয়া নাচিয়া নাচিয়া যায়। নয়ান-কটাকে বিষম-বিশিথে পরাণ বিদ্ধিতে ধায় ॥ মালতী ফুলের মালাটি গলে হিয়ার মাঝারে দোলে। উডিয়া পডিয়া মাতল ভ্রমর ঘুরিয়া ঘুরিয়া বুলে ॥ কপালে চন্দন-ফেঁ'টোর ছটা লাগিল হিয়ার মাঝে। না জানি কি ব্যাধি মরমে বাধন না কহি লোকের লাজে॥ এমন কঠিন নারীর পরাণ বাহির নাহিক হয়। মা জানি কি জানি হয়ে পরিণাম मांग लावित्म क्रा ॥ २১ ॥ ১৫२ ॥ व कहिमान। বরণ দেখিত্ব স্থাম জিনিয়াত কোটি কাম বদন ক্ষিত্ৰ কোটি শ্ৰী। ভাঙ ধমু ভঙ্গী ঠাম, নরান কোণে পুরে বাণ

হাসিতে থসুয়ে স্কুধারাশি ॥

সই এমন স্থন্য ব্যক্ষান। হেরিয়া সে মূরতি সভী ছাড়ে নিজ পতি তেয়াগিয়া লাজ ভয় মান ॥ গ্ৰা এ বড় কারিগরে ' কুন্দিলে তাহারে প্রতি অঙ্গে মদনের শরে। বৈধ্য্য-ভুজঙ্গম যুবতি-ধরম দমন করিবার তরে॥ অতি সুশোভিত বক্ষ বিস্তারিত দেখিতু দর্পণাকার। তাহার উপরে মালা বিরাজিত কি দিব উপমা তার॥ নাভির উপরে লোম-লভাবলী সাপিনী আকার শোভা। ভুরুর বলনি কাম-ধ্যু জিনি ইন্দ্ৰ-ধযুক আভা। চরণ-নথরে বিধু বিরাজিত মণির মঞ্জীর তায়। চণ্ডীদানের হিয়া সে রূপ দেখিয়া ् **ठकन रुटे**श्री धीय ॥ २२ ॥ ५৫० ॥

স্তৃহিনী।

দেখিয়া নাগর শিরোমণি।
না জানিয়ে দিবস রজনী॥
কি হৈল মরমে ব্যথা
কাহারে কহিব কথা।

কি আর পুছসি খোরে। মরম কহিন্ত তোরে॥ यि दन भिनाय (यात्र । তবে সে সফল হোয়॥ নহিলে না জীব আর। তোহারে কহিন্দু সার॥ রাইক ঐছন বাত। ভনি পুলকিত গাত॥ সে স্থী আকুল হৈয়া। চলিল আপনি ধাইকা॥ যেথানে নাগর স্থাম। ্মিকলি যো সোই ঠাম॥ রাইক সে সব দশা। কহে গদ গদ ভাষা॥ মোহন তাহার পাশে। কহে কিছু মুহভাষে॥ ২৩॥ ১৫৪ ।। অথ শ্রীমতীর আপ্রদূতীর উক্তি। नचनचा ॥

লালসোৰেগজাগগা তানবং জড়িমা তথা। বৈষ্ঠাং ব্যাধিকুমাদো মোহোম্ভ্যদ শা দশ। অথ লাল্যা।

ঞ্জীগৌরচন্দ্র:।

অত্র "কুস্থমিত কানন হেরি শচী-লন্দন।' ইত্যাদি শদং জেরম্।

#### श्रानिम

স্থীগণ সঞ্জে নাহি হাস পরিহাস ।
অন্থণ ধরণী শরনে অভিলাব ॥
এ হরি যব ধরি পেথলু তোর ।
তব ধরি দিনে দিনে ঐছন হোর ॥ এ ॥
নম্মন-কমল-জল গলয়ে সদার ।
বিরলে বসিয়া সে ভোহারি গুণ গার ॥
তহিঁ যদি প্রিমস্থী আগত কোই ।
চরণে লিধরে মহী নিশবদ হোই ॥
যতনে পুছয়ে যব মরমক বোল ।
উতর না দেই রোয়ে উতরোল ॥
কিয়ে পুন আছয়ে হির অভিলাব ।
না ব্রিয়া কহ ঘনশ্রামর দাস ॥ ২৪ ॥ ১৫৫

উদ্বেগ-মিশ্রিভ লালসা গ

#### গান্ধার।

মন্দির মাথে বৈঠল বর-স্থলরী

দিনকর ছপর ঠানে।

যব হাম পুছলু পিরীতি সম্ভাষণ
প্রেমজনে ভরল নয়ানে॥

মাধব ভুকা সম্ভারাগিলী রাধা।
ভূমা পারমক্ষে অক সর প্রাকিত

না সামরে ভক্ষন বাধা॥ গ্রা॥

জাবে ভরণ কছ প্ন প্র কলিত
প্র পুন প্র ক্ষামরী গোরী।
প্র প্রত প্ন দিগ নেহারত
ভূমে ভারবে প্র বেরি ॥
কুরণ কবরী উরহি গোটারত
কোরে করত ভূয়া ভানে।
জ্ঞানদাস কহ তুহঁ ভাবে সমূবত
কোন করব চিতে আনে॥ ২৫॥ ১৫৬॥

অথ উদ্বেগ।

তত্তিত জীপৌরচন্দ্র।

**নিদৃড়**ি ।

কানড কুহ্ম হেরি শচীনন্দন
করতলে মুখ-শশী ঝাঁপি।

অহতাবে বেকত করত নক অহত্যাগ
তত্ম মন হুল উঠে কাঁপি।

অপরূপ গৌর-বিলাস।

যো বর-ভাব- বিভাগিত অন্তর
কোহা রতিক পরকাশ #

গামহি ভিসল সকল কলেবর
কিব্রেশ দীশই কাঁতি।

নামক নীমহি কাঁকে দুতন

সাদি গদ কঠে করত হরি কীর্ত্তন আনভুত সো পুন আদ । রাধানোহন কহ কুহকে নাচার জন্ম না বুঝিয়ে ও নব রঙ্গা। ২৬ ॥ ১৫৭॥

কড়খা।

তুরা অপ্রপ রূপ হেরি দ্র সঞ্জ লোচন মন ছহঁ ধাব। প্রশক লাগি জাগি জহু অন্তর জীবন বহু কিলে বাব॥

মাধব তোহে কি ক্ষহৰ করি ভঙ্গী। প্রেম-অংগ্রান দহনে ধনী পৈঠনি জমু তমু দহত পতঙ্গী॥

কহক সমান কহই না পারই, কৈছে বিশোরামব নালা। অস্থা ধরনী শয়নে কত মেটব

### ত প্রাদশী।

কাহে পুন গৌর কিশোর। জাগত যামিনী জন্ম ব্ৰজ-কামিনী নব নব ভাবে বিভোর॥ কাঞ্চন বরণ ভেল পুন বিবরণ शन शन इति इति (वान । মধ অতি নীরদ শবদহি বঝিয়ে মনমথ মথন হিলোল॥ স্তম্ভ কম্প অফ অফে পুল্ক ভরু উত্পত সকল শরীর। ঘন ঘন খাস বহত লুঠত মহী নয়নহি বহ ঘন নীর॥ ঐছন ভাতি করত কড বিতরণ ে প্রম-রতন-বর দীনে। আপন কর্মদোষে তিখনে বঞ্চিত द्राधारमाञ्च मात्र मीरन ॥ २৮ ॥ २६৯ ॥

### ভিরোত।।

তৃহ মনমোহন কি কহব তোয়।
মুগধিনী রমণী তোহারি লাগি রোর॥
নিশিদিশি জাগি জপরে তুয়া নাম॥
থরহরি কাঁপি পড়রে সোই জাম॥
বিশ্বিকী আধ অধিক যব হোয়।
বিগ্রিক লাজ উঠরে ত্ব রোর॥

সধীগণ যত পদ্ধৰ্মেধ্য়ে তার।
তাপিনী তাতে ততহি নাহি ভার॥
ইহ কবিশেশর তাক উপার।
রচইতে তবহি রক্তনী বহি বার॥ ২৯॥ ১৬০

## জিরাগ।

ধরণী-শয়নে ঝররে নয়নে স্থনে কাঁপয়ে অজ । চম্পক বরণ তাপে মলিন ফারুষ দ্হ অনুসা।

কিছু কৰণা করহ কানাই। ভোহারি কটাক- শত্রে জর জর ক্ষতি ক্ষীণ-তম্ম রাই॥

এ দিন বামিনী স্থাগির। কামিনী স্থাপিরা তোহারি নাম। না স্থানিয়ে কিয়ে বেয়াধি হইল স্থাস বহে স্থাবিরাম ॥

সব স্থীগণ করতে ব্যোদন
করি কিছু সা আদি।
গোরীদাস বিসি বিচে আহিবাধি
দেখের আহেবাধ করি ৪ কাল ১৬১ ॥

অথ তানবং।

শ্রীগৌরচন্দ্র ।

বিহাগড়া।

्रम्थ (मथ शोत्वत अश्याम ।

যো রূপ লাবণী দেহ স্থগঠনি

দেখি খুরে কোটিকাম !!

সোই ভাব ভরে কীণ দীশই

পরম ছবর দেহ।

ভবর্ছ' দীপতি উজোর ঐছন

रेगक्न हैं। मिक दब्र ॥

শ্রাম নব রস্ করত কীর্ত্তন

শ্বই ও মব রূপ।

তেহি অহর্নিশি অমই দশ দিশি

স্নাত নব-রস-কৃপ ।

ঐছে নিতি নিতি বিহর দ্বিজ-পতি

জাগু পূরবক প্রেম।

রাধামোহন চিত্ত অসুমান

ও রূপ জগজনে কেম্॥ ৩১॥ ১৬২॥

## বরাড়ী

মাধব থৈয়ক না কর গমলে। ভোছারি বিরহে ধনী অন্তর কর কর মানস জিলল শহরে ॥ গ্রা

ধ্লি-ধ্সর ধনী . বৈরজ না রহ ধরণী শুত্র ভরমে। মুক্ত ক্বরী-ভার হার তেয়াগল ভাপিত ভূষিত প্রাণে॥

বিগলিত অম্বর সম্বর নহে ধনী

স্থর-স্তা প্রবে নয়ানে।

কমলজ কমলেই কমলজ ঝাঁপল

সেই নয়ন-বর বয়ানে॥

মা বোলই ধনী ধরণী-তলে মূরছনি প্রাণ প্রবোধ না মানে। কহই চতুরা ধনী আর কিয়ে হোয় জানি গোবিন্দদাস প্রমাণে॥ ৩২॥ ১৬০॥

অথ জড়িমা। তত্র শ্রীগৌরচক্স ॥

## (वनावनी।

আজু হাম নবছীপ- বিজ-রাজ পেথলু
ন্ব নব ভাবে বিভোর।
দিন রজনী কিয়ে কছু নাহি জানত
নয়নহিঁ অবিরত লোর॥
সঙ্গানি হেরইতে সাগ্যের ধন।
উছন প্রেম ত কিছিঁ নাছি হেরিক্র

শত শত ভকত উচ করি বোলত কছুই না <del>ভ</del>নত বাত।

হস্তি শবদ করত পুন ঘন ঘন প্রেমবজী নারীক জাত ॥

তেমবজা নারাক জাত । সবি সবি সবদ

হরি হরি শবদ কাণহি যব পৈঠত তবহি ভারত ঘন খাস।

ভ্রম ময় বাত কহত ইহ না বুঝিয়ে কহ রাধামোহন দাস॥ ৩০॥ ১৬৪॥

তিরোতা।

থোরি বরস ধনী ভাল মন্দ নাহি জানি থেলই সহচরী সাথ।

বাট ঘটিত তুয়া কামদ রূপ হেরি দৈবে পড়ল প্রমাদ।

শুন মাধব ইথে কাহে বোলসি আন।

ও অচপল-মতি পুন তাহে কুলবতী নিচয়ে তুহুঁ সে নিদান ॥ ধ্রু॥

তাহে তুহঁ স্মধ্র মুরণী আলাপলি

মূনি-জন-মোহন সোয়।

মুরলী নিসান প্রবণে যব পৈঠল

তবহু চঞ্চল ভই রোয়।

তব ধরি জাগর- কীণ কলেবর দিন রঞ্জনী নাহি জান।

তুরা প্রেম বিধ্রে অভিত ভেল অন্তর

কিছুই লা ওনই কাণ ॥

বরজন্মধাকর বোলবে লব জন

তাহে কাহে অককণ ভেল।
রাধানোহন কছ অব বাই মিলহ

মরমে বহুরে আন্দি খেল ॥ ৩৪ ॥ ১৬৫ ॥

### शंचनी ।

কাঞ্চনগোরী ভোরী বৃন্দাবনে থেলই সহচরী মেলি। তুরা দিঠি মিঠি গরলে তহু জারল তৈথনে শ্রামরী ভেলি॥

মাধ্ব সো অবিচল কুল-রামা।

মরমহি গোই রোই দিন থামিনী

শুণি শুণি তুমা শুণ-গামা॥ গ্রু॥

শুক্তন অব্ধ মুগধ-মতি পরিজন
অলখিত বিষম বেরাধি।

কি করব ধনী মলি- মল্ল-মহৌধধি
লোচনে লাগ্ল সমাধি॥

কণে কণে অন্ধ- ভঙ্গ তথু মোড়ই
কহত ভরমময় বাণী।
ভামর নামে চমকি তথু ঝাঁপই
গোবিক্ষয়াস কিছে,জানি ॥ ৩৫ ॥ ১৬৬
অধ কৈছবান । জীলোককদ: ॥

## . 🗟 রাগ।

কাঞ্চন ক্ষল নিন্দি মুথ স্থলর
কাহে পুন ঝামর ভেলি।
করতলে সত্ত করই অবলম্বন
ছোড়ল কোডুক কেলি॥
হরি হরি না ব্ঝিয়ে গৌরাঙ্গ-বিলাস।
অভিনব ভাব বেক্কত কিয়ে করতইি
কিয়ে ইহ সহজ প্রকাশ। গ্রু॥
কহতইি গদ গদ কৈছনে বিছুরব

ভেল মোহে শ্রামর দায়। ইহ তঃথ হাম কহিন্নে নাহি পারিয়ে হুদি দঞে কৈছে বাহিরায়॥

ক্ষণে ক্ষণে করু থেদ ক্ষণে ক্ষণে নিরবেদ অস্থাদি কতয়ে সঞ্চারি। রাধামোহন পাপী কছু নাহি ব্যক ও রূপ জগমনোহারী॥ ৩৬॥ ১৬৭॥

## স্থহই।

ত্য়া রূপ জগজন করত ধেয়ান।
সো অব বিষধর ধনী মন মান॥
মাধব ত্য়া থেদ সহই না পার।
মানই সো নিজ জীবন ভার॥

তুরা বিসর্থ লাগি করত সঞ্চার।
আনজন তাহা লাগি করে পরকার॥
মন অবধারি কহ স্থসমাদ।
ভণে রাধামোহন যাউক বিবাদ॥৩৭॥ ১
অথ ব্যাধি দশা। খ্রীগোরচক্র।

## বরাড়ী।

লাখবাণ হেম জিতি অপক্ষপ গোৱা-জোতি
দীশই পাণ্ডুর কাঁতি।
অভিনব প্রেম-তপ্ত তমু
নব অমুরাগিণী ভাঁতি॥

इंश इथ वज़्हे शमाति।

ও স্থমর তমু

তাহে এত কো সহঁ পারি ॥ এ ॥

কোই জন মুখ ভরি বব কহ হরি হরি

তব বহ খাস-তরক ।

সজল কমল-দল পরশে ভসম-তুল

দেখি মঝু কাঁপই অক্ ॥

ঐছন তাঁতি ভকতগণ তছু গুণ
অহনিশি করত আলাপ।
রাধানোহন পুন ও রস না বৃথিয়ে
মনহি করত অফুতাপ ॥ ৩৮ ॥ ১৬৯ ॥

তথা রাগ।

নিরমণ কুল শীল কাঞ্চন-গোরী।
পাঙ্র কর্মল বিরহ-জর তোরি ॥
অফুক্ষণ ক্ষণে ক্ষণে নিগদই রাই।
নিশিদিশি রোই সখী মুখ চাই॥
তান ভন গোকুল-মঙ্গল শ্রাম।
কৃথি লাগি তাক হদর ভেলি বাম॥
তুরা রূপ জগজন-লোচন শোহ।
একলি তাক নয়ন মন মোহ॥
রস্বতী নির্থি নয়ন প্সারি।
সোঙ্রিতে তাক নয়নে ঝরু বারি॥
আন ধনী বিছুরি করত আম কাম।
তাকর মনহি না ভাওত আন॥
ভুহু বর-নাগর রসিক স্কোন।
যুহ্নক্সন তোহে কি কহব আন॥ ৩৯॥১৭০।

আদত্ত রূপ দৈবে হেরি দ্র সঞ্জে উনমতি পরশক লাগি। বরজক সীম করত গতাগতি লাজ কুল-ভর দ্র ভাগি। মন তমু কাঁপি চপল ভেল অন্তর ঘন ঘন বহত নিশাস। তব ধরি জাগর-শোধিত অন্তর বডই বেকত গদভাব।

ক্রণা মঙ্গল।

ভন রাধামাধব ত্রা, রূপ অভ্ত ফাঁন্দ।

সোধনী হবরি
অন্তিত্তক্দিশী কলি ॥

কবিছিলান
না চিক্কই নিজ স্থীরুক।

রমণীক হছ,তি কতিহঁ না পেথল্
ভনইতে লাগই ধনা।

প্রেম-গজ্জালন সহই নাহি পারই
জীবইতে করই ধিকার।
অন্তর-গত তুহঁ নিরগত করইতে
কত কত করত মঞ্চার॥
অধির নয়ন-শর- ঘাতে বিষম জর
ছটকট জল্জ শ্রান।
রাধামেহন কহ

## ৰাহে লাগৰে পাঁচ ৰাণ॥ ৪০॥ ১৭১॥ বোলোয়ার।

অনধিগতাক প্রিক-গদ-কারণ
নপ্রিত-মন্ত্রৌষধি-নিকুরম্বং।
অবিরত-কদিত-বিব্লোহিজ-লোচন
মন্ত্রশোচতি তামধিল-কুটুম্বং॥
দেব হরে ভব করুণালালী।
মা তর নিশিত-কটাক্ষ-শরাহতমন্তরা, জীবতি কুশ-তমুরালী॥ গু॥

কদি বন্দবিরল-সংজ্ব-পটলী
ক্ট্ছজ্বল-কৌজ্জিক-সমুদারা।
শীতল-ভূতল-নিশ্চল-ভঙ্গরির
মবলীদত্তি সংগতি সিক্ষপারা॥
গোঠ-জনাভয়-সক্ত-মহাত্রতদীক্ষিত ভবতো মাধ্ব বালা।
কথমহন্তি তাং হল্ত সমাত্রম
বিষ্য-দশাং শুক-বুম্ম-বিশালা॥ ৪১ ॥ ১৭২॥

আথোনাদ।

शिर्योत्रहक्त ।

#### মলার

ভাবহিঁ গদ গদ কহত শচীস্থত

কো ইহ আনন্দ-ধাম।

নীল উত্তপল নিন্দি কলেবর

অপরূপ মোহন খাম।

সজনি অভূত প্রেম-উনমান।

ঐছন নকভাব: দেখি ভকত সব

ভাবহি করত বিকাদ ॥ গ্রু ॥

কণে কণে কোরত কণে কণে হাসত

বিশ্বৰ পুৰক্ ভক্ অক'৷

নয়নক নীর চরক্ত ধর ধর

যৈছ্ম।গলা-ভরস্।।।

অনিমিধ নরনহিঁ নিরপই দশদিশ
ছোড়ত দীরহ নিখাস।
যাচে রাধামোহন সো পদ অফুকণ
হোর দল্প বর অভিলাব ॥ ৪২ ॥ ১৭৩॥

गुरुरे।

আচরে সুখগশী গোয়।
বার বার লোচনে রোয়॥
কারণ বিহু ক্ষণে হসই।
উতপত দীর্ঘ নিশসই॥
শুন শুন স্থলর শুাম।
প্রেমক ইহ পরিণাম॥
তাতল তমু নাহি টুটই।
সতত মহীতলে লুঠই॥
কাহক কছু নাহি কহই।
কো অছু বেদন সহই॥
কাপতরি কুলবতী বাদ।
কা দেই করই সম্বাদ॥
গোবিন্দদাস আশোয়াসে।
জীবই তুয়া অভিলাবে॥ ৪৩॥ ১৭৪॥

স্থানী।
ক্ষণে হাসরে কণে রোম।
দিশি দিশি হেরই তোমা।
কণে আকুল কণে থির।
কণে ধাবই ক্ষণে গির।

ক্ষণে কণে হরি হরি বোল।
সহচন্ত্রী ধরি কক্ষ কোল।
ঐক্তন ছেরি অগেয়ান।
সবহ দগধ কক্ষ প্রাণা।
গুরুজন-ভ্রে স্বী মেল।
মন্দির মাঝহি নেল।
তাহি সোয়াথ নাহি পার।
যতনদন মুখ চার॥ ৪৪॥ ১৭৫॥

অথ মোহদশা। শ্রীগোরচন্দ্র।

## গুর্ক্তরী ৷

পুরুবহি শচীক্ষত ভাবহি উনমত
পেথলু কত শত বেরি।

এবে দিন দিন পুন নব নব শত গুণ
বাঢ়ল অব হাম হেরি॥

সঞ্জনি কোই না পাওই ওর।

হের দেখ খ্রাম কহই পুন তৈখনে
ভূতলে পড়লহি ভোর॥

মধুর ভকতগণ কান্দি বেয়াকুলযব হরি বোলল কাণে।
ভৱাহি পুলক কুল, ভত্ন মাহা উদ্ধন

থির ভেল সকল পরাণে ॥

ঐছন ভাব- রতন পুন পূর্ব কাচক কৃষ্টি নাহি দেখি।

কঠিপুত্ৰী অলু কুহুছেৰ নাচাওত প্ৰছে রাধামোহন লেখি ॥ ৪৫ ॥ ১৭৬ ॥

धाननी ।

যব তুয়া নয়ন মুরুলী বিবে জারল তব মনমোহন ভেল॥

নিচল কলেবর পুন ধরণীতল পরিজনে লাগল শেল॥

আন উপদেশে তোহারি নামে তৈখনে দৈবহি উপনীত কেল।

সোই শবদ পুন কাণে সাস্তায়ল ঐচনে চেডন ভেল॥

মাধব কি কহব সো অফুরাগ।

ঐছন ভাতি দিশই মোহে পুন পুন না বুঝিয়ে জাগ না জাগ ॥

কিয়ে জানি দশমী- দশা যদি নিচয়ে ইছুয়ে ভূয়া অভিনাষে।

আনা পরম হুখ পুন মেটউ নহ কহ স্থল নৈরাশে ॥

যাটিত লথিমী উপথেরে ছো জন

কতৃ নহে তাক কল্যাণ।
অতরে তুরিতে চল রমণী রতনে মিশ
রাধামোহন রস গাদ ॥ ৪৬॥ ১৭৭॥

#### ভিরোভা।

তোহারি বিরহমন্ন বাধা।
মুরছলি মুগধিনা রাধা॥
বরজ-মঙ্গল জুলা নাম।
মোহে অব বিপরীত ভান॥
নবমী দশা অব ভেল।
গদ গদ দিশবদ কেল॥
তিরি-বধ লাগব তোয়।
বুঝি করব অব সোয়॥ ৪৭॥১৭৮॥
অথ দশমী দশা।
শ্রীগোরচক্র ॥

### धाननी।

যছু মুখ-লাবণী কত কুল-কামিনী
হেরই মদন আগোর।
সো অব বরজক রমণী-শিরোমণি
নব নব ভাবে বিভোর॥
অপরূপ গোরা অবভার।
উছন প্রেম-ধন বিতরয়ে জগজন
ভারল সকল সংসার॥ জঃ॥
গদ গদ কহত মোহে যদি নিকরুণ
নাগর করুণা-সীম।
অধিশ রসামৃত সকল সুথাকর

এত কহি তৈখনে করল প্রিয়ক কেরি

দশমী দশা পরকাশ।

কান্দি ভকত সব উচ্চ হরি বোলত

কহ রাধামোহন দাস ॥ ৪৮॥ ১৭৯॥

ভিবোতা।

সুঠতি ধরণী ধরি সোয়।

খাদ-বিহীন হেরি সহচরী রোয় ॥

মূরছনি কঠে পরাণ।

ইহ পর কো গতি দৈবে সে জান ॥

এ হরি পেথলু সো মূথ চাই।

বিনহি পরশে তুয়া ন জীবই রাই॥

কেহ কেহ জপয়ে দেব-দিঠি জানি।

কেহ নবগ্রহ পুজে জোতিথ আনি॥

কেহ নামা ধরি খাদ বিচারি।

বিরহ-বিঘন কেহ লথই না পারি॥

শেষ-দশা যব সো সব জান।

কহই গোপাল কি হই পরিণাম॥ ৪৯॥ ১৮

এতৎ শ্রমা প্রিক্ষাক্রেঃ।

গুর্জরী।

গোপ-কুমার-সমাজমিমং স্থি পুচ্ছ কদাস্থগতোহহং। কথমিব মামস্থ পশুতি দিশি দিশি কথমিব কলয়তি মোহং॥ স্থি হে পরিহর বচন বিলাসং।

গোপ-শিশ্নাং বিদিত্মিদং মম

জনরতি গুরু পরিহাসং ॥ ধ্রু ॥

যদিচ কুলাবলয়াপি কুল-স্থিতি

রনয়া পরিহরণীয়া ।

কিমিতি তদা ময়ি রতিরতি বিকলা
বালে কিল করণীয়া ॥

গজপতি-কুল-মুদে মধুস্দনবচন মিদং রসিকেষু ।

রামানন্রায়-কবি-ভণিতং

জনয়তি মুদ্মণিলেয়ু ॥ ৫০ ॥ ১৮১ ॥

स्ट्रिनी।

স্থি কাহে কহ বিপরীত।
হাম নহ চপণ-চরিত।
জগতে বিদিত মঝু নাম।
মদন-পরাপ্রী শ্যাম ॥
কৈছন রাধা নাম।
কভু নাহি শুনি গুণগাম॥
পরনারী নয়ানে না হেরি।
ঐছন না বোলহ ফেরি॥
না করহ ও পরসঙ্গ।
শুনইতে দগধ্য়ে অঙ্গ।
পুন যদি কহ অনুচিত।
ব্রজ্মাহা করব বিদিত॥

### বালাধানশী।

কামুক নিঠুর বচন শুনি সো স্থী আওল রাইক পাশ। প্রু ঘটিত হুখ সোচন ছল ছল কহতহিঁ গদ গদ ভাষ॥

স্থ+নিরি দ্রে কর কারু আশোয়াস। ঐছে নিঠুর সঞে বেহ নহে সম্চিত না প্রব তুরা অভিলাস ॥ ঞ্₁॥

তোহারি নিদান হাম কতথে গুনায়ল তাহে যে স্থকঠিন বাণী। সোহাম তুয়া পায় কত যে নিবেদব কহইতে দহয়ে পরাণী॥

ঐছন বচন রাই যব দোতী-মুখে শুনইতে মূরছিত ভেল। ইহ পরমানন্দ- দাস হাদয়মাহা কো-জানি রোপল শেল॥ ৫২॥ ১৮০

#### তথা রাগ।

মোরে উপেথিল শ্যাম ক্রনীগর এ সব শুনিম্ব কাণে। ছরাশ বিরোধী- হৈয়া নিরবধি তথাপি দগধে মনে॥ স্থি হে দঢ়াইমু এই সার। না হয় স্থলভ সে হরি চল্লভ মরণ সে প্রতিকার॥ কালিন্দী গম্ভীর জলের ভিতর প্রবেশ করিব আমি। তবে সে পিরীতি রহয়ে কি রীতি নিচয় জানিহ তুমি॥ এমতে রাধিকা ব্যাকুল অধিকা ভাবের তরঙ্গে ভাসে। অনুরাগীমন ধৈর্ঘা গেল ভণ এ যতুনন্দন দাসে॥ ৫৩॥ ১৮৪॥

## सुरुरे।

যদি ক্লম্ভ অকরণ হইলা আমারে।
তাহাতে বা কেবা দোষ দিবেক তোমারে॥
না কান্দিহ আরে সথি কহিয়ে নিশ্চয়ে।
ক্লম্ভ বিনে প্রাণ মুঞি না রাখিব দেহে॥
উদ্ভর-কালের এক করিহ সহায়।
এই বৃন্দাবনে যেন মোর ভন্ন রয়॥

তমাদের কান্ধে মোর ভূজলতা দিয়া।

নশ্চল করিয়া ভূমি রাথিহ বান্ধিয়া॥

কৃষ্ণ কভূ দেথিলেই পূরিবেক আশ।

উনিয়া কাতর যহনকন দাস॥ ৫৪ ॥ ১৮৫।

আড়ানা।

স্থীগণে বিভোৱ হইয়া।
কাল্যে ধরণী লোটাইয়া॥
লালিতা প্রবোধ করে তায়।
বহুমত রচিয়া উপায়॥
হাম অব করব পয়ান।
বৈছে মিলয়ে তোহে কান॥
ঐছন কহি পুন তায়।
নহে বা ধরিব তছু পায়॥
ইথে সকরুণ হই শ্যাম।
আত কহি চলে তছু পাশ।
কহতহি মোহন দান॥ ৫৫॥১৮৬॥
অথ শ্রীকুষ্ঠামুতাপঃ।

তথা রাগ।

ভাবেদ পাছে পাঞা বাধা।

হইল প্রেমের অভ্রেম ফুকর

স্থি আর কি কহিব তোরে। কেনে পরিহাস বচন নৈরাশ কহিন্দু হইয়া ভোগ্নে॥

কিমা সেই ধনী ধৈর্ঘ্য ধরে জানি হৃদয়ে ধরিয়া বাথা। পাছে সে ব্যথায়ে সে ততু জারয়ে উপায় কি করি এথা ॥

কিম্বা দোরুণ কামের কামান বিন্ধয়ে বিষম-শবে। শিরীবের ফুল জিনিয়া কোমল সেহ কি সহিতে পারে॥

হাহাদে মুগধী ক্লপের অবধি ফলি মনোরথ লতা। হাহাকেন হেন বঞ্জন-বচন কহি কৈমু উন্মূলিতা॥

অমৃত পুতলী রূপের আগলী নাজানি কি জানি হয়। এ ষত্নশ্ন- দাস মনে ভণ দর্শনে পরাণ রয়॥ ৫৬॥ ১৮৭॥

## পুন দৃতীর আগমন যথা।

#### তথা রাগ।

রাইক জীবন- শেষ শুনি সহচরী
বহু পরবোধল তায়।
বৈরক্ত করি পুন কান্থ নিয়ড়ে চল্
না দেখিয়া আনহি উপায় ॥

মাধব নিলজহি কহি পুন বেরি।
সো কুল-কামিনী নিচয় মরণ জানি
কহইতে আওসু ফেরি॥ ঞ্জ॥

শুনইতে কারু নয়ন-মুগ ঝর ঝর
আকুল তন্তু মন প্রাণ।
গণি গণি কাতর বৈরজ পরিহরি
বোলত নাগর কান॥

সন্ধনি তোহে হাম কি কহিব আর।

মঝু লাগি সোধনী ভেলহি থৈছন

ঐছন ভেলহ আমার॥

ভাবিনী-ভাব মনহি মন গণইতে ধনি ধনি আপনাকে মানি। সহচরী সঙ্গে চলল বর-নাগর কহইতে গদ গদ বাণী ॥ কত কত ভাব- বিভাবিত অস্তর
সোঙরিতে সো গুণগাম।
যোই নিকুঞ্জে আছুরে ধনী আকুল
যাই মিল্ল সোই ঠাম॥

কুঞ্জক দারে রাখি বর-নাগর
স্থী কহে মুগধিনীপাশ।
চেতন করহ তুরিতে উঠি বৈঠহ
কহ গৌরস্কর দাস॥ ৫৭॥ ১৮৮॥ •

অথ সংক্ষিপ্ত-সম্ভোগ।

কেদার।

কারু বদন হেরি উছ্লিত অন্তর লাজে বদনে মুথ ঝাঁপ। ঈষদবলোকনে ছল ছল লোচন কেলি-সমাগমে কাঁপ॥

দেথ সথি রাইক ঢক্ষ।
কান্থক দরশিতে ঐছে বেয়াকুল
দরশনে ইহ চিত-রঙ্গ ॥ গু ॥

রাই বদন হেরি লুবধল মাধক কোরে বৈঠায়লি গোরী। কুচ কর পরশনে চমকি উঠয়ে ধনী চুম্বনে রহ মুধ মোড়ি॥ ভূজে ভূজে বন্ধন দৃঢ় পরিরস্তন অধরে অধর রস নেল। গোবিন্দদাস পত্ঁ পূরল মনোরথ নব নব সঙ্গম ভেল॥ ৫৮॥ ১৮৯।

#### কেদার।

কুচপর ছাত ধরলি বলী। কমলে গরাশল কমল-কলি॥ অধরে অধরে কিয়ে লাগল ছন্দ। কমল পিয়ে কি কমল-মকরন। এত বলি কিঞ্চিণী করত ফকার। রাজা মদন না করে প্রচার॥ দৃঢ় পরিরস্তনে হিয়ে হিয়ে লাগে। টুটল হার লাজ ভয় ভাগে॥ শ্রমজলে পূরিত ভেল হছঁ দেহা। জনু ঘন বিজুরী ভৈগেল নব লেহা॥ একহি জীবন একহি পরাণ। পহিলহি হোয়ল রাধা কান। এত জানি মনমথ করল বিবেক। আনি করল হুহু তুমু তুমু এক॥ কহে হরিবল্লভ আর কি বিচার। এ হহু মূরতি রস অবতার ॥ ৫৯ ॥ ১৯ ।॥ ইতি সপ্তম পল্লবঃ॥

অব এক্লিফন্ত পূর্ববাগঃ।

माकाकर्गतन यथा।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

🗟 রাগ।

পহুঁ করুণা-সাগর গোরা।

ভাবের তরঙ্গে অঙ্গ গর গর

হেরিয়া ভূবন ভোরা॥ ঞ ॥

হাহাকার করি ভুজযুগ তুলি

বোলে হরি হরি বোল।

রাধা রাধা বলি ভাকে উচ্চ করি

গদাধর হেরি ভোর॥

ক্ষণে ক্ষণে কত ক্ষণা করত

গরজে গভীর নাদে।

পতিত দেখিয়া আকুল হইয়া

धतिया धतिया कार्त्म ॥ ১ ॥ ১৯১ ।

थाननी।

নির্মল-বদন- কমল-বর-মাধুরী

হেরইতে ভৈগের ভোর।

অলথিতে রঙ্গিণী- ভাঙ-ভূজঞ্গিনী

মরমহি দংশল মোর॥

সজনি যব ধরি পেথলু রাই।

মদন-মহোদধি- নিমগন মঝু মূল

ষ্মাকুল কূল নাহি পাই॥ ধ্ৰঃ।

বিদ্ধি হাস বিলোকন-অঞ্চলে

মঝুপর হো দিঠি দেল।

কিয়ে অফুরাগিণী কিয়ে বিরাগিণী

ব্ঝইতে সংশয় ভেল॥

মরমক বেদন মরমহি জানত

সদয় হুদম তহিঁ চাই।

গোবিন্দাস কহ নিতি নব নৌতুন

মনে লাগল রস্বতী রাই॥২॥১৯২॥

#### তথা রাগ।

অলথিতে হামে হেরি বিহসলি থোরি।
জম্ব রজনী ভেল চাঁদ উজারি॥
কুটিল কটাক্ষ-ছটা পড়ি গেল।
মধুকর-ডম্বর অম্বর ভেল ॥
কাহার রমণী কে উহ জান।
আকুল করি গেও হামারি পরাণ॥
লীলা-কমলে ভ্রমরা কিয়ে বারি।
চমকি চললি ধনী চকিত নেহারি॥
তেঞি ভেল বেকত পয়োধর শোভা।
কানক-কমল নাহি কাহে মনোলোভা॥
আধ লুকায়লি আধ উদাস।
কুচ-কুস্ত কহি গেও আপনাক আশ ॥
বিভাপতি কহ নব অমুরাগ।
গোপত মদন-শ্র কাহে না লাগ॥ ৩॥ ১৯০

## ধানশী।

কিরে মম দিঠি পড়ল শশি-বরনা।
নিমিথ নেহারি রহল হর নরনা॥
দারুণ বস্ক-বিলোকন থোর।
কাল হই কিরে উপজল মোর॥
মানস রহল পয়োধর লাগি।
অন্তরে রহল মনোভব জাগি॥
শ্রবণ রহল ঐছে শুনইতে রাব।
চলইতে চাহি চরণ নাহি যাব॥
আশা-পাশ না তেজই অস্ব।
বিভাপতি কহে প্রেম তরঙ্গা।৪॥১৯৪॥

## কামোদ।

সজনি ভাল করি পেথন না ভেল।
মেঘমালা সঞে তড়িত গতা জরু

রুদয়ে শেল দেই গেল॥ জ্ঞ ॥
আধ আঁচর থসি আধ বদনে হাসি
আধহি নয়ান তরঙ্গ।
আদ উরজ হেরি আধ আঁচের ভরি
তবধরি দগধে অনঙ্গ॥
একে তন্তু গোরা কনক কটোরা
অতন্তু কাঁচলা উপাম।
হারে হরি লব মন জন্তু ব্রি ঐছন
ফাঁস প্সারল কাম॥

দশন মুক্তা পাঁতি অধক মিলায়ত মৃত্ব মৃত্ব ক্তৃতিই ভাষা। বিদ্যাপতি কহ অতয়ে সে হুধ রহ হেরি হেরি না পুরল আশা॥ ৫ ॥ ১৯৫॥

#### গান্ধার।

সজনি অপরূপ পেথলু বালা। হিমকর মদন মিলিত মুধ মণ্ডল তাপর জলধর মালা॥ চঞ্চল নরান হেরি মুঝে স্থানরী মুচকায়ই ফিরি গেল। তৈখনে মরমে মদন-জ্বর উপজল জীবইতে সংশয় ভেল ॥ অহর্নিশি শয়নে স্থপনে আন না হেরিয়ে অনুক্রণ সোই ধেয়ান। তাকর পিরীতিকি রীতি নাহি সমুঝিয়ে আকুল অথির পরাণ॥ মরমক বেদন তোহে পরকাশল তুহঁ অতি চতুরি হুজান। সোপুন মধুর সুরতি দরশায়বি রাধাবলভ গান ॥ ৬ ॥ ১৯৬॥

ভিরোতা ধানশী।

নহুঙা বদনী ধনী বছন কহসি হসি।
স্বামিয়া বিরুপে জন্ম শারদ পুনিম শ্লী।

আপর্কপ রূপ রমণী মণি।

যাইতে পেথলু গজরাজগমনী ধনী ॥ জা ॥

বিংহ জিনিয়া মাঝারি খিনি তহু অতি কমণিনী।
কুচ ছিরিফল ভরে ভালিয়া পড়য়ে জানি ॥

কাজরে রঞ্জিত বলি ধরল নয়নবর।

ন্রমর ভূলল জয়ু বিমল কমলোপর॥

ভপরে বিস্তাপতি সো বর-নাগর।

রাই রূপ হেরি গর গর অস্তর ॥ ৭ ॥ ১৯৭॥

্ত তুড়ী॥

পথে জড়াজরি দেখিমু নাগরী
স্থীর সহিতে যায়।
স্কল অঙ্গ মদন রঙ্গ
হসিত বদনে চার॥

সই কেমন মোহিনী সেহ। যদি মহার পাই তেমতি হয় তা সঞ্জে ক্রিয়ে লেহ॥ জ॥

নীৰ মুক্তা হার <u>বেক্তা</u> শোভিত দেখিছ ভাল। বেন ভারাগণ ভীনিত গগন চালেরে বেডিয়া স্থাল গ কুচ বে মঙলী • কনক কটোরি বনালে কেমন ধাতা। হাসির রাশি মনের খুসি

मानं कटत्र यमि माञा ॥

চণ্ডীদাস কহে বদি দান হয়ে
কি জানি মাগি বা তার।
ছটার ঝলকে পরাণ চমকে
ভিমিরে লাগরে ভর ॥ ৮॥ ১৯৮॥

#### धाननी।

রতন-মঞ্জরী ধনী লাবনী-সায়র অধরহিঁ বান্ধুলী রঙ্গ। দশন কিরণ কত দামিনী ঝলকত হসইতে অমিরা তরঙ্গ।

সন্ধান যাইতে পেথমু রাই।
মনুহেরি স্বারী ভরমহি চঞাল
চকিত চমকি চলি বাই॥ জ্ঞা

পদ হই চারি চলই বর নারবী বহল নিমিধ-শর জোরি। কৃটিল কটাক কুম্ম-শর বরিধনে সরবস লেবল নোরি ॥ ৰবু মন য়শ গুণ াল ্ হুধি মতি সাধস লেই চলন স্ব বালা। পোবিৰুদাস কুছই অব মাধ্ব ৰপত্হি ভুষা গুণ-মালা॥ ১॥ ১৯৯॥

#### কামোদ।

কাঞ্চন-ক্ষল প্ৰনে উল্টায়ল ঐছন বদন সঞ্চারি। সরবস লেই পালটি পুন বিন্ধলি রঞ্জিনী বঙ্ক নেহারি॥

হরি হরি কো দেই দারুণ বাধা। নয়নক সাধ আধু না পুরুল পালটি না হেরম্ব রাধা॥ গ্রন্থ।

ঘন ঘন আঁচর কুচ কনকাচল ঝাঁপই হাসি হাসি হেরি। জমু মরু মন হরি কনয়া-কুন্ত ভরি মুহরি রাখত কত বেরি॥

स्त यन वांकन हे जिस कांकत তাহি মিলল আন আন। কাঠক মুম্বতি ঐছে মুক্ষছায়ত त्शिक्किमात्र भद्रमात्र ॥ > ।। २०० ॥ অধ অপরায়ে দর্শনং করা। রতন মন্দির মাহা ইত্যাদি গীতং পুর্বোক্তং।

বেলোয়ার।

বৰ গোখুলি সমর বেলি ধনী মন্দির বাহির ভেলি। নব জলধর বিজ্রী রেহা

ছন্দ পসারি গেলি ॥ খনী অলপ বয়েস বালা

ৰকা ৰুগুৰ ব্যেপ বালা জহু গাঁথনি পুহুপ মালা। থোরি দর্শনে আশা না পুরুদ

বাঢ়ল মদন আলা ॥

গোরী কলেবর ন্ন। জহু আচরে উজোর সোণা।

কেশরি জিনিয়া মাঝারি থিনি ছলহ লোচন কোণা॥

ঈষৎ হাসনি সনে মুঝে হানল নয়ন বাবে। চিন্নজীব রহু পঞ্চ পৌড়েশ্বর

কবি বিশ্বাপতি ভাগে॥ ১১॥ ২০১।

তুড়া।

বেলি অসকালে

मिश्र जारन

পৰেতে ফাইতে দে।

জ্ডার কেবল

ৰন্ত্ৰন যুগল

চিনিতে নারিছ কে।

সই রূপ কে চাহিতে পারে। অঙ্গের আভা বসন শোভা পাস্বিতে নারি তারে॥

বাম অঙ্গুলিতে যুকুর সহিতে কনক কটোরি হাতে।

সিঁথায় সিন্দুর নয়ানে কাজর মুকুতা শোভিত মাথে ॥

নীল শাড়ী মোহনকারী উছলিতে দেখি পাশ।

কি আর পরাণে সোপিছ চরণে দাস করি মনে আশ॥

কুচযুগ গিরি কনক কটোরি শোভিত হিয়ার মাঝে।

ধীরে ধীরে যায় চমকিয়া চায় ঘন না চাহে লোক লাজে।

কিবাসে ভঞ্জিমা কি দিব উপমা চলন মন্থর গতি।

কোন ভাগ্যবানে পাঞাছে কি দানে ভঞ্জিয়া সে উমাপতি ॥

চতীয়ানে কর মুরতি এ নয় ব্ধিতে নাগ্র জনে 🖟 💮 অমিরা ছানিরা গতন করিয়া

शिक्त द्य अक्ष्मात्म ॥ ३२ ॥ २०२ ॥

## আসাৰরী ৷

রমণীর মণি পেখল আপনি
ভূষণ সহিতে গায়।
দেখিতে দেখিতে নিজ্জী কলকে
ধৈবলে ধৈবজ ধায়।

সই চাহ্নী মোহিনী থোর। মরমে বান্ধিত্ব হেরিয়া ভূলিত্ব ক্রপের নাহিক ওর ॥ ঞ ॥

বদন ছান্দ কামের ফান্দ বুরিরা কুরিয়া কান্দে। কেশের আগ চুম্বরে চাপ্ট ফিরিয়া ফিরিয়া বাব্ধে॥

বসন থসত্বে অঙ্গুলি চাপত্তে কর করছে থুইরা। দেখিয়া লোভরে মদন ক্ষোভরে কেমনে ধরিব হিরা॥

জলের কান্ধারে কেশের আন্ধারে সাপিনী কাগরে মোর। কেমনে কামিনী আছরে আপনি এমন সাপিনী বোর। দশন কাঁতি মুক্তা পাঁতি হাস উপারহে শবী। পরাণ পুতলী হইম্ পাগলী

মরমে রহল পশি।

শূন যে হিয়া রহল পড়িয়া

বস্তু রহল ভায়।

চণ্ডীদাস কয় <u>ফিরি দেখা হয়</u> তবে সে পরাণ রয়॥ ১৩॥ ২০৩॥

তত্ৰ সানকালে দৰ্শনং।

# বরাড়ী।

সুহচরী মেলি চলল বররলিণী
কালিন্দী করই সিনান।
কাঞ্চন শিরীষ- কুস্তম জিনি তমু-ক্ষৃতি
দিনকর কিরণে মৈলান॥
সঞ্জনি সোধনী চিতক চোর।

চোরিক পছ ভোরি দরশায়লি চঞ্চল নয়নক ওর ॥ গ্রু ॥

কোমল চরণ চলত অতি মহর উত্তপত-বালুক বেল। হেরইতে হামারি সজস দিঠি গছজে হুহু পাছক করি নেল। চিত নর্থন মর্ এ ছহঁ চোরায়লি শূন হলর অব মান। মনম্প পাপ দহনে তহু জারত গোবিন্দাস ভালে জান॥ ১৪ ॥ ২০৪ ॥

কুড়ী।

ধীর বিজ্বী বরণ গোরী
পেখলু ঘাটের কূলে।
কানড়া ছান্দ কবরী বাস্কে
লব মল্লিকার মালে॥

সই মরম কহিছ তোরে। আড় নয়ানে ক্লীৰত হাসিয়া আকুল করিল মোরে ॥ গ্রুণ

ফুলের গেঁডুরা লুকিলে ধরমে সঘনে দেখারে পাশ। উচ-কুচবুগ- বসন খুচারে মুচকি মুচকি হাস॥

চরণ কমতে। 

ত্বলর মাবক রেখা।

ক্বেছ চঞ্চীনাবে 

পুন কি হইবে দেখা। ১৫ ॥ ২০৫॥

#### তথা রাগ।

ক্ষনক বরণ কিরে দবপণ নিছনি দিয়ে যে তার।

ক্ষপালে ললিত চান্দ যে শোভিত

সিন্দুর অরুণ আর॥

সই কিবা সে মুখের হাসি।

হিয়ার ভিতর পাঁজর কাটিয়া

মরমে রহল পশি ॥ গ্রু ॥

গলার উপর মণিময় হার

গগন মণ্ডল হেক।

কুচযুগ-গিরি কনক পাগরি উলটি পড়ল মেক ॥

উক্ন যে উক্লতে সম্বিত কেশ

হেরিয়ে স্থন্দর তার।

চরণের ফুল হেরিয়া ছকুল

জলদ শোভিত ধার॥

কহে চণ্ডীদাসে বাস্থলী আদেশে

হেরিয়া নথের কোণে।

জনম সফলে যমুনার কুলে

शिनायन किन करन ॥ १७॥ २०७॥

গান্ধার।

কামিনী করই সিনান। द्वत्रहेट सन्दर होतन नीकृती। ক্তিক্রে গলরে জল-ধারা।
মুখ-শলি-ভরে কিরে রোরে আদ্বিয়ারা॥
তিতল বসন তমু লাগি।
মূনিক্ক মানস মনমথ জাগি॥
কুচ্ যুগ চাক চকেবা।
নিজ কুল আনি মিলারল কেবা॥
তেঞি শক্কা ভূজ-পাশে।
বাদ্ধি ধরল জমু উড়ব তরালে॥
কবি বিভাগতি গাওরে।
ভ্রেণবতী নারী রসিক জন পাওরে॥ ১৭॥ ২০৭॥

#### তথা রাগ।

যাইতে পেখলু নাহলি গোরী।
কতি সঞ্জে রূপ আনলি চোরি।
কেশ নিঙ্গাড়িতে বহে জল-ধারা।
চামরে গলরে জন্থ মোতিম-হারা।
অলক্ষি তিতল তহি অভি শোভা।
অনিকুল কমলে বেচ্ল মধুলোভা।
নীরে নিরঞ্জন লোচন রাতা।
সিন্দুরে মণ্ডিত প্রজ্ব পাতা।
সজল চীর পরোধর-দীমা।
কনক বেলে জন্ম পড়ি গেও হিমা॥
ও মুকি কর তহি দেহা।
অবহঁ ছোড়বি বোহে তেলবি লেহা।

বৈছে কেরি রস না পাণ্ডব আর ।

ইথে লাগি রোই গলরে জলধার ॥

বিছাপতি কহে গুনহ মুরারি।

বসনের ভাব ও রূপ নেহারি ॥ ১৮॥ ২০৮॥

সিন্ধুড়া।
আছু মরু শুভ দিন ভেলা।
কামিনা পেথলু সিনানক বেলা॥
চিকুরে গলয়ে জল-ধারা।
মেহ বরিবে জয়ু মোতিম-হারা॥
বদন মোছল পরচুর।
মাজি ধয়ল জয়ু কনক মুকুর॥
তেঞি দরশল কুচ জোরা।
পালটি.বৈঠায়ল কনক কটোরা॥
নীবিবন্ধ করল উদেস।
বিশ্বাপতি কহ মনোরথ শেব॥ ১৯॥ ২০৯॥

(वलावली।

সন্ধনি ও ধনী কে কছ বটে।
গোরোচনা-গোরী নবীন কিশোরী
নাহিতে দেখিতু ঘাটে॥
ভনহে পরাণ স্থবল সালাতি
কে ধনী মাজিছে গা।
বস্নার তীরে বলি তার নীরে
পারের উপরে পার

অঙ্গের বস্ন করেছে আসন व्यानाका मित्राटक दवनी। উচ কুচ-মূলে হেমহার দোলে 'স্থমেরু শিথর জানি॥ সিনিয়া উঠিতে নিতম-তটীতে পড়েছে চিকুর-রাশি। কান্দিয়া আন্ধার কনক-চান্দার শরণ লইল আসি॥ কি বা সে হগুলি শৃষ্থ ঝলমলি সক সক শশি-কলা। মাজিতে উদয় শুধু সুধাময় দেখির্বা হইন্থ ভোরা॥ চলে নীল শাড়ী নিকাড়ি নিকাড়ি পরাণ সহিত মোর। সেই হৈতে মোর হিয়া নহে থির মনোরথ-জরে ভোর॥ কহে চণ্ডীদাসে বাস্থলী আদেশে ভন হে নাগর চালা। সে যে ব্যভাম বাজার নন্দিনী

ভিরোজা।

नाम विद्नापिनी बांधा ॥ २०॥ २००

ানাহি উঠন তারে সোধনী রাই।

মুখু মুখ সুক্রী অবনত চাই॥

একলি চললি ধনি হই আগ্রান।
উমতি কহই স্থি করহ প্রান॥
এ স্থি পেথলু অপক্ষপ গোরী।
বল করি চিত চোরারল মোরি॥
কিরে ধনী রাগিণী বিরাগিণী হোর।
আল নৈরালে দগ্যে তহু মোর॥
কৈছে মিলব মোহে সোঁ ধনী অবলা।
চিত নরন মুরু ছুহুঁ তাহে রহলা॥
বিস্থাপতি কহে শুনহ মুরারি।
ধৈরজ করহ মিলব বর-নারী॥২১॥২১১॥

ইত্যাদি দর্শনং। শ্রীক্লফের অত্যুৎকণ্ঠা। বরাড়ী।

আর কবে হবে মোর ভতকণ দিন।
নয়ানে নেহারিতে না বাসব ভিন॥
এ সথি এ সথি নিবেদন তোর।
সো কি স্থামুখী মিলব মোর॥ জ॥
আধ মুচকি হাসি হেরব নয়ানে।
স্মধুর বোল কি ভনব প্রবণে।
কুচবুগ করে পরনিতে বব বাব।
করে কর বারি বরান পালটাব॥
চরণ পারনি মুখ করব সরস।
ব্যারেশে বরু হিরে করব আলসঃ॥

রাই বুৰিপী মন্তু মিলব কোর।
সফল জীবন তব হোরব মোর॥
ঐছন কাতর নাগর ভাষ।
তবি কবিরঞ্জন চলু ধনী পাশ॥ ২২॥২১২॥

### धाननी ।

ভন জন জনত নাগর রাজ।
সোধনী বৈঠরে শুকুজন মার ॥
মুগধী কোভারী কবহু নাহি দল।
ভনইতে রোধব কছন রক ॥
বিপরীত বাণী কহুলি তুহু মোর।
কৈছনে কছন দুকতি হোর ॥
ইথে এক অমুতব আছরে তার।
বিধি যদি তাহে কছু কররে সহার ॥
মাধবী-কুঞ্জ কুমুম অমুপাম।
ভাঁহা তুহু যাই করহ বিপ্রাম॥
হাম অব বাইরে রাইক ঠাম।
গোবিদ্দাস কহুত পর্থাম॥ ২৩॥ ২১৩॥

# বরাড়ী

এ সথি মিছি কি প্রারব লাবা। হেরব পুন কিলে রূপনিধি রাবা । বদি যোকে না মিপক সৌ বর রাবা। তব দীউ হার ধরব কোন কাবা। তুছ' ভেল দোডী পাশ ভেল আশা।
জাৰ ব্যক্ষৰ কিন্তে করব উদাসা॥
ভানইতে বচন দোড়ী অবিলম্বে।
আওলি চলি থাহা রমণী কদমে॥
কহে হরিবল্লভ ভান ব্রজ্বালা।
হরি জপয়ে তুরা গুণ-মণি-মালা॥ ২৪॥ ২১৪॥

শ্ৰীকৃষ্ণস্থাপ্তী।

ভিরোভা।

শুন লো রাজার ঝি
তোরে কহিতে আসিয়াছি।
কাম হেন ধন পরাণে বধিলি
এ কাজ করিলা কি ॥
বেলি অবসান বেলে
গিখাছিলি নাকি জলে।
তাহারে দেখিয়া মুচকি হাসিয়া
ধরিলি স্থীর গলে॥
দেখায়ে বয়ান চালে
তারে ফেলিলি বিষম ফালে।
তৃত্ তুরিতে আওল লখিতে নারিল
ভারে ফ্লিম দরলি থোরি

বিভাগতি কহে ওনহ স্থলরি কান্তু জীয়াবে কি করি ॥২৫॥২১৫॥

পঠমঞ্জরী।

মাধবী শতার তলে বসি।

চিবুকে ঠেকনা দিয়া বাশী ॥
তোহারি চরিত অফুমানে।
বোগী ঘেন বসিলা ধেয়ানে॥
হরি হরি বব গেলি রাধা।
হাঁচি ক্রেঠী না পড়িল বাধা॥
ক্রণ গেলে কি করিবে বান্ধে।
নিশি গেলে কি করিবে চান্দে॥
জীউ গেলে কি কাজ শরীরে।
রাধা বিহু কি নলকুমারে॥
রাধা রাধা জ্বপে অবিরাম।
না জানি কি হল্পে ঘ্লহাম॥ ২৬॥ ২১৬॥

কেদার।

মঞ্**ল বঞ্ল** নিকুঞ্জ মন্দিরে নোঙরি সোঞ্জনগাম।

মরম অন্তরে জপরে মন্তর একলি তোহারি নাম । রামা হে তেজহ কণট ছল। মধন হিলোলে তো বিস্থালোলত

नम-नमन हम् ।

হিম হিম-কর স্বিল শীকর নিশ্বই কালিন্দী তীর। সরস চন্দ্র শ্রু পরশে মুরছই সজল জ্বলা চীর ॥

কবহুঁ উঠত কবহুঁ বৈঠত পছ হেরত তোর। অমল কমল নরন বুগল নহনে গলয়ে লোর॥

এতহঁ যতনে পুরুষ রতনে
চিতে নাহি আশোরাস।
গহন বিরহ দহনে দহই
কহই গোবিন্দ দাস ॥ ২৭ ॥ ২১ ॥

#### জীরাগ।

চান্দ নেহারি চন্দনে তহু লেপদ তাপ সহই না পার। ধবল নিচোল বহই না পারই কৈছে করব অভিদার॥

স্কারি ভূয়া লাগি সমাদল কান। বিরহ জীন ভন্ন অসুধন জর জর অব ইথে বিহি তেল বাম ॥ ফরন্ধি নেখ- মনার আলাপই তিমির পরান গতি আশে।... আওড় জনদ ভতহি উদ্ধি যাওড উত্তপত দীরল নিশালে।

ভূষা গুণ নাম গাম জপি জীবই
বহু পুলকায়িত দেহা।
গোবিল লাস কহ ইহ জপরূপ নহ
বাহা ইহ নব নব গেহা ॥ ২৮ ॥ ২১৮ ॥

## प्रकृतिक **स्ट्रा**

কিয়ে হিমকর-কর কিয়ে নীর বর ঝর কিয়ে কুস্থমিত পরিবন্ধ। কিয়ে কিশলর কিয়ে মলর সমীরণ জলতাহি চক্দন-পদ্ধ॥

স্থশরি কাস্থ জীয়ে তুরা পরস্থে।
নাররী-কোরে সোঙরি তোহে মুক্ছই
নর্মনহি লোর তর্কে। ধ্রু।

জন্ম নৰ জনধৰ ধৰণী লোটায়ত
আকৃষ চিকুত্ত বিধাৰি ৷
বাধা নাৰে 
আবৃতি কৃত্ত না পাত্ৰি ।

ধনি ধনি তৃহঁ ধনী ্রমণী-শিরোমণি কাম সে তোহারি একান্ত। ভুয়া পদ-পঞ্জ ভালে নাহি ছোড়ত গোবিন্দ দাস মতিমক্ত ৷ ২৯ ৷৷ ২১৯ ৷৷

व्यथं श्रमनः।

#### कारमान ।

কাত্মক শেষ- দশা ভনি মুগধিনী কাতরে স্থী মুখ চাই। ঐছন ইঙ্গিত ব্ঝিতে সহচরী যতনহি বেশ বনাই॥

দেখ দেখ পহিল সমাগম-রীত। চলইতে কত কত সংশয় মনমাহা ঐছে কুঞ্চে উপনীত॥ জ॥

রাইক আগমন হেরি চতুর দৃতী তুরিতে স্থাদল কান। ভনইতে চুমকি উঠন বর-নাগর বৈছন পাওল পরাণ।

দূরে গেও বিরহ সকল হব মেটল কাতৃক হুদৰ উল্লাস। মুগধিনী ৰুমণী সমূপ নাহি হোৱত कर त्रापांबलक नाम ॥ १०॥ २२०॥

পুনশ্চ। ভুপালী।

স্থীর ৰচনে ধনী থির করি চিত।
করইতে গমন ভেল উপনীত ॥
পদ ছই চারি চলিল স্থী মেলি।
ধন ধন অন্তর নাধন ভেলি॥
কণে কাতর দিঠে স্থীমুধ চার॥
স্থীগণ পুন পুন করে আশোরান।
রহি রহি ধনী হিলে উপজে তরান॥
গুছনে কুঞে মিলল হরিপাশ।
দুরে হেরই যহুনন্দন দান॥ ৩১॥ ২২১॥

मरस्रां ।

সুহই।

ভন ভন হলর কানাই।
ভোহে সোঁপছ ধনী রাই ॥
কমলিনী কোমল কলেবর।
ভূহ সে ভোখিল মধুকর॥
সহজে করবি মধুপান।
ভূলহ জনি সাঁচবাশ॥
পরবোধি গরোধর পরবিহ।
কুজরে জন্থ সরোধর পরবিহ।

গণইতে মোতিম-হারা।
ছলে পরশবি কুচভারা॥
না বুঝরে রতি-রস রঙ্গ।
ক্ষণে অন্থমতি ক্ষণে ভঙ্গ॥
শিরীয-কুস্থম জিনি তন্ত্।
খোরি সহাবি ফুলধন্থ॥
বিদ্যাপতি কবি গাওরে।
দোতীক মিনতি তুয়া পারে॥ ৩২॥ ২২২॥

#### কেদার।

অবনত বয়ানে না কহে কিছু বাণী।
পরশিতে বিহসি ঠেলই পর্তু পাণি॥
স্মচতুর নাহ কররে অফুরোধ।
অভিনব নাররী না মানরে বোধ॥
পিরীতি বচন পুন কহল বিশেষ।
রাইক হাদরে দেখরে নবলেশ॥
পহিরণ বসন ধরল যব হাতে।
তব ধনী দিব দেই নিজ মাথে॥
রস-পরসক করল কত রক।
নিজ পর্থাব নামে দেই ভক্ষ॥
নাহক আদর অবিক বাচার।
জ্ঞান স্থান কহে এই না বুরার॥ ৩০॥ ২২০॥

## বিহাগড়া ।

মনমথ কেলি- পুৰ্বধ অভি মাধ্ব ধ্রলহি রাইক পাণি। ক্রে ক্র বারি হালর অভি কম্পিত কৃহইতে গদ গদ বাণী॥

দেধ রাধামাধ্ব বিলাসে। অতি রসে ভোরি গোরী তমু বেচুল জনদ বিজুরী জমু বাসে॥

কুচ কর পরশে চমকি উঠরে ধনী লোচনে কল ভরিপুর। দশনক যাতে অবর বিখওন নীবি-বন্ধন কফ দুর॥

কো তহি জোর উবরি রছ স্থলরী
চললি পুন তেজি নাহ:।
সহচরী ধাই বাহ ধরি আনল
ছল'ভ রদ নিরবাহ ॥ ৩৪ ॥ ২২৪ ॥

"ধরি সধী অ'চের ভই উপচন্ধ" ইত্যাদি পদং জ্ঞেরং। ইতি পূর্ব্বরাগ-দংক্ষিপ্ত-স্ক্রোগঃ॥

অটম্পল্লবঃ॥

ইতি পুর্বরাগঃ স্থান্তঃ।

অৰ্থ ৰুসোদগার।

্ত্ৰা কৰিছে। ক্ৰিকা

পুলকে বলিত অতি লালিত হেমতন্থ অহুধন নটন বিভোৱ।

কত অমুভাব , অৱধি নাছি পাইয়ে

প্রেম-সিদ্ধু বহ নয়নহি লোর ॥ জুয় জুয় ভুবন-মুক্তু অবভার।

কলিযুগ-বারণ-হরিধ্বনি জগতে বিধার॥ শ্রু॥

নিজ রসে ভাসি প্রতিহাসি কণে রোরই

া ব্যক্ত ক্রিয়ার পদ ব্যক্ত ব্যক্ত বিদ্যালয় বিদ্যালয়

প্তিত মনেরে দেই কোর।

ইহ রস-সাম্বে 🛒 🕒 ্ সার্যন স্থরাস্থর

দিন রজনী নাহি জান। বিদ্যালয় বিদ্যালয়

हिलाबहु ती **बिद्धाल शत्रमात ॥ ५ ॥ २२८ ॥** ए स्ट्रिक्ट क्षेत्रमात है के स्ट्राल

স্থীর উক্তি যথা। উশ্লেষ্ট্র

शहमश्रदी।

সাক কোৰি।কেন তোমা এমৰ বেশি। স্থনৈ ছুলিছে অৱশীকীথি॥ আৰু নোকা জীৱা কুৰিছ কথা।
না জানি অৰ্থ্যে কি ভেল ব্যথা।
স্বনে গগনে গণিছ তারা।
দেব-অববাত হৈরাছে পারা।
বিদি বা না কহ লোকের লাজে।
মরমী জনার মরমে বাজে।
আঁচরে কাঞ্চন খলকে দেবি।
তোম কলেবর দিরাছে সাবী।
বিদ্যাপতি করে ও কথা দ্যু।
সোপত পিরীতি বিষম বড় ॥ ২ ॥ ২২৬ ॥

্যার্**বিভাষ ।**গীভ তেই এন

চৌনিকে চকিউ টা নিয়ানে ঘন ছেরিদ নিম্নিকিসি ঝাপল আল টি টেব প্রির বচনক ভাতি টিটি ব্রক্ত নাহি পারিরে কাহা শিখনি ইত রক্তা

স্থানি কি কেল পরিজনে বাঁচি।
ভান স্থানার প্রাপ্ত প্রেমধন
ভান স্থানার প্রাপ্ত প্রেমধন
ভানস্থানি বিশ্ব মাহা স্থানি ॥ ধ্রু ॥

এ তুরা হাস প্রকাশই
প্রতি অব শীক্ষম সাধী।
গাঁচিকা হেক দেও গানে স্বাক্ষম আহ্বা বলকই

े विक विस्मारणवर्ग् क स्थि ।

গহন দক্ষেত্রকার জানিত কি জান ক্ষান্ত হরসি জিজনি ননমঞ্চলার্কার জানি জানি কোবিজ্ঞান জান ভালি জঙ্গুই ধুনি বিরম্ভ নিমান্তি কুমাই ক্ষান্তা ক্ষান্ত নি ক্ষা

या करीहरू ह

मिक निर्मित स्वास्ति भी कहि नार्छ ।

जन्न स्वास्ति स्वास्ति भी कहि नार्छ ।

कृष्ट यह नाजी स्वास्ति स्वास्ति ।

महत्ति भी कि कि कि कि मि सी कि ।

निर्मित सामि भी कहि रहि निर्मित ।

निर्मित कि कि सिर्मित मिकि कि मिकि ।

निर्मित करि जिल्हा निर्मित ।

कि कर्म होर्ट निर्मित ।

जन्म करि एकि निर्मित ।

जन्म भूगों कि उस्स्ति निर्मित ।

मृज्या करि एकि निर्मित वीहि ॥

मृज्या करि एकि प्रस्ति वीहि ॥

मृज्या करि प्रस्ति प्रस्ति वीहि ॥

स्वाम करि विद्वासि ।

का नाम करि विद्वासि विद्वासि ।

का नाम करि विद्वासि विद्वासि ।

क्षा स्वाकीतं राकीत

নচাও **হানি-হানি বয়ান প্কার্ত্তির সাই**।। ত

াত কপটি কর্ম-মুখ-বিদ্ধানি

বাজ কপটি কর্ম-মুখ-বিদ্ধানি

তিবা ভিলে প্রতি অল পরভেক হৈছে।

হুখ বিস্থ হুই বিঠি-লুছ লছ বোই ॥

নিতি নিতি সমূচিত সমূখিরে অল।
আকু আন বীতি দেখিয়ে আন রল।

বহু প্রসাদ ভোহে ক্রল অনল।

মনা-পরিকোব দোব নাহি দেহ।

ভালদান ক্রনেব নব দেহ। ৩।। ২২৯॥

্ৰ কৰ্মিদ্বৰদে শ্ৰীৱাধা সন্তোগাত্তে একাকিনী ্ৰস্থী নিকটং শ্ৰাগচ্ছতি ইতি দৃষ্টে স্থী পুচ্ছতি

s returned on the secretary as

ু তথা

লত লত মুছতি হালি চলি আওলি
পুন-পুন হেবলি কেবি।
অহু বতিপতি সংক্ৰ

ধনি হে বৃষ্ট ঐসব বাত। এত নিৰে ভূইনি সন্মান বিধনার প্রন তেইনি কালক বাধান প্রদ

যব তোচে স্থীয়ণ নির্মনে পুছল তৰ ভূছ' ছাপলি কায়:৷ जैरे विष्टि लि जिर दिक्क कार्या निक কৈচনে পোপৰি ভার দ চৌরিক বচন ক্রিভ ক্রছত সব গুরুজন ্লো সৰ পাৰলু সাধী। म्भ मिन श्रवन ... এक दिन प्रवास আজু দেখিছু পরতেকি ॥ হাম সব নিজ্জন কুহসি রাভি দিন সো সৰ বুঝনু আছে। আৰ দাস কহ স্থি তুহু বিব্নহ রাই পাওন বহু লাব্দে॥ ৬॥ ২৩০॥ ाक परिवा**कारमान** (जन केंद्रिक केंद्रिक केंद्रिक রূপ কলা গুণ 👙 💮 🚎 নাব সম্পূর্ণ া প্রিছন কারু বর নাহল্যা আছিল আমার চিতে : তুরা সহ মিলাইতে ্ ভালে ভেল বিহি নির্বাহ্ ॥ ः निक रक् कारक पूर्व मान्ति नार्छ। विकि अवगारिक नाम नवी भूकन ব্যাল মে কান্ত্ৰ কাৰে। যাকার কাহিনী ছাড়ি ছার্ছ পাল দিল व्यक्तिका राजनि कार्य महाक प्रकृतिक निव जिन्ही इसि व्यक् स्त्रि शान नहीरन ॥

সৰ আন চিত বীভ তুমা অন্তর বর্দ বাপিনি এক হাতে 1 क्रीमगाम कर के विक्रम सान तर কো পাতিয়াৰৰ ইমে ॥ কা। ২৩১ ॥ मार्थिक के कि के कि बार्ग । किए के कि के किए कि সন্দরি বেকত গোপন লৈহা। বঞ্জিত আৰু তা করণে নাহি পান্নবি " गांधी रेमब्रेय जूबा रेमशा चरन जानम मिथ তুরা স্থমগুল গণ্ড অধর ছবি মনা রস পান কয়ল সব মোহিত রাহ উগারল চলা। জাগি বজনী হুছা সাম ংশাহিত লোচন ভিত্তি **জনস নিমীলিত ভাতি**। তেওঁ চুত্ত মধুকর লোছিত- ১৮ কমল কোরে জন্ম ाष्ट्राहानी व्**षक्तिःत्रहम मस्मानोजिना** गान्सी स (वक्छ नरबाबस्त्रे कोनी तक) नश्रत्रथ कृथन । ভাল দভাৰে প্ৰকাকৰ ভারা । নিশ্ব বিশ্ব বলি ক্লামিখি ছেরইডে নেক পড়ন সাহিয়ারা ৪ मर्थ कवि रमसङ् নোৰ সৃস্তি করি ভানি। কভ শভ বেরি চোর করি বেরলন

वित्रि क विकेष विन ॥ ४ ॥ १७२ ॥

्रहेड्यानि मध्यकि । स्थाप निक्र डेकिस

শ্রীগান্ধার।

দরশনে লোর ন্যুনুমুগ ঝাঁপি।
করইতে কোর চহঁ ভুজ কাঁপি॥
দ্র কর এ স্থি ভুমা গরসুর।
নামহিঁ যাক অবশ কর অরু॥
চেতন না রহ চুখন বেরি।
কো জানে কৈছে রহুস রসু কেবি॥
ঝো ধনী মানি স্থবত অধিদেবী।
তাকর চরণ কুমন পাই সেবি॥
কাম্ক পরশে যতহঁ অম্ভাব।
অম্ভবি আপ পরক সমুঝাব॥
অবহুঁ জুগত ভুরি অক্রিরীতি এই॥
রাধামাধ্র অবিচল লেই॥
এ কিয়ে স্থবচ কিয়ে পরিবাদ।
গোবিশদাস চিতে না ভাঙ্গে বিবাদ॥৯॥২৩৩॥

## अरहे ।

আধক আধ তাতীত চ্চু আইনিটি শক্তে বিষ ব্যিক্তিপ্ৰ ক্ৰিক হৈ। কড শউপ্ৰেটি বিচ ভিত্ৰিনিটি লয় লয় ভিত্ৰিত কি ব্যঞ্জীনিটি লয়

#### BE THE STORY

मकनि कामस् विदि दमादा वाम । ত্রহু লোচন ভবি তিনা হরি হেরই **उड़ शरद युवे शक्नाय ॥ अ ॥** সুনয়নী কহত কাম খন-খামর त्याद्ध विक्रुत्री मम नाजि। রসবর্তী ভাক পরশ রসে ভাসত रांगात्रि सम्दर्भ अर्थ जाति । প্রেমবর্তী প্রেম পাগি কীউ তেকত **ह्मन कीरान मने गार्थ** পোবিন্দাস ভবে ত্রীবর্গত জানে রসবর্তী রস মরিবাদ ॥ ১০ ॥ ২৩৪ ॥ বরাড়ী। বাঁহা দরশনে তহু পুলকে ভরই। যাহা কর করবণে টুটত বলই । र्याश भतित्रस्तान अवत बनहैं। यांश पन इस्टन वंशन हें हैं ॥ क त्रि यानिता हति मद्ध दर्शन । যব হৈছিলে হেন মনোভব-কেলি॥ জ ॥ यांश किकिनी मनि कक्ष तानरे। যাহা নথ বিলিখনৈ হত তত্ন দলই। ানামিদিদিশ্ব তর্গিত কর্ট 🛊 यांश यक क्रमान श्रम्बद्धि शंबरे ॥ াবারা দাকি উচন বুস সিচকটার

**छोटा लिलान क्रामेबिनाताब करते ॥**>>॥२७६॥

## क्षांतक्षण्यक्रम्माकः। का लाजानमा । न

यव रुप्ति-भागि- किंदि ने निर्मा पैने कैं। भागि খাপসি বাপল অঙ্গ। তব কিয়ে খন খন বিশ্বী প্রতিরণ কেশ পরায়লি রঙ্গ ॥

এ ধনি অবহু না সমুঝসি কাজ। बार्ट विश्व कांशरत मिंग्हें ना कीवित তাহে কিয়ে এও ভয় নাজ। क्रवहरू क्रिंडिं क्रिंडिं क्रिंडिं क्रिंडिं निर निर द्वानिम (थात्र ।

চুম্বন বেরি জানি মুখ মোড়সি

জন্ম বিধু-পূবধ চকোর॥

যব হোরে নাহ রত-নিরত অবিরত

বারত জনি অভিলাস।

গোবিন্দদাস কহ নহ বহ-বলভ

কৈছে রহত নিজ গাল ॥ ১২॥ ২৩৬॥

নিৰোক্তি: | - বিভাৰ

কি কৃছৰ বে সৃষ্টি বুজনীক কাছ। বহু ছবে গৈ**নিয়ানা**শ্ব সাথ ॥ कारक उद्दर्क करिश्टिक अन्नद्रक कर्मकीन । वसरकारमञ्जून निर्देश वसरका मंत्रीन क

#### अञ्चलक्रमकत्र ।"

नव स्वीयन औरह दन शत्रात । রতিরস লা কালিয়ে কাহু সে গোঙার॥ ্মদনে বিভার কিছুই না জান। কতরে মিনতি করি তবু নাহি মান॥ ভণৱে বিদ্যাপতি ভন বরনারী। ভুহু মুগধিনী সোই লুবধ মুরারি॥ ১৩॥ ২৩৭ তথা রাগ ় এক দিন হেরি হেরি হাসি হাসি যায়। আর দিন নাম ধরি মুরলী বাজায়॥ আজি অতি নিয়ড়ে করল পরিহায়। না জানিরে গোকুলে কাহার বিলাস। ভন সুজনি ও নাগর খামরাজ। মূল বিহু প্রধন মাগরে বেয়াজ। ্সৃতি পরিচয় নাহি দেখি আন কাজ। না করয়ে সম্ভ্রম না করয়ে লাজ॥ আপনা নেহারি নেহারি তমু মোর। দেই আলিঙ্গন হোই বিভোর ॥ কণে কণে বৈদগধি-কলা অনুপাম। অধিক উদার দেখিরে পরিণাম ॥ বিস্থাপতি কর্ছে জাইতি ওর। व्यक्ति वा क्लि देवे उस दिला के हैं। २०४ ।। ा काल . **जांगादकांग** की काल पर कि कहर दह निष के हैं है। जाक। বোই কবল লোই নাগৰ কলে।

পহিল: বন্ধস মন্থু নাহি রভিত্রক।

দোভী সিলাবল কাহক সক্ষা

ক্রেইন্ডে দেহ শকু ধর্মমের কাঁপ।

ক্রেইন্ডে দেহ শকু ধরমের কাঁপ।

চেতন হরক কালিক্স বেলি।

কি কহব কিয়ে করল মুসফেলি।

হঠ করি নাহ করল মুসফেলি।

কানসি তব কাহে করসি পুচারি।

লোগনি যো থির তাহে নেহারি॥

বিভাগনি কহম নাক্র ভ্রাস।

বৈভাগনি কাবল পহিল বিনার। ১৫ ৮২০১॥

चदः सी छा-भिननः यथा ॥

#### কামোদ।

গোকুলে দেব- দেয়াসিনী আওল নগরহিঁ ঐছে ফুকারি। অরুণ বসন পরি জটিল বেশ ধরি কামু ধারমাহা থারি॥

ত্তনি ধনি জটিলা তুরিতে চলি আওল হেরইজে চম্পিত ভেল। হামারি বধ্য রীক্তি হেরি কছে আনমতি কহি কিছা মজিলা দেশ।

্তেরে সেয়াবিনী কান। জটিলা বচলে কুলুক কুলুক্ষাৰ্থী নিয়ত্তি ा अक सिर्फ स्कारत स्त्रांता। क ॥ কহ তব অতহ ্ত ভ দেব ইথে পাওল হসিয়াহ বৈঠিল কাল। নির্জনে কোই কাল কালিয়ে ্তৰ ইছ হোৱৰ ভাগ । এত শুদ্ধি কটিলা বর্ত্ত সহ লৈয়ল া নিকল্পনে হছ' এক ঠামৰ गव सन जिक्रमण . . . . बोहिट्स देवर्रण প্রল কাম মন কাম ॥ া বছখন অভয়-ভাগৰ তব সোই দেবা। (एव (एश्रामिनी ঘরসঞে নিকসল চাতুরী বুঝৰ কেবা। জটিশা বছত ভকতি করি হর্ষিতে कड्डं जीथ आनि (मृत्र) ভীথ লেই তব क्ट (भवत्रवत मारे समामिनी श्रम ॥ ১७ ॥ २8 · ॥

্তত ধানশী। তেওঁ অক্সক্রজিও এই তান্দ্রক্ষণ কিয়ে ভেলা তি দেয়ালিনী কাঁহা থেকা ম हाम भूगिविनी नाती।
ना उनि केड्ड् शांति॥
जेड्ड न्दर कीन।
केड्ड मा गिंकुती कोन॥
गहर्क जीमता वीना।
दक कार्त ७७ड केना॥
गहिन नित्तीिंड जात।
वह किन नाहि वात्र॥
हरवहे केड्ड किन।
कुटक ममान एडन॥
क्षणत कि स्थ भाव।
केड्ड ना दिवात मा

ইত্যাদি সংক্রিপ্ত-সংস্থাসত রদোদগারঃ ॥ নবম পল্লবঃ ॥ পুনশ্চ রদোদগারঃ । প্রকারাস্তরং যথা ॥

সথী-উক্তি॥

গান্ধার।

কাহে কাহ ঘন ঘন আৰু আৰুত যাওত
কিরি ফিরি বরান নেহারি।
হাসি হাসি মুথ-শশী উগারে অমিয় রাশি
তোহে কিরে কয়ল প্ছারি।
তুলারি কছ কিছু কটন বিশেষ।
হেনজ্জুনানিবিতে, না জানি কাহারিভিতে
আছরে পিরীতি দব বেশা এ ॥

সহজে রসিকরার্জ অনুধিতে সুরু কাজ অমুভৰ ওর না পাই যাহার নয়ন-শরে কাতি কুল শীল হরে ভাগ্যে ভাগ্যে আমরা এড়াই। একই নগরে বৈসে ক্থন এ দিগে আইসে प्रिंथ अनि कांशुख श्रवाण । জানদাস শুনি বলে ক্রু দেখি কোন চলে করিতে না পারি অনুমান ॥ ১॥ ২৪২ ॥ ननिष्ठ । আজু কেন হেন দেখি। স্বরূপ করিয়া ক্র না আমরা मान्त्र मत्री मुख् ॥ अ ॥ আঁথি চুবু চুবু ঘুমেতে আকুৰ জাগিয়াছ বুঝি নিশি। অঙ্গ না ধরে -রদের ভরে বসন পড়িছে খসি॥ এক কহইতে আন কহিছ ৰচন হইল হারা। রসিয়ার সঙ্গে কিবা রস-রঙ্গে সঙ্গ হইয়াছে পারা ॥ খন খন তুমি স্থান স্থান স্থান স্থান খন খন ব ্ সমনে বিশাস ছাজ। বন্ধণ করিয়া

मतरम कला केता।

ভাবের সিন্দ্র আধেক আছে
নরানে আধ কজিল।
চান্দ নিকাড়িরা এমন করিরা
কেবা নিবে এ সকল।

ক্ষণপ্ৰসাদ কয় যে বোল সে হয় ভাল ভূলাইলে কাজ। সঙ্গের সঙ্গিনী বঞ্চিতে নারিবা কিবা কর আর লাজ ॥ ২॥ ২৪৩॥

निक छेकि।

# মঙ্গল ৷

স্থি হে তোহে হামারি বহু সেবা। ঐছন বাণী কবহুঁ জানি বেলাবি জাতি কুল কিয়ে নেবা॥ গ্রু॥

পোকুল নগরে কাহ রতি-লম্পট বৌবন সহজে হামারা। তুহুঁ স্থি রভসে মোহে যদি বোলবি লোকে করব পাতিয়ার।॥

সো শরকুহুম হেরি হাম কৌডুকে
ভূজযুগে মেটল তাই।
দাড়িম ভরমে পরেষর উপরে
পড়লহ" কীর গোভাই।

উদ্ধা চকিত ভূজে ইক্সিকীতি প্রেম্পূ তে কেশ কৈগেন আন। ইথে পরিবাদ কহলি লোকে বৈরিগী ইহ কবি শেখর খান।। ও ॥ ২৪৪ ॥

স্থী উক্তি।

शानणी।

অভিযারিণি কপট করহ কথি লাগি কোন পুরুথ হেন হরল তোহারি মন রজনী গোঙায়িলী জাগি॥ জ্ঞা

জমু পরাগরী গজগে জল ঢালয় পরশব স্থরকিল মনে। ঐছন হেরি তমু নাত করহ জমু বেকত করায়ত কোনে॥

হধক, প্রশে পঙার ধ্বল ভেল

অরণ কিরণ কোন কেল।

পৌর প্রোধ্ব নখ-বেল জন্ম

পর্জে মুগমন জেল। ৪॥ ২৪৫॥

ান্যক্ত লাভ <mark>ভিন্নোতা।</mark> সক্ষ্ঠিত না **ভিন্নোতা।** ভিন্ন কবিল গণ্ডভুল

্ৰ মনিক্তে আছিত সহচরী মেনি । প্রসক্তে প্রকৃত্তী আমিক ভৈ গোল ॥

যব স্থি চলসহঁ আপন গেছ।
তব মঝু নিলে ভরল সব দেহ।
ততি রহল হাম করি এক চিত।
দৈব বিপাকে ভেল বিপরীত।
না বোল সজনি শুন স্থান-স্থাদ।
হসইতে কেহ জানি করে পরিবাদ।
বিষাদ পড়ল মঝু হদয়ক মাঝ।
তুরিতে ঘুচাওল নীবিহক কাচ।
এক পুরুথ পুন আওল আগে।
কোপে অরুণ আথি অধরক রাগে।
সে ভয়ে চিকুর চীর আনহি গেল।
কপালে কাজর মুথে সিল্লুর ভেল।
অতরে করব কেহ অপয়শ গাব।
বিশ্বাপতি কহ কোপাতিয়াব। ৫॥২৪৬॥

#### তথা রাগ।

না কহ না কহ মিছা অপবাদ।
সহজে যৌবন তাহে কুল-মরিযাদ॥
স্থী গরসঙ্গে নিশি জাগিত্ম হাম।
বিপরীত হোরে জানি গুরু কুল ঠাম॥
গ্রছন বচন পুন না কহিবি মোর।
রক্তমহি বচন সাঁচি জনি হোর॥ ৬॥ ২৪৭॥
ইতি দশ্ম প্রবঃ॥

## অথ পুনশ্চ রলোদগারপ্রকারান্তরমাহ। ভত্ত প্রিলোরডক্র:

## বিভাষ

দেখ দেখ গৌর প্রেম-রসংধাম। পদ-নথে জিতল কৃতহ শশি-কুল লাথে লাথে মদযুত কাম॥ ঞ ॥ চকিত বিলোকনে সব দিশ হেরই ঝাঁপই চম্পক অঙ্গ। আপদ মন্তক পুলক্হি পুরিত নিক্পম ভাবতরক ॥ ক্ষণে মৃত্তাসি কহই সো পিরীতি যৈছন হেম দশবাণ। খ্যাম নাগর মোর প্রাণ মনোহর কহইতে ঝরয়ে নয়ান॥ ভাবহি বিবশ কহই বরজ-রস ৰ অভিনয় তৈছে পরকাশ। প্রমানন্দ সার क्रियार्गास्य मान्य ५ ॥ २८৮॥

তহুচিত-নবন্ধীপ-নাগরীণাং উক্তি:। বিভাষ।

কি কহৰ রে স্থি কাঞ্ক ভাষ। অযতনে মোহে হোমল বহু লাভ। একলি আছিত্ব হাম বনাইতে বেশ।
মুকুরে নিরথি মুথ বান্ধল কেশ॥
তৈথনে মিলল গোরা নটরাজ।
ধৈরজ ভালল কুলবতী লাজ॥
দরশনে পুলকে পুরল তমু মোর।
বাস্থানে ঘোষ কহে করলহি কোর॥২॥২৪৯॥

অথ স্থাক্তি: ॥

বিভাষ।

বা

পঠমঞ্জরী।

পুছমো এ দথি পুছমো তোর।

কেলি-কলা-রদ কহবি মোর ॥

বেশ ভূষণ তোর দব ছিল পূর।

অলকা তিলক মিট গেলহি দূর॥

কুস্থম-কুল দব ভেল ভিন্ ভিন্।

অধরহি লাগল দশনক চিন্॥

কোন অব্য হেন কুচে নথ দেল।

হা হা শস্ত ভগন ভৈগেল॥

অলসহি পুরল দকলহি গা।

বদন দেই ঘন ঘন কর বা॥

ভশরে বিছাপতি ভন বরনারি॥

দব রশ্ব লেমল রসিক মুরারি॥৩॥২৫০॥

## - ব্রীরাগ ্

না কর না কর স্থি মোহে অমুরোধে। কি করব হাম তাক পরবোধে॥ অলপ বয়স হাম কান্তু সে তরুণা। অতিহুঁ সে লাজ ডর অতি সে করুণা॥ লোভে নিঠর হরি কয়লহিঁ কেলি। কি কহব যামিনী যত ছঃথ দেলি॥ হঠ ভেল রস হাম অলপ গেয়ান। নীবি-বন্ধ তোড়ল কখন কে জান॥ দেয়লহি আলিঙ্গন ভুজপরি চাপি। তৈখনে হৃদয় উঠন মঝু কাঁপি॥ नग्रत्न वाति मत्रभाष्ट्र (तारे। তবহু কামু উপশ্ম নাহি হোই॥ অধর নীরস মঝ করলহি মন্দা। রাছ গরাসি নিশি তেজন চনা॥ কুচ যুগে দেয়ল নথ-পরহারে। কেশরী জমু গজুকুন্ত বিদারে॥ ভণয়ে বিদ্যাপতি রসবতি নারি। তুহুঁ সে সচেতনী লুবধ মুরারি ॥ ৪ ॥ ২৫১ ॥

# তথা রাগ।

হাম ছতি ভীত রহল তমু গোই। ক্ষেত্র সো রস্ব-সাগর থির নাহি হোই॥ রস নাছি হোরণ করণ বে শাতি।

মদন-লভা জমু দংশল ছাতী॥
পুন কত কাকুতি করল অস্কৃল।
তবহু পাপ হিরে ময়ু নাছি ভূল॥
হামারি আছিল কত পুরবক ভাগি।
ফেরি আওল হাম সো কল লাগি॥
বিভাপতি কহু না করহ বেদ।
গ্রহন হোরল পহিল সন্তেদ॥ ৫॥২৫২॥
পুনঃ স্থীগণভা উক্রিঃ।

বালা ধানশী।
কহ স্থি সাঙ্রি ঝামরি দেহা।
কোন পুরুপ সঞে নম্মলি লেহা॥
অধর স্থরক জন্থ নীরস পঙার।
কোন লুটল তুয়া অমিয়া ভাণ্ডার॥
রক্ষ পরোধর অতি ভেল গৌর।
মাজি ধরল জন্থ কনয় কটোর॥
না যাইহ সো পিয়া তহি এক গুণে।
ফেরি আওল তুহুঁ পূরবক পুণে॥
কবি বিশ্বাপতি ইহ রস জানে।
রাজা শিবসিংহ লছিমা পরমাণে॥৬॥২৫৩॥

**क्रुगानी** ।

नर कूटि नथ मिथि जीउँ स्थात कारण। जह नद-कश्राम जमत कक वाँगि॥ চুটল গীমক মোভিম হার।

ক্ষিত্রে ভরল কিয়ে স্থরক পঞ্জার ॥

স্কলর পরোধর নথ-ক্ষত ভারি।

কেশরী ক্ষপ্ গজকুন্ত বিদারি॥

পুন না হাইছ ধনি সো পিয়া ঠাম।

জীবন রহিলে প্রাইহ কাম॥

ভণরে বিদ্যাপতি স্করি আজ।

আনলে পুড়িলে পুন আনলে কাজ॥ ৭ ॥২৫৪॥

তথা রাগ।

উছন শুনইতে মুগধিনী রমণী।
স্থীগণ ইক্তি অবন্ত-ব্যনী॥
লাজে বচন নাহি করে প্রকাশ।
স্থীগণ কহতহি প্রিয়তর ভাষ॥
কহইতে না কহসি রজনীক কাজ।
হামারি শপতি ভোহে যদি কর লাজ॥
পহিল সমাগ্ম লাগি এত হুখ।
পুন মিলনে কত পাওবি হুখ॥
ঐছে বচন শুনি কহে মুহুহাসি।
শিব্রাম দাস ইহু রস প্রকাশি॥৮॥॥২৫৫॥

वाला शाननी।

ি কি কহৰ এ সৰি আজুক বিচার।
কা ভুগুরুথ মুকু করন গুলার॥

ধরি পছঁ হাসি আলিকস দেল।
মনমথ-অছুর কুসুমিত ভেল॥
আঁচ্বু প্রশি পরোধর হেকু।
জনম-পঙ্গু বেক ভেটক মেরু ॥
ধব্ নীবি-বন্ধ থসাওল কাক।
আপন দিব্ তব্ কছু যদি জান॥
রতিচিক্তে জানলু কঠিন মুরারি।
তোহারি পুণ্যে আওলু হাম নারী॥
কহ ক্রিরঞ্জন সহজ মধুরাই।
না কহ স্থাম্থি গেও চতুরাই॥ ৯॥ ২৫৬॥

ইতি মুগ্ধা-রসোলগারঃ। অথ এক্তিক্তস্তরদোলগারো যথা।

রামকেলী।

প্রভাতে উটিয়া বরজ-রাজ।
সকালে চলিলা ধেত্ব সমাজ।
সথাগণ আসি মিলল তাই।
আনন্দ বাচল ও মুথ চাই॥
গাভী দোহন করিয়া কান।
স্বলের সনে নিভ্তে-মান॥
প্রভ স্থল হেরিয়া মুথ।
কি ভেল আজুক রজনী স্থা।
কংজ নাগর করি প্রকাশ।
ভণ তহিঁ রস শেশ্বর দাদ॥ ১০॥ ২৫৭॥

্রাক্ত **সান্ধার।** তা হার চার

ञ्चल मिर्छा रह कि कब रन नव तक। সে যে মুগধিনী হৈ বিশ্বা মুখানি বাছল বুল-ভরক ৷ ধ্র- ৷

কত না যতকে কতন বেলিল

্ৰাসি মিলাওল আধ।

त्म (य कून-वह क्हरेन नह नह

শুনিকে বাছই সাধ।। গাঢ় আলিঙ্গনে চমকি উঠয়ে

আল্সে শুতলি কোর।

(জমু) প্রনে আকুল ন্বীন ক্মল ভ্রমর রহল আগোর ॥ ১১ ॥ २৫৮ ॥

বিভাষ ৷

হামে দরশাইতে কতহঁ বেশ করু হামে হেরইতে তত্ত্ব বাঁপ।

স্থ্যত শৃঙ্গারে আজ ধনী আওলি পরশিতে ধরহরি কাঁপ ॥

ওনহে কান্তু কহই অবধারি।

সকল কাজ হাম বুঝলু বুঝায়লু না বুৰলু অন্তর নারী ॥

অভিনব কাম নাম পুন ভনইতে

রোথত গুণ দরশাই।

অবিষম গঞ্জরে মন পুন রঞ্জয়ে আপন বনোরও সহি।

অন্তরে জীউ- ু অধিক করি মানয়ে ু ু বাহিরে নাগরে উদাসে। কহ কবি শেখার ু ু অমুভব জানত ৰিদুগ্ধ কেলি বিলামে॥ ১২॥ ২৫৯॥ কৃষ্ণ ছা প্রির্ম্পাঃ ধ্রিষ্ঠাকুন্দল তাবুন্দাদ্যঃ ্ৰ কান্সিং ভত্ৰাগতা স্তৎসম্বোধনং কথন্ত ॥ धानणी । বদন বিহসি থোর। বৈছে হিম্-ক্র ু ুমুগ পরিহরি কুমুদ করল কোর॥ ্রামা হে **শপতি কম্মর** তোর। সোই গুণবতী- গুণ গুণি গুণি না জানি কি গতি মোর॥ জ ॥ গলিত ব্যন্ত্ৰী **ক্ষল** কবরী-ভার। আহাউত করি বে কিছুকহল জাহা কি বিছুরি পার॥ নিভত কেতনে কুল ১৮৬ ১৮৬ ১ হয়ল চেতনে असदेव बङ्गावस्था। ভণে বিশ্বাপতি ভাৰত ভালে সে উমতি বিপক্তি প্ৰকৃত্য রাধা ৷৷ ১৩ গ ২৬০ ৷৷

# ं सुरहे।

বেশন সঞ্জে বৰ্ম বিশ্ব বৰ্মন উভারল

গাঁলৈ লাজাঙলি গোঁৱী।
করে কুচ বাঁলিতে বিহলি বদন ধনী
অন্ধ্যাইতে করে কর ধর ধরী
পুন বেকত কুচ জোরি।
ছর সমাধানে বিকল ভেল শলি-মুখী
তব হাম কোরে আগোরি॥
এত কহি বিবাদ ভাবি হছা মাধব
রাই প্রেমেতে ভেল ভোর।
ভণ্যে বিভাগতি গোবিন্দদাস তথি
পুরল ইছ হল ওর খ ১ছা। ২৬১॥

# ভাটিয়ারি ৷

অথ প্ৰীরাধায়া: সানচ্ছকেন অভিসার:।
সকালে সিনানে চলিলা গোরী।
সবীগণ সঞ্জে আনন্দ ভোরি ।
অগন্ধি তৈল হলদি লইয়া।
কোন সবী আগো চলিল ধাইয়া।
কেহ ত বসন ভূষণ নিলা।
রাইয়েরে বেক্লিয়া সহব চলিলা॥
দূর সঞ্জে হেরি নাগর-ফালার

রাইরূপ হৈরি বিভোর হুইরা।
দোহনের ছাঁদ পড়ে আউলাঞা।
কহরে শেধর বিশিকরাজ।
ভূলল গোধন-দোহন কাজ। ১৫॥ ২৬২॥

#### শঙ্করাভরণ।

হেরইছে বিনোদিনী ভূলল রে।
গোধন-দোহন তেজল রে॥
চাল চকোর জন্ম পাওল রে।
রাইক প্রেমভরে ভাসল রে॥
মুরছি অবনীতলে পড়লহি রে।
অকণিত লোচনে চল চল রে॥
করে পছঁ কোরে আগোরল রে।
অকে পুলক অতি পুরল রে॥
ছহঁ মুখ স্থলর শোহন রে।
গোবিক্লাস মনোমোহন রে॥ ১৬॥ ২৬০॥

# ভাটিয়ারি।

তম্ব তমু মিলনে উপজল প্রেম।
মরকত বৈছন বেঢ়ল হেম।
কনক-লভার জমু ভরুণ তমাল।
নব-জলধরে জমু বিজুরী রসাল।
কমলে মধুপ বেন পাওল সঙ্গ।
হুহুঁ তমু পুলকিত প্রেম-তর্জ॥

ছত অধ্যামূত হুট করু পান। গোবিৰদান ছুট ক ভুণ গান। ১৭॥ ২৬৪॥

তথা রাগ ৷

বিপিনহি কেলি করল হুত্ঁ মেলি।
জলমাধা পৈঠি করল জলকেলি।
নাহি উঠল হুত্ঁ মোছল অস।
হুত্ঁরপ নির্ধিতে মুরছে অনক।
অংক করল হুত্ঁ নব নব বৈশা।
কবরী বানাওল বাজল কেল ॥
নিজ নিজ মন্দিরে করল পরান।
গোবিন্দ্রাল হুত্ঁক গুণগান। ১৮॥ ২৬৫॥

ইতি সংক্ষিপ্তস্তোগত গোদোহনে মিলনং॥ ইতি একাদশ পলবং। ইতি গদকলতক-গ্ৰন্থে প্ৰথম-শাখা সম্পূৰ্ণা॥



| মুক্ত                |                      |
|----------------------|----------------------|
| অথ শ্রীগোরচক্ত্রত সং | कीर्खनदर्गनः।        |
| গ্রীবাস অঙ্গনে       | वितान वक्तत          |
| নাচত গৌররায়         | 11                   |
| मञ्ज रेनवङ           | পুৰুষ যোষিত          |
| ंग्रताहे (मधिवार     | ਰ ਮਾਰ ॥              |
| ভকত মণ্ডল            | ী গাওত ম <b>ক্</b> ল |
| বাজত ধোল ব           |                      |
| মাঝে উনমত            | নিতাই নাচত           |
| ভাইয়ার ভাবে         | মাতোয়ার ॥           |
| গরজে পুন পুন         | ः वस्त पन पन         |
| ্মল্লনেশ ধরি ন       | 15 E 18              |
| অরুণ লোচনে,          | ् (धम वित्रभए)       |
| भवती मधन नि          | PE II                |
| धत्रगी मधन           | া কে প্রেমে বাদল     |
| कत्रत चरकोड          | <b>ाम</b> १३ ५०      |
| না জানি নর নারী      | क्रवन मन ठाति        |
| . नदारे क्र दर्श     | वे स्थान ।           |

मारिश्व-नीव

দেখিয়া প্রেমের বিকার।

धतित्रा **क्षेत्रक**्ष हिन्द्र स्त्राप्त

পণ্ডিত শ্রীবাস উদার॥

মুকুল কুতৃহলী কাদ্দরে ফুলি ছুলি

ধরিয়া গদাধর কোর।

নয়নে বহে প্রেম ঠাকুর অভিরাম স্বনে ভাইরা ভাইরা বেলি॥

না জানি দিবানিশি প্রেমরসে ভাসি

স্কুল সহচর বৃন্দ।

वृन्तावनमान

নিতাই চরণারবিন্দ॥ ১॥ ২৬७॥

রপাসুরাগ

- अब्दे

লাখবাণ কাঞ্চন জিনি।
রসে চর চর্মপোরা মু জান্ত নিছনি।
কি জান্ত শরদ কোটা শলীকি কিবলৈ হাসি॥
কোণত করিলো আঁলো গোরা মুখের হাসি॥
কোশি রলী মাধব কাঁতি।
মহ মহু জানুরোকে এবর মুখ্তী॥
স্কাশন নিধর মূর্ভি শারতি॥
মরদে ভারা জাবে পিরীভি আরতি॥

ভাঙ গাজে মদন ধামুকী।
কুলবতী উনমতি কৈন্দ হুটি জাঁথি।
আক্ষকা তিলক ভালে শোভে।
রিদ্দির রুক বাঢ়ে ঐ লোডে।
চাঁচর চিকুর কবরী।
নানা ফুল নাজে তাহে হেরি হেরি মরি।
চল্লন কেশর মাথা তমু।
রিদ্দিনীর প্রণা বাটি লেশিরাছে জমু।
মদন-বিজই লোলে মালা।
ইথে কি পরাণে জীলে কামিনী অবলা।
রাক্ষাপ্রান্ত পাঁত পট-বাস।
পহরুল নিত্থিনী রুস অভিলাস।
অরুণ চরণে নথচালা।
পামরি গোবিলালানে রুচিত বারা ফালা।
২০০

শ্রীরুষ্ণস্তরপং॥ বেলোয়ার।

বিকজ সর্ব্রেক্ত
দৈঠি ভবিম নট থঞ্জন জোর।
কিরে মৃদ্ধ নাধ্রী হাস উগারই
পিই আনন্দে আঁথি পড়ল বিভোর।
কর্মলি কা হয় সাপ বরণ চিকণিয়া।
ক্রিয়ে বন প্রাঞ্জ

অঙ্গদ বলয়া হার মণি-কুণ্ডল চরণে নুপুর কটী কিছিণী কলনা। আভরণ বরণে कामिकी करन देशक ठाँकिक ठनना ॥ কৃঞ্চিত কেশ বৈশ কুন্মমাবলী শেতে মদনশিখী চাঁদকি ছালে। অনস্ত দাস পহ সকল বুবতী-মন পড়ি গেও কালে ॥ আ২ ৮৮॥ শ্রীরাগ। ভালে সে চক্ষর চাক্ষ কামিনী মোহন ফাদ আন্ধাৰে কবিৱা আছে আলা। মেঘের উপর কিবা সদাই উদয় করে নিশি দিশি শশী ষোলকলা ॥ সই কিবা সেই নয়ান চাহনি। হাসির হিলোলে মোর পরাণ-পুতলী দোলে দিতে চাই যৌবন নিছনি॥ জ॥ किया त्र हुड़ात ठीं है में नथ हान नांडे অপদ্ধপ বাঁণী বাজাইতে। হেরইতে সেই মুখ মনে হয় যত সুখ জিতে কি পারিয়ে পাসরিতে। কুল শীল বত ছিল মনে নাগে সব গেল ৰেবিয়া বাছেক সেই ক্লগ। গোৰিক দালের চিতে এছন নাগমে গো

नर जनुराहरीय चत्रभा के ॥ २५२॥

#### অথ-জীরাধিকায়াঃ রূপাভিশারঃ ৷

# <u>শ্রীরাগ।</u>

কুঞ্চিত-কেশিনী নিৰুপ্ম-বেশিনী রম আবেশিনী ভঙ্গিনীরে। অধর সুরঙ্গি জাক তরঙ্গিণী मिलनी नव नव त्रिनीदत ॥ कुन्नती तार्थ का अरह वनी। ব্রজ্ঞ-রমণীগণ-মুক্ট-মণি। এ ।

কুঞ্জর-গামিনী মোতিম-দশনী मामिनी-ठमक-त्नश्तिगीता। আভরণ-ধারিণী নব অভিসারিণী श्रोमत-रामय-विश्वतिशी (त ॥

নব অমুরাগিণী অথিল-সোহাগিণী পঞ্চম রাগিণী মোহিনী রে ৷ ৰাস-বিৰাসিনী হাস-বিকাশিনী গোবিন্দদাস চিত শোহিনী রে॥ ৫॥ ২৭০॥

# ধানশী

ক্ষিব্ৰ রাজ- হংসগতি গামিনী চললিহু সঙ্কেত গেহা অমল তাজ্য- দশু হেখ মঞ্জরী किमि कि उम्म सिर्श

জলধর তিনির চামর জিনি কুন্তল অলকা ভঙ্গ শৈবালে। ভাঙ-লতা ধমু ভ্ৰমর ভূজজিনী **জিনি আ**ধ বিধুবর ভালে ॥ নশিনী চকোর সক্ষী স্ব মধ্কর মূগী ৰঞ্জন জিনি আঁথি। নাসা তিলফুল গরুজ-চঞ্চ জিনি গিধিনী প্ৰবৰ বিশেষি ॥ কনক-মুকুর শনী কমল জিনিয়া মুখ ু **জিনি বিম্বু অধর প্রবালে।** দশন মুকুতা জিনি কুনদ করগ-বীজ ্ জিনি কয়ু কণ্ঠ সাকারে॥ বেল তালযুগ হেম-কলস গিরি কটরি জিনিয়া কুচ সাজা। বাহ মূণাল পাশ বল্লরী জিনি ডমক সিংহ জিনি মাঝা। লোম লতাবলী শৈবাল কজ্জল ত্রিবলী তরঙ্গিণী রঙ্গ। नाजि मरतावत मरताक्रश-नग किनि নিতম জিনিয়া গজকুন্তা। উরুবর কালী করিবর-কর জিনি হল-পছৰ পদ পাৰি। नश्र माजिय वीका हम् इन्न जिनि পিক ছিলি ছবিছা বাগী #

ভণরে বিভাগতি অপার গুরুতি

ক্লাধা-রূপ অপার গ্রাহিন 
রাজা শিবসিংহ

একাদশ অবতারা ॥ ৬ ॥ ২৭১ ॥

কামেদ।

দেশ দেখ নব অভিসারিণী রাই। চকিত বিলোকনে চাইই দশ দিশ প্রেম-সিক্কু অবগাই॥

এক স্থী সঙ্গে চলু নব নাগরী
নাগর সঙ্কেত-কুঞ্জে।
মিলিকা মালতী কুসুম বিথারিত
শুঞ্জিতি তথি অলিপুঞ্জে॥

নিশবদ মণ্ডন অঙ্গ বিভূষণ তৈছন নৃপ্র চরণে। সিন্দ্র চন্দন কজল কৃত অবপ্রহীন বয়ানে॥ ৭॥ ২৭২॥

তথা রাগ।

নব অভিসারিণী কুঞ্জহি ভেটল নব নাগর কান্ত সঙ্গ । বিদ্যালয় বেও শহ ঘটত কুখ প্রকাশিত কুখ বিচল মনোভব রক্ত এ দেখ দেখ অনুপম ত্র**ঁ মুখ** ইন্দু। ছত্তক দরাশাবেশে ভোরল হরি সঞ্জ উছলত প্রেমক সিদ্ধা। ধ্রুণ

হহ<sup>®</sup>ক আলোকনে হহ<sup>®</sup> পুলকায়িত গোচনে আনিক লোর। বিবরণ কাঁপ যাম ভেল গদ গদ স্করধ ভেল পুন ভোর ॥

উছন ভাব না হেরিয়ে ত্রিভুবনে উছন নিকপম লেহ। দাস রাধামোহন চিতে নিচয় করু এক পরাণ ভিন দেহ॥৮॥২৭০॥

### अनुसार का कि. जी शाम के कि. जी कि

কিবে শুভ দরশনে উলসিত লোচনে হুহুঁ দোহাঁ হৈরি মুখ ছান্দে। তৃষিত চাতক নব জলধরে মিলল ভূথিল চকোর চাকে।

স্মাধ নহানে ছই ্ত্রপ্র নেহারই চাহনি সানেহিঁ স্ট্রান্তি। তরসের আবেলে ছত ভক্ত ভক্ত হেলাহেলি

বিচুৰ<del>ক প্ৰেম</del> কাৰাতি ৷

্খাম ক্রখনর দেহ গোরী পর্শে মেহ भिनायम दयन नैराठा नदी। ্ৰাই তহু ধ্বিতে নাবে, আৰাইল আনজ ভৱে শিবীৰ কুসুম কমলিনী ॥ অতসী কুত্রম সঞ্জ শাম স্থনায়র নামরী চম্পক গোর। নব কলধরে জনু চান্দ আগোরল ঐচে বহল স্থাম কোর। বিশ্বলিক কেল- কুমুম শিথি-চন্দ্ৰক বিগলিভ নীল নিচোল। ত্ত্°ক প্রেমরসে ভাসল নিধ্বন উছল্ল প্ৰেম-হিলোল। ১॥ ২৭৪॥ SUPPLIES SE কেদার। প্রিল সমাগ্র রাধা কান ৷ অতি রুসে মগন ভেল পাঁচবাণ ॥ এ ॥ ত্তুমুখ দরশনে হুছ ক বিলোকনে व्यानम नीतरन वाष्ट्रित । অবিরত শ্রশিতে 🕮 🕫 🙉 কুচ, কনকাচল া ভাল গিরিবর-ধর-কর কাঁপইরে ॥ গদ গদ ভাষে ্ আলাপই হহঁ হহঁ ्रक्षात्म लगन छ नामहेरत । हिन्

ছহ পরিরজ্ঞনে। চলা হেলারইরে ॥ ্

হ্হ রনে তাসি ভূচ অবদ্ধই ক্ল-ভ্রমিত অল ছুহ । নব নাগরী সংক্র

ক্ৰণ নগেৱা গড়েন্দ্ৰ প্ৰতিষ্ঠা ১০ ॥ ২৭৫ ॥
বাধানাধৰ বিহরই বলে।
নিমগন হুছ জন ক্ষেত্ৰলৈ ॥
হুছ উঠি বৈঠি কতরে ক্ষ কেলি।
বহুবিধ খেলন সহচনী মেলি ॥
নিজত নিকুল গৃহে করত বিলাস।
হেরত হুছ ক্ষপ নরোভ্য নাস। ১১ ॥ ২৭৬ ॥
ইতি বিতীয় শাখায়াং প্রথম প্রব: ।

অথ রূপাসুরাগঃ।

বাসকসজ্ঞাদি মিলনপর্যাস্তং গীতং। তত্র শ্রীমদেগীরচক্তঃ।

## शनभी।

কো কেনে মহ মো মেলে মছ । ।
কি কেনে গোরাক কেমিরা আইছ ॥
সাত পাচ সধী বাইতে কাটে ।
শচীর ফুলাল কেকি জাইছ বাটে ॥
হাসিরা রকিরা সকিরা কজে ।
কৈল ঠালাগ্রি জি রক্ষাক্ষ ॥

থির বিজ্বী করিক্ষ ওকে।

সে নহে গৌরাক অকের রেথে।
আখির নাটনী ভাঙর দোলা।

মোর হিয়ামাঝে করিছে খেলা।

চান্দ ঝলমলি বদন ছান্দে।

দেখিরা যুবতী ঝুরিয়া কান্দে।

চাচর কেশে ফুলের ঝুটা।

যুবতী উমতি কুলের খোটা।

তাহে তফ্-স্থ বসন পরে।

গোবিন্দদাস তেঞি সে ঝুরে॥ > ॥ ২৭৭॥

শ্ৰীনিত্যানন্দচক্রতা।

ভাটিয়ারি।
নিতাই বঙ্গিরা মোর নিতাই বঙ্গিরা।
পুরুষ বিলাসী বঙ্গী সঙ্গের সঙ্গিরা।
চন্দ্রনে চর্চিত সব অঙ্গ উজার।
রূপ নির্বিতে জগজন-মন ভোর।
ক্যা-নর্মনে বহে স্থর্মুনী ধারা।
\*নাহি জানে দিবানিশি প্রেমে মাতোরারা।
আজাক্রণমিত-ভূজ করিবর-শুও।
কনক-ধচিত জন্মন নঙাটিয়া।
কটি আটি পরিপাটী পরে নীল ধটিয়া।
দ্যার ঠাকর নিতাই জগতে প্রকাশ।

**छनियो कानत्म नांद्र शत्रमाद मात्र ॥ २ ॥ २ १৮ ॥** 

# कारमान ।

ভাবে সে চन्मन होन्स नागरी स्थित कान्स व्याध गिनिया हुए। वास्त । বিনোদ ময়রের পাথে, জাতি কুল নাহি রাথে त्मा श्रम ठिकिस अ ना कात्म ॥ সই কি আর কি আর বোল মোরে। জাতি কুল শীল দিয়া ও রূপ নিছনি লিয়া পরাণে বান্ধিয়া থোব তারে ॥ দেখিয়া ও মুথ চাল কালে পৃণিমক চাল লাল বারে ভেজাঞা আগুনি। নয়ান কোণের বাণে হিয়ার মাঝারে হানে কিবা ছটি ভুরুর নাচনি ॥ অটে আই মতুমত কি এপ দেখিয়া আইত কালা অঙ্গে পরিছে বিজলি। अक्रार्थ महासे मान व क्रिम रहीवम मान আপনা সাজাঞা দিব ডালি ॥ কি খেনে দেখিই তারে, না জানি কি হৈল মোরে জাটি প্রহর স্থাণ বারে 1 वलवाम माम करह के अन्ने स्निमी (गी কোন পাৰ্মী বৰে করে ৷ ৩ ৷ ২৭৯৷৷ THE PERSON AND THE PROPERTY. THE RESERVE OF THE SAME SAME

ম্ব অসুধানে বরে রহই মা পারি। প্রকল্পথ ধ্নী করত চমহারি। শুক্জন পরিজন সবে নিঁদ গেল।

দেখি ধনী অতি উতক্টিত ভেল।

বিছুর্জ আপনক বেশ বনান।

স্থীগণ সংগ্রে জব করত প্রান।

পূলিমক চান্দ জিনিয়া মুখ জ্যোতি।

ঝল মল করে তমু কতয়ে মনিমোতি।

ঝলকমল-দল চরণ সঞ্চার।

নব অমুরাগে কত আরতি বিধার।

আয়ল মদন-কুঞ্ গৃহ মাঝ।

না হেরল তাহি বরজ-যুবরাজ।

বৈঠলি তহি পুন ছোড়ি নিখান।

নাগর আনিতে চলু বলরাম দ্বি।। ৪॥ ২৮০॥

অথ বাসকসজ্জা

ধানশী।

ে কি **অপ**রপ রাইক চরিত। নিভৃত নিকুঞ্জন কি কি কা**মাথে** ধনী সাজ্যে কি কুকুৰ পুন লটয়ে চকিত॥ গুলা

কিশনর শেজ বিছারতি পুন পুন জারত,রক্তন প্রদীপ । ত তার্ল কপ্রি থপুত্রে পুন রাথ্যে বাসিত বারি সমীণ ॥

| मनक्स ठलन                               |  |
|---|--|
| লেই পুন তেজত ভাই।                       |  |
| সচকিত নয়নে নেহারই দশদিশ                |  |
| - কাতরে সধী মুখ চাই॥                    |  |
| কিঞ্জিণী কৰণ মণিময় আভ্রণ               |  |
| পহিন্ত তেজত তাই ৷                       |  |
| স্থীগণ হৈরি কভন্ন প্রবোধ্যে             |  |
| काननाम कर शरे ॥ ८ ॥ २৮১॥                |  |
| তথারাগ।                                 |  |
| বন্ধুর লাগিয়া শৈক বিছাইমু              |  |
| গাঁথিতু কুলের মানা।                     |  |
| ভাষুল সাজহ দীপ উজাইহ                    |  |
| মন্দির হইন আলা॥                         |  |
| সই পাছে এ সব হইবে আন।                   |  |
| সে হেন নাগর                             |  |
| কাহে না মিলল কান ॥ এ ॥                  |  |
| শাশুড়ী ননদেকেই ১১৬ জাব্দনা করিয়া      |  |
| ्रेलक का <b>काहेरू शहने वटन ।</b>       |  |
| वक्र मार्था महान कर्म क्षेत्रम् स्थितिन |  |
| মিলব বন্ধুর সনে ॥                       |  |
| পথ পামে চাহি ক্ত না ইছিব                |  |
| কত অংশবিব খনে                           |  |
| রস পিছোমনি                              |  |
| वक् ह जिमारन करन ॥ ७ ॥ २৮२ ॥            |  |
|   |  |

# কামোদ।

ভূন ভূন নাগর সুষ্ব গুণ আগর তুহঁ বর চতুর স্ঞান। একলি সঙ্কেত- \* নিকেতনে সোধনী

নয়ানে না হেরই আন ॥

তোহারি গমন পুন পুন হেরত সো অবিচল কুলবালা। রতন প্রদীপ বাসগৃহে সাজই

ত্রা লাগি গাঁথই মালা॥

এত কহি সহচরী তুরিতে গমন করি কুঞ্জে ভেল উপনীত।

७ व यष्ट्रनम् अ अ नम्म नम्मन গ্ৰন্থ উন্মত চিত ॥ ৮ ॥ ২৮৩ ॥

### कारमाम ।

বাস-গেহে রাইক ুগমূর শুনি শ্যামর দেশই বেণু-নিসান ৷

ক্র-কোটি অনুমান।

ধনি ধনি রাইক সোহাগ। বো জগলীবন বুৰতী প্ৰাণধন তাহারি পরাণ সম জাস । জ।

তছু প্রেমে আকুল, মৌল বকুল ফুল
আতরণ পছহি ডারি।
চলন সিদ্ধুর-গতি নাহি জন সঙ্গতি
উপনীত ভেলু যাহা নারী॥

দেখি ধনী নাগর আনেন্দ সাগর
সফল দেহ করি মান।
জীবন যৌবন বাস গৃহে পুন
যো কিছু আপন বিভান॥

আনন্দ-সায়রে নিম্গণ স্থীগণ
হেরইতে ছহু ক উল্লাস।

সৌ শুখ-সিদ্ধ-

.বিহাগ্যকা । বা

ভূম ভূম নাগর রসিক স্থলান।
ত্রা মুথ তিল আব না দৈখিলৈ হাম কত
কোটি কর করি মান॥
ত্যা নব অহুরাগে হাম আরহু আগে
পথ হেরি আরহুল পরার।
তেহারি ররণে অব দুরু প্রেও ছুথ স্ব

হাম অতি হু: খিত তালিত তাহে গরবল
তাহে গুরু গন্ধন বৈশি।
গৃহের ভিতরে থাকি বেমন পিল্লরে পাথী
সদা ভরে জীউ উতরোল ।
আনেক প্রণার ফলে তোমা বন্ধ পাইরাছি
কত কত করিয়া কামনা।
হেন মনে অভিনাধি কহি এবে পরকাশি
তুলা পালে নিছিন্ধে আপনা ॥ ৯ ।। ২৮৫॥

ञ्हरे ।

ভন ভন প্রাণপ্রিরে মোর নিবেদন।
ভামার অন্তত শুণে সলা করে আকর্ষণে
তুমি মোর জীবনের জীবন॥
ভামার মধুর রাণী স্থাদিদ্ধ তরদিণী
মোর কর্ণ তাহে ডুবি থাকে।
ভামার গোর বেহ প্রম স্থাদি সহ
ভামার করিল আমাকে।
স্থাপণ সলে থাকি স্থবল ভাহার সাথী
ভ্রেয়া বিনে আন নাহি ভায়।
বিরলে বদিয়ের যুবে, ভোমারে দেখিয়ে ভবে
কহ জুমি মোরে এ উপায়॥ ১৭॥ ২৮৬॥
এভদলীভদ্বরং প্রীবহনন্দন ঠকুর্ম্ম কর্মাই দি

্ত ছুই জন নিভি নিভি নব অফুর্সি ি ুই ছুই জপ নিভি নিভি ছুই ছিয়ে জাগ ॥

ছহঁ মুখ চুৰুই ছহঁ কক কোৱ।
ছহঁ পরিরন্ধনে ছহঁ ভেল ভোর।
ছহঁ হহেঁ হৈছেন দারিল হেম।
নিতি নিতি আর নিতি নিতি নব প্রেম।
নিতি নিতি ঐছন করত বিলাস।
নিতি নিতি হেরই গোবিক্লাস। ১২॥ ২৮৭॥

ইতি বিতীয়-পরবং ॥ অধ রূপাতিসারপ্রকরণং সীরতে ॥ তত্র গৌরচক্রঃ ।

# ে এক ক্ষেত্ৰ কৰে। আনহাত্ত্বিকার ৮ জন্ম ক্ষেত্ৰ

মরি আবো নদীরা মাঝারে ও না রপ। কেবল মূরতি নব-পিরীতির কৃপ ॥ ও ॥ বদন মওল চাক ঝলমণ

কনক দরপণ নিন্দিতে।

কপোল রঙ্গিম ভূরীর ভঙ্গিম

অতমু-সারস থপ্তিতে।

নয়ন যুগল বৈত্তীমে ছল ছল

্ৰাসী থগপতি নিৰ্মিতে।
চান্দ মুখে হরি হরি বোলে কান্দিতে কান্দিতে।
তান্দি প্ৰথমৰ

নাম ডোর গরে বোছিতে। স্থগন্ধি চন্দর্ভ করি বিজ্ঞান

ৰংকীৰ্ত্তন ভূবিতে ৷

ভাবে গর গর না চিক্তে আপন পর পুশক-আবলি শোভিতে।

"রা" বলিয়া "ধা" বোল না পালে বলিতে॥

বাজহি মাদল করহি করতাল কলি-কলুব-ভর নাশিতে। ভকতগণ মেলি দেই করতালি ফিরুদ্ধে চৌদিগে নাচিতে॥

চরণ পল্লব কয়তক প্রকাশিতে। দীন হীন দাসের মন রহিল তাহাতে ॥১॥২৮৮॥

### कारमाम ।

ভাল ভালিরে গৌরাক্স নাচে যার সক্ষে নিত্যানন্দ।
অবনী ভাসায় প্রেমে গার রামানন্দ॥
কম্পিত অধরে পুন গদ গদ ভাষে।
চৌদিকে গোবিন্দ ধর শুনি পহ হাসে॥
ভাবে গরগর অক্স কত ধারা বয়।
পতিতের গলে ধরি রোদন করয়॥
আপনার ভক্তগণে ডাকরে আপনে।
গদাই মুকুন্দ ধরি কান্দে খেনে খেনে॥
গোবিন্দ মাধ্য বাহ্দেবে আইস বলি।
ভোমা সবা লাগি কান্দে পরাণে পুতলী॥২॥ ২৮৯॥

# কুপাস্থাগ। ধানশী।

গৌরাদ্ধানাব্যা রপে কিংকছব এক মুখে
আর তাতে কুলের কাচনি।

'ও'গৌক মুখের হাসি, জীব না গো হেম বাসি
আরা তাতে পিরীতি চাহনি॥

সই লো বিহি গঢ়ল কত ছালে।
কেমন কেমন করে মন সব লাগে উচাটন
প্রাথ-পুত্নী মোর কালে ॥

বিধিরে বলিব কি কি কিরিলে কুলের ঝি আর তাহে নহি খতন্তরী।

গেল কুল লাজ ভয়<sub>ে সান</sub>পরাণ রহিবার নয়

মনের আনলে পুড়ে মরি »

কৃষ্টিৰ কাছার আগে কৃষ্টিল পিরীতি ভাঙ্গে চিত মোর ধৈরজ না বানে।

নয়নানন্দের বাণী শুন শুন ঠাকুরাণী ঠেকিলা গৌরীক শ্রেম কান্দে॥ ৩॥ ২৯০॥

कार महाति।

দেখ জীব অপরুণ গোরাজনানের মুথ নুমনে বহরে হত ধাবা।

কুল কর্মীর গলে থিনোছিয়া মালা, গোরাঙ্গের গুণ গুনি পাষাণ হরেত গানী শুক কান্দে পিঞ্জর ভিতরে। কুলের কুলবতী হরিনামে পিরীতি বিষ্ণে বিস্থা গুণ ঝুরে ॥ ৪ ॥ ২৯১ ॥

#### ভিরোতা ধানশী।

ষত রূপ তত বেশ ভাবিতে পাঁজর শেষ পাপ চিতে নিবারিতে নারি। কিয়ে যশ অপ্যশ নাহি ভায় গৃহবাস তিল আধু পাস্বিতে নাবি॥

মাধার করি কুল ডালা খুচাব কুলের জালা তবহু পুরব মন সাধে। প্রসন্ন হইবে বিধি সাধিব মনের সিদ্ধি

ধসন্ন হইৰে বিধি সাধিব মনের সিদ্ধি যবে হবে কান্থ পরিৰাদে॥

কুল ছাড়ে কুলবতী দতী ছাড়ে নিজ পতি সে যদি নয়নের কোণে চায়। স্বরূপে দঢ়াহু মন জাতি বৌবন ধন নিছিয়া ফেলিব শ্রাম পায়॥

মনেতে করিরে সাধ যদি হয় পরিবাদ থৌবন সফল করি মানি।

আমানদাসেতে কর এমত হাহার হয় তিতৃবন ভাহার নিছনি ॥ ৫॥ ২৯২॥

# তথা রাগ।

শ্বাম রূপ হেরি প্রাণ কালে।
নাগরী-মোহন চূড়া বান্ধে কত ছালে।
দোহতী মুকুতা মালা কেশের সাজনী।
রতনে জড়িত মিলি মালিকের থেচনি।
মালকা-কলিকা শোভে চূড়ার ছই পাশে।
ভূবন ভূলালে ময়ূর পাথার বিলাদে।
নব্দন জিনি অস পীত পরিধান।
আগে পাছে কত মত্ত অলি করে গান।
মুকুরে নির্থে রূপ স্থের নাহি ওর।
আপনার রূপে নাগর আপনি বিভার।
রহই বিভঙ্গ হই হিলন কদম।
দাস অনস্ত চিতে লাগি গেল ধন্ধ। ১। ২৯০।

#### কামোদ।

জনম অবধি হৈতে দেখি নাই এমন রীতে কিবা দিয়া নি রমিল বিধি। মুরলী লইয়া করে কি মধুর গান করে কালা নহে রসময় নিধি॥

মনোহর বংশীবদন বনমালী। জিভক হইরাঠানে চূড়ার টালনি বামে আর তাহে অলকা-আবেবী। বরণ চিকণ কালা তাহে শোভে বনমালা পীতাম্বর পরিধান করি।

কিবা সেম্রতি থানি অপরূপ লাবণী কালা নহে জগমনোহারী॥ १॥ ২৯৪॥

# স্থুহই।

কিশোর বরেস মণি কাঞ্চন আতরণ ভাবে চূড়া চিকণ বনান। হেরইতে রূপ- সায়রে মন ডুবল বহুভাগ্যে রহল প্রাণ ॥

স্থি হে পেথলু পছ কি মাঝ।
হাম নারী অবলা একলা পথে যাইতে
বিছুরল স্ব নিজ্ক কাজ।।

নরান-সন্ধান- বাণে তত্ত্ জর জর
কাতর বিনি অবলবে।
বসন ধসরে ঘন পুলকে পূরল তত্ত্ পানী না পূরলু কুন্তে॥

মুর নহে মোর যেন আংগিয়ে খণন হেন্ আংরতি ক্রনে নাধায়।

ভানদাস কহে মনে অভ্যানিয়ে বাস করব নীগছার ॥ ৮ ॥ ২৯৫॥

# অথাভিনারিকা।

# शनभी।

হরি-অভিসারে চললি বর-ক্লন্দরী
শীতল বৃন্দাবন মাঝ।
গুরুষা নিতম-ভরে চলই না পারই
বৈছে চলয়ে হংসরাজ॥
একে সে ভক্লণ ইন্দু মলরজ বিন্দু বিন্দু
কস্তরা-ভিলক ভার মাঝে।
পিঠে কোলে হেমঝাঁপা রঙ্গিলা পাটের খোপা
নাসার মুক্তারাজ সাজে॥

চৌদিকে রমণী শোভে ডক্ষ রবাব বাজে সবে চলে মদন তরক্ষে।

যে দিগে পদান করে মদন প্লায় ভরে সৌরভে ভ্রমর যায় সঙ্গে । ২৯৬॥

# শক্ষরাভরণ।

্ধনি ধনি বনী অভিসারে।

চলইতে চরণের সালক চলু মধুকর মকরন্দ পাদকি গোভে। প্রেক্তি উন্নত ধরণী চুবরে কক

বাহা বাহা প্ৰচিক্ত পোডে ৷

কনক-গতা জিনি জিনি বৌদানিনী
বিধির অবধি-রূপ সাজে।
কি ফিণী রণরণি বকরাল-ধ্বনি
চলইতে তুমধুর বাজে॥

হংসরাজ জিনি গমন স্থলাবণী অবলম্বন স্থী কাল্পে। অনস্তদাসে ভণে মিলাল নিকুঞ্জবনে পুরাইতে শুম মন সাধে॥ ১০॥ ২৯৭॥

#### পঠমঞ্চরী।

আইস আইস স্থবদনি রসমরি রাধা।

দরশনে দূরে গেও মনসিজ-বাধা।

তুহুঁ মোর সরবস নরানের তারা।

তো বিনে সকল দিগ লাগে আদ্রিয়ারা।

করে ধরি রাই লই বসাইল বামে।
পীতবাসে মোছই রাই-মুখ-ঘামে।

পাছা-হুঃখ পুছত বরকান।

আনন্দে মগন হুহুঁ কিছু নাহি জান।

অপক্ষপ রাধা কামু বিলাস।

দুরহি নেহারত বিজ ইবিদাস। ১১॥২৯৮॥

### ধানশী।

ু হছ<sup>া</sup> মুখ স্থলর কি দিব তুবানা । কান্তু মরকত মৰি রাই কাঁচা সোণা ॥ নৰ সোরোচনা গোরী কাস্থ ইন্দীবর।
বিনোদিনী বিজ্ঞী বিনোদ জলধর॥
কনকের তক ধেন তমালে বেডিল।
নবঘন মাঝে বেন বিজ্ঞী পশিল॥
রাই কাম্থ রূপের নাহিক উপাম।
ক্বলয় চাঁদ মিলল এক ঠাম॥
রসের আবেশে ছহঁ ইইলা বিভার।
দাস অনস্ত পহঁনা পাওল ওর॥ ১২॥ ২৯৯॥

সুহই।

নিধ্বনে শ্রাম বিনোদিনী ভোর।

তুহাঁর রূপের নাহিক উপমা

প্রেমের নাহিক ওর ॥

হিরণ কিরণ আধ বরণ

আধ বরণ

আধ বরণ

আধ গলে বন- মালা বিরাজিত

আধ গলে গলমোতি ॥

আধ শ্রবণে মকর কুওল

ক্ষাধ রতন ছবি ।

আধ কপালে

আধ কপালে রবি ॥

আধ শিরে শোভে মরুর-শিথপ্ত

আধ শিরে লোলে বেণী ।

কনক ক্মল

क्षे जिमाबदक् स्वि॥

মৰু প্ৰন

রসের পাথারে

্মলয় শীতল

কুম্বল উভ্রে বার।

না **জানে** সাঁতারে

ডুবল শেখর রায়॥ ১৩॥ ৩০০॥

সম্ভোগ।

কেদার।

রতি রসে অতিশর মাতল নাহ।
অমিয়া-সরোবরে ছহঁ অবগাহ ॥
সহজে নিরস্কুশ নাগররাজ।
তাহে মনমথ নৃপ-কোতৃক কাজ ॥
দৃঢ় পরিরস্তনে ঘন সীতকার।
অফুক্ষণ কিছিণী করয়ে ফুকার ॥
করগহি রাথিও মৃগ চকেবা।
দংশইতে সরসিজ বারব কেবা॥
কহ হরিবল্লভ সহচরীকুলে।
দেখই নিভৃতে উলাসই ফুলো॥ ১৪ ॥ ৩০১ ॥

**क्ना**त्र।

রতি-রস-ছরমে শ্রাম হিয়ে ওতলি
শরদ-ইক্-মুখী বালা।
মরকত-মগনে কোই কমু পূজন
দেই নর কাঞ্চন-মালা।

ভাম বর্গানপর ব্যান বিরাজই

উরপর কুচ বৃগ বাজে।

কনক-কুন্ত অনু

উলটি বৈদায়ল

मनन-मरहान्धि मार्यः॥

জোড়ল তমুমন ভূজে ভূজে বন্ধন অধরহি অধর মিশান।

বেঢ়ল মৃণালে হেম নীলমণি জমু বান্ধিল যুগ একঠান ॥

ঘন সঞ্জোদানী সাজে তুকুণ জন্ম হুহুঁজন এক পটবাস।

চরণে বেড়িয়া চাক্র অকণ সরোক্রহ

মধুকর গোবিন্দদাস ॥ ১৫ ॥ ৩০২ ॥

#### ভথারাগ ৷

রতি অবসানে বৈঠি বর-নাগরী উদসল আপক দেহা। হেরইতে অবনত বদন করল পুন

কি করব না পাই থেহা।

রাই প্রেমরপদারী। ইঙ্গিতে নিজবেশ- করণে নিরোজন রভিত্রৰ কুঞ্জবিহারী # **ঈষদবলোকনে** মাধব হেরইতে

नग्रनहि जानम नीत् ।

জমু বর বিধু-মণি বিধু-কর দরশনে

তৈছন সকল শরীর॥

অলক সঙাবিতে পহিবৃহি কাঁপই

বর-করে পরশিতে কান্ত।

কহ রাধামোহন বেশ কৈছে হোয়ৰ

চুড় চরণ পরিষস্ত ॥ ১৬ ॥ ৩০৩ ॥

ইতি সংকীর্ত্তনামুসারেণ রূপাভিসারাদি সর্ব্বকালোচিতগীতং। ইতি তৃতীয়-পল্লবঃ॥

অথ বসস্তকালোচিত-বাসক্সজোৎক্সিতাদিপর্য্যায়ো গীয়তে। व्यामी औशीत्रहकः।

সিশ্বড়া।

বা

বসস্ত ।

পদত্তে ভক্ত কল্পতক সিঞ্চিত

প্রেমরস মকরন।

যাকর ছায়ার সোসর নব নব

**পর্মানন্দ নির্দন্দ** !!

পেথলু গৌরচন্দ্র নটরাজ।

জন্ম হেম- ধরাধর উয়ল

কিয়ে নবৰীপমাঝ ॥ জ ॥

নব নীরদ জিনি কত মন্দাকিনী তিভুবন ভরগ তরজে। নিত্যানক চক্র অভিরাম দিনমণি ভ্রমই প্রদক্ষিণ রঙ্গে॥

বাকর চরণ সমাধ্যে শঙ্কর

চতুরানন করু আশে।

সেপত্ পতিত কোরে ধরি কালই

কি কহব গোবিন্দদাসে॥ ১॥ ৩০৪॥

তত্র শুক্লাভিসার। ধানশী।

কুল-কুস্থনে ভক্ল কবরীক ভার।
হলরে বিরাজিত মোতিম হার॥
চলনে চরচি তম্প ক্ষচির কপুর।
অঙ্গহি অঙ্গ অনঙ্গ ভরিপুর॥
চাঁদনী রজনী উজোরল গোরী।
হরি অভিসার রভস-রসে ভোরী॥
ধবল বিভূষণ অম্বর বলই।
কবলিম কৌমুদী মিলি তম্প চলই॥
হেরইতে পরিজন লোচন ভূল।
রঙ্গপুতলী কিষে রস্মাহাব্র॥
পুরতি মনোরথ গতি অনিবার।
ভক্কুল কন্টক কি কর্মে পার।

স্বতি শিক্ষারকি রীতি সম ভাষ। মিললি নিকুঞ্জে কছে গোবিন্দদাস॥ ২॥ ৩০৫ ॥

তথা রাগ।

শৃভকুঞ্জ হেরি রসবতী রাই।
নাগর-শেখর না মিলল আই॥
মধু-ঋতু রজনী চক্র উজোর।
কোকিল ভ্রমর ডাকে আনন্দে বিভারে॥
মলর পবন বহে কুসুম স্থানর।
বিজ-কুল-শন্দ কতহাঁ পরবন্ধ॥
বৈছে সময়ে যব মিলল কান।
দাস অনস্ত তোহারি ঋণ গান॥৩॥০০৬॥

অথ বাসকসজ্জা। তহচিত শ্রীগৌরচক্র।

ধানশী ৷

কি লাগিয়া মোর গৌর-স্বন্ধর বসিয়া গৃহের মাঝে।

ৰসন আসন বৈ রভন ভূবণ

সাজরে অক্সের মাঝে।
আপেন বপুর 
চমকি উঠিছে মনে।

কি লাগি অবহ' না মিলল পছ'

এতনা বিলম্ব কেনে।

কহে নরহরি মোর গৌরহরি ভাবিরে রাইরের দশা। সজল নরানে চাহে পথ পানে কহে গদ গদ ভাষা॥ ৪॥ ৩০৭॥

#### थाननी।

বাসিত বারি কপুরিত তাখুল কুস্থমিত মদন-শয়ান। উজোর দীপ সমীপহি জারহ

বিরচহ চারু বিতান ॥

স্থি হে কৃহই না যায় আনন্দ। ঋতু-পতি রাতি অবহু আই নাগর মিলবহু শ্রামর চন্দ্র॥ গু॥

কুস্থমিত মৌলি রসালক পরিমলে ভ্রমরী ভ্রমর রহু ভোর। মদন মনোরবে সগরহি যামিনী স্থাধে বঞ্চিব হরি-কোর॥

বিছিপায়ে লাগি মাগি দিব এহি বর

চেতন রছ মস্কু দেহ। ত

গোবিক্ষান কহই হরি-পরশহি

সো পুন হোড সন্দেহ ॥ ৫ ॥ ৩০৮ ॥

# কামোদ। ইনার এক

উজোর রাতি শেজ নব কিশলয় বাসিত তাম্ব বারি। এহি উপচারে আজ হরি ভেটব ঐছন মরম হামারি॥

मज़िन कि कल (तभ वनान। কাতু পরশ-মণি- পরশক বাধন আভরণ সৌতিনী মান ॥ গ্রু॥

হহ কুণ্ডল হহ ক্ষণ কিকিণী ছহ নৃপুর রাখি। মৃগমদ সিম্পুর লোচনে কাজর পদ যাৰক রতি-সাথী॥

সো তহু পরশে পুলকে তহু ৰাধত ইথে লাগি চমকে পরাণ। গোবिन्ममात्र करहे धनि धनि धनि কারু মরম তুহুঁ জান॥ ৬॥ ৩০৯॥

# (कमात्र।

অফুপম মন অভিলাষ। স্কেত কুঞ্জহি শেক বিছাইছ কামু মিশব প্ৰতি আশ ॥ জ ॥ ₹.

মৃগমদ চন্দৰ গন্ধ স্থলেপৰ বিকসিত-চম্পক দাম ৷ কর্প্র তাষ্ণ সম্পুট ভরি রাধ্যে পুরব মনোরণ কাষ 🎼 মকল কলমপর দেই নব পল্লব রস্তা শোভে ভছু ঠাম। রতন প্রদীপ সমীপহি জারল চামর বীজন অফুপাম। কত উপহার কুঞ্জমাহা করলহি কারু মিলব প্রতি আশ। ঘর বাহির কত আওত যাওত কি কহব বলরামদাস॥ १॥ ৩১० ॥ বিহাগডা ৷ ধনি সহজে বাজার ঝি। ঘরের বাহির কথন না হও আমরা দেথিয়াছি॥ গ্রন্থ। তাহাতে রজনী কানন মাঝারে করিয়ে কমল-শেজ। মিনতি করিয়া প্রিয় স্থীগণে কামুর উদ্দেশে তেক্স। সবह दक्षनी निंम यादा धनी রতন-পালকোপরে। নে কমৰিনী জাগদ্ধে বামিনী

নিমিথ না দেই ডৱে ॥

কর পদতল ও থল-কমল

जनीत भूजनी (पर। .

সে বে স্কুমারী কাব্দরে গুমরি

এতনা সহিবে কেই॥

এ ঘর বাহির করে বারে বার

কপট শঠের আশ।

এতত বিপদ সহিতে না পারি

ধার কারুরাম দাস ॥ ৮ ॥ ৩১১ ॥

অথোৎকণ্ঠিতা।

সা স্থাত্ত্কেণ্ডিতা যন্তা বাসং নৈতি ক্রতং প্রিয়ঃ। ত্ত্যানাগমনে হেতুং চিন্তয়ন্তী ওচা ভূশং॥

ভদ্রচিত শ্রীগৌরচন্দ:।

গান্ধার।

কি লাগিয়া গৌর মোর। নিজ-রসে ভেল ভোর॥ অবনত করি মুখ। ভাবয়ে পুরুব ছুথ ॥ ৰিহি নিকরণ ভেগ। আধ নিশি বহি গেল 🕯 জ্ঞানদাস কছে গোৱা। নিজ-বুসে ভেল ভোরা ৷৷ ১ ৷৷ ৩১২ ৷৷

# ্ ভ স্থাই। 🔯 🏸

মধু-ঋজু রজনী উজোরল হিমকর মলর সমীরণ মল। কাফু আশোলাশে চপল মনোভবে মনহি বিথারল দক্ষ।

সন্ধনি পুন বাই সম্বাদ্ধ কান। কালিন্দী কূলে অবহু বিরহানলে তেজব দগধ পরাণ॥

কিশলর দহন- শেজ অব সাজহ
আছতি চন্দন পদ্ধা।
বিজ-কুল-নাদ- মন্ত্রে তন্তু জারব
দূরে যাউ প্রেম-কলঙ্কা॥

চিত-রতন মঝু কান্থ পাশে রহণ অবহঁনা মিলিল যোই। গোবিন্দদাস কহই ধনি বিরমহ আপহি মিলব সোই॥ ১০॥ ৩১৩॥

# শ্রীগান্ধার।

ঋতু-পতি রাতি উজোরল চক্র।

মলর সমীরণ কুইম হুগদ্ধ।

যামিনী আর ক্ষাইক বহিংগেল।

যতহ মনোরগ ক্ষান্ত অনরণ ভেল।

এ সথি হরি সঞ্জে কি করব ছন্ত।
আপন মনহি মনোভব মন্দ ॥
সো মুথ হেরইতে না রহ মান।
তাকর রসে ভেল কঠিন পরাণ॥
যাকর বচনে নাহি বিশোয়াশ।
তাহে কি সম্বাদব গোবিন্দান॥ ১১॥ ৩১৪॥

### তথা রাগ।

মাধব কি কহব ধনীক সন্তাপ। চিতহিঁ তোহারি দর্শ তুরাপ ॥ বিরহক বেদনে সো বর-নারী। নিরজনে বিরচই মুরতি তোহারি॥ দাৰুণ দৈবত তহিঁ নাহি গেল। লিথইতে আন আন ভৈগেল # লিখইতে বদন বেকত ভেল চক্র। হেরি হেরি স্থন্দরী পড়লহি ধন্দ।। ভাঙ ধমুয়া ভেল লোচন বাণ। অঙ্গে অনঙ্গ হেরি হরণ গেয়ান॥ পুন কিয়ে লিখব যতন করু তোয়। ভীতক চিত পুতলী ভেল সোয়॥ (शादिकानाम करहे कति (मवा। শুনইতে সো ভেল মরকত-দেবা॥ ১২॥ ৩১৫॥ যক্তা দৃতীং স্বয়ং প্রেষ্য দময়ে নাগতঃ প্রিয়:। শোচন্তী তং বিনা হঃস্থা বিপ্ৰলব্ধাতু সা স্থতা।।

#### মালৰ রাগ ৷

ক্থিতসময়েঽপি হরি রহহ ন যথে বনং। মম বিফলমিদমমলমপি রূপ-ফৌবনং॥ যামিছে কমিছ শরণং স্থী-জন-বচন-বঞ্চিতা।। এ। যদক্ষণমনায় নিশি গছনমপি শীলিতং। তেন মম জনয়মিদমসম-শর-কীলিতং॥ মম মরণমেব বরমতিবিতথ-কেতনা। কিমিছ বিষহামি বিরহানলমচেতনা॥ অহহ কল্যামি বল্যাদি-মণি-ভূষণং। इति-वित्र नर्म-वर्मन वर्षम्य ॥ মামহহ বিধুরয়তি মধুর-মধু-যামিনী। কাপি হরিমমুভবতি কৃত-মুক্কত-কামিনী। কু স্থম-স্কুমার-তমুমতমু-শর-লীলয়া। অগপি হৃদি হয়ি মামতিবিষম-শীলয়া॥ অহমিছ নিবসামি নগণিত-বন-বেতসা। শ্বরতি মধুস্দনো মামপি ন চেত্সা॥ হরি-চরণ-শরণ-জমদেব-কবি-ভারতী। বস্তু হৃদি যুবতিরিব কোমল-কলাবতী ॥১৩॥৩১ ৬॥

#### शानणी ।

মাধব মনোরথ ফিরত অহেরা।

একলি নিকুঞ্জে ধনী স্কুলশরে জর জর

পস্থ নেহারত তেরাঃ

উজোর শশধর দীপ জারল অলিকুল ঘাঘর রোল। হনইতে হরিণী- নুমূনী দরশায়ই তুহিঁ তহিঁ পিক বোল।

তুহু অতি মন্থর গমন গুরস্তর মধর যামিনী অতি ছোটি। সো ঘর বাহির করত নিরস্তর নিমিথে মানয়ে যুগ কোটি॥

আশা পাশে লেই গলে বৈঠল প্রেম কল্পতক মূল। কিয়ে অমিয়া কিয়ে ধরব গরল ফল গোবিন্দাস কহ ফুর॥ ১৪॥ ৩১৭॥

# বিহাগডা।

হরিণ-নয়ানী তেজি নিজ মন্দির আওয়ে সক্ষেত ঠামা। তৈথনে চাঁদ উদয় ভেল দারুণ পশাবল কিবণক দামা ৷

মাধব তোহে কি বলব আন। বিষম-কুস্থম-পরে পাঁজর জর জর ধনি যদি তেজই পরাণ ॥

মোতিম হার ভার হিরে জারই

কর-কঙ্কণ ভেল ঝঙ্ক।

সহচরী কোরে ভোরে তন্তু মোড়ই
লোরে ধরণী করু পঙ্ক॥

কিশলয়-শয়নে থির নাহি বান্ধই
চন্দন পবনে সুরছাই।

গোবিন্দদাস কহই হরি অভিসর

যদি খনে জীবই রাই॥ ১৫॥ ৩১৮॥

### গুর্জ্জরী।

ঋতু-পতি রাতি বিরহ জরে জাগরি দোতী উপেখলি রামা। প্রিয় সহচরী বলি মোরে পাঠাওলি জাতরে আয়স্থ তুরা ঠামা॥

শুন মাধ্ব কর জ্বোড়ি কহলমো তোর। মনমথ-রঙ্গ- তরন্ধিত লোচন ভুহ<sup>\*</sup> না হেরবি মোর॥

দ্রে কর লালস আনহি লালসী
চাতুরী বচন বিভঙ্গ ।
বক্ষ জীবন হাম তোহে নিরমঞ্ব
তবহু না সৌপ্র অজ্ঞ ॥

যাহে শিল্প সেঁপি কোরপর ভতিরে
সো যদি কর্ম্ধ বিপরীতে।
পিরীতিক রীত ঐছে তব মীটব
গোবিন্দদাস চিত ভীতে॥ ১৬॥ ৩১৯॥

#### ধানশী।

শুন শুন মাধব বিদগধ-রাজ।
ধনী যদি দেখবি না সহে বেরাজ॥
নব কিশলয়-দলে শুতলি নারী।
বিষম-কুস্থম-শর সহই না পারি॥
হিমকর চন্দন পবন ভেল আগি।
জীবন ধরয়ে দরশন লাগি॥
জানেক যতনে কহ আথর আধ।
না জানিয়ে অব কিয়ে ভেল পরমাদ॥
নরোত্তম দাস পহঁ নাগর কান।
রসিক কলা-শুক্র ভূহুঁসব জান॥ ১৭॥ ৩২০॥

#### তথা রাগ।

চলিলা নাগর-রাজ ধনী দেখিবারে।
অধির চরণ-যুগ আরতি বিথারে॥
নোভরিতে সো প্রেম অবশ ভেল অঙ্গ ।
অন্তরে রাচল-মদন-তরক।
স্পীতল কুঞ্জবনে শুভিয়াছে রাধে।
ধনী মুখচাঁদ হেরই পুন দাধে॥

অধর কপোল আঁধি ভূকষ্ণ মাঝ।
পুন পুন চুঘই বিধপধ-রাজ ॥
অচেতন ছিল রাই সচেতন ভেল।
মধন জনিত ছধ সব দুরে পেল॥
নরোত্তম দাস পহঁ আাননো বিভার।
ছহঁ রসে মাতল নাহি সুধ ওর॥ ১৮॥এ২১॥

লনিত।

ছহঁ ঘোঁহা দরশনে পুলকিত অদ ।
দ্রে পেও রন্ধনীক বিরহ-তরঙ্গ দ
বৈছে বিরহ-জ্বের পুঠল রাই ।
তৈছনে অমিরা-সাগরে অবগাই ॥
ছহঁ মুথ চুবই হুহুঁ মুখ হেরি ।
আনন্দে হুহুঁ জন করু নানা কেলি ॥
সুখমর যামিনী চাঁদ উজোর ।
কুহরত কোকিল আনন্দ বিভোর ॥
বিক্সিত কুল্ম মলর স্থীর ।
ঝলমল করত কুঞ্জ-কুটার ॥
বিহররে রাধামাধব রঙ্গে ।
নরোত্তম বান হেরি পুলকিত অঙ্গে ॥ ১৯ ॥০২২॥

কেদার া

প্রমণ বক্ল বদাব।

রসের প্লার

পার্মণ বক্ল বদাব।

রসের প্লার

পাহক মদন পোপাল।

র্ক্ষাবনে কেলি কলা-নিধি কান। হাস বিলাস গ্লমন দিঠি মন্থ্র হেরি মুরছয়ে পাঁচবাণ ॥

নৰ ব্ৰয়জ প্ৰশি ত্রল মণি পুছই মুলকি বাত। ত্রল-নয়ানী হাসি মুখ মোড়ই বৈঠই হাতহি হাত॥

হুহঁ রসে ভার ওর না পাওই রস চাকই মদন দালাল। দাস অনস্ত কহই রস্-কৌতুক তৃত্তককুল কহে ভালি ভাল॥ ২০॥ ৩২০॥

# न्निण ।

কিশ্লয়-শ্রনে শুতলি ধনী গোরী।
নাগর-শেথর শুতলি ধনীকোরি॥
চন্দন চর্চিত ছাই জন অসং।
হাই ফুলাহার লখিত জ্জা।
বদনে বদন হাই চরণে চরণ।
প্রিল ন্ম্-শ্রীগণে করয়ে সেবন॥
প্রল হাই জন মন জভিলাব।
হাই জুণ গাওত নরোভ্য দাসু ॥ ২১॥ ০২৪॥
ইতি চতুর্থ গ্রাবঃ ॥

অথ হিম-সমরোচিতাভিসারিকা বাসকসজ্জাদি-পর্য্যারো গীয়তে ॥
ভবাদৌ শ্রীগেরচন্ত্র:।

# धाननी ।

বিমল্প হেম জিনি তহু অঞ্পামরে
তাহে শোভে নানা কুলদাম।
কদম কেশর জিনি একটা পুলকরে
তার মাঝে বিন্দু বিদ্দু ঘাম।
চিনিতে না পারে গোরা- চাঁদ গোসাঞিরে
বলিতে না পারে আধ বোল।
ভাবে অবশ হৈয়া হরি হরি বোলাইয়া
আচপ্তালে ধরি দেই কোল।
গমন মন্থর-গতি জিনি মদমত হাতী
ভাবাবেশে চুলি চুলি যায়।
অরুণ বসন ছবি জিনি প্রভাতের রবি
গোরা কঙ্গেল লহনী খেলায়॥
এহেন সম্পাদ কালে গোরা না ভিন্নি হেলে

তৃয়া পদে না করিলু আশ। শ্রীকৃষ্ণটৈতগুচন্দ্র - , ঠাকুর নিত্যানন্দ গুণ গান বৃন্দাবন দাস॥ ১॥ ৩২৫॥

# ভূপালী।

পৌধনী রজনী প্রন বহে মদ। চৌদিশে হিম্কুর হিম্কুক বন্ধ॥ মন্দিরে রহত সবহঁ তমু কাঁপ।
জগজন শর্নে শর্ন করু ঝাঁপ।
এ সথি হেরি চমক মোহে লাই।
ঐছে সময়ে অভিসারল রাই॥ এল॥
পরিহরি তৈছন স্থমর শেজ।
উচ-কুচ-কঞ্চুক ভরমহি তেজ॥
ধবলিম এক বসনে তমু গোই।
চললহি কুঞ্জে লথই নাহি কোই॥
কোমল চরণ ভূহিনে নাহি দলই।
কণ্টক বাটে কভিহিঁ নাহি টলই॥
গোবিন্দাস কহ ইথে কি সন্দেহ।
কিয়ে বিঘন যাহা নবীন স্লেহ॥। ২॥ ৩২৬॥

#### কেদার।

হিম-কর-কিরণ হিম অনিবার।
দিশি দিশি হিম-গিরি-পবন বিথার॥
চলিলা রমণী ধনী আকুল চিত।
সক্তে কেলি-নিকুঞ্জে উপনীত॥
না দেখিয়া তহিঁ বর-নাগর কান।
কাতর অস্তর আকুল পরাণ॥
শুরুজন-নয়ন পাপগণ বারি।
আয়লু কুলবতী চরিত উঘারি॥
ইংশে যদি আ মিলল সোঁ বর কান।
কহ সথি কৈছনে ধরব প্রাণ॥

কহ কবিশেপর অনুরি রাই। रिश्वक शब्द काम ज्यानव गाँहे ॥ ७ ॥ ७२ १॥ অথ বাসকসজ্ঞা। তচ্চিত শ্রীগোরচন্তঃ ৷ মঙ্গলরাগ।

সুরধুনী তারে তরুণতর-তরুত্ব

ভলপিত মালতী মালে।

বৈঠি বিনোদবর বাসিত কুছুমে

তিলক ঘৰায়ত ভালে ॥

হরি হরি না ব্রিয়ে গৌরাছ-বিলাস।

গোকুল-নারক বিহরই নবখাপে

ভরুণী-ভাব পরকাশ ॥ ঞ ॥

চমংক্বত-চাক্-

চক্ৰবৃত চন্দ্ৰ

চিত্ৰই চিত্ৰিত অঞ্চ।

নিজ বর-ভাব- বিভাবিত অন্তর

ঐচ্ছে ভকতগণ সঙ্গে 🕸

রাকা রজনী রজনীকর-রমণ

क्यां क्ष्म शहनश्र कार्यम् ।

রাধামোছন- ভ্রন্ত-বিরেফ-চিত

प्रमुख प्राप्त कवि वारक ॥ 8 ॥ ७२৮ ॥

न्महे-क्रांशन स्था ॥

ভূপানী া

স্থ মুনী-তীমে বৰ ভাঞীর-তলে। বসিরাকে গোরাটার লিজগণ মেলে ॥ রজনী কৌমুদী আর: হিম-ঋতু তার।
হিম সহ পবন বহরে মৃত্ বায়॥
তাহি রচয়ে পহাঁ লালিত শরনে।
হেরয়ে ঘন ঘন চাকিত নয়ানে॥
আপন অক্সের ছায়া দেখিয়া উঠয়ে।
বাসকসজ্জার ভাব জ্ঞানদাস কহে॥ ৫॥ ০২৯॥

#### कारमान

নিকুঞ্জ মন্দিরে শেজ বিছাইয়া

সঘনে কাঁপয়ে দেহ।

নীল নিচোল সে তমু ঝাঁপল

প্ৰনে না রহে সেহ॥

স্কুমারী কতনা সহিবে ছথ।

মন্দিরে রচিত তুল পরিযক্ষ

তেজিয়া সে সব স্থা। এ।

অকপট কামু- পিরীতি লাগিয়া

,আয়েত সঙ্কেত গেহ।

কোন কলাবতী সংক্ষ বিলস্থে

ভেজিয়া এ হেন লেহ।।

এ ধর বাহির করিতে কতই

চনকিত হৈয়া চাহে।

খন বলি উঠে দেখি প্ৰাণ কাটে

निवर्ताय मान करहे ॥ ७ ॥ ००० ॥

## श्रु हिनी ।

সে যে বৃষ্ভাঞ্-স্থতা।
মরমে পাইরা বাথা॥
সজল নরন হৈয়া।
রহে পথপানে চাঞা ॥
কূল শেজ বিছাইরা।
রহরে ধেয়ানী হৈয়া॥
উজোর চান্দনী রাতি।
মন্দিরে রতন বাতি॥
কহে সব ভেল আন।
কাহে না মিলল কান॥
সকল বিফল হৈদ।
আধ রজনী গেল॥
গ্রাম-বন্ধুর পাশ।
চলু বজু চণ্ডীদাস॥ ৭॥ ৩০১॥

# शनभी।

প্রনক প্রশহি বিচলিত পল্লব

শবদহি সঞ্জল নল্লান।

সচকিতে সঘনে নগ্লী নির্থয়ে

শ্বান্য আঙল কান॥

মাধব সমুখল তুমা চতুত্রাই। ত্রমালক কোকে আপন তম্ ছাপনি অব কৈছে রছবি ছাপাই। পুনহি বিলম্বে ফিরমে সব কাননে পুন অক্সান্যে চিতে। ভূগল পছ অন্ত নাহি পাওল না ব্রিমে নাগর রীতে।

ন্পুর রণিত কলিত নব মাধুরী শুনইতে শ্রবণ উলাস। আগগুদরি রাই কাননে অবলোকই কহতহি কামুরাম দাস॥৮॥ ৩৩২॥

অধ্যেৎকণ্ঠিতা ॥

্তত্র ব্রীগৌরচন্দ্রঃ॥

কেদার।

দেখ দেখ পূর্ণতম অবতার। বছু প্রণ-গানে গরাসল গণসঞে গরবহি পাওল পার॥ শ্রু॥

গোপীগণ-প্রাণ- বল্লভ যোজন সো শচীনন্দন হোই। গোপী গুণ-গাম গোর পুন গাবই রক্জনী উক্জাগরি রোই॥

চৌদিকে চাঁদ- চাঁদনী চাহি চমকিও
চিত্তে অতি পাই তরাস।
কাঁশি কহরে কাঁহে কাহ্ম নাহি মিলল
কি ফল কার-বিলাস॥

ক্ষ ক্ষ কহি করতহিঁ কীর্ত্তন কান্তক কামন মর্গ্ম। ভণ রাধামোহন ,ভাবে ভোর রহঁ কলি-মুগ-পাবন ধর্গ্ম ৯ ॥ ৩০০ ॥

ভৰা বাগ।

# श्निशी।

রসের হাটেতে আইলাম সাজাইরা পসার।
গাহক না আওল যৌবন তেল ভার॥
বড় হুঃথ পাই সথি বড় হুঃথ পাই।
প্রাম অন্তর্যাগে নিশি জাগিরা পোহাই॥
বিষ লাগে হিমকর কিরণে পোড়ায়।
হিম-ঋতৃ-পরনে মোর হিয়া চমকায়॥
দার্মণ কোকিল মোর প্রাণ নিতে চায়।
কুহ কুহ করিরা মধুর গীত প্রায়॥
ফুলশরে জ্বর জর হিয়া চমকায়।
কাল্রাম দানের তন্তু ধুলার নোটায়॥১০॥৩৬৪॥

शिक्षांत्र ॥

তোহাদ্ধি নৰেতে ক্ৰেক্সমণ্ডৰ প্ৰাঞ্জ বহুক এক্ষেণব্ৰিষা । তম্বন বিবহুক প্ৰাণ-হৰিণ বাহ ক্ষিত্ৰা ॥ মাধব ধৈরজ গমন তোহারি। ও থণ শাথ কলপ করি মানই তলপ ভরমে দিঠ-বারি॥

তোহারি সক্ষেশ- আশে ধনী কুলবতী থোয়ল কুল-তন্ত্-কাঁতি। নিকরণ মদন বেদন নাহি জানই হানই ধরশান পাঁতি॥

পরাণ প্রেম- আশ-গুণে বান্ধল ভাষ না নিকসই বদনে। ভণে যত্নন্দন সোজনি টুটয়ে অতরে চলহ সোই সদনে॥ ১১॥ ৩৩৫॥

#### কেদার।

হিম-ঋতু যামিনী যামূন তীর।
তরল-লতা-কুল কুঞ্জ-কুটীর॥
তহিঁ তকু থির নহে তুহিন-সমীর।
ইথে কৈছে বঞ্চনি শ্লাম-শরীর॥
ধনি তুহঁ মাধব ধনি তুরা লেহ।
ধনি ধনি সো ধনী পরিহরি গেহ॥
কুলবতী-প্রৌরব কঠিন কপাট।
গুরুজ্জন্নরন সক্তক বাট॥
যো জনে এতহঁ বিঘিনি অব্গাই।
ঐছন সমুধ্রে মিল্ল ধনী রাই॥

ইথে যো পুরল ছহঁ মনকাম। তাকর চরণে হামারি পরণাম। গোবিন্দদাস তবহঁ হিয়ে জাগ। তুহুঁ যদি তেজহ নব অনুরাগ। ১২॥ ৩৩৬॥

বালা ধানশী।
সধী মুখে শুনইতে শুনয়ি ছথ।
কি কহব কাছ কছু না কহত মুক ॥
নয়নক নীর নয়নসঞে বারি।
চলইতে টলমল চলই না পারি॥
ধাঁধসে চলল স্থানর শ্রাম।
সব হংথ দ্বে গেল প্রল কাম॥ ১৩॥ ৩৩৭॥
শুপালী।

হিম-ঋতু নিশি দিশি দিশি বাত।
হিমকর-শীকর-নিকর নিপাত।
মদন-জলধি-তলে তহি দেহ কাঁপ।
মিলল ভাম-তহু ধরহরি কাঁপ॥
ফুলরি দূরে কর কপট শুয়ান।
নীল নিচোলে নিচল ভেল কান॥
ঝলমল মন্দির মণিমর বাতি।
ফুথমর শেজ বিদীঘল রাতি॥
তুহুঁ হেন নাগরী হরি হেন নাহ।
ধনি ধনি মনসিজ-রদ নিরবাহ॥
খনইতে ঐছন সহচরী বোল।
মধুরিম হানি গোরী তহু মোড়॥

হরি পরিপ্রণ মানসকাম।
গোবিন্দ দাস গাওরে গুণগাম॥ ১৪॥ ৩৩৮॥
ভবা বাগ

তথা রাগ।

হেরইতে ছহঁ জন হহঁ মুখ-ইন্দু।
উছলল ছহঁ মন মনোভাব-সিদ্ধ ॥
ছহঁ পরিরস্তনে ছহঁ তহু এক।
শ্রামর গোরী কিরণ রহ রেখ ॥
ছহঁ ছহঁ জীবন মিলল একঠাম।
আনন্দ-সাগরে হরল গেয়ান ॥
ছহঁ প্রেম পূরল ছহঁ মনসাধ।
হেইর ষ্ডুনন্দন ভেল উন্মাদ ॥ ১৫ ॥ ৩০৯ ॥

ইতি সংকীর্ত্তনামুদারেণ হিমতু সময়েচিত পর্যায়ো গীতঃ ॥ ইতি পঞ্চম-পল্লবঃ ॥

ত্বও বৰ্ষাকালোচিতাভিসারিকা-বাসকসজ্জাদি-পর্য্যায়ে। গীয়তে। জনালে প্রীগৌরচন্দঃ।

তুড়ী।

চিত-চোর গৌর মোর প্রেমে মত মগন ভোর অফিঞ্চন জন করই কোর প্রতিত অধম বন্ধ্রা। ভূবন তারণ নাম জীব লাগিরা তেজল ধাম

्रक्त वर्षा के देव**रह भवन रेक्नूबी** भीता.

অসীম মহিমা কে করু ওর যুবজী-জীবন করই চোর বিধি নিরমিল কি দিরা গৌর বড়ই রসের সিক্কুরা।। দেখিতে দেখিতে নাগর মুধ হরল সকল মনের ছথ বাস্ত্যোর কহে কিবা সেক্লপ

নির্থি চিত সানন্দিয়া॥ ১।। ৩৪ • ॥

অধ ঐক্ঞাভিদার:। কামোদ বা কানডা।

অধরে তথ্য ভক্ত নব মেহ।
বাহিরে তিমির না হেরি নিজ দেহ।
অন্তরে উরল স্থামর-ইন্দু।
উছ্লল মনহি মনোভব-সিকু॥
অব জানি সন্ধনি করহ বিচার।
শুভক্ষণ ভেল বাদল-অভিসার।
মৃগমদে তহু অনুলেপহ মোর।
তহি পহিরামহ নীল নিচোল।
কি ফল উচ্কুচ-কঞ্ক ভার।
দূর কর সৌভনী মোতিম-হার।
তৃহ স্বি দেবহ দেহলী লাগি।
ভক্তন ব্যহত দুনল কিয়ে জাগি॥
চলইতে দিলভ্তম জানি হোম।
বোৰিন্দাৰ্শ সকে চলু গোর। ২॥ ৩৪১॥

#### তথা রাগ

মেঘ-যামিনী অতি ঘন আহ্বিরার।

উছে সময়ে ধনী করু অভিসার॥

ঝলকত যামিনী দশদিশ আপি।

নীল বসনে ধনী সব তকু ঝাঁপি॥

ছই চারি সহচরী সঙ্গহি মেল।

নব অকুরাগ-ভবে চলি গেল॥

বরিথত ঝর ঝর খরতর মেহ।

পাওল সুবদনী সঙ্কেত-গেহ॥

না হেরিয়া নাহি নিকুঞ্জক মাঝ।

জ্ঞানদাস চলুঁ যাহাঁ নাগর-রাজ॥৩॥৩৪২॥

অথ বাসকসজ্জা।

### তথা রাগ।

গগ্নে গরজে ঘন নিশি আছিয়ারি।
কুঞ্জহি শেজ রচয়ে বর-নারী॥
মিশব নাগর-বর অভিলাবে।
অঙ্গহি রচয়ে বিভূষণ বাসে॥
ভাষ্ণ কর্পুর গদ্ধ অপার।
মৃগমদ চন্দন করু ফুল-হার।।
মনহি মনোরথ করি অস্থ্যান।
চিস্তরে কাছে না মিশল কান॥ ৪॥ ৩৪৩॥

# অথোৎক প্রিতা। তথা রাগ।

এ ঘোর ব্রহ্মনী মেখ-গরজনি

কেমনে আওব পিয়া।

শেজ বিছাইয়া ... রহিন্দু বিসরা

পথ পানে নির্থিয়া ॥

স্ট কি কর্ব কছ মোরে।

এতহঁ বিপদ তদিরা আইমু

নব অহুরাগ-ভরে ॥

এহেন রজনী কেমনে গোঞাব

वक्तत्र नत्रभन विदन।

বিফল হইল

মোর মনোর্থ

প্রাণ করে উচাটনে ॥

**प्रश्र पामिनी** चन-अनसनि

পরাণ মাঝারে হানে !

জ্ঞানদাস কছে ত্রুনর

भिन्दि रक्त गरम ॥ e ॥ ७८८ ॥

তথা রাগ।

ভূজগে ভরল পথ কুলিশ পথে শত

আর কভ বিধিনি বিধার।

কুলবতী-গৌরব বাদ চরণে ঠেলি

কুঞ্জে কয়সূ অভিসার।

সজনি কি ভেল পাপ পরাণ।

যামিনী আধ অধিক বহি যাওত
অবহুঁনা মিলল কান॥

যত্ত্যে মনোরথ সব ভেল অনরথ কামু-পিরীতি অভিলাবে। না জানিয়ে কোন কলাবতী বান্ধল ভাঙ-ভৃজ্ঞাধিনী-পাশে॥

দারুণ ফুল্শর কুঞ্চে বিথারল মন্দিরে গুরুজন গারি। গোবিন্দাস কহয়ে গুহুঁ সংশয় নির্দ্ল রসিক মুরারি॥ ৬॥ ৩৪৫॥

উৎকন্তিতান্তে বিপ্ৰলবা।

# <u>স্থহই।</u>

কান্ত্র লাগিয়া জাগি পোহাইন্থ এ ঘোর আন্ধার রাতি। এত দিনে সই নিশ্চয় জানিন্থ নিষ্ঠুর পুরুষ জাতি॥

মেঘ-ছুর-ছুর দাছরীর বোল

ঝিঁঝা ঝিনি ঝিনি বোলে ।

যোর আদ্ধিরারে বিজ্বী ছটা

হিয়ার পুতলা দোলে॥

যতনে সাঞ্চাহ ক্ষেত্র শেজ গল্পে মোহ মোহ করে। অক ছটফটি সহনে না যায় দারুণ বিরহ জ্বরে॥

মনের আগুলি মনে নিভাইতে
বেমন করয়ে প্রাণে।
কান্ত্র এমন নিঠ্র চরিত
এ দাস অনস্ত ভণে॥ ৭॥ ৩৪৬॥

ক্ষত্ৰ 'ক্ষতি সময়েহপি হরিরহহ ন ঘ্যো বনং" ইত্যাদি পদানি গেয়ানি॥ ৮ ॥৩৪৭॥

তর প্রীক্ষাতাগমনং হথা।
গরজন্নে গগনে স্থন ঘন ঘোর।
ক্রৈছে সমরে চলুঁ নলকিশোর ॥
পছ বিপথ কিছু লথই না পারি।
দামিনী চমকে চলরে অহুসারি ॥
পাওল সক্ষেত কুঞ্জক মাঝ।
জানল রাই আওল যুবরাজ ॥
কুঞ্জ মন্দিরে ধনী দেওল কপাট।
কাহু না জানল ঐছন নাট ॥
অন্তরে ভাবরে গ্রাম-শ্রীর।
আজু গ্রদিনে ধনী না ভেল বাহির ॥

আরম্থ বিফল ভেল মনসাধ।
আর্কুল নাগর কররে বিষাদ।
রোই রোই প্রশল হারে কপাট।
কো ইহ সুদল কুঞ্জ-কবাট॥
শুনি ধনী রাইক দরবে হৃদয়।
কহন্তহি কোন হার-মাহা রোর॥
তবহি জানল নব নাগর কান।
অব খন্খাম লহরে প্রমাণ॥৯॥ ৩৪৮॥

#### গান্ধার।

কো ইছ পুন করত হুকার।

হরিনাম জানি না কর পরচার॥

পরিহরি নো গিরি-কলর মাঝ।

মিলিরে কাছে আওল মৃগ-রাজ॥

সো নহুঁ ধনি মধুস্দন হাম।

চল কমলালয় মধুকরী ঠাম॥

শ্রাম মুরতি হাম তুহুঁ কি না জান।

তারা-পতি ভরে বুঝি অহুমান॥

ঘরছুঁ রতন দীপ উজিয়ার।

কৈছন পৈঠৰ ঘন আজিয়ার॥

রাধারমণ হাম কহি পরচার।

রাকা রজনী নহে ঘন আজিয়ার॥

গরিচর-পদ যবে গবে ভেলা আন।

তবহিঁ পরাভব মানল কান।

তৈথনে উপজল মনমথ শ্র। অব ঘনশামর মনোরথ প্র॥ ১০॥ ৩৪৯॥ বিহাগভা।

করে ধরি রাই মন্দির-মাহা আনল
হুহ জন ভেল এক ঠাম।
আগমন জনিত সকল ছুধ ক্ছতহিঁ
মধুর বচন অফুপাম।
হুহ জন মনোরথ ভোর।
হুহ ক অধ্য মধু হুহ জন পিবই

ছহঁ দোঁহে কোরে আগোর ॥ ধা ॥ কুস্থম-শেজ-মাহা বিলসই ছহঁ জন

পূরন সব অভিনাব।

নিধুবন-সমরে ছহ° পরবেশল কহ ঘনশ্যামর দাস॥ ১১॥ ৩৫•॥

> ইতি বৰ্ষাকালোচিত গীতং। ষষ্ঠ পল্লবঃ॥

অথানিরিকা-প্রকরণং সর্ককালোচিতং গীরতে ॥
অথাভিসারিকা বাসসজ্জাপ্যংকটিতা তথা ।
বিপ্রসার থিওতাচ কলহান্তরিতাপরা ॥
প্রোবিত-প্রেরসী প্রোক্তা তথা স্বাধীনভর্কা ।
ইত্যন্তী নারিকা-ভেলা রসভত্তে প্রকীর্ভিতাং ॥
অভিসারিকা-প্রকরণং বছবিধং তত্ত্ব গান-নির্কাহার্থে একদিনতা লীলা-পর্যারে জীয়তে ॥

তহচিত শ্রীগৌরচন্দ্র: ॥

ব্রব্দ অভিসারিণী- ভাবে ভাবিত

নবন্ধীপ-চাঁদ বিভোর।

অভিনয় তৈছন করত পুলকি-তনু

নয়নহি আনন্দ লোর॥

দেখ দেখ প্রেম-সিন্ধু অবতার।

তহি পুন নিমগন নাহি জানে রাতি দিন

বুঝি সো মহাভাব-সার॥ জ॥

নিশবদ মণ্ডন অঙ্গহি পহিরল

গতি অতি ললিত সুধীর।

বুন্দাবন পানে চকিত বিলোকনে

পাওল হুরধুনী তীর॥

কেবল ক্ষা-

নাম গুণ কীৰ্ত্তন

করতহি পরম আনন্দে।

রাধামোহন দাস আশ রাথত জানি

সো প্রভূচরণারবিদে॥ ১॥ ৩৫১।

আদৌ সঙ্কত।

ভুড়ী।

এক দিন বর নাগর শেখর

কদ্যতরুর তলে।

বুৰভামু-স্থতে স্থীগণ সাথে যাইতে যমুনা জলে।

রসের শেখর নাগর চত্র উপনীত সেই পথে।

শির পরশিয়া বচনের ছলে

সংহত করল তাতে॥

গোধন চালাঞা শিশুগণ লৈয়া
গমন করিল বজে।

নীর ভরি কুস্তে স্থীগণ সঙ্গে
রাই আইলা গৃহ মাঝে॥

কহে চণ্ডীদাসে বাহ্মলী আদেশে
গুনল রাজার ঝিয়ে।

তোমা অনুগত বদ্ধুর সংহত

মকল রাগ।

ना ছोड़ जाभन हिस्ता। २॥ ७६२॥

ঐছন সংকত ভাবিন্না রাই।
সব স্থীগণ বদন চাই॥
আবেশে কহত মনের কথা।
কবহুঁ হরিষি বিবাদে ব্যথা॥
সংকত করল নাগর রার।
কি করব স্থি কহু উপার॥
শুরু হুরুজন বঞ্চনা করি।
কেমনে বাইৰ রহিতে নারি॥
শুতহুঁ ভাবিনা চলিলা ধনী।
সবহু বিশ্বিনী কিছু না গণি॥

সধীগণ মেলি: সক্ষেত গোহে। আপ্ৰিল ভক্ষণী ক্লমণ কছে।। ৩। ৩৫০।।

ष्ट्रभानी i

চাদ-বদনী ধনী চলুঁ অভিসার।
নব নব রক্ষিণী রসের পাথার।
কর্পুর চন্দন অকে বিরাজ।
মালতী-মাল হিরে বনি সাজ।
চাদনী রজনী কিরণ বন-মাহ।
হাসিতে কুন্দ কুন্ম গলি বাহ।
মোতিম-হার করে কঙ্কণ সাজ।
ঐছন আওল নিকুজক মাঝ।
বৈঠলি ক্লরে আরতি বলবস্তা।
গ্রাম পাশে চলুঁ দাস অনস্তা। ৪॥ ৩৫৪॥

অথ বাসকসজ্জা। ততুচিত শ্রীমহাপ্রভু:॥

শ্বহ ।

অকণ নর্যনে ধারা বহে।
অবনত মাথে গোরা রহে।
ছারা দেখি চমকিত মনে।
ভূমে গড়ি যার ক্ষণে ক্ষণে।
ক্মল পল্লব বিছাইরা।
রহে প্ছঁ ধেয়ান ক্রিরা।

বিরলে বসিয়া একেখরে।
বাসকসজ্জার ভাষ করে॥
বাস্থদেব ঘোষ তা দেখিয়া।
বোলে কিছু চরণে ধরিয়া॥ ৫॥ ৩৫৫॥

कनानि

কুষ্মাবলিভিক্পস্ক ভরং।
মাল্যঞ্চামল-মণিসরকরং॥
প্রিরম্বি কেলি-পরিছেদ-পুরং।
উপকরর সম্বরমধিকুঞ্জং ॥ বা ॥
মণি-সম্পুটমুপনর তামূলং।
সারনাঞ্চলমপি পীত-ছকুলং॥
বিদ্ধি সমাগতমপ্রতিবন্ধং।
মাধ্যমান্ত সুনাতন-সুনং॥ ৬॥ ৩৫৬॥

সাজল কুত্ম- শেজ পুন সাজই
জারই জারল বাতি।
বাসিত কপুরে কুপুরে পুন বাসই
ভৈগেল মদন-ভর্মীতি এ

আজু রাই সাজল বাসক-শেজ।
মনোরথে লাথ মনমথ ধারই
অক্ষেত্রক নাহি তেজ ॥ এ ॥

খন খন অভিরণ অকে কডায়ই

কণে কণে তেজই হাই।

চকিত বিলোকনে চমকিত উঠই

হেরইতে নিজ তমু ছাই॥

কাতর বচনে

সম্ভাষ্ট সহচরী

কাহে বিলম্বত কান।

গোবিন্দাস কহই অব না ভনিয়ে

সক্ষেত মুরলী-নিসান॥ १॥ ৩৫৭॥

## গ্ৰু ৰ্কত্ববী ।

পশ্রতি দিশি দিশি বহুসি ভবস্তং। खन्धत-मधुत-मधुनि **পि**व्खः ॥ নাথ হরে সীদতি রাধা বাস-গৃহে ॥ গ্রু ॥ বদভিসরণ রভসেন বলস্তী। পততি পদানি কিয়ন্তি চলন্তী॥ বিহিত বিশদ বিস কিশলয় বলয়।। জীবতি পরমিহ তব রতি-ক**ল**য়। । মুছরবলোকিত-ম গুন-লীলা। মধুরিপুরহমিতি ভাবনশীলা ৰা ত্বিতমুপৈতি ন কথমভিসারং। হরিরিতি বদতি স্থীমন্ত্বারং॥ শিশ্বতি চুম্বতি জলধরকরং। হরিকপগত ইতি তিমিরমনলং ॥

ভবক্তি বিলম্বিনি বিগলিত-লক্ষা।
বিলপতি রোদিতি বাসকসক্ষা॥
জীক্ষমদেবকবেরিদমূদিতং।
রসিকজনং তহুতামতি মুদ্ধিতং॥৮॥৩৫৮॥

অথোৎকন্তিতা। তত্র শ্রীগোরচন্দ্রঃ॥ মন্ত্রার।

এ হেন স্কর বেশ কেন বনাইছ।
নিরপম গোরা-রূপ দেখিতে নারিছ।
অকাজে রজনী যায় কিবা মোর হৈল।
নিশ্চরে জানিছ মোরে বিধি বিড়ছিল।
স্বাসিত গদ্ধ আদি অগুরু চন্দন।
গৌর বিস্থ কার অলে করিব লেপন।
কর্প্র তাম্ব্ল গুরা দিব কার মুখে।
বাস্থযোধ কহে নিশি যায় বড় ছুখে॥ ৯॥৩৫৯॥

कारमाम ।

কান্ত্ৰক সন্দেশে বেশ বলি আরহ্ব সংক্ষত-কেন্দ্র-নিক্ষ। মাধবী পরিমণে তেন্ত্রি মন্ তন্ত্ জারই মধুকর-পুঞা অবহু না বিলাল নারণ কাম। নিশাল চিত পিন্নীতি-ক্ষাবোধ ইণে নাক্তি বাক্ত প্রাণ ৪ বং ॥

কাত্মক বচন- অমিয়া-রস সেচনে -

বেচত্ব তমু মন জাতি। নিজ-কুল-দূষণ

ভূষণ করি মানলু

তেঞি ভেল ঐছন শাতি॥

হিমকর-কিরণে

গমন অবরোধল

मन्मिद्र हल्ड म्हान्ह ।

গোবিৰূদাস কহ

যাই সতি জানহ

কারু কি তেজল লেহ।। ১০।। ৩৬০।।

#### তথা রাগ

কতত প্রেম-ধন হিয়া মাহা সাঁচি। ছরজন-নয়ন পহরী-কর বাঁচি॥ হাম রহ সঙ্কেত আনত রহ কান। একলি নিকুঞ্জে কুসুম-শর হান॥ এ স্থি হৃদয়ে জ্বত মঝু আগি। কঠিন পরাণ রহত কথি লাগি॥ যাকর লাগি মনহি মন গোই। গ্ৰন্থ না চল্ল সোই॥ কুলবতী চরিত পিরীতি লাগি থোই। হা হা হরি করি কাননে রোই। পন্ত নেতারি নয়ন রয় লাগি। টুটত রক্ষনী বাঢ়ত অমুরাগি॥ অবহুৰ। মিল্ল খামর-কাভি। গোবিন্দদাস কহ দীঘল রাজি ॥ ১১ ॥ ৩৬১ ॥

# া পাহিড়া।

বন্ধরে লইরা কোরে রজনী গোঙাব সই সাধে নির্মিত্ব আশা-ঘর। কোন কুমতিনী মোর এ ঘর ভাঙ্গিয়া নিল আমারে ফেলিয়া দিগতর।

বন্ধুর সক্ষেতে আমি এ বেশ বনারু গো সকল বিফল ভেল মোর। না জানি বন্ধুরে মোর কেবা লৈয়া গেল গো এ বাদ সাধিল জানি কোয়॥

গগন উপরে চান্দ- কিরণ উদর গো
কোকিল কোকিলা ডাকে মাতি।

এমন রজনি আমি কেমনে পোহাব গো
পরাণ না হয় তার সাধী॥

কর্প্র তাষ্ ল গুরা থপুর প্রিল সই প্রিম্ব বিনা কার মুখে দিব। এমন মালজী-মালা বুথাহি গাঁথিছ গো ক্ষেমনে রক্ষনী গোঙাব॥

এ পাপ পরাণ মোর কাবির না হয় গো এখনে আছরে কার আলো। বৈরক্ত ধর বলি বাটোডান গো কৃতি ধার নারোড্য দালে॥ ১২॥ ৩২২॥

# কেদার।

কিমু চন্দ্রবিলিরনরগভীরা।
অক্সন্দুর্থ রতি-বীরমধীরা।
অতিচিরমজনি রজনিরতিকালী।
সঙ্গং বিন্দতি নহি বনমালী॥
কিমিহজনে মত-পক-বিপাকে।
বিশ্বতিরস্ত বভূব বরাকে॥
কিমুত্ সনাতন-তন্ত্রলিছিং।
রণমারভত মুরারিরভীইং॥ ১০॥ ৩৬০॥

অগ বিপ্রালনা। তত্ত্ব শ্রীগৌরচন্দ্র।

কেদার।

আজু রজনী হাম

কৈছে বঞ্চবরে

মোহে বিমুখ নট-রাজ। নব অহরাগে ত

আশ না পুরল

ু বিফল ভেল সব কাজ। সজনি কাহে বনায়ল বেশ।

আধ পলকে কত

যুগ বহি যাওত

ভাবিতে পাঁজর ভেল শেষ॥ জ॥

গুরুজন-গৌরব

দ্রহি ডারলু

গৌর-প্রেমরস লাগি।

ত্লভি প্ৰেম 📲 🎥 সোহে বিছি বঞ্চল

मस् अति त्मञ्ज जानि ॥

প্রেম-রতন-ফল জগ ভরি বিথারল হাম তাহে ভেল নৈরাশ। নব অমুরাগ- ভরমে হাম ভূলল বাসুবোৰ না পুরল আশ॥ ১৪॥ ৩৬৪॥

### ধানশী ৷

পছ নেহারি বারি ঝরু লোচনে
অধর নীরস ঘন খাস।

করতলে বদন সঘনে অবলখই
গুলি গুলি জীবন নৈরাশ॥
মাধব কাহে আশোরাসলি রামা।
সগরিহ যামিনী জাগি পোহারল
কামিনী সঙ্কেত ঠামা॥ গুল।
হরি হরি বলি ধরণী ধরি উঠই
বোলত গদ গদ ভাখ।
নীল গগন হেরি তোহারি ভরম-ভরে
বিহি সঞ্জে মাগ্যে পাখ॥

কি করব চক্র চন্দ্র-ঘন-লেপন
কিশলর কুর্ম্ম শরান।
আান বেয়াধি আনু পায়ে ওথদ

বিহাগড়া।

लाविक्नाम नाहि यान ॥ >¢ ॥ ०५१ ॥

তেজ পৰি কাছ-আগমন-আশ ঃ যামিনী শেষ চেল প্ৰহ' বৈরাণ ॥ তাখুল চন্দন গদ্ধ উপহার।
দ্রহি ডারহ যামুন পার॥
কিশলর শেজ মণি-মোতিক মাল।
জল মাহা ডারহ সবহঁ জঞ্জাল॥
অব কি করব মথি কহ না উপার।
কামু বিমু জীউ কাহে নাহি বাহিরার॥
ধিক থিক রে বিধি তোহারি বিধান।
এহেন রঞ্জনী মোহে বঞ্চল কান॥
ভনইতে ঐছন রাইক ভাষ।
ক্রুত্ত চলি আওল বলুরাম দাস॥ ১৬॥ ৩৬৬॥

### ললিত।

শুন শুন মাধ্ব নিরদয়-দেই।
কি করহাঁ ঐছন তোহারি স্থালই।
কাঁহে কহলি তুহাঁ সক্ষেত্ত-বাত।
যামিনী বঞ্চলি আনহি সাথ।
কপট লেহ করি রাইক পাশ।
আন রমণী সঞ্জে করহ বিলাস।
কো কহে রসিক-শেধর বর-কান।
তুহাঁ সম মুকুথ জগতে নাহি আন।
মাণিক তেজি কাচে অভিলাই।
স্থা-সিক্ষু তেজি বাঁড়ে পিরাস।
কীর-সিক্ষু তেজি কুপে বিলাস।
ছিল্লে ছিল্লে তোহারি রভসমত্ব ভাই।

## জীপদকল কর্ম।

বিভাপতি কৰি চম্পতি ভাগ। রাই না হেরব তোহারি বয়ান ॥ ১৭॥ ৩৬৭॥

তথা রাগ ৷

উত্তর না পাই বাই সবী কুঞ্জহি রাই নিয়তে উপনীত।

তোহারি সম্বাদ কহিতে ভেল গদ গদ হৈরি চমকিত ভেল চিত ॥

হেন্দ্র কাছু মিলন তেল ধনা।

নিশি-পতি-কাঁভি মিলিন স্থাব হৈরিয়ে

টুটপ সব পরবন্ধ। জনা

এত ভনি রাই ্ু পাই মন-ছ্পচয়

চললহি অব নিজ গেহ।

রজনী উজার নাহ পছ পর

भिनन समित एन ।।

দূর সঞ্জে নাগর রাই বদন হেরি

চমকি হেরি ভেল ভীত।

গোবিন্দদাস ভণ ভহে নন্দ-নন্দন ইহ কিন্তে পিরীভিক্ষ রীত ॥ ১৮ ॥ ৩৬৮॥

অথ ৰঞ্জিতা।

তহুচিত শ্রীগৌরচক্স।

বিজাৰ বা তুড়ী

আজি জেলা কোনাটায়ের বিন্তুল স্থান। ছি ভার-পড়েছে সচন সম্বর্গ নম্বান॥ মুখটাদ স্থাঞাছে কিসের কারণে।
অঙ্গণ অধর কেন হৈয়াছে মলিনে ॥
অলসে অবশ অঙ্গ ধরণে না যায়।
ঢুলিয়া ঢুলিয়া পড়ে বাড়াইতে পায়॥
বাস্থোষ বলৈ পোৱা কোথা না আছিল।
কিবা রস আশে নিশি জাগি পোহাইল ॥১৯॥৬৬৯॥

#### গান্ধার ।

শুন মাধব কোন কলাবতী সোই। প্রেম-হেম গহি আপন রঙ্গ দেই এফেন সাজাওলি ভোয়॥ ঞ্ছ॥

ময়নক অঞ্জনে অধর ভেল রঞ্জিত নয়নহি তাখুল দাগ। সিন্দুর-বিন্দু তন্দন-ইন্দু ঝাঁপল

উর পর যাবক-রাগ ॥

বদন সোণার ভোরি রূপ লালদে তাহে দেওল নথ-রেহ। কোন গোঙারী ভোহে অব পরশব

কোন গোঙার। তেলহে এব গুরুন হৈরি তুরা ঝামর দেহ॥

ক্ষব রস-লালস কিরে দরশারসি নিলক শোহ মৈলান। গোবিন্দদাস কহ আপন পরশ দেহ হেম ধরব নিজ বাণ॥ ২০॥ ৩৭০॥

## বিভাষ ৷

ক্ষম জন । কিজ-ক্ষিতং ।
ক্ষিত্ত ভাষা কিল ।
ক্রম্ম জনং নিজ-ক্ষিতং ।
ক্রমজ্জনগরাধিকরা ।
ক্রমজ্জনগরাধিকরা ॥
পরিক্র ক্রপট-তরকং ।
বৈত্তি ন কা তব রকং ॥
আবৃণতি তব নরনং ।
যাহি বাটিতি ভক্ত শ্রমং ॥
ক্রম্পেণ রচরালং ।
প্রাত্ত নথ-পদ-জালং ॥
আমিহ বিহসতি বালা ।
মুখর-স্থীনাং মালা ॥
দেব স্নাতন বন্দে ।
ন কুর্ বিল্পম্লিন্রে ॥ ২১ ॥ ৩৭১ ॥

ন কুরু বিসম্বাদিনে ॥ ২১ ॥ ৩৭১ ॥

তৈরবী ।

থির নরনে ধনি তুরা পথ হেরইতে
কুরুম প্রাগ তহি লাগি।

মরনক আরক্ত বাঢ়ল অভিশর

তাহে পুন বামিনী কাগি॥

মানিনি মিছুই বাঢ়ারদি মান।
কুরুম মধ্-পুদ বৈরী ক্রুল কত

রোধে ক্রদি নোই ভান॥

তুয়া আবেগ পুন পুন করিরে নিবেদন

ইং সব মিছই মান।

লহত পরীক্ষণ করতঁহি তুয়া আবেগ

সাচ কি মিছই জান॥

তুয়া বিনে শ্রনে স্পনে নাহি হেরিয়ে

তুয়া অনুগত হাম কান।

রাধামোহন পুহ' তুয়া পায়ে নিবেদয়ে

ইংগ নাহি জানহ আন॥ ২২॥ ৩৭২॥

## স্থহই।

মাধব কাহে কান্দান্ত্রনি হামে।
চলিয়াহ সো ধনী ঠামে॥
কোহারি হৃদয়ে অধিদেবী।
তাকর চরণ যাহ সেবি॥
ঝো যাবক তুরা অঙ্গ।
ততহি করহ পুন রঙ্গ॥
সোই পুরব তুরা কাম।
কি ফল মুগধিনী ঠাম॥
এত কহ গদ গদ ভাষ।
ভণ রাধামোহন দাস॥ ২০॥ ০৭০॥

#### ্ধানশী ৷

স্থলীর কাহে কহসি কটুবাণী। তোহারি চরণ ধরি শপতি করিয়ে কহি তুই বিনে আন নাহি জানি॥ তুরা আশোরাদে জাগি নিশি ৰঞ্চ তাহে ভেল অরণ নরান।

মৃগমদ-বিলু অধরে কৈছে লাগল
তাহে ভেল মলিন বরান॥
হামারি মরম তুহঁ ভাল রীতে জানসি
তব কাহে কহ বিগরীত।

শ্রেছন বচনে দিগুল ধনী রোধ্যে
জ্ঞানদাস চিতে ভীত।। ২৪।। ৩৭৪।।

গানার।

আদরে বাদর করি কত বরিথসি বচন অমিয়া-রস-ধারা। ধাে রস-সাগরে ডুবি মরত জন্ম

পুণ-ফলে পায়ত্ব পারা।। মাধব বুঝলু ভোহে অবগাই।

নাগরী শাথ ভরশ তুরা অন্তর

কো পরবেশ বাতাই।। ধ্রু।। কি ফল ইন্ধিত নরন-তরন্ধিত-

সঙ্গতি মনোরথ ফান্দে।

ডুহু নাগর-শুরু মোহে পরায়লি

কপট প্ৰেম্মৰ বান্ধে।।

দ্র কর লালস

বৃদ্ধ-রম্বীগণ দেবা।
গোবিন্দ্দাস কততুঁ গুণ গাওব ভুৱা চরণে মঝু সেবা।। ২৫।। ৩৭৫।। ধানশী।

একত বচন কহ মানিনী রাই।
কাতরে কান্তু মানারই তাই ॥
বাহু পাকজি কত সাধই কান।
ঝটকত কর-কঙ্কণ ঝনঝান।।
সমুখে কহত কত কাতর বাণী।
বিমুখ ভেল তব কছু নাহি মানি॥
পড়ইতে চরণে চলই করি রোখ।
বাহু পসারি মানাওত দোখ॥
চরণে হোর ঠেলি চললহি গোরী।
রোই নাগর চলু লোরে বিভোরি।।
রোখে আওল ধনী আপন বাস।
নাগর চলি গেল হইনা নৈরাশ॥
ক্রে মুজ্নদান দাসক দাস।
গোরদাস তহিঁ করু আশোয়াস॥ ২৬॥ ৩৭৬॥

এতং সর্বকালোচিতগীতং। ইতি সপ্তম-পল্লবং।

অথ থতিতা।

ধীরামধ্যা-স্বভাবেন যথা। ধীরাতু বক্তি বক্তোক্তা সোৎপ্রাসং দাগদম্প্রিয়ং।।

यशा ।

স্বামিন্ কুক্তবিদং তবাপ্তন-নবালক্তন্তিব: সর্কত: ক্ষক্রোব্যে:ধৃক্তন্ত্রীল-লোহিত-জনো কচক্র-রেথা-ধৃতি:। একং কিন্তবলোকয়ায়্মন্তিতং হংহো পশ্নাংপতে দেহাদ্ধে দরিভাং বইন্ বছরতামন্ত্রাসি বয়াগতঃ ॥

তত্র শ্রীগৌরচক্র।

্ভৈরবী ।

পশ্ব শচীস্থতমন্থপমরূপং।
কলিতামৃত-রদ-নিরূপম-কূপং।।
কঞ্চাগঃ-কুত-মানস-তাপং।
লীলা-প্রকৃতিত-কুদ্রপ্রতাপং॥
প্রকৃতিত-পুরুষোক্তম-সুবিষাদং।
কমলা-কর-কমলাঞ্চিত-পাদং।।
রোহিত-বদন-তিরোহিত-ভাবং।
রাধামোহন-কৃত-চরণাশং॥ ১॥ ৩৭৭।

অথ থণ্ডি তারসোচিত ঐক্ত্রুত চরণারবিন্দ-বন্দনং।

## শ্ৰীরাগ।

ধ্বজ-বজাৰ্প-পঞ্চজ-ক্লিডং ।
বজ-বনিতা কুচ-কুৰ্ম-ললিডং ॥
বলো গিরি-বর-ধর-পদ-ক্মলং ।
কমলা-কর-ক্মলাঞ্চিত্মমলং ॥
মঞ্ল-মণি-নূপ্র-রমণীয়ং ॥
অচপল-কুল-রমণী-ক্মনীয়ং ॥
সভিলোহিজ-মতিরোহিজ-জাবং ॥
মধু-মধুণীক্ষণ্ড-গোবিক্ষদানং দুং ॥ ৩৭৮ ॥

## ললিত।

দেখ স্থি হেরি কিয়ে নাগর-রাজ।

বিপরীত বেশ বিভূষণ হেরিয়ে

কোন কয়ল ইহ কাজ।

ঢুলি ঢুলি চলত খলত পুন উঠত

আওত ইহ মরু কান্ত।

স্থল-পদজ-দল নয়ন-যুগল-বুর

যামিনী জাগি নিতান্ত।

মুথ বিধু-রাজ মলিন অব হেরিয়ে

অরুণ-কিরণ-ভয় লাগি।

অলক-নিকর-উড়ু ভাল-গগন পর নিশি-অবদান ভয় ভাগি॥

বান্ধুলী অধরে হেরি জমু নীলম

কাজর করি অনুমান।

অপরপ দরশন কাঁতি জমু দরপণ

সো অব রঙ্গিম ভান॥

উর পর নখ-পদ তমু তমু নিরমদ

অমুক্ণ অলসে বিভোর। যাবক-রাগ দাগ কিয়ে শোভন

খন খন ভূজ-বুগ শেড়।

খ্রামর অঙ্কে নীল অছর কিয়ে

जनाम जनम मिनि रशन ।

मृत्रहि मिग<sup>्</sup> वत्रन कन्न एकतिएव

क्रिक्त मन्मिर्ट (उन ॥

টল মল চরণ- যুগল মণি-মঞ্জীর ঝনর ঝনর ঘদ বাজে। কহ বলরাম- দাস ইহ বিপরীত

হেরত নাগর-রাজে॥ ০॥ ৩৭৯॥

#### ধানশী।

খ্যামর-তহু কিয়ে তিমির বিরাজ।
সিন্দুর-চিহ্ন কিয়ে অরকত সাজ॥
তরল তার কিয়ে চটুল হার।
নথ-পদ কিয়ে নব শশীক সঞ্চার॥
ঐছে দশা কর হেরইতে কান।
প্রোতর পহিল রজনী ভেল ভান॥ ৪॥ ৩৮০

## রামকেলি।

উমত ঝুমত চরত চরত

চরল চরত থোর।

মধুর মূরতি পুঞ্জ পুঞ্জ যুবতী

শোণ কুসুম জোর॥ স্থি শ্বাম নাগ<del>র</del> লেখ ।

রম্বনী কাগরে ক্রিক্তা অকণ লোচন

क्रमात्र नथत्र-त्त्रथ ॥ स्म ॥

কটি আভরণ 👙 নীয় ব্যব

আন তুরি ক্রাক বেশ। দ্রান্ত বহুল মাল ১ ন্ত্রান্ত নৌরতে ক্রাক কেশ্ন ॥ ১৯৪১

অধর অরুণ বরণ রমুবতী রস নেল। নয়ন-কমলে মধু পিবইতে ভ্রমর বরণ ভেল। কিঙ্কিণী-জাল অতি রসাল বিমরি বিমরি বাজে। নরহরি প্র तारे अन्न मात्य ॥ ৫॥ ०৮১॥ বিভাষ ৷ ডগ মগ অরুণ উজাগর লোচন উরে নথ পরতীত রেখা রতি রণে রমণী পর্ভিব মানই দে<del>ওল ব্ৰতি-</del>জয়-লেখা॥ মাধব অব কি কহব তুয়া আগে। না জানিয়ে রতি-রস ও সুথ সম্পদ কি ফল তুয়া অমুবাগে॥ জ।। রতি-রসে অবস অবশ দিঠি মন্থর निजविध निं मक रमवा। কোন কলাবতী করি কৃত আরতি शुक्रम मदनावश (नवा॥ বচন রচন ক্রবি ক্রিয়ে প্রবোধসি নিরবধি জন্তরে সেই। (गाविन्ममान कर श्रह्म नर शक्रमात्न त्रत्र साहि उहाहे ॥ ७ ॥ २०५२ ॥

₹8

# थानगी।

গগনহি এক চাঁদ নাহি দোসর थक याद्य नीवम हिन्। অরুণ উদয়ে পুন লাজে মলিন তত্ত্ বেকত না হোয়ত দিন॥ মাধব অপরূপ তোহারি বিলাস। ভুরা উর-অম্বরে চাঁদ ঘটাওল দিনহি হোত পরকাশ ॥ জ ॥ বিহিক শকতি জিতি কোন কলাবতী অৰুণ ঘটাওল তায়। তছু দেবন বিহু প্রাতরে তোহে পুন আনত গমন না যুয়ায়॥ জানত অতয়ে কর্মি হাম বহু পুণ তাহে ভূহ° আপনাহি আব । কছ বনভাম- দাস হাম কৈছনে ঐছন দরশন পাব ॥ ৭॥ ৩৮০॥ ললিত। ভাল হৈল মাধ্ব সিদ্ধি ভেল কাজ।

ভাগ হেল মাধৰ সিদ্ধ ভেল কাজ।

অব হাম ব্ৰল বিদগধ-রাজ্ ॥

নয়ন কি কাজয় অধয়হি লেভি ।

বান্ধি রহল অলি অভি মনোলোভা ॥

আভু ঝামর অভি স্থামর অজ ।

যত্তের গোপত রহু যামিনী-মুর্ল ॥

কণে কলে কয়ন মুদ্দি আধ-ভারা।

কহইতে বচন, বচন আধ হারা ॥

যাবক আধক উর পর লাগ।

অস্ক্রণ সোধনী করু অন্থরাগ ॥

স্থারক সিন্দুর-বিন্দু ললিত কপালে।

ধরল প্রবাল জন্ম তরুণ তমালে।
ভাবে পুলকিত তমু রহল সমাধি।
ভানাদ কহে উপজল আধি॥৮॥ ৩৮৪॥

#### ধানশী ।

শুন শুন স্থানর কর অবধান।
বিনি অপরাধে কহদি কেনে আন।।
পূজন পশু-পতি যামিনী জাগি।
গমন-বিলম্ব ভেল তথি লাগি।।
লাগল কুরুম মুগমদ-দাগ।
উচ্চারিতে মন্ত্র অধরে নাহি রাগ।।
রক্তনী উজাগরি লোচন ভোর।
তথি লাগি তুহাঁ মুঝে বোলসি চোর।।
নব কবিশেধর কি কহব তোর।
শপথি করহ তবে পরতীত হোর।। ৯।। ৩৮৫।।

#### धानमी ।

এ ধনি মানিনি করহ সঞ্জাত। তুরা কুচ হেম-বট হার ভুজঙ্গিনী তাক উপরে ধরি হাত।। ঞ্চ।। তোহে ছাড়ি হাম যদি পরশব কোর।
তুরা হার-নাগিনী কাটব মোর।।
হামার বচনে যদি নহে পরকীত।
বুঝিরা করহ শাতি যে হয় উচিত।।
তুজ-পাশে বান্ধি জ্ববন পর তাড়ি।
পরোধর পাথর হিয়ে দেহ ভারি॥
উক্ত-কারাগারে বান্ধি রাথ দিন রাতি।
বিস্থাপতি কহ উচিত ইহ শাতি।। ১০।। ০৮৬

ভৈরবী ।

য়াং সেবিভ্বায়িশি জাগরী।

ত্বামভজৎ বা নিশি নাগরী।।

কপটমিদং তব বিস্তৃতি হরে।

নাবসরং পুনরালিনিকরে।।

মা কুক শপথং গোকুল-পতে।

বৈত্তি চিরং কা চরিতং নতে।। জা।

মুক্ত-সনাতন-সৌহদ-তরে।

ন পুনরহং ত্বিয় রসমাহরে।। ১১॥ ৩৮১।।

বিভাষ

তুহঁনা পরশ বনি মোর।
পিরীতি কৈছে ফের ছোর ।
ইংগ লাগি শরণ তোহারি।
মানহ পরশ হামারি।

यनि जानि यु तनाथ। সোহে হেরি সম্বর রোখ।। এ ভুষা চরণ ধরি হাম। कहि शन-यूग थक श्रीम ॥ তাহে না টুটল মান। মানিনী উপেথি চলু কান।। কুঞ্জ-অঙ্গনে কুঞ্জ-রাজ। কাঁপি পড়ল ক্ষিতি মাঝ। ফেরি নেহারত রাই। মরি মরি করত কানাই।। ভুক্তা কাটল তত্ত্ব ওর। কপটহি মুক্তল ভোর।। বঙ্গর পড়ল শুনি বোলে। রাই ধরি বন্ধ করু কোলে।। উঠল নাগর-বর শুর। মান-গরব ভেল চুর।। মন্ত্র-শিরোমণি ব্রজটান। সো ইছ পড়ৰ পুন ফাঁদ॥ ধনী মুখ মোছল বাসে। **इस्न क्य्रल वह आद्य** ॥ নির্দৃণ হেরি বিহান। नव दन कक नमांबान॥ কো সমুঝাৰ হহ লেহ। ্তুহ তত্ব বাদ্ধে থেই। কবি-শেখর রস গাঁয়। হুহুঁ জন শ্রেম সহার॥ ১২ ॥ ৩৮৮॥

ইত্যাদি মিলনং। ইতি দ্বিতীয়-শাখায়াং অপ্তম-পল্লবঃ॥ পুনশ্চ থঙিতা ধীরামধ্যা যথা।

তত্র শ্রীগৌরচন্দ্র।

### বিভাব।

কি লাগিয়া আমার গৌরাঙ্গ রার।
আবেশে শ্রীবাস মন্দিরে যায়॥
কিবা ভাবে গোরা জাগিল নিশি।
কি লাগি মনিন বদন-শনী॥
অলসে আউলাইরা পড়িছে গা।
চলিতে না চলে কমল পা॥
গৌর বরণ ঝামর ভেল।
নিশি-শেষে কেবা এত ছব দেল॥
কহরে রসিক ভকতগণ।
রাধার ভাবে বিভাবিত মন্॥
পরসাদে কহে আমার গৌরা।
কাহারে কি কহে প্রলাপ পারা॥১॥ ৩৮৯

#### লালিত।

আরে মেরি আরে মেরি সোণার বন্ধুর। অধ্যে কাজর দিল কপালে সিন্দুর॥

## এতীপদকরতর ।

বদন-কমলে কিবা তাম্বল শোভিত।
পারের নথের ঘারে হিরার বিদিত॥
না আইস না আইস বন্ধু আন্ধিনার কাছে।
তোমারে দেখিলে মোর ধরম যাবে পাছে॥
শুনিরা পরের মুখে নহে পরতীত।
এবে সে দেখিল তোমার এই সব রীত॥
সাধিলা মনের সাধ কি আর বিচার।
দ্বের বহ দ্বে বহ প্রণতি আমার॥
চণ্ডীদাস বলে ইহা বলিলা কেমনে।
চার ধরিলেও এত না কহে বচনে॥২॥৩৯০॥

## রামকেলি।

শুন শুন স্থনর আমার যে রীত।
কহিলে প্রতীত নহে জগতে বিদিত॥
তুমি না মানিবে তাহা আমি তাল জানি।
এতেক না কহ ধনি অসঙ্গত বাণী॥
সঙ্গতি হইলে তাল শুনি পাই সুধ।
অসঙ্গতি হইলে পাইব বড় হুধ॥
মিছা কথার যত পাপ জানহ আপনি।
জানিরা না মানে যেই সেই ত পাপিনী॥
পরে পরিবাদ দিলে ধরমে সবে কেনে।
তাহার এমন বাদ হইবে তথনে॥
চন্তীদান বলে যেবা মিছা কথা কবে।
সেই সে ঠেকিবে পাপে তোমার কি যাবে॥আ০৯১॥

## বিভাব।

হৈদে হে নিৰাক বন্ধু লাক নাহি বাদ।
বিহানে পরের বাড়ী কোন লাকে আদ॥
বুক মাঝে দেখি তোমার করণের দাগ।
কোন কলাবতী আজি পাইরাছিল লাগ॥
নথ-পদ বিরাজিত ক্ষিতের পূরিত।
আহা মরি কিবা শোভা করিলে ভূষিত॥
কণালে নিন্দুর-রেখা অধরে কাজল।
সে ধনী বিহনে তোমার আঁখি ছল ছল॥
বিজ চঙীদানে কহে ভন বিনোদিন।
না ছুইহ ভূমি, ইহার সব রক্ক জানি॥৪॥৩৯২॥

### ধানশী

না কর না কর বনি এক অপমান।
তঙ্গণী হইয়া কেন একে দেশ আন ॥
বংশী পরশি আমি শপথ করিরে।
তোমা বিনে দিবা নিশি কিছু না জানিরে॥
কাশু-কিনু দেখিরা নিশুর-কিনু কহ।
কন্টকে কল্প-নাগঃমিছাই ভাবহ॥
এক কহি বিনোদ নাগর চনিতে চার ঘর।
চঞ্জীদাস করে রাই কাঁপে ধর ধর॥ ৫॥ ৩৯৩॥

#### सुरहे ।

ছল করি বাণী কতরে পরলাপসি তোহারি বচন প্রমাণ। চারি প্রহর রাতি জাগিয়া পোহায়ত্ব আওলি রাতি-বিহান ॥ माधव व्याक्ति वफ तम्यनि इथ। আগে ইহ আরতি না বুঝিয়া অব তোহে হেরি পাওল বড় সুথ। ভালহি সিন্দুর কাজরে পুরল वननिक् नभ नथ-दाथ। হেরইতে তোহে লাজ মোহে হোয়ত যাবক-রাগ পরতেক॥ কমলিনী পাই সব রস ভললি ना व्यनि मान्छी-शक्त। . কহই গোপাল- দাস নাহি সমুঝিলি

তথা রাগ।

কি ফুলে কিয়ে মকরন ॥ ৬॥ ৩৯৪॥

অন্তরে রাইক গোপন মান।
ইঞ্জিতে বচনহি সমুঝল কান॥
কত ছল বচনহি সাধল তার।
তা কর প্রবণহি কছু নাহি ভার॥
কণে কণে বাঢ়ল কোপ তরজ।
কহুইতে বহুনহি কচন্ত্রিকজন।

বুবল নাগর সো পরকার।
বিনতি বচন নাহি শুনব আরে॥
চরগ বুগল ধরি ভালিকে মান।
ঐছন মনহি বিচারল কান॥
তব ধনী মানিনী পরিহরি গেল।
কহ মোহন অব বিপরীত ভেল॥ ৭॥ ৩৯৫
তথা রাগ।
মন মাহা কোপ বেকত নাহি ভেল।

থাকি বাংলা কোনা বৈক্ত নাহি তেল।
থাকি খানিনী ঘর মাহা গেল।
খানি খানিনী ঘর মাহা গেল।
ঘল্ পড়ল অব না প্রল আশ ।
মনহি বিচাররে রসময় কান।
কৈছনে আজুক টুটব মান।
নিরজনে বৈঠিয়া রহল মুরারি।
তেজল গোঠক গমন বিহারী।
হ্বল স্বা স্থে যুক্তি দঢ়াই।
বোই মনোরথ পূরব তাই।
কি কহব মোহন ও প্রসঙ্গ।
কত কত চাত্রী রভস-তরক।

কত কত চাতুরী রভস-তরঙ্গ । ৮ ॥ ৩৯৬ ॥ ভত্তান্তরে মিলনং ।

> কামোদ। গাই শিলাধানি ভনইতে

গোরথ জাগাই শিকাধ্ব জটিলা ভিথ আনি দেশ।

মৌনী বোগেখর মাধ হিলারত বুঝৰ ভিগ নাছি নেল ॥

জাটিশা কহত তব কাহা তুহ<sup>®</sup> মাগত যোগী কহত বুঝাই। তেরে বধু হাত ভিথ হাম লেয়ব তুরিতহি দেহ পাঠাই॥ পতি-বরতা বিমু ভিথ দেউ হব যোগী-বরত হোয়ে নাশ। তাকর বচন শুনিতে তমু পুল্কিত ধাই কহে বধু পাশ। দারে যোগীবর পরম মনোহর জ্ঞানী বুঝল অনুমানে। বছত যতন করি রতন থালী ভরি ভিথ দেহ তছু ঠামে॥ শুনি ধনী রাই আই করি উঠল যোগী নিয়ডে হাম যাব। জটিলা কহত যোগী নহ আন মত দরশনে হোরব লাভ। পূর্ণ থালী পর গোধ্ম-চূর্ণ কনক কটোরি ভরি ঘিউ। কর যোড়ে রাই লেহ করি ফুকরই ভাহে হেরি থর হরি জিউ॥ যোগী কহত হাম ভিথ নাহি লেয়ব তৃয়া মুখ বচন এক চাই। নন্দন পর যো অভিযান সো

মাফ কর্ম বর বাই॥

अनि धनी बाद कीरत पुथ व अभव

ভেথধারী নটরাজ।

(गाविनमान क्र न्द्रवत-त्राथत

সাধি চৰ্ত মনকাৰ ॥ ১ ॥ ৩৯ ।॥

## ধানশী।

জটিলা শাশ ফুকরি তহি বোলভ

বছরি বেরি কাছে ধাডি। বলিভা কহন্ত

অমঙ্গল শুনল সতী পতি-ভয় অতি গাঢ়ি 🕆

শুনি কহে জটিলা ঘটিল কি অকুশল

দর সঞে বাহির হোয়।

বছরীক পাণি পাণি ধরি হেরই

কিয়ে অকুশল কহ মোয়॥

যোগেশ্বর ফেরি বছরীক পাণি ধরি

कुनन कत्रव वमाम्य ।

ইহ এক অভ বছ বিশক্কউ

ধনহ পশু-পতি সেব॥

পুঞ্জক মন্ত্ৰ সো ইছ বছ নাহি জান।

জটিলা কৰে আন দেব কাছে পাওব

पूर्व रीक कर रेश माम ॥

এত কৃতি: ছছাক : ১ খনিরে পরবেশল হহঁ জন ভেল এক ঠাম। পূঢ়াওল ছহ° জনে মনমথ তন্ত্ৰ পুরল হহ° মনকাম। পून इन्हें कन मिला मुख्य निक्नन ন্ত্ৰ জুটুিবা সনে কহি ভাপি। ষৰ ইছ গৌরী <sub>জন স</sub>বিধবা জনে ঘরে রাথি ॥ এত কহি স্বহুঁ চলুল নিজ মন্দিরে বোগী চরণে পরণাম বিষ্ণাপতি কহ ्रताधि हल्ला मनकाम ॥ २० ॥ १२५ ॥ সবল আপন ভবনে চলি গেল। 'সুবদনী চিতে চমক ভেল ॥ নাসাপর্শি রহল ধনা। ঈষত হাসয়ে ব্যান-চক্ত ॥ স্থি হে অপরূপ বর কান। কাঁই। গেও মঝু সে হেন মান॥ (श कि के केश्न त्रिक त्रीक । কটিতে সৰহ বাসিয়ে লাজ। বিখাপতি কহে এছন কান ৷ দাস গোবিশ এ রস ভাগ ॥ ১১ ॥ ৩৯৯ ॥ চুচুক্ত ন্দ্র

## প্রদেশ শক্তিতা। প্রকারাভরং এখা। जिल्ला वहत्त्व ।

সহজে গৌর

किंद्रांकी यूर्गन चाँथि।

मामिनी महिएछ

वक्न कित्र पिथि॥

উঠিল ভাবের

স্থরি না পারি চিতে।

কহে কি লাগিয়া কিলা সাজাইয়া

**रक**न रेकन रहन त्रीरा ॥

এ রাধার্মেহন করে ব্রভামু-

স্থতা-রদে ভেল ভোর।

হেন ছলে বলে উদ্ধারে সকলে

किছू ना इहेन सात्र । ३ ॥ ३ . ।

তথা রাগ।

মধু-ৰতু যামিনী উলাগরি নাগরী नागत्र मिननक आद्भ ।

াে সব আনুজু আনুষ্ত হোরণ

ভৈগেল ভর্মি নৈরাশে।

ৰ্পৰূপ প্ৰেমক বীড়।

निव मन्दिद धनी शमन कतन भून

तां ब्राइ डेमबीड के म

হেরল সাহ- বর্ণন মই ক্রেদনী নাগার চমচ্চিত ডেল। ধনী ক্ষাই ভূল বর- নাগার-শেথর আছু রঞ্জনী কাহা গোল।

স্থন্দর সিন্দ্র- বিন্দু ভালোপর কিয়ে ভেল অগরূপ শোভা। অধর স্থান রক অব হেরিয়ে ভটু পর মুগ্রদ আঞা॥

উরে বাবক হেরি ছ:খিত হৃদর মরি
কোন রমণী অছু কেল।
রাধার্মেহন দাস কিয়ে বোলব
পিরীতি-হৃদ্ধ অব ভেল॥ ২॥ ৪•১॥

#### কেলাৰ ৷

ভাল হৈল আরে বন্ধু আইলা সকালে।
প্রভাতে দেখিল মুখ, দিব বাবৈ ভালে॥
বন্ধু ভোমার বলিহারি বাই।
ফিরিরা দাঁড়াও ভোমার চাঁদ মুখ চাই॥
আই আই পড়েছে রূপ কাজরের লোভা।
ভালে সে সিন্দুর ভোমার মুনির মনোলুলাভা॥
খর-নখ-দংশনে অল জর জর।
ভালে সে ক্রণ-দাগ হিরার উপর॥
নীল প্রেটর শাটা কোঁচার কলনী।
রমনী মুমল হৈলা ক্রিকার কলনী।

প্রথম রারক-রক উরেভাল সাজে।

এখন কহ মনের কথা আইলা কিবা কাজে।

চারি প্রানে চাহে নাগর স্মান্তলে মুখ মোছে।

চণ্ডীদানের লাক্ষ ধুইলে না দুচে॥ ৩॥ ৪০২॥

রামকেলি।

কলধোত-কান্তি-কলেবর গোরী।
কান্তক কৃত ছব না জানসি ধোরি॥
কৈতব বচন না কৃত্তে কুয়া কান।
কোপে করসি তুহু কত মত ভান॥
কুন্থমিত-কাননে জাগল তুরা লাগি।
কেবল করল উচিত হিরে লাগি॥
কুন্থমক হার করল কত রাধে।
কঠে করসি যদি প্ররে সাধে॥
কপট না করইতে কোপিনী ধোরি।
কাতর জান্তর না করহ নোরি॥
কামিনী-কুক্রম কতরে হামারি॥
কহ রাধানোহন পহঁক বলিহারি॥ ৪॥ ৪০৩

ুবিভাষ।

আহুণ চিকুর
তালহি সিন্দুর দহন।
চন্দন-চক্র মাহা
তাহে বেক্ত তিন নরনা ॥
মাধব অব তহু পদর দেবা।
আগর-পুণ্য-কবে
ভিনি বহু কেরা ॥ বাতির ভেটমু

চন্দন-রেগ্- ধ্সর ভেল সব তত্ত্ দোই ভসম-সম ভেল।
ভোহারি বিলোকনে মঝু মনে মনসিজ
মনোরথ সঞ্জে জরি গেল।

उदर दमन धत्र कारह निश्चत

শ্ৰুর নির্ম উপেথি। গোবিলদাস কৃহই পুর অধ্র গুলইতে দেখি না দেখি॥ ৫॥ ৪০৪॥

কামোদ বা সুহই।

সহস্কই গোরী রোখে তিন লোচন কেশরী জিনিয়া মাঝ কীণ।

হৃদয় পাৰাণ বচনে অন্ত্ৰানিয়ে শৈশ-স্তা করি চিন॥ স্থানীয়ী অব ডুড্ট চঙী বিভঙ্গ।

যব মহাশঙ্কর তুরা নিজ কিঙ্কর দেরবি মোহে আধ অঙ্গ ॥ গ্রু॥

কালীয় কুটিল ভাঙ্গ ভূজকম সময়ত তাকৰ দ্বা

সম্বক্ষ তাক্র দ্ভা। প্রপতি দোধে রোধে নাহি সম্বিরে হাম নহ ভস্ক<sup>ত</sup>নিভ্জ।

परन मस्न<del>ाज्य</del> : पूरु किया वि

विक्र होन रम् नाटन ।

ছুৱা পরসাদেশ কৰা কৰা বাদ সৰ প্ৰৱে

लाकिमनाम शत्रमार्गन अत्र १००॥

কুপালী।

রক্তনী গোঙারদি রতি-মুখ সাধে।

বিহানে তেজলি তাহে কোন অপরাবে ৪

সোই চঙী তুর্ছ শহর দেব।

তত্ম আধ দেই তাহে বাই সেব॥

কি কহব বে সব করলি তুর্ছ কাজ।
লাজ পারবি অব রঙ্গিনী সমাজ॥
ভাগল সহচরী না বোলই কোই।
পালটা চল মুখে আচল গোই।।
বসন হেরি অঙ্গ ভাজল হল।
পুন কি কহব তোহে কৈত্ব ছল।।
গোবিন্দদাস চললি আগুসারি।
আগুল মন্দিরে কোই লগই না পারি।।৭।।৪০৬।।
ইতি উত্তর-প্রত্যুক্তরপ্রক্রগং।

मन्य-शहरः ॥

**অব অধী**রা মধ্যাসভাবেন। **পশুতা।** 

তত্ত্ব শ্রীগোরচন্দ্র

জুহই।

আবে মোর আবে মোর সৌরাল পার।
পূরব প্রেম করে মুছ চলি বার।
অকল লবন মুখ বিরুদ হইরা বিশি
কোনো কহরে সহি গল সদ হিরা।।

জানম তোহারে তোর কপট পিরীতি।

যা সঞ্চে বঞ্চিলা নিশি তাহা কর নতি।

এত কছি গৌরাঙ্গের গর গর মন।
ভাবের তরঙ্গে যেন নিশি-জাগরণ।।
কহে ন্রহরি রাধা-ভাবে হৈল হেন।
পাই আশোরাস বঞ্চিত হৈল যেন।। ১।। ৪০৭।।

#### তথা রাগ

যামিনী জাগি অলস দিঠি-পদ্ধজ কামিনী-**অ**ধরক রাগ। বাদুলী অরুণ অধরে ভেল কাজর ভালোপরি অলতক দাগ।। মাধব দুর কর কপট স্থলেই। হাভকি কল্প কিয়ে দরপণে হেরি চল ভুহুঁ তাকর গেহ।।ঞা। সো স্থর-সমরে সুধীর কলাবতী রতি-রণে বিমুধ না ভেল। নথর-ফুপাণে হানি উর অন্তর 🔩 ্রেশ-রতন হরি নেল।। (श्रम-धन-विश्रीन श्रक्राव जन दर्का धनी ভালি করব বিশোরাস। গুণ বিস্থার সাধী এক ভূরা হিরে त्मान्य दर्शाविक्मान ॥ २ ॥ १०४।

#### ললিড

কোন লক্ষেত্ৰ কৰা হৈ বসি ভাঁতি আঁই পদারি ৷ থল-জন-বচনহি স্'াচ্ছ' বচন হামারি **॥**... মানিনি যব কোপ করবি অন্তরায়। ভাল মন্দ বিচারল গুণ অবপ্তণ তৰহি বুঝলু ভাল যায়॥ ঐছন ভাতি পুন নয়ন-কোণে নিজ হেবসি হামারি বয়ান। হামারি হৃদয়ে স্থারীয়ে

নখ-পদ অছু অমুমান।

ইথে যদি দোষ- লেশ তুহু পায়বি ত্ৰহি ক্ৰহি অশ্মান। রাধানেক্স পত্তিক কহ নহ আদি মত যদি হকু একই পদাণ । ৩॥ ৪০৯॥

## কুহই ু

A STATE OF THE STA

চতকে মাধ্ব কর্ছ প্রান। खाशिया नक्क मिनि जोईक विहान ॥ हाय बस्तानी सकि अरक्षिती मान চাতুরী নাংক্রক হরত প্রথমবিদ্ধা कि कि ने शिक्ष के दे स्मार कि कि क्यात विकासकि देव प्रक्रिकारण ॥ যাহ চলি চঞ্চল না কর জ্ঞাল।
দগধ পরাণ দগধ কত আর॥
বিমুখ ভেল ধনী না কহই আর।
দাস অনস্ত অব কি কহিতে পার॥৪॥৪১০॥

## ধানশী।

মানিনি কর যোড়ে কহি পুন তোর। বিনি অপরাধে বাদ দেই ভামিনি কাহে উপেথসি মোয় ॥ জ ॥ ভুৱা লাগি দব নিশি জাগিয়া পোহাইমু একলি নিকুঞ্জক মাহ। তোহারি বিয়োগে হাম বন মাহা লুঠলু তুহু রতি-চিহ্ন কহ তাহ॥ গোকুল-মণ্ডলে কভন্নে কলাবতী হাম নাহি পালটি নেহারি। নিশি দিশি তুয়া গুণ ভাবিয়ে এক মন কি কহব কহই না পারি॥ কোপে কমল-মুখি কছু নাহি ওনিস जुत्रां निक किइत शंग। বংশীবদন অব কতম্বে সমুঝারব কোপিনী কামিনী ঠাম। ৫॥ ৪১১॥ পঠমঞ্জরী া

্র শৈল্প কর মাধৰ কপট সোহাগ। শ্রাম সমুখাল সব ভুরা অমুরাগ। ভাল ভেল অলপে মুটল প্ৰ হন্দ্ ।
ভাল নহে কবছ আন-প্রিবন্ধ ।
ভূই গুণ-সাগর সো গুণ জান ।
ভূবিত চলহ উছো না কর বেরাজ ।
ভ্রমর কি তেজই নলিনী-সমাজ ॥
কৈত্বিনী হামরা কৈত্ব নাহি ভার ।
তোহারি বিলম্ব অব নাহিক যুমায় ॥
বিম্প ভেল ধনী গদ গদ ভাষ ।
বিনতি না শুনরে ব্লরামদাস ॥ ৬ ॥ ৪১২ ॥

তথা রাগ

অন্তরে জানিয়া নিক অপরাধ।
কর যোড়ে মাধব মাগে পরসাল।
নরনে গলরে লোর গদ গদ বাণী।
রাইক চরণে পসারল ছহ পাণি॥
চরণ বুগল ধরি করু পরিহার।
রোই রোই বচন কহই নাহি পার।
মানিনী না হেরই নাহু বয়ান।
পদ-তবে লুঠরে নাগর কান।
চরণ ঠেলি জনি যাওত রাই।
বলরাম দাস কাহুমুখ চাই॥ ৭॥ ৪১০॥
ভির্বী

রজনী-জনিত-ভার্ম-জাসির-সাগ্য-ক্বারিত্রন্দ্র-নিমেবং। বহুতি নরনমন্ত্রীক্ষিক ক্টুম্নিজ-রুসাভিনিবেশং॥ হরি হরি বাহি বাধব বাহি কেশব মা বদ কৈতব-বাদং। তামসুসর সরসীক্ত-লোচন যা তব হরতি বিযাদং ॥ कञ्चल-मिलन-विद्याहित हुचन-वित्रहित नीलिम क्राप्तः। দশন-বসনমঙ্গণন্তব কৃষ্ণ তনোতি তনোরমুরপং॥ বপুরমূহরতি তব শ্বর-সঙ্গর-থর-নথর-ক্ষত-রেথং। মরক ত-শকল-কলিত-কলধৌত-লিপেরিব রতি-জয়-লেখং ॥ চরণ-কমল-গলদশক্তক-সিক্তমিদন্তব হৃদরমুদারং। দর্শয়তীব বহিম্দন-ক্রম-নব-কিশলম্ব-পরিবারং॥ দশন-পদং ভবদধরগতং মম জনরতি চেতসি থেদং। কথমুক্তি কথ মধুনাপিমরা সহ তব বপোরেতদভেদং॥ বহিরিব মলিনতরং তব কৃষ্ণ মনোহপি ভবিষ্যতি নৃনং। कथमथ वश्चरम क्रमञ्ज्ञाजमम-भत्ञत्रम्मः॥ ভ্ৰমতি ভবানবলা কবলায়-বনেষু কিমত্তবিচিত্রং। প্রথম্বতি পুতনিকৈব বধু-বধ-নির্দিয়-বালচরিত্রং ॥ শ্রীজয়দেব-ভণিত-রতি-বঞ্চিত-থণ্ডিত-যুবতি-বিলাপং। শৃণুত সংগামধুরং বিব্ধা বিব্ধালয়তোহপি ছ্রাপং ॥৮॥৪১৪॥

#### ধানশী ৷

ধিক বছ মাধব তোহারি বোহাগ।

ধিক বছ যো ধনী ভোহে অমুরাগ।

চলহ কপট পঠ না কর বেয়াজ।

কৈতব বচনে অবহু কিরে কাজ।

আহলই আনলে দগধ অস।

কাহে দেহ আহতি কচন-বিভঙ্গ।

সোধনী কামিনী ঋণবজী নারী ।
হাম নিরপ্তণ রজিরজনে কোঙারি ।
নোই পূর্ব ভূয়া হিয়া ঋভিলাব ।
বঞ্চল ইং নিশি বোধনী পাল ।
পূন পূন কাহে ধরদি মকু পার ।
ভূত বহু-বলভ তোহে না ব্রায় ।
নিপুর কাজর ভালহি ভোর।
ছল করি চরণে লাগারদি মোর ।
কহুতে রোধে অবশ ভেল অক ।
কহু বলরামু ইং প্রেম-ভরক । ১ । ৩১৫ ॥

স্থাকি। গান্ধার

স্থলরি অব তৃহ তেজনি কান স্থমর কেনি- নিকুঞে যব বৈ

তৰ কাঁহা রাথবি মান।।

ইহ নাগর-বর রসিক-কলা-শুরু চরণ পাক্জি গজি যায়।

লঘুতর বেঃগছি এটাডাল চল কোপ বাঢ়াছনি

৪**চহণতি ঠেনুলি ভার** গা

প্রেম-লছিমি হিয় ১৮ ্র েছোড়ল বুঝি অব

। **सात भनाभि शतात्रम्** । ५ ०००

খণ বিছুরার ১৮৪ চন ্রলেসি সমধ্যাসই মারতি ছোড়শ দেল । ১ ১৮৪ ইহ অলখী যৰ তোহে ছোড়ি যাওব তব শুণ-গণ সোঙরাব।

রোই পুন হামারি বাহ ধরি দাধবি

তব কোই নিয়ড়ে না যাব॥

সহচরী এতহঁ বচন নাহি শুন্মে

কোপ ভর্ল স্ব অঙ্গ ।

কহ বলরাম চমক মোহে লাগল

দধীক বচন ভেল ভঙ্গ ॥ ১০ ॥ ৪১৬ ॥

কৌ রাগিণী ।

কাত্মক মিনতি না মান। মন্দিরে করত পয়ান।

কতত্ত করত অনুরোধ।

কিছ না মানয়ে পরবোধ ॥

সহচরী কতহঁ ৰঝাই।

তাহে বিমুখ ভেল রাই॥

রোখে চলয়ে নিজ বাস।

কি কছব মোহন দাস ॥ ১১ ॥ ৪১৭ ॥

ক্ষরান্তরে চর্জ্য-মানঃ।

তক্ত মিলনং।

তিরোতা ধানশী।

কত রূপে মিনতি করল বর-নাহ।

গলে পীতামর ঠাড়হিঁ কর যোড়ি

তৰ ধনী পাৰটি না চাহ ৷৷

### এ এ পদকলতর ।

তবহঁ বসিক-রাজে সিরজিয়া মনোমাঝে গদ গদ কহে স্থাধ বাত।
পাঁচ-বদল অহি মনু মুথ দংশল জর জর ভেল দব গাত॥
এত কহি নাগর কাঁপই থর থর মুরছি পড়ল দোই ঠাম।
কি ভেল কি ডেল বলি রাই ধাই চলি কোরে করল ঘনপ্রাম॥
শীতল সলিল লেই নমনে বয়নে দেই নীল-বসনে করু বার।
চেতন পাইয়া হরি উঠল অক মোড়ি উদ্ধব দাস শুণ গায়॥ ১২॥ ৪১৮॥

#### তথা রাগ ৷

দ্রে গেও মানিনী-মান।
বাইক কোরে মগন ভেল কান॥
অরণ উদর ভেল দেখি অতি জীত॥
নাগর নাগনী চমকিত চিত॥
শ্রাম-করে ধরি ধনী কহে মৃহ বোল।
নিজ গৃহে চল অব নহ উতরোল॥
দেব আরাধনে আওব হাম।
পুন দরশন হোরক সোই ঠাম॥
হাম অবলা গুণ-হীম মতি বাম॥

কঠিন বচন হাম যে কহলু তোয়।

ইথে কিছু অপরাধ না লহবি মোয় ॥

এত কহি হহঁ চলু নিজ গেহ ।

মন্দিরে আওল লথই না কেহ।

ঐছন রসময় হহঁক চরিত।
উদ্ধব দাস হেরি হরবিত চিত॥ ১৩॥ ৪১৯॥

ইতি একাদশ-পল্লবঃ॥

অথ ধারাধীরা মধ্যা যথা ধীরাধীরাতু বক্রোক্ত্যা সবাস্পং বদতি প্রিয়ং। সৈব খণ্ডিতা। তত্র শ্রীগৌরচক্রঃ। প্রকারাস্তরং যথা।

গান্ধার।

পোরা পছঁ বিরলে বসিয়া।
অবনত বদন করিয়া।।
ভাবাবেশে চুলু চুলু আঁথি।
রজনী জাগিল হেন সাধী।।
বিরস বদন কহে বাণী।
আশা দিয়া বঞ্চিল রজনী।।
কান্দিয়া কহরে গোরা রায়।

এ ত্থ সহনে নাহি যার।।
কাতরে করে সবিযাদ ।

### ভৈরবী 1

পশু শচী-স্থতমন্থপমরপং।
কলিতামৃত-রদ-নিরূপম-কৃপং॥
রুষ্ণাগ:-কৃত-মানস-তাপং।
লীলা-প্রকটিত-কুদ্রপ্রতাপং॥
প্রকটিত-পুরুষোত্তম-সবিধাদং।
কমলা-কর-কমলাঞ্চিত-পাদং॥
রোহিত-বদন-তিরোহিত-ভাবং।
রাধামোহন-কৃত-চরণাশং॥ ২॥ ৪২১॥

বিভাষ

নথ-পদ হৃদরে তোহারি।
অন্তর জ্বলত হারারি।
অধরহি কাজর তোর।
বদন মলিন ভেল মোর।।
হাম উজাগরি রাতি।
তুরা দিঠি অক্রণিম কাঁতি।।
কাঁহে মিনতি করু কান।
তুহাঁ হাম একই পরাণ।।
হামারি রোদন অভিলাব।
তুহাঁক শ্রদ গদ ভাব।।
হাম গোলী ভুহাঁ শ্রাম অক্র।
অত্যে চলহ নিজ বান।

তথা রাগ। কন্দর্প তাল। কাহা নথ-চিহ্ন চিহ্নলি তুহুঁ স্থলুরি रेर नव कुडूम-दार । কাৰর-ভরমে মরমে কিয়ে গঞ্জসি খন মুগমদ-রুস এহ।। ভামিনি মঝু মনে লাগল ধনা। অপরপ রোখে দৌখ করি মানসি मिनिर्शे जक्रि मिठि सम्म II का। গৈরিক হেরি বৈরী সম মানসি উর পর যাবক-ভানে। शांश्वक विन्तृ हेन्नु- मूथि निन्ति সিম্পুর করি অনুমানে।। তোহারি সম্বাদে জাগি সব যামিনী অরুণিম ভেল নয়ান। তুহু পুন পালটি মোহে প্রিবাদিদি পোবিন্দ দাস পরমাণ।। ৪।। ৪২৩।। श्रानमी । জানলু এ হরি তোহারি সোহাগ। যাকর দেহলী রজনী গোঙায়লি তাহি করহ অহুরাগ।। ধা।। রতি-রণ-পণ্ডিত বেশ অথণ্ডিত ঘন খন মোড়িস অক। অত্যে অসুমানিয়ে বেক্ত উলাগরি বিষ্টন ভামিনী-সৰ ॥

অতি অনুরূপ গ্রিভিট্ট টিউ এই ইচন সতি আৰু দেখ্যু পরতেক। যো পরবঞ্চক 🐇 🤭 বিহি তারে বঞ্চউ হুৱৰুক দেখি না দেখা। তুহু রস-সাগর 👵 🚃 🧸 রিদ্রগধ নাগর ्राम मृगधी क्लन्साती । গোবিৰ দাস : কহই অব হরি সঞে व्यक्तमः तुसरे ना शक्ति॥ द ॥ ४२४ ॥ ভথা রাগ। তাল দশকুশী া চ রাইক চরিত বুঝি বরনাগর মন মাহা ক্ষল উপায় ৷ চরণ পাক্তি নিজ দোৰ মানাইয়ে তব কিয়ে ধনী বোধ বাছ।। ি হরি হরি অপরাধ **কিছুই নাজান**া ্ষাহে বাজি শন্তনে ্ দ্বপনে দাহি হেরিয়ে সোই কর্ম অপ্নান ।। এছ জহি রাইজ ্ ি চক্ষা প্ররি বোলত किंद्र के **एक सनि मन् अने वास्त्र के एक** এছন দোৰ ভাৰত জনত হৈমে না করব ्र विकास मा कक्र धनिन्स्ति गावा की **उत्ह र्था-मुशी** न क्वा नाहि अनि চরণ হেলি ঠেলি যায় ॥ ভাষ রেটি চলভূহি कर्वाह दर्गान जिलात ।। ७ ॥ ८२ ॥

# ভথা রাগণ বার

করে কর যোড়ি মিনতি করু তো সঞে চরণ-ক্মলে প্রণিপাত। কোপে কমল-মুখী নয়ানে না হেরসি

কোণে ক্**শ-**শুখা নগানে না হেরাস অভিমানে অবনত মাথ।।

স্থব্দরি ইথে কি মনোরথ পূর।

যাচিত রতন তেজি পুন মঙ্গল

সোমিবন অতি দুর।। গ্রান্ত

কোকিল-নাদ শ্রবণে যব শুনবি তব কাঁহা রাথবি মান। কোটি কুস্থম শর হিয়া পর বরিথব

কোটি কুস্থম শর হিয়া পর বারথব তব কৈছে ধরবি পরাণ।।

মঝু এত বচনে তোহার নাহি আরতি হিত কহিতে কহ আন।

দারুণ দ্থিণ- প্রন্থ পর্শব তব্হি মিট্র দুর মান।।

গুণ-গণ ছোড়ি নোষ এক সোঙ্বসি নিকটিছিঁ কোই না যাব।

দারুণ নয়ানে আর্তি তব বাঢ়ল অবু বন্তাম ছুধ লাভ ॥ ৭ ॥ ৪২৬ ॥

্র সার স্থাধীগণ মেলি বছ বচন চকলা 🕸 🦠 👍

কোপে কহরে শুন নাগর কান। এতহঁ করারসি কাঁহে জ্লপমান॥ কাঁহে তুহঁ পুন পুন দগধসি মোর। বাহ চলি তুহুঁ বাহা নিবসুরে সোর॥৮॥৪২৭॥

### ञ्चर ।

মাধব কাঁছে কান্দার্স হামে।
চলি ৰাহ সো ধনী ঠামে।
তোহারি হৃদরে অধিদেবী।
তাকর চরণ যাই সেবি।
যো যাবক জুরা অঙ্গ।
ততহি করহ পুন রঙ্গ।
তেই করহ পুন রঙ্গ।
কি কল মুগধিনী ঠাম।
এত কহি গদ গদ ভাষ।
ভগ রাধামোহন দাস।। ১। ৪২৮।

#### ধানশী ৷

রাইক হাদ্য- তাব বুঝি মাধব পদতলে ধরণী লোটাই। হহঁ করে হহঁ পদ ধরি রহু মাধব তবহি বিমুখ ভেল রাই॥ পুনহি মিনতি কল কান। হাম তুরা অহুপত তুহঁ ভালে জানত ভূহাঁ যদি স্থান হৈরবি হাম যাওব কোন ঠাম। ভূমা বিস্থু জীবন কোন কাজে রাথব তেজব আপন পরাণ॥

এতহঁ মিনতি কান্ধ্যব করলহঁ তব নাহি হেরল বন্ধান॥

গোবিন্দ দাস মিছই আংশায়াসল রোই চলত বরকান ॥ ১০ ॥ ৪২৯ ॥

### তিরোতা ধানশী।

রাই অনাদর হের রসিকবর অভিমানে করল পরান। নম্মনক লোরে পথ লথই না পারই পীত-বাসে মোছই ব্যান॥

হরি হরি নিজ অপরাধ নাহি জান। সো হেন প্রেমিক্হি কথি লাগি নিরসল কাহে কয়ল মুঝে মান॥

মোরে উপেথি রাই কৈছে জীয়ব সো ছুখ করি অনুমান। রসবতী-কাদর বিরহ-জ্বরে জারব ইংখ শাগি বিদ্বে প্রাণ॥ রাই সম্বাদ স্থা-রম দিঞ্চনে
তন্তু তিরপিত করু মোর।
গোবিন্দ দাস যব যতনে মিলারব
তব যশ গাওব তোর॥ ১১॥ ৪০০॥
ইত্যাদি খণ্ডিতা-গীত-পর্য্যার:।
বিতীয়-শাথায়াং ঘাদশ-পল্লব:॥
অথ কলহাস্তরিতা।
নিরস্তোমস্থানা কাস্থেরিবাভাবেং।।
সাম্বাপযুতা দীনা কলহাস্তরিতা ভবেং।।

তহ্চিত শ্রীগোরচ<del>র</del> । তৃড়ী ।

মান-বিরহ-ভরে পহঁ ভেল ভোর।
ও রাঙ্গা ন্য়নে বহে তপতহিঁ লোর।
আরে মোর আরে মোর গৌরাঙ্গ চাঁদ।
অথিল জীবের মনোলোচন-কাঁদ।
প্রেম-জলে ভুবু ভুবু লোচন-তারা।
প্রলাপ সন্থাপ ভাব আদি ভোরা॥
কান্দিয়া কহে পুন ধিক মোর বৃদ্ধি।
অভিমানে উপেথমু কায়ু গুণ-নিধি॥
যে হৈল মনের হুঃথ কি বুলিব কায়।
মরু মন জীবন কৈছে জুড়ায়॥
এই রূপে উদারিলা সব মর মারী।
এ রাধামোহন কহে কিছু নহিল হামারি॥১॥৪

## সুহই।

আকুল প্রেমে পহিলে নাহি হেরমু সো বহু-বল্লভ কান। আদর সাধে বাদ করি তা সহ

জহর্নিশি জলত পরাণ॥ -

সঞ্জনি তোহে কহ মরমক দাহ। কান্নক দোখে যো ধনী রোথই

ৈ সোতাপিনী জগ মাহ ॥ এদ ॥

যো হাম মান বহুত করি মানলু কান্তুক মিনতি উপেথি।

সোজাব মনসিজ- শরে ভেল জর জর

তাকর দরশ না দেখি ॥

ধৈরজ লাজ মান সঞ্জে ভাগল

জীবন বহত সন্দেহ।
গোবিন্দ দাস কহই সতি ভামিনি
প্রছন কান্তক লেহ॥ ২॥ ৪৩২॥

তথা রাগ।

কুলবতী কোই নয়ানে জানি হেরই হেরত পুন যদি কান।

কান্থ হেরি জনি প্রেম বাঢ়ায়ই

প্রেম করই জনি মান।
সজনি অতমে মানিরে নিজ দোষ।
মান দগধ জীউ অব নাহি নিকস্বে

কারু সঞ্জে কি করব রোব॥

যোম ঝুচরণ-পরশ-রস-লালসে
লাখ মিনতি মুঝে কেল।
তাকর দরশন বিনি তহু জর জর
পরশ পরশ-সম ভেল॥

সহচরী মোহে শাথ সমুঝায়ল তাহে না রোপন্থ কাণ।

গোবিল্ল দাস সর্ম বচনামূতে পুন বাছড়ায়ৰ কান।। ৩॥ ৪৩৩ ॥

### শ্রীরাগ।

শুনইতে কান্থ মুরলী-রব-মাধুরী শ্রবণে নিবারস্থ তোর।

হেরইতে রূপ নরান-যুগ ঝাঁপলু তব মোহে রোখলি ভোর ॥ স্ফুল্রি তৈখনে ক্ছল মু তোয়।

ভরমহি তা দঞে লেহ বাঢ়ায়লি জনম গোঙায়বি রোয় ॥

বিনি গুণ পরথি পরক রপ-লালদে

কাঁহে সেশপলি নিজ দেহ।

দিনে দিনে খোয়াৰি ইহ রূপ লাবণী জীবইতে তেল সন্দেহ।

যোতৃহঁহাদরে শ্রেম-জরু রোপলি ভাম-জনদ-রুদ আশে।

ুসা অব নয়ন- নীর বন সিঞ্চ কৃত্তহিঁ গোৰিক দাদে॥ ৪ ॥ ৪৩৪ ॥

# यूर्हे।

চরণে লাগি হরি হার পিকারল

যতনে গাঁথি নিজ হাত।

সো নাহি পহিরলু দুরেহি ভারলু মানিনী অবনত মাথ॥

সজনি কাহে মোর হুরুমতি ভেল।

দগধ মান মঝ

বিদগধ মাধ্ব

রোথে বিমুখ ভৈ গেল।।

গিরি-ধর নাহ

বাভ ধরি সাধল

হাম নাহি পাল্ট নেহারি।

হাতক লছিমী চরণ পরে ডারলু

অব কি করব পরকারি।।

সো বহু-বন্নভ

সহজ ই চল ভ

দরশ লাগি মন ঝুর।

গোবিন্দদাস যব যতনে মিলারব

তবহি মনোরথ পুর॥ ৫॥ ৪৩৫॥

#### ধানশী ৷

কোমল মাথন জমু দেখল কান। তৃত্ অবিচারে বাঢ়ায়লি মান । রোথে বিমুখ যব চলু বরনাই। অৰ কাতর দিঠে মরু মুখ চাহ।। ₹ 9

স্কবি তুহঁ সম্বায়ৰ কোই।

অব বহ নিবজনে মন মাহা বোই।

সহচরী লাথ বচন করি ভক।

হুদরে ধরলি তুহঁ মান-ভুজক।

কোন কুমতি দরশারল এহ।
জানফুগরলে তরল তুরা দেই।

মদন-কুমত্রে অধীর ভেল শেই।

চললহঁ দংশি লথই নাহি কোই।

ইথে বিফু নাগ্-দমন বস্পান।

গোবিন্দাস মণি-মন্ত্ না জান॥ ৬। ৪০৬।

### শ্রীগান্ধার।

কি কছদি মোহে নিদান।
কহইতে দহই পরাণ॥
তেজলু গুরু-কুল-সঙ্গ।
প্রল তু কুল কলক॥
বিহি মোরে দারুল ভেল।
কাম নিঠুর ভই গেল॥
হাম অবলা মতি বাম।
না গণম্থ ইহ পরিণীম॥
কি করৰ ইহ অমুযোগ।
আপন করমক ভোগ॥
কবি বিদ্যাগতি ভাগ।
ভূরিতে মিলারব কান॥ १। ৪০৭॥

# शनशी ।

কৈছে চরণে কর- পল্লব ঠেললি

শানিনি মান-ভুজকে।

কবলে কবলে জীউ জরি যব জাওব

তবহিঁদেখৰ ইহ রক্ষে॥

মাগো কিয়ে ইহ জীউ অপার।

কো আছুবীর ধীর মহাবল পউবি উতারয়ে পার ॥

আপনক মান বহুত করি মানসি

তাক মান করি ভঙ্গ।

সো হৰহ নাহ উপেথি তুহু অব

বঞ্চবি কাত্তক সঙ্গ।

স্থীগণ-বচন অলপ করি মানলি চাহসি কাহে মঝু মুখ।

ভণ খনশ্রাম শ্রাম তুহু উপেথলি

দেরশি বহুতর হুখ॥৮। ৪৩৮॥

#### তথা রাগ।

তিল এক শহুনে স্থপনে যো মঝু বিনে চমকি চমকি করু কোর। খন খন চুখনে গাঢ় আলিখনে

নিবারে ঝরুরে বহু লোর।

সজনি সো বদি করু নিঠুরাই। না জানিয়ে কো বিধি দিই দেই লেয়ল সো সুথ করি বিছুরাই ॥ জ ॥ তুহু কাহে বিরুষ বচনে মোহে মারসি ডারসি শোককি কুপে। মৃরছিত জনকে বাত নহে সমূচিত জগজনে কছব বিরূপে। ভারত মান আন জন-গঞ্জন পিরীতে পিন্নীতি করি বাধা। রসিক স্থনাহ আপনে স্থ পায়ব এ বড়ি মরমে মঝু সাধা ॥ সো মুথ-চাঁদ হৃদয়ে ধরি পৈঠব कालिको विष-इप-नीद्र । পামরী গোবিন্দ- দাস মরি যায়ব সাজি আনল তছু তীরে । ১০৯ ॥ গান্ধার ৷

কি কহলি কঠিনি কালী-দহে পৈঠবি শুনইতে কাঁপই দেহা।

ঐছন বচন কামু যব ভনব ভাৰদে না বান্ধব থেছাল

তাহে ভূঁহ বিদৰ্গধ নাজী ৷

জনুচিত মানে দেহ বলি তেজাবি মরমহি বিবহ বিথারি ॥ কাহক চিত বীত হাম জানত কৰহ নহত নিঠুৱাই। তুহঁ যদি তাক লাথ গারি দেয়সি তবহু বহুত মুখ চাই॥

ঐছন বোল না বোলবি স্থলরি
কাহে পরমাদসি এহ।
গোৰিন্দদাস কহ শপতি তোহে শত শত
যদি উদবেগ বাঢ়াই॥ ১০। ৪৪০।

# পঠমঞ্জরী।

হাম মরইতে তুহঁ মরইতে চাহ।
অনুপণ মরু হিরা তুব-দহ দাহ।
এ স্থি কিরে করব পরকার।
সোওরিতে নিকপরে জীবন হামার।
হামার বচন-দৃঢ়-কণ্টকে জারি।
বিদ্যাধ নাহ গেও মুঝে ছাড়ি।
মুঞি অতি পাপিনী কলহি বিরাজ।
দারুল প্রাধ রহ কোন লাগি।
বুঝার এহ মরু পরম অভাগি।
সোরদাস কহ না কর সন্দেহ।
তুরা প্রেমে মিলব রসমর্ব দেহ। ১১। ৪৪১॥

### ধানশী ।

সো বহু-বল্পত সহজেই ভোর। কৈছনে বেদন জানব মোর ম চৰইতে চাহি ভাহাঁ আদর ভঙ্গ। সহই না পারিয়ে বিরহ-তরঙ্গ॥ স্থিতে কাহে উপেথল কান। না জানিয়ে দগধি চলব মোহে মান।। স্থীগ্ৰ গ্ৰহতে তুহু সে সেয়ানী। তোহে কি শিখায়ব চতুরিম বাণী॥ মঝ এত আরতি সো জনি জান। ইথে লাগি ভুয়া পায় সোঁপলু পরাণ॥ অব বিরচহ তুরুঁ সো পরবন্ধ । কাত্মক থৈছে হোয় নিরবন্ধ॥ জীবইতে মোহে মিলব যব কান। গোবিন্দদাস তব তুয়া গুণ গান ॥ ১২। ৪৪২

কামোদ।

রাইক বিনয় কচন ভাৰ লো স্থী

চললিছ শ্ৰামক আগে 🖟 🐃

দুর্হি তাক मानम चार्थंद दर्गाहादशा

অপক্রমা প্রেমকি রীজ্ঞা ১১

আদর বিনহিভাল ক জাই নহ-বলত

ाक र **गृही जित्रतक डेनकीड** ॥ १०) वहर

দৃতী কহত তুহঁ কৈছন পিরীতি রীত বুঝই নাহি পারি। সো যদি মান- ভরমে তোহে রোধল তুহঁ কাহে আয়দি ছাড়ি।।

আপনক দোষ জানি যদি মন মাহা
কাঁহে বাঢ়ায়লি বাত।
গোবিন্দদাস তোহারি লাগি সাধব
আপে চলহ মঝু সাথ।। ১৩। ৪৪৩।।

#### शननी।

দ্তীক বচন শুনি নাগর-রাজ।
অন্তরে পাওল বহুতর লাজ॥
ইঙ্গিতে বুঝল সো আশোরাম।
মন মাহা হোরল বহুত উল্লাস॥
তবহিঁ সফল করি জীবন মান।
তাকর সঞ্জে হরি করল প্যান॥
পছহি কত কত ভাবে বিভোর।
ঐছনে পারল কুঞ্জক ওর॥
দ্ব সঞ্জে নাগর নাগরী হেরি ।
বৈঠল তহিঁ পুন আনন কেরিঃ॥
গদ্ধ ক্ষানাগর মৃড়ি ছই পারিঃ।
কহুইতে বদ্ধে নাগরে মৃড়ি ছই পারিঃ।
সহুইতে বদ্ধে নাগনিকসম্ভে রামী॥১৪॥৪৪৪॥

# সুহই ৷

চাহ মুথ তুলি রাই চাহ মুথ তুলি। পরশিতে চাহি ভুষা চরণের ধূলি॥ অভিমান দুরে করি চাহ একবার। দূরে যাউ সব মোর হিয়ার আন্ধার। ইত্যাদি গীতং ॥ ১৫ ॥ ৪৪৫ ॥

**দেশ** বরাডী।

জাই তাল।

वमनि यमि किथिमि मस-क्रि-(कोम्मी হরতি দর-তিমিরমতিযোরং।

ক্রদধরসীধবে

তব বদন-চন্দ্ৰমা

রোচয়তি লোচন-চকোরং।। প্রিরে চাক-শীলে মুঞ্চ ময়ি মানমনিদানং।

সপদি মদনানলো দহতি মম মানসং

(महि मूथ-कमन-मधु-भानः ॥ अ ॥ সভামেবাসি যদি স্থানতি স্বাধি কোপিনী

ছেতি খর-নর্ম-শর-বাতং।

श्चेत्र छक-दक्षनः कनद्र त्रम-थ्यनः

বেন বা ভবতি স্থ-জাতং ৷

क्यिन मम जुर्गः क्यिन मम जीवनः ত্মসি মন ভব-জলাধি-রত্নং

ভব্তু ভবতীই মরি সতভ্যস্রোধিনী

8885848 Ga 44 9774 649 1 3 3 5 5

নীল-নলিনা ভর্মপি তবি তব লোচনং ধারমতি কোকনদ-রূপং। কুস্থম-শর-বাণ- ভাবেন যদি রঞ্জসি কুষ্ণমিদমেতদত্ত্রপং॥

ক্ষুর্তু কুচ-কুপ্তরো- রূপরি মণি-মঞ্জরী রঞ্জাতু তব হৃদয়-দেশং। রসতু রসনাপি তব ঘন-জ্বন-মণ্ডলে ঘোষয়তু মন্মাধ-নিদেশং॥

স্থল-কমল-গঞ্জনং মম হৃদয়-রঞ্জনং জনিত-রতি-রঙ্গ-প্রভাগং। ভণ মস্থ-বাণি করবাণি চরণদ্বয়ং স্রস-লস্দ্রাক্তক-রাগং॥

শ্বর-গরল-খণ্ডনং মম শিরসি মণ্ডনং
দেহি পদ-পল্লবমুদারং।
জলতি ময়ি দারুণো মদন-কদনানলো
হরত ততুপাহিত-বিকারং॥

ইন্ডি চটুল-চাটু-পটু চাক মূরবৈরিগো রাধিকামধি বচন-জাতং। জন্তি প্রাথতী- রুগ-জন্মের-কবি-ভারতী-ভণিতম্ভিশাতং ॥ ১৬ ॥ ৪৪৬ ॥

#### বালা ধানশী ৷

নিজ অপরাধ মানি হব মাধব

কোরে আগোরত ধাব।

সরদ-বিরসম্মী ইঙ্গিতে রসবতী

অসমতি সমতি বুঝাব॥

দেখ সৃথি বাই কি করুরে নৈরাশে।

मान-कलम मान-कलम मान-कलम मुश्र-मभी

কাত্মক দীঘল নিশানে।

কনরাচল-ক্লচ উচ কুচ-চুচুক

সরসহি পরশিতে নাহ।

মানক শেষ- লেখ-রস-স্চক

আধ মুদিত দিঠি চাহ ॥

অধর-সুধা-রদ পিবইতে ঘৰ ধনী

বঙ্কিম করু মুখ আধা।

জগদানৰ ভণ ত্বহি সফল কফ হরি মন মনসিজ-বাধা॥ ১৭॥ ৪৪৭॥

# **্রীরাগ**্য

অসুনর করি হরি পাণি পদারই

রাইক চরণক অংগে ৷

নিজ মুখে আগনক কৃহই দোৰ শত

মানই কর্ম অভাগে।

দেখ রাধামাধব প্রীত। হহঁকর নিজ নিজ গ্লহি বাঢাওত ু হুহুঁজন নিজ নিজ রীত।। গ্রু॥ স্থ্যুপী কহরে কাহে মোহে বিভন্নহ शंभ जुन्ना भूगधिनी नात्री। ভূ হসে রসিক-বর বিদ্পধ নাগর নাগরী-জন-মনোহারী॥ কহইতে এতহঁ নয়ন লোরে ঝাঁপল কার করণ ধনী কোর। ভাক্ত মান হেরি রাধামোহন আনন্দে পুন ভেল ভোর।। ১৮।। ৪৪৮।। ধানশী ।

(मथ (मथ जांधा माधव धांजी। বিরুমে কৈছন বজি-বণ মান-চরবন তপত কুশারি॥ হরি-মুথ হেরইতে স্লুমুখী অবাস্থই চাহনী কুটিলহি ভাতি। গদ গদ বচন অস্য়া কছু স্চন ততহি মনোরথে মাতি ।। নথ-শর-ঘাতে তৈছে স্থাবহ চুম্বন কছু পরসাদ। পরিরভান শূল পুলক কচক-বর (जनहें तम-मतियान ॥

ও স্থ-সিদ্ধ সম্প্র স্থান তেল মাধব ক্রামিনী কছু কছু স্থান। তণ রাধামোহন সম্ভোগ সমীরণ

় হুত্ ক মনোরথ পুর ॥ ১৯ ॥ ৪৪৯ ॥

এভদ্দীতং সর্ব্বকালোচিতং।
ইতি দিতীয় শাধায়া: ত্রোদশ-পল্লবং।।
পুনশ্চ কলহাস্তরিতা।।
তহুচিত শ্রীগোরচন্দ্রং।

**∞**ठेम**छ**ती।

মঝু মনে লাগল শেক।
গৌর বিমুথ ভৈগেল।।
জনম বিফল মোর ভেল।
দারুল বিহি ছথ দেল।।
কাহে কহব এহ ছথ।
কহইতে বিদরমে বুক॥
আর না হেরব গোরা মুথ।
তব জীবনে কিরে সুথ॥
বাস্থদেব ঘোৰ রস গান।
গোরা বিনে না রহে পরাল।। ১॥ ৪৫০॥

शननी ।

চর্ণ নগর মণি বঞ্জন ছাঁদ। ধরণী লোটায়ল গোকুল চাঁদ। চরকি চরকি পজু লোচন-লোর।
কত রূপে মিনতি কয়ল পহঁ মোর।।
লাগল কুদিন কয়ল হাম মান।
অবহঁ না নিকসমে কঠিন পরাণ॥
রোধ-তিমির এত বৈরী কি জান।
রতনক ভৈগেল গৈরিক ভান॥
নারী জনমে হাম না করিফু ভাগি।
মরণ শরণ ভেল মানক লাগি।।
বিদ্যাপতি কহ শুন ধনি রাই।
রোয়সি কাহে কহ ভালে সমুঝাই॥ ২॥ ৪৫১॥

#### স্থহই।

যাকর চরণ- নথ-কচি হেরইতে মুক্কছয়ে কত কোটি কাম। সোমঝু পদতলে ধরণী লোটায়ল পালটি না হেরলু হাম।।

সজনি কি পুছিদি হামারি অভাগি। ব্রজ-কুল-নন্দন চাঁদ উপেথলু দারুণ মানকি লাগি।।

কাতর দিঠে

কত রূপে সাধল নাহ।

হাম শ্রবণ
অব হিরা তুব-দহ দাহ।

সে হেন রসিক কল পিয়া কাঁহা করু সোঙ্গি মঝু মন ঝুর। গোবিন্দদাস কহ সো পহঁ তোহারি অদুর ।। ৩ ।। ৪৫২। একে তুহু নাগরী নব গুণে আগরি বৈঠসি চতুরী-সমাজ। আপনক বাত আপনহি সমুঝসি इर्छ नहें देव नि जव कांक ।। মানিনি নাহক কি করসি রোখ। নিকটে আনি বাত হুই পুছিয়ে বুঝিয়ে খাণ কিয়ে দোখ।। ধা। অপরাধ জানি গারি দশ দেয়বি পিরীতি ভাঙ্গবি কাঁহে লাগি। পিরীতি ভাঙ্গিতে যো উপদেশন তাকর মুখে দেই আগি॥ যো তুয়া চরণ পরশি মহী লুঠল নিজ গৌরব করি দূর।। অব কাহে তাক চরিত কহি ঝুরদি গোবिन्मनाम कह कूद्र ॥ ८ ॥ ८ ७ ॥ সো মুখটার নয়নে নাছি ছেরলু

নরন-দহন ভেল চক্রা ।

নেই মধুর ঝেল প্রবণে না শুরুলু

মধুকর-ধ্বলি ভেল বন্ধ ॥

সঞ্জনি কাহে বাঢ়ায়লু মান। প্রেম-ভঙ্গ ভয়ে অব জীউ কাতর তুহঁ পরবোধবি কান।। গু।।

সো কর-কিশলর পরশ উপেথলু

অব কিশলরে তমু ভোর।

নব নব লেহ স্থা-রস নিরসল

গরলে ভরল তমু মোর।।

সো কর-বিরচিত হার উপেথলু হার ভূজকম ভেল। গোবিন্দদাস কহ সো অতি ভূরজন যো ঐছন মতি দেল।। ৫।। ৪৫৪।।

# ্ভূপালী।

শুন শুন মানিনি না কহব তোয়।

সাস্টিত মানে গোঞারবি রোয়॥

সাব নাহি শুনলি সহচরী বোল।

কোর রহলি মুখ ঝাঁলি নিচোল॥

রোই রোই মাধব সাধল তোর।

কাঁহে কাতর দিঠে চাহসি মোয়॥

সাব কাম যাইয়া কি কহব তার।

যাচিত রতন তাগে না ব্যায়॥

সো বিস্থ সাব কোই প্রব সাশ।

কি কহব সাব বন্ঞামর স্থাসা। ৪৫৫॥

#### ধানণী।

শুন শুন এ সথি নিবেদন তোর।
মরমক বেদন জানসি মোর॥
বৈঠহে নাহ চতুরগণ মাঝ।
ঐছে কহবি থৈছে না হোর লাজ
সথীগণ মাঝে চতুরী তোহে জানি।
আদর রাথি মিলারবি আনি॥
অব বিরচহ তুহঁ দো পরবন্ধ।
কাত্মক থৈছে হোরে নিরবন্ধ॥
জীবন রহিতে নাহ যদি পাব।
গোবিন্দাস তব তুরা যশ গাব॥ ৭॥ ৪৫৬॥

#### তথা রাগ।

ভনইতে গ্রছন রাইক বানী।
নাহ নিকটে সধী করল পরানি ॥
দূর সঞে নো সধী নাগর হেরি।
ভোড়ই কুস্কম নেহারই ফেরি॥
হেরইতে নাগর আয়ল তাঁহি।
কি করহ এ সথি আওলি কাঁহি॥
হামারি বচন কছু কর অবধান।
তুহঁ বদি কহদে মানিনী ঠাম॥
গুনি কহে গো সধী নাগর পাশ।
বিভাপতি কহু পূরব আশা॥ ৮ ॥ ৫৫৭॥

শ্রীগান্ধার।

ভন বছ-বল্লভ কান। ভাবে তুহঁ রসিক স্কান। পামরী-পিরীতি উপেথি। আওলি কুলবতী দেখি॥ তোহারি রসিক-পণ জানি। কহইতে আওল বাণী **॥** দেখি তুয়া এ সব কাজ। হাস যুবতী সমাজ। যো পদ পরশক আশে। করসি কতত অভিলাযে ॥ সো পদ-পঙ্কজ ছোডি। কৈছে রহলি মুখ মোডি॥ কোন শিখায়লি নীতে। ধিক ধিক তোহারি পিরীতে ॥ ছিল্পে ছিল্পে বিদগধি রাধে। যাক হৃদন্তে যত সাধে। গোবিক্দাস মতি মক। **(इत्रहेट्ड टेन्डर्गन धन्म ॥ २ ॥ ४৫৮ ॥** ত্রীরাগ।

দোতী বচন শুনি রসিক-শিরোমণি আওল তাকর সাথ। দুর সঞ্জে হেরি সোই বর-নাগরী অবনত করি রহ মাথ॥ কর যোজি সাধরে কান। হাম তুরা কিঙ্কর পুড়িয়ে চরণ তল তেজ ধনি নিদাস্থা মান॥ ধ্রা।

এত কহি নাগর অক্তর গর গর

চরকি চরকি পড়ুলোর।

হেরি স্থা-মুখী আকুল ভেল অতি

সোমুখ হেরি বিভোর।

ছল ছল নয়ানে খ্রাম কর-কিশলর
ধরি কহে গদ গদ ভাষ।
জলদে গোপন বিধু যৈছে উদয় ভেল
কহ যতুনলন দাদ।। ১০।। ৪৫৯।।

# धानणी।

রাই হেরল যব সো মুখ-ইন্দু।
উছলল মন মাহা আনন্দ-সিকু।।
ভারল মান রোদনহি ভোর।
কাফু কমল-করে মোছাইল লোর।
মান-জনিত হুখ সব দূর গেল।
ছুহুঁ মুখ দরশনে আনন্দ ভেল।।
লগিতা বিশাখা আদি যত স্থীগণ।
আনন্দে মগন ভেল দেখি ছুই জন।।
নিকুজের মাঝে ছুহুঁ কেলি বিলাস্।
দূরহি দূরে রহু নরোভ্যম দাস।। ১১।। ৪৯০

#### তথা রাগ।

রাইকাছ বিলসই নিকুঞ্জ-ভবনে।
নরানে নরানে ছহু বরানে বরানে॥
হুধ সঞ্জে হুথ ভেল হুহু অতি ভোর।
হের দেখ এ স্থি রাই শ্রাম-কোর॥ ১২॥ ৪৬১॥
ইত্যাদি গীতং।

ইতি কলহাস্তরিতাপ্রকরণং ॥ চতুর্দশ-পল্লবং ॥ দৈব কলহাস্তরিতা প্রকারাস্তরং যথা। ভতুচিত শ্রীগৌরচ**ক্ষঃ**।

### सुरहे।

মোহে বিহি বিপরীত ভেল।
অভিমানে মোহে উপেথি পহঁগেল।
কি করব কহনা উপার।
কেমনে পাইব সেই মোর গোরা রায়॥
কি করিতে কি না জানি হৈল।
পরাণ পুতলী গোরা মোরে ছাড়ি গেল।
কে লানে যে এমন হইবে।
অাচলে থান্ধিতে ধন সাগরে পাড়বে।
১৮ডঞ্জনাসের সেই হৈল।
পাইয়া গোরাক্ষ চাঁদ না ভজি তেজিল।
১৪৬২।

কো রাগিণী।

একতাল ধরা।

সীণতি স্থি মন স্থানমধীরং।

যাকর্ণরমতিস্থত্ত্পদেশং।

মাধব-চাটু-পটলমপি লেশং।

নাগোকরমর্পিতমূর-হারং।
প্রণমন্তঞ্চ দরিতমন্ত্রারং॥

হস্ত সনাতন-শুণমভিয়ন্তং।

কিমধাররমৃহমুর্দিন কাস্তং॥২॥৪৬৩॥

# श्रीबाग ।

পরবশ দেহ থেছ নাহি বাদ্ধে।
নিলাক জীউ গেছ লাগি কান্দে॥
লঠ সঞ্জে হঠ না করয়ে কেছ আন।
মাল রহক পুন বাউক পরাণ॥
এ বাধি ছিরে ছিরে কছইতে লাজ।
ভনি উপহাসব ব্যতী সমাজ॥
পরজন কিরে পিরীতি জক্তুরোধ।
প্রজন জ্জন কিরে পরবোধ।
প্রজন জ্জন কিরে পরবোধ।

ত্বাবিশ্বদাস ইহ রস পরমাণ॥ ৩॥ ৪৬৪॥

### ধানশী।

পরিহরি সো গুণ-রতন-নিধান।

যতনে হিয়ে হাম রাথলু মান॥
সো অব কাল অনল সম হোয়।
দগধই নীরস দারণ হিয়া মোয়॥
এ স্থি যতহুঁ মিনতি পহুঁ কেল।
সো সব অব তহিঁ আহতি তেল॥
মুথরিত পিক-কুল আচার্য তায়
তহিঁ মলয়ানিল রচয়ে সহায়॥
জানস্থ দৈব বিমুথ যাহে হোয়।
ভাকর তাপ না মিটই কোয়॥
ভরমহুঁ মঝু নাহি এমত ভান।
রোথি চলব কিয়ে নাগর কান॥
গুনইতে গ্রছন রাইক ভাষ।
কহ জয় জয় জয় তেল ঘনগ্রাম দাস॥ ৪॥৪৬৫॥

#### তথা রাগ।

যুবজী-নিকর মাঝে বাস।
অনুক্ষণ নব নব যছু অভিলায ॥
ঐছন জন ভূমা পরশক লাগি।
বিপিনে গোঞায়ল যামিনী জাগি॥
ভিত্তহাঁ প্রাতে নিজ গৌরব ছাড়ি।
তোহারি নিয়ড়ে আওল কর যোড়ি॥

আওল ধব নব-নাগন্ধ কান।
তৈথনে ভেল তোহে দাকণ মান্ ।
অম্নর বচন না ভুনবি জানি।
চরণে পসারল সো নিজ পাণি ॥
লোচন-কোণে তবহি নাহি হেরি।
বৈঠল তহি পুন আনন ফেরি॥
অবনত মুখ ধব চলু নিজ বাস।
কি কহব অব ঘনগ্যামর দাস।। ৫ ।। ৪৬৬।

#### তথা রাগ।

কৈছে চরণে কর- পল্লব ঠেললি মিললি মান-ভূজকে। কবলে কবলে জীউ জরি যব যাওব তবহি দেখব ইছ রলে।

মাগো কিয়ে ইছ জীব অপার। কো অছু বীর বীর মহাবল পাউরি উতারয়ে পার॥ এ ॥

শ্বামর থাবর বাব কার্যার কার্য

সাধি সাধি ছরমি ঘরমি মহাবিকল
ঘন ঘন দীরঘ নিশাস।
মনমধ-দাহ- দহনে মন ধসি গেও
বরাথে চললি নিজ বাস॥
অবিরোধি প্রেম- পছ তুহুঁ রোধলি
দোঘ-লেশ নাহি নাহ।
বুন্দাবন কহ নিষেধ না মানলি
হামারি জোরে নাহি চাহ॥ ৬॥ ৪৬৭॥

গান্ধার ।

রোখে দোখলু পিয়া বিনি অপরাধে।
না জানিয়ে এত কি পড়ব পরমাদে।।
রজনী প্রভাতে পূরব পরকাশ।
যামিনী জাগি আওল মঝু পাশ ॥
শীতল ছলহ কর দেয়ল পায়।
মানে মুগধ মুই উপেখল তার।
কত রূপে বচন কহল দব মিঠ।
বদন ঝাঁপি হাম দেয়ল পীঠ॥
পালট হৈরি হেরি পহঁ মোর গেল।

(शाविकामां कर मत्रक (भन ॥ १ ॥ १७৮ ॥

ঞীগান্ধার।

ছুরি যব হরিখে বরিখে রস-বাদর সাদরে পুছুরে বাত। নির্থি বদন তোরি আফুল সো হরি নিজ শিরে ধরু ভুষা হাত্ত। মানিনি কিয়ে কঠিন তুরা মান।
ছলে বলে দিঠি জলে তোহে কত সাধল
পালটি না হেরলি কান॥ ধ্রং॥

ভছু শুণে শুণিগণ ঝুরুরে রাতি দিন তুরা শুণে উনমত সোই।

বিনি অপরাধে তাহে উপেথলি জনম গোঙামবি রোই ॥

তাকর বচন প্রবণে নাহি শুনলি রোথি চলল যব নাহ।

অব কাতর দিঠে মঝু মুথ হেরসি পাই মনোভব-দাহ॥

বিহি তোহে বাম মান-ধনে বঞ্চল
নাহ বিমুখ ভৈগেল।
গোবিন্দাস কহই চিতে মানই
ইহ বছ দারুণ শেল॥ ৮॥ ৪৬৯॥

# সুহই।

স্থি নাহি বোলহ আর।
হাম ফল পারম্ভ তার ॥
সহজেই মতি গতি বাম।
তৈছন ইহ পরিণাম॥
বৈছে গরবে হিয়া পুর।
সো অব হোরল চুর ॥

অবহাঁ না বহু পরাণ।
সমূচিত করলহাঁ মান॥
বৈছে রহত মধু দেহ;
সোই করহ অব থেহ॥
তুহাঁ বদি না প্রবি আশ।
কি কহব বলরাম দাদ॥ ১॥৪৭•॥

# कारमान।

স্থানির কত সমুঝারব তোর।
পারলি রতম যতন করি তেজলি

অব পুন সাধদি মোয়।

কত কত গোপ- স্থনাগরী পরিহরি

যব তুয়া বন্ধে বর-কান।

তবহু মান পরম ধন পাওলি

না হেরলি কমল-বয়ান॥

বিনি অপরাধে উপেখলি মাধব না বুঝলি আপন কাজ। না জানিয়ে কোন কলাবতী-মন্দিরে অব রহুঁ নাগর-রাজ॥

যাহে বিমুপল এফ রহই না পারই
তাহে কি হেন ব্যবহার।
গোবিন্দদাস কহ অবংধনি সমুঝলি
পুন হেন না করবি আর ॥১০॥৪৭১॥

## এ প্রীপ্র কর্তক ।

## তিরোভা ধানশী।

হরি বড় গরবী গোপমাঝে বসই।

ঐছে করবি বৈছে বৈরী না হাসই॥
পরিচর করবি সমর ভাল চাই।
আছু ব্যব হাম তুরা চতুরাই।
পছইতে কুশল উলটারবি পাণি॥
বচন না বাকবি ভনহ সেরানি॥
হরি যদি কেরি পুছরে ধনি তোর।
ইঙ্গিতে বেদনা জানারবি সোর॥
ইং রস বিভাপতি কবি ভাগ।
মান রহক পুন যাউক পরাণ॥ ১১॥ ৪৭২॥

#### ভূপালী।

চুটল রাইক মান।
হৈরি সধী করল পরান।
বাহা বহু-বল্লভ কান।
ভূরিতে মিলল সোই ঠাম।
রাইক সহচরী গেল।
নাগর হরবিত ভেল।
গল গদ কহ বন্ধ-কান।
রাই কি তেজল মান।
পুন কিয়ে মিলব মোর।
বৈছে সকল দিন হোর।

সো মৃথে স্থামর বাত।
শুনি কি জুড়ারব গাত।।
বিভিন্ন লোচন হেরি।
মোহে জীরারব ফেরি।।
তুহু সথি করহ সহার।
তব হাম মিলব তার।।
যবহু করল ধনী মান।
তব্ধরি আকুল পরাণ॥
শুনি স্থী কহে মৃছ বোল।
অব তুহু নহ উত্রোল।।
তুরিতে চলহ মঝু সাথ।
বংশী মানাওব তাথ। ১২।। ৪৭৩।

#### তথা রাগ

স্থীর বচনে অথির কান।
বুঝল স্থানরী তেজল মান।।
অরুণ নয়ানে ঝরয়ে লোর।
গদ গদ স্থারে বচন বোল।।
কেমনে স্থানরী মিলব মোয়।
অস্কৃল যদি বিধাতা হোয়।
এত কহি হরি স্থীর সঙ্গে।
মিলল রাই আনন্দ রজে।।
হেরি বিধু-মুণী বিমুণী ভেল।
কাস্থরে নো স্থী ইক্ষিত কেল্যা।

চরণ-ক্**মণে পড়ক কাম**।
স্থীর ব্যহন **ডেক্জল** সাম ।
ধনী মুথ-পশী হোৱি চকোর।
হৈরিতে **ছুহ<sup>\*</sup>ক গল**য়ে লোৱ ।।
হৃদয় উপরে ধ্রকারাই।
প্রেমদাস তব জীবন পাই ॥ ১০ । ৪৭৪ ।।

ইতি ত্রিধা কলহাস্থারিতা । ইতি দিতীয়-শাথায়াং পঞ্চদশ-পল্লবঃ।।

वर्ष मानश्रकत्राः।

তত্র সহত্মান: ।
নারকাঙ্গে ভোগচিছে দুটে গতি ছজ্জ-মান: ॥
তছচিত প্রীগৌরচন্দ্র: ।
বরণ কাঞ্চন দশবাণ ।
অরণ বসন পরিধান ॥
অবনত মাথে গোরা রহে।
অরণ নরানে ধারা ঘহে ।
ক্রণে করতেল রাখি ।
ক্রণে করতেল নাখে লিখি ॥
কান্দিরা আতুল গোরা বায় ।
বোস্ধার আতুল গোরা বায় ।
বাস্থাবে ঘাবে গুল গারা।
বিশি দিশি আন নাছি ভার ।। ১ ॥ ৪৭৫ ।।

#### शामणी ।

মদন কুঞ্জ পর বৈঠল মোহন রুকাসথী মুথ চাই। বোড়ি যুগল-কর মিনতি করত কত ভূরিতে মিলায়বি রাই।।

হাম পর রোখি বিমুখ ভৈ ফুলরী ববহু চলিল নিজ গেহা। মদন-ছতাশনে মরু মন জারল জীবনে না বান্ধই থেহা॥

ত্হঁ অতি চতুরী- শিরোমণি নাগরী
তোহে কি শিথারব বাণী।
তুহু বৈনে হামারি মরম নাহি জানত
কৈছে মিলায়বি আর্নি।।

চন্দন চাঁদ পবন ভেল রিপু-সম বৃন্দাবন বন ভেল। মধ্র কোকিল কত কার দেওত মধ্ মনে মনমথ শৈল।

ছল ইল নিয়ন বিয়ান তরি বোগত চরণ পাকজি গজি বার। হা কাংসোধনী হামে না হেরব সিংহজুপতি রস গার /। ২ ।। ৪৭৬ ।।

#### গ্রীগান্ধার ।

মাধব নিপট কঠিন মন তোর। হাত হাত হাম বাত শিথায়ল বাত না রাখলি মোর ।।

সো বর নাগরী সহজেই স্থন্দরী
কোমল অস্তর রামা।
বহুত যতন করি তোহে মিলায়লু
কাহে উপেধলি বামা।

তুহঁ অতি লম্পট করনহি বিপরীত প্রেমক রীত না জানি। হাতৃক লছমী চরণ প্রের ডার্সি কৈছে মিলারব আনি।

বাদ্র ছাগি আগি সম উপজ্ল রজনী গোঙায়ল জাগি। তোহারি বচনে হাম এক বেরি যায়ব মিলন তুয়া নিজ্ ভাগি॥

মোহন-মানগ বৃথি লোড়ী আওল মিলল রাইক পাশার বিজ্ঞান দি ভূপতিনাধ বিজ্ঞান করিছিল মান্ত স্থানে উপজ্ঞান হার ৪০৪/৪৭৭ ॥

#### ं शनभी।

মদন কুঞ্জ তেজি চললি চতুর দৃতী প্ৰনক গতি সম গেল। ক্ষিতি নথে লেখি 
দেখি মুখ ঝাঁপল রাই উত্তর নাহি দেশ।

চতুর দৃতী তব মনহি বিচারল কহত ললিতা সঞ্জে বাত। কাহে বিমুখ ভই বৈঠলি ছ্বরি কি ভেল আজুক বাত॥

হেরি ললিতা স্থী মৃত্মুহ বোলত হামারি করম মতি ভেলি। নাগর কিশোর কুঞ্জে নিশি বঞ্চল চ**ন্দ্রাবলী সঞ্জে কেলি** ॥

হাসি হাসি নিয়ড়ে বাই দৃতী বৈঠল কছতহি মধুরিম বাণী। ইহ লঘু লোখ বে মানসি কো কহে তোহে সিয়ানী।

উঠ উঠ স্থল্রি মান দ্র করি বাহু প্রসারি করু কোর। ফট্রিক হাত বাত নাহি ভনৰ কোপে ভরল তত্ত কোর 🖟

রাইক নিঠর কিন ক্রন শুনি সহচরী কোপে ভর্ম সব গাত। ভপতিনাথ রোথে তব বৌলত যবহু ফটকল হাত ॥ ৪ ॥ ৪৭৮॥ <sup>মূল কি প্রতি ক্রি</sup>ব্রাগ। অধিল-লোচন-তম- তাপ-বিমোচন উদয়তি सानम करन। এক নলিন মুখ মালন করায়ে জানি ইথে লাগি নিন্দহ চব্ৰে 📗 স্কুলরি বুঝল তুয়া প্রতিভাতি। গুণগণ তেজি দোষ এক ঘোষসি ্ অন্তে আহীরিণী জাতি।। সকল জीব-জন মন্দ হুগন্ধ হুশীতে। দীপক জ্যোতি পরশে যদি নাশয়ে ইথে লাগি নিন্দ মারুতে॥ স্থাবর জন্ম 💮 💮 ুক্টট পতক্ষ ्राप्ताः ऋथः अत्र नकन नदीरतः । व्यापार । কাগজ পত্ৰ বিভাল কৰিব পুরশোধুৰ নাশয়ে रेए नानि निन्मर नीत्र ।। থেনে খেনে সকল কুত্রম মূল তারিয়ে निर्मि वह कश्मिनी मार्क D यमि के कि ইথে কালি নিন্দাই উদ্দে।।

भीक भाग खन कि का का আট ছিৰুণ স্থী মাঝে। চল্পত্তিপতি অতি আকুল ভো বিভূ वियान ना शाद्रिम नाटक ॥ १ ।। ११२ ।। কামোদ। স্থী হে কাহে কহসি কটুভাষা। এছন বহু খণ এক দোষে নাশই এक खन बल दिसंस नामा ।। क ।। কি করব অপ তপ দান এত নৈষ্ঠিক यकि कक्षणां नावि सीता। यनम् कृत नीन धन जन योजन কি কর্ষ লোচন-ছীনে।। গরল-সহোদর গুরু-পত্নী-হর রাহু বমন তনু কারা। বিরহ-ছ্তাশন বারিজ-নাশন শীক্ষপ্রণে শশী উদ্ধিয়ারা।। পরস্থতে অহিত যতন নাহি নিজস্পতে কাক-উচ্ছিই ক্স পানী। মোলৰ অৰ্থণ স্থাপ এক পিক त्वान्छ म्युजिम वानी II কান্ত্ৰক থিৱীতি কি কহৰ রে স্থি সব ৩৭ মূল অমূলে

ক্ষমী প্রস্তি : শগৰি করে শভ শভ তবহি প্রজীত নাছি বেংকে।। পর-পরিরম্ভন চুম্বৰ অলিম্ব সঙ্কেত করি বিশোরাসে। व्यान त्रम्गी जटक ला निर्मि वक्ष्ण মোহে করল নৈরাশে।। স্থলর সিন্দুর নয়নক অঞ্জন नकक मन नथ-दत्रश । কুৰুম চন্দন অকে বিলেপন প্ৰাত সময়ে দিল দেখা ৷৷ দশগুণ অধিক অনলে তকু দাহিল রতিচিত্র দেখি প্রতি অঙ্গে। চম্পতি পৈড কপুর যব না মিলব তবহু মিলব হরি সঙ্গে। ৯।। ৪৮০।। কামোদ। রাইক নিঠুর বচন শুনি সহচরী া মিলল কাতৃক পাশ। পত্তক শ্রম-ভরে বচন করে গদ গদ ্ৰব্ৰত্য বহুই নিশাস ॥ गांधव क्रक्तंत्र मानिनी कानि। ৰিপরীত চরিত হৈরি ভেল চমকিত ना कृत्रस्य अक स्माध वानी।। "কা" বোল বোলইতে শুনিতে না শারই अवन मृत्रद्ध कुरे भागि । द्यामिन द्यामिन भून स्क स्कार वक्रत नवह क्या शनि ।।

जुना खन नीम अवरण नाहि अनरत তুয়া রূপ রিপু-সম জানি তুরা নিজ জন সঞ্জে সম্ভাষ না করয়ে रेक्ट मिनायंव आनि ।। দীল বস্ম বর কাচক চুড়ি কর প্তিক মাণ উতারি। করি-রদ চুড়ি কর মোতি-মাল বর পহিরণ অরুণিম শাড়ী।। অসেত চিত্র কর- উর পর আছল মিটারলি চন্দ্রলাগাই। মুগ্মদ-তিলক ধোই দুগঞ্জ কুচ-মুখ চন্দ্ৰে সাজাই।। চাক চিবুক প্র এক তিল আছল নিন্দি মধুপ-স্ত খামা। তণ অত্যে করি ম্লয়জ রঞ্জন স্বহু ছাপায়লি রামা।। জলধর হেরি চক্রাতপ ঝাপল শামরী স্থী নাহি পাশ। তমাল ভরুগণে চুণে লেপারল শিখী পিক দূরে নিবাস ॥ ভুৱা ঋণ বোগত এক শুক পণ্ডিত শুনি তহি উঠি রোষ্ট। পঞ্জর মটকি ফটকি কর পটকিতে

शह धत्रम दाम यहि ॥

मधुकत फरत धनी हिल्ला क्रिक क्रिक क्रिक লোচনে অল ভবিপুর। খাম চিকুর হেরি মুকুর করে পটকল हेि टेक्टबन नकहून ॥ (मक् नम् मान कि स्टामक नम (मिथ एक दत्र म्यान। চম্পতিপৃতি অব বাই মানাইতে আপ দিধারহ কান ॥ १ ॥ ৪৮১ ॥ ্লার রাণ ১৮ **তথা রাগ**ানুক সংগ্রিক वत-नाभव माजर नागती स्वमा। মুকুট উতারি শিধী দোঙারণ বেণী বিরচিত কেশা ট চন্দন ধোই সিন্দুর ভালে রঞ্জই লোচনে অন্তন অন্ত। কুণ্ডল খেলি কৰ্-ফুল পহিবল ভরি ভরু কেশর পঙ্কা ॥ নেশর থচিত শতেখনী পহিরল **চুড়ি कनक कत कर्छ।** চরণ-ক্ষুল প্রশে তা শর মঞ্জী গরে। कॅर्फ़ुली मारक कमर-कूनूम छति আরম্ভন কুচ-আভা। অক্লব্যেকর বিদ্যালয় পাটী পহিরল

বকু বিলোকন শোভা 🕯

ধরি পরিবাদিনী ভাম স্থানিলনে শুভ অনুকৃল পরানে। প**হিলটি** বমি চরণ তুলি মোহন ব্ৰিয়া-গতি-লচ্ছণ ভানে।। ঐছন চরিতে মিলল যাহা স্থন্দরী পুরহি একলি ঠারি। করে করি যন্ত্র তন্ত্র সোঙারত কো ইহ লথই না পারি॥ রাইক নিকটে বাজাওত স্থল্রী ভনইতে ভৈগেল সাধা। व नवरयोवनी नवीन विष्णिनी আও ফুকারই রাধা। ভ্ৰইতে খ্ৰাম হর্থি চিতে আপন উঠি ধনী আদর কেল। বাহ পাকড়ি নিজ আসনে বৈসায়ল কত কত হর্ষিত ভেল।। তহিঁ বাজাওত বীণা স্মাধুরী त्रिवि (मग्नम मिश-मान। ঐছে বাজাওত হামারি যদ্ভিয়া মোহন যন্ত্র রসাল।। স্থ্য অপস্থী কিন্তু নাগ-কুমারী তুহু अत्राप्त कहित कुह स्थात्र। অজুক দিবস সফল করি মানলু হল ভ দরশন কোর।।

নাম গাম উহ কুল-অবলয়ন ব্ৰজে আগমন কিয়ে কালা। সুখমনী নাম মথুৱা পুর বছ কুল গুণি-জনে পীড়ই রাজা।।

ধনী কহে তুরা গুণে রিঝি প্রসন্ন ভেল মাগহ মানস বোর । মনোরথ কর্ম বাচলি যদি স্থন্দরী মান-রতন দেহ মোর ।।

হাসি মুখ মোড়ি পীঠ দেই বৈঠল কাফু কয়ল ধনী কোর। টুটল মান, বাঢ়ল যত কোডুক ভূপভি কো কফ ওর॥ ৮॥ ৪৮২॥

# **ভূপালী**।

অপরপ রাধামাধব রক।

তৃত্জর মানিনী-মান ভেল ভর্ম।

চুম্বই মাধব রাই বর্মান।

হেরই মুথ-শলী সজল নরান।

স্থীগণ আনন্দে নিমগন ভেল।

হুহুঁ জন মন মাহা মনসিজ গেল।

তুহুঁ জন আকুল হুহুঁ করু কোর।

হুহুঁ দুর্শনে বিভাগতি ভোর।। ৯।। ৪৮০।

ইতি বোড়ল-পর্বর বিভাগতি

পুনশ্চ মানঃ। প্রকারান্তরং। তত্ত শ্রীগৌরচন্ত্রঃ।

সুহই।

গোরা পহঁ বিরলে বসিয়া।
অবনত বদন করিয়া।
পদ-নথে ক্ষিতি পর লেখি।
নয়ন লোরে নাহি দেখি॥
মানে মলিন মুখটাদ।
হেরি সহচর-মন কাঁদ॥
কাহে না কহ কছু বাত।
প্রেমদাস শিরে দেই হাত॥১॥৪৮৪॥

পঠমঞ্জরী।

মানে মলিন বদন-চাঁদ।
হৈরি সহচরী-হৃদয় কাঁদ॥
অবনত করি আপন শির।
স্ঘনে নয়নে বহয়ে নীর।।
ক্ষিতি-তল নথে লিথই রাই।
থির নয়নে রহয়ে চাই।।
স্থীগণে কছু না কহে বাত।
অরুণ বসন খদয়ে গাত॥
ক্ষাল কবরী না বাদ্ধে তায়।
কাতরে শেথরে দাঁড়াঞা চায়।। ২। ৪৮৫।।

## কৌ রাগিণী

সকালে অমনি বুন্দা ঠাকুরাণী আইল ললিডা-বাস। কহিলা সকলি কাছুর বিকলি মধুর বিনয় ভাষ।

ন্তনিয়া ললিতা মনে পাইয়া বেথা হজনে চলিলা ধাই। সজল নয়ানে মলিন বয়ানে

যেখানে বসিয়া রাই ॥

দলিতা যহিন্না তারে উঠাইয়া করিলা আপন কোরে। আপন বসন অঞ্চলে তথন

মোছয়ে নয়ন-লোৱে।।

ত্হঁরস্বতী জগতে থেরাতি রূপে গুণে নাহি সীমা। সে বহু-বলভ আমনের হুলভ জানিয়ানা দেহু কমা।।

The tree does set

শত প্রধার এক দোর তার হাড়িতে উচিত হয়। সে তোর কারণে কান্দরে কাননে

## বুনোঞ্চি জয়জয়ন্তী।

বিমোহে ব্যাকুল

८ १४ वृ नमक्सात । निष्क করই নীর অপার।।

লেপি মলয়জ- প্রস্ক মৃগ-মদ

্ তামরস ঘন-সার।

নিজ পাণি-পল্লবে মুদল লোচন

ধরণী পড়ু অসম্ভার।।

স্থগন্ধি শীতল বহুই মন্দ

মৃক্দ মৃল্যু স্মীর।

(জমু) প্রলয় কালক প্রবল পবিক

**न**रुटे विश्वन मंत्रीत ।।

অধিক বেপথু টুটি পড়ু ক্ষিতি

মস্ণ মুকুতা-মাল।

অনিল-ভরে ক্রম্ তমাল তরুবর

মুঞ্চ কুস্থম-জাল।।

মান-মতি তেজি চলহ স্থল্রি থাঁহা রসিক রায় রসাল।

স্থাৰ শ্ৰুতি অধি - সুনস দণ্ডক কবি ভূপতি কইহার।। ৪।। ৪৮৭।।

#### শ্ৰীগানার ।

সুন্দরি আর কত সাধসি মান। তোহারি অৰ্ধি করি, নিশি দিশি ঝুরি ঝুরি কামু ভেল বছত নিদান ।। এ ।। কি রদে ভুলালি ও নব নাগর নিরবধি তোহারি ধেয়ান। রাধা-নাম কৃহই যব পশ্বিক ্ৰনইতে আকুল কান।। পুরুথ বধের হেতু ভুঙ্গা অভিমান কোন শিখায়ল রীত। লেহ-বিচ্ছেদ পুন সহই না পারিয়ে ্গোবিন্দাস কহ নীত।। ৫।। ১৮৮॥ <u>জীরাগ</u> তেজন তুরা সঞ্জে অঙ্গ সঙ্গহি শয়নে স্থপনেহি ভোর ৷ চমকি উঠি খন কাঁপি মূরছল আধ নাম লেই তোর॥ गानिनि त्रा कि हिशा नाहि जात। কতহঁ সকরুণে তোহে প্রবোধলি অবহ জৈছে বিরাগ। এ।। সোতিত হ'লব সোম্থ নির্সল ভেল। লো ভূছ লোচনে নীর নিকদরে

এ হৰ কোনহি দেশ ৷

হরিকিংরীতি নহি তাল বিরহে জীবতি তেজি ওদন পান। তৃহ সৈ স্করি ভেলি ছবরী এ বড়ি সংশয় মান ॥ দেহ তেজবি তাহে পেথবি তেজবি ও নব লেহ। মাধ্ব উন্মত অত্যে না মান্ত দাস গোবিন্দ থেই॥ ৬॥ ৪৮৯॥ সুহই। খোর তিমির অতি ঘন ঘন কাজর নিবসই বিপিনে একান্ত। পিক-কুল বোলে সমাধি সমাপ্ট চমকি নেহারই প<del>ত</del>্ব॥ ্ৰমানিনি ইথে কিয়ে নাহি অবধান। নিমিথ বিমুথ বছু জীবন সংশয় কি ভেল তা সঞ্জে মান॥ যাক শয়ন পুন শিরীষ-কুন্তম-সম অতি শ্বথময় পরিষক্ষ। সো বিরহানলে লুঠই মহীতলে লোরে ততহি করু পন্ধ॥ শেখলু সো পুন তোহারি পরশ বিষ পানী-বিহীন জমু মীন 🖟 কহ খনপ্ৰাম- লাস লাহি জগ মাহা रिष्ट्रम ८ अम कठिम ॥ १॥ ४৯०॥

क्रोक्षेत्र कारू े **शामणी ।** यात्र के विकास विकास

नश्रात्नत्र सीत्र

চাদ নির্থিয়ে তায়।

চাদ লেম কেন তোহারি বদন

মুর্ছিত গড়ি যায়॥

রামাহে তেজহ কঠিন মান।

পুরুখ-বিরহ তুঃসহ কঠিন

এবার রাথহ প্রাণ॥ ধ্র ॥

কুন্ত্ম-লতাধরি আলিজরে হরি

ত্যা কলেবর ভানে।

প্রশে বিবস ভৈগেল মাধ্ব

মূরছে মদন-বাবে II

শিরীন-কুমুনে শেজ বিছাইয়া

' কাম-শরে অগেয়ান।

গ্রল অধিক চন্দন-লেপন

তৈজিতে চাহে পরাণ। ৮॥ ৪৯১॥

কামোদ।

शिवन **डिल औ**र ताथि दावन

वहरे निका नव गांवा

ভাল-মৰা তুই

পর উপকার সে শাভ 🎼

স্থলরি হরি-বধে তুহুঁ ভেলি ভাগী। রাতি দিবস সোই আন নাহি ভাবই কাল বিরহ তুয়া লাগি ॥ এ ॥ বিরহ-সিন্ধু মাহা তুবইতে আছয়ে তুয়া কুচ-কুস্ত নামি দেই। তুহঁ ধনি গুণবতী উধার গোকুল-পতি ত্রিভুবন ভরি যশ লেই। লাথ লাথ নাগরী যো কামু হেরই সো অভদিন কবি মান। তয়া অভিমান লাগি সোই আকুল ভেল কবি বিদ্যাপতি ভাণ ॥ ৯ ॥ ৪৯২ ॥ খ্রীমত্যুকি:। ধানশী। ্ৰ স্থি হে না বোল বচন আন। ভাল ভেল হাম অলপে চিহুত্ব रेयक्रन कृष्टिन कान ॥ अ ॥ কাঠ ক্রিল ক্যুল মোদক উপরে মাথিয়া গুড়। কন্মা-ক্রুস উপরে হুধক পূর্া কামু সে স্থলন হাম হরজন ভাহার বচনে বাই। হাদর মুখেতে কোটিকে শুটিক পাই ৰ ভালত

পোষ নাছি মানে গুণ না বিচারে
সহক্ষে চপল কান।।
ফাটক যোগেখনে যে ফুলে পূজ্ঞে
সে ফুলে ধরয়ে বাণ॥
যাহার হৃদয়ে যেমন স্বরূপ
তাহা ছাপি নাছি রয়।
এ সব চাতুরী বৃথিতে না পারি

#### ভিরোভা ধানশী ৷

কবি বিস্থাপতি কয় ॥ ১০ ॥ ৪৯৩ ॥

সজনি না কর কাম প্রস্ক ।
পানী না সেচই দপ্ধন অক ॥
ভালে হাম কলাবতী ভালে তুহুঁ দোতী।
ভালে হাম কলাবতী ভালে তুহুঁ দোতী।
ভালে জন-বচন করলু হাম আন।
সো কল ভুজল ইহ পরিগাম ॥
প্রাইলহি কি কহব আরতি-রাদি।
স্কপট প্রেমে সব পরিজনে হানি।
ভাল ভেল অলপে করল সমাধান।
পূর্বক প্রশাক্তি পারম্ব পরাল ॥
চল্লিক-তক্ব বলি বিধ-তক্ব ভিল।
অতরে মনোর্ধ সব প্রে গেল ॥
বর্ম না জানি করলু অম্বরাগ।
জানদাস কইই জুক্লী অভাগ ॥ ১১ ॥৪৯৪॥

পহিলহি চাঁদ করে দিল আনি।
কশিল শৈল-শিধরে এক পাণি॥
আব বিপরীত ভেল সব কাল।
বাসি কুস্মে কিয়ে গাঁথই মাল॥
না বোলহ সজনি না বোল আন।
কি কল আছয়ে ভেটব কান॥ জ॥
অস্তর বাহির সম নহ রীত।
পানী তৈল নহ গাঢ় পিরীত।
হিয়া জয়ু কুলিশ বচন মধু-ধার।
বিষ-ঘট উপরে হধ উপহার।।
চাতুরী বেচহ গাহক ঠাম।
গোপত প্রেম-মুথ ইহ পরিণাম॥
তুহঁ কিয়ে শঠ নিকপটে কহ মোয়।
জ্ঞানদাস কহ সমুচিত হোয়-॥১২॥৪৯৫॥

#### গান্ধার।

কাঞ্চন জ্যোতি কুসুম পরকাশ।
রতন ফলিবে বলি বাঢ়ারত্ব আশ।
তাকর মূলে দিত্ব হুধক ধার।
ফলে কিছু না হেরিয়ে ঝনঝনি সার।
জাতি গোরালিনী হাম মতি-হীনা।
কুজনক পিরীতি মরণ অধীনা॥
হা হা বিহি মোরে এত হুধ দেল।
লাভক কি লাগি মূল ভূবি গেল॥

কৰি বিভাগতি ইহ অৱসাৰ। কুকুমক ৰাজুৰ ৰহত সমান গঠ আ৪৯৬॥

# **.** (कमात्र।

স্থানি ভূহ সৈ কর্দি মঝু হিত। হিত অহিত সর্হ হাম বুলিয়ে আনে হোমত বিপরীত।

লঘু উপকার করেরে সব গুণি-জনে মানরে শৈল সমান।

অন্তল হিত কররে মৃক্থ জনে মানরে সরিষ প্রমাণ।।

কান্ত্ৰ রীত ভীত মঝু চিতহিঁ না জানি কি হল্পে পরিণাম।

ঐছন পিরীতক বশ নাহি হোয়ত বৈছন কীর সমান।।

কি কহব রে সথি কহি কহি দেখলু অত্যে চাহি সমাধান।

যাকর যো খাণ কবছ না যাওত জ্ঞানদাস পরমাণ ॥১৪॥৪৯৭॥

মছন মানে বিমুগ তৈ রাই।
করে ধরি জোকী মানাকই তাই।।
রোধ্যে চলই বর করে কর বারি।
চর্লে পড়বা তব বারু প্রারি।।

ত वह भिन-पूथी अपूथी ना (छन। হোই নৈরাশ তব স্থী চলি গেল।। একলি বন মাহা গাঁহা বর কান। আওল স্থী তাহাঁ বিবস ব্যান ।। কি কহব মাধ্ব মানিনী মান। জ্ঞানদাস তাহা কি কহিতে জান ॥১৫॥৪৯৮॥

তথা বাগ।

মাধ্ব রাধা স্বাধীনা ভেল।

বল্ভ যত্ন

পরকার বঝায়ল

তব ধনী উত্তর না দেল।।

ভোহারি কেশ

কুত্ম তৃণ তামূল

ধরলহি রাইক আগে।

কোপে কমল-মুখী পালটি না হেরল

বৈঠলি বিমুখ বিরাগে ॥ ১৬ ॥ ১৯ ॥ ইত্যাদি গীতং জেরং।

কেদার।

না মিলল স্থানরী শুনি ভৈ ক্ষীণ। বোরত মাধব অব নিশি দিন ॥ দোভীক কর ধরি করু পরিহার। কছইতে নয়নে গলয়ে জল-ধার॥ বাউর সম কত করু পর্লাপ। শত গুণাধিক মনে মনসিজ-তাপ।

"রা" "রা" "রা" ধরি আথর এক।
গদ গদ কণ্ঠ না হর পরতেক।
মানিনী-মান বানারব হাদ।
কবি:এত ধাবরে মানিনী ঠাম ॥
পুন কেরি আওত সহচরী নাথ।
ঐছে পতাগতি নাহিক বোরাথ।
কত প্রবেধি করল স্বী থির।
জ্ঞানদাস হেরি তেল অথির॥ ২৭॥৫০০॥

দৃত্যুক্তি ৷

গগনক চাঁদ

হাত ধরি দেয়লু

কত সমুঝায়লু রীত।

যত কিছু কহল স্বহ<sup>ত</sup> ঐছন ভেল

চিত-পুতলী-সম রীত।

माधव देवांच ना मानहें शहि।

বুঝাইতে অবুল অবুল করি মানই

কতমে বুঝায়ৰ তাই ॥

তোহারি মধুর গুণ কত পরথাপলু

**प्रत्ये जान क**र्ति भारत।

বৈছন জুহিন ক্রিক্ট বির্বাহনীকর ক্য়নিনী না মহে প্রাণে

যতনহিঁ বছ

বোধে চৰাৰ সমী পাৰ দ

महम विद्रम किछा का अपने का प्रक्रिय महत्त्री (मा वी क्षांत्र कांन्समान ॥ ५৮॥ ८००॥ নিজ উক্তি। গান্ধার

সজনি না ব্কিষে এ মঝু ভাগ।
আকুল চিত মঝু তাহি সজাগ॥
বচনহি নিজ করি না বোলহে রাই।
ম্ঞি জীবত বিহু না বোলহ তাই।
মঝু পরসঙ্গে সে না দেই কান।
তাহা বিহু মঝু মুথ না কুরয়ে আন॥
সমাধান চাহি না হয় সমাধান।
তৈ অতিরেকে হানয়ে পাচ-বাণ॥
শেথরে কহয়ে প্রিয় মন কর থির।
সহজেই নায়রী ভাব-গভীর॥১৯॥৫০২॥

ভাটিয়ারি।

সহচরী-বচনহি বিদগধ নাগর
আকুল অথির পরাণ।
ত্রতহি গমন করল বাঁহা মানিনী
ঢল চল সজল নয়ান॥
কহ স্থি কৈছে মিটায়ব মান।
মোহে পরিবাদ করন্নে যত রঙ্গিলী
হাম যৈছে উহ পরমাণ॥ জ্ঞ॥
তাহে বিন্থু নিশি দিশি আন নাহি হেরিয়ে
ও মুধু সতত ধেয়ান।
ও মধুর বোল প্রবাণ মধু লাগি রহাঁ

সো গুণ অহনিশি গান ॥

এত কহি মাধ্ব মাণ্ড মিলল রাই পারে ঠাড়ি রহল উহি ঘাই।

অবনত বন্ধানে \_\_\_\_\_ বহুল এব মানিনী জ্ঞানলাস মুখ চাই ॥ ২০ ॥ ৫০০ ॥

তত্র শ্রীক্ষণ্ড পরিহার:।

রামাহে ক্ষম অপরাধ মোর।

মদন-বেদন না যায় সহন

শরণ লইমু তোর।

ও চাঁদ মুখের মধুর হাসনি

সদাই মরমে জাগে।

মুথ তুলি যদি ফিরিয়া না চাহ আমার শপথি লাগে॥

তোমার অঙ্কের পরশে আমার চিরজীবী হউ তমু।

জপ তপ তুহঁ সকলি আমার

করের মোহন বেণ্।

দেহ-গেহ-সার সকলি আমার

তুমি দে নয়ান-তারা।
আব তিল আমি তোমা না হেরিলে

সব বাসি আন্ধিয়ার। ॥

এত পরিহার করিনে তোমার

মনে না ভাবিহ আন।
কল্প নিবিলা নেহলে আমার

দাস করি অভিযান।

জ্ঞামদাস কহে শুনহ স্থলরি এ কোন ভাব ধুবতি। কামুসে কাতর সদয় হইয়া কেন না করহ প্রীতি॥ ২১॥ ৫০৪॥

### বরাড়ী।

শুন শুন মাধব না বোলহ আর ।

কি ফল আছরে এত পরিহার ॥

পাওল তুরা সঞে প্রেমক মূল ।

ধোরলু সরবস নিরমল কুল ॥

পুন কিমে আছরে তুরা অভিলাব ।

দ্রে কর কৈতব অম রতি-আশ ।।

অলপে বুঝলু হাম তুহাঁকে চরিত ।

নামহি বৈছে অন্তর দেই রীত ।।

কাহে দেরসি তুহঁ আপন দিব ।

আছরে জীবন সেই কিয়ে নিব ॥

জ্ঞানদাস কহ কর অবধান ।

তুরা নিজ-জনে কাঁহে এত অপমান ॥২২॥৫০৫।।

## সুহই।

অন্তুনর করইতে অবগতি না কর না বৃথিয়ে অস্তুর তোর। কুটিল নেহারি গারি যব দেয়বি তবহিঁ ইক্র-পদ মোর॥ মালিলি অব কি করব ছুর্নিলে।

মনমথ গরল
তোহারি পরশ-রদ বিলে। এ ।

জন্মত জালি পাণি পদারমে
বিপদে বুঝিয়ে উপকার।

তব হাম জনম সফল করি মানিয়ে
জগতে রহুয়ে যশোভার॥

দময় জানি অব কেপ নিবারহ
বেরি এক কর অবধানে।

বোর এক কর অববানে।
জ্ঞানদাস কহ নিজ-জন জানিয়া
অত্তরে করিয়ে সমাধানে॥ ২০॥ ৫০৬॥
তথা রাগ্য।

চাদ-বদনী তৃহঁ রামা।
কাঁহে ভেলি অতি বামা॥
হাম চকোর তৃরা আশে।
পিবইতে কক অভিলাবে ॥
তৃহঁ ধনি ভেলি বিপরীতে।
ল্রে গেল বিহি-বরনিতে॥
অহুগত-কিছর-দোথে।
তৃহঁ নাহি সমুঝলি রোথে॥
যরহঁ উপেথবি মোহে।
মরু বধ লাগের তোহে।
বির্দ্ধান বোহে।
বির্দ্ধান বোহে।
বির্দ্ধান বাব।।

## গ্ৰীৰাগ ।

শুক্জন-বচন শ্রবণে তুহুঁ ধারলি কোপহি রোখলি মোর। তুয়া বিনে শয়নে স্বপনে নাহি জানিয়ে স্কাপে কহল সব তোয়।

মামিনি মোহে চাহি কর জ্বরধান। দারুণ শপথি করিরে ভুলা পোচরে যাহে ভূহ° পরতীত মান।। গ্রু॥

কুচ-ৰূগ কনক মহেশ সম জানিয়ে তাপর ধরি হাম পাণি। নহে জানি ধরম- ঘটহি করি পরীথহ উচিত কহিয়ে এই বাণী॥

মনমধ-জনল সম্ভৱ মাহা জ্লভহি
তুহুঁ জমু কাঞ্চন-গোরী।
আনলে হেম সাহসে উঠায়ব
সাঁচি জানব তব মোরি ॥

তোহারি লোমাবলী কাল-ভুজনিনী হার তরঙ্গিণী জানি। গোবিন্দদাস ভণি পর্শ করহ ফণী নহে জানি ডুবহু পানী॥২৫॥৫ •৮॥

#### शानणी ।

পীন কনমা কুচ কঠিন কঠোর। বিশ্বিম নয়নে চিত হরি নিশ্র মোর। পরিহর স্থলরি দারুণ মান। আকুল ভ্রমর করব মধুপান॥ এ ধনি স্থন্দরি করে ধরি তোর। ্হঠ নাহি করহ মহত রাখ মোর॥ পুন পুন কত যে বুঝাব বারে বার। মদন-বেদন হাম সহই না পার ॥ ভণহ বিস্থাপতি তহু সব জান। আশা-ভঙ্গ-ইুথ মরণ সমান ॥ ২৬॥ ৫০৯॥

## ত্রীরাগ।

কি লাগি বদন ঝাঁপদি স্থলার হরল চেতন মোর।

পুরুথ বধের ভয় না করছ

এ বন্ধি সাহস তোর॥ মানিনি আকুল হদর মোর।

মদন-বেদন সহিতে না পারি

শরণ লইমু তোর॥ জ।।

কিমে গিরিবর

जा दाथि नागरत्र धना।

হিয়ার উপরে

বেড়িয়া বালক-চল ॥

এ কর-কমলে পরশিতে চাহি
বিহি নহে যদি বামা।
ভোহারি চরণে শরণ লইসু
সদয় হইবে রামা।
চঞ্চল দেখিয়া আকুল হইন্
ব্যাকুল হইল চিত।
কহে বিছাপতি শুনহ যুবতি
কাহুর করহ হিত ॥ ২৭॥ ৫১০॥

स्टुइड ।

কত কত অহুনয় করু বর-নাহ।
ও ধনি মানিনি পালটি না চাহ।
বহুবিধ বাণী বিলাপয়ে কান।
শুনইতে শতগুণ বাঢ়য়ে মান।
গদ গদ নাগর হেরি ভেল ভীত।
বচন না নিক্সয়ে চমকিত চিত।
পরশিতে চরণ সাহস নাহি হোয়।
কর যোড়ি ঠাড়ি বদন পুন জোয়।
বিদ্যাপতি কহে শুন বর-কান।
কি করবি তুহুঁ অব হুজ্জুয় মান।২৮॥৫১১॥

পুন: এক্সঞ্চ দৈন্তোকি:।

🗟 ব্লাগ

চাছ মুখ তুলি রাই চাহ মুখ তুলি।
নয়ান না চলে নাচে হিয়ার পুতলী।

পীক পিন্ধন মোর তুরা অভিলারে।
পরাণ চমকে বলি ছাড়ছ নিশ্বাসে॥
লেছ লেছ লেহ রাই সাধের মুরুলী।
পরশিতে চাহি কোমার,চরণের ধূলি॥
তুরা মুথ নির্বিতে আঁথি ভেল ভোর।
নরন-অঞ্চন তুরা পর-চিত্ত চোর॥
রূপে গুণে যৌবনে তুবনে আগুলি।
বিহি নির্মিল তুরা পিরীতি-পুতলী॥
এত ধনে ধনী ঘুই সে কেনে রূপণ।
জ্ঞানদাস কহে কেবা জানিবে মরম॥২৯॥৫১২॥

তথা রাগ।

হাসিয়া নেহার রাই হাসিয়া নেহার।
অন্থগত জনেরে পরাণে কেনে মার॥
যে চাদের স্থা-দানে জগত জুড়াও।
সে চাদ-বদনে কেন আমারে পোড়াও॥
অবনীর ধূলি তুয়া চরণ-পরশে।
সোণা শতবাণ হৈয়া কাহে নাহি তোষে॥
সে চরণ ধূলি পরশিতে করি সাধ।
জ্ঞানদাস কহে যদি করে পরসাদ॥৩০॥৫১৩॥
ততঃ স্থাজিঃ।

ভিরোতা ধানশী ।
সুসরি আর কিন্ধে সাধবি মান।
চরু সাগিয়ে ভোহে সাধবে কান।

ইজাদি জ্বো:।

স্থানির উলটি নেহারহ নাহ।

চাদ-অমিয়া বিস্কু চকোর না জীবরে
জানি করহ নিরবাহ॥
কতয়ে কলাবতী পশুপতি-পদয়ুগ
সেবইয়াকর আশে।

শো বহু-বল্লভ ভোহারি পরশ বিস্কু
দগধল মদন-হতাশে॥
শ্রাম স্থাকর নিকটিছ রোয়ভ
কুরু চিত-কুস্ম বিকাশ।

চঞ্**ল অন্তর** মান-তিমির রহ লোচন পড়ল উপাস॥

জ্ঞানদাস কহ অংলপ ভাগি নহ দৃতীক প্রশ না পাই ॥ ৩১ ॥ ৫১৪ ॥

#### গান্ধার।

বামা হে কি আর বলসি আন।
তোহারি চরণ- শরণ সো হবি
অবহু না মিটে মান॥
সোবর্জন গিরি বাম করে ধরি
যে কৈল গোকুল পার।
বিরহে সে ক্ষীণ করের ক্ষণ

कानी नमन क्या करता (र अपन চরণ-ধুগল-ভবে। এবে সে ভুক্ক- ভরমে ভুলল क्रमरम् ना धरत होत्त ॥ সহজে চাতক না ছাড়য়ে বত না বৈসে নদীর তীরে। নব জলধর বরিখণ বিফু ন পিয়ে তাহার নীরে॥ যদি দৈব-দোষে অধিক পিয়াদে পিরুরে হেরিয়া পোর। তবহু তাহারি নাম সোঙ্রিয়া গলয়ে শতগুণ লোর॥ ৩২॥ ৫১৫॥ কামোদ। কত কত ভূবনৈ আছয়ে কত নাগরী কত না কর্যে অভিনাবে। যো পুরুষ-রতন যতনে নাহি পাইয়ে সো তুয়া দাসক আশে॥ ক্তৰ্বার কহ কৈছে সাধসি মান। র্মময় রসিক- মুকুট বর নাগর চরণেহি সাধ্যে কান !! কি ভোর কঠিন মন বুবাই লা, পারিবেয় গুরুতর কৌশল মোর। नांश्र गहिमी रेगरह 5ब्रान लागियरे তাহে এক বিরন্ধতি ভোর॥

জীবন যৌৰন সফল না মানয়ে

কান্ত হেন বিদুগধ নাহ। জ্ঞানদাস কৃত্ত্ কৃতিহুঁ না ভূনিয়ে

পিরীতিক ইহ নিরবাহ॥ ৩০॥ ৫১৬॥

বরাডী।

চলইতে চাহি চরণ নাহি ধাবয়ে

রহিতে নাহিক প্রতিআগ।

আশ নৈরাশ কছুহ নাহি সমুঝিয়ে

অন্তরে উপজে তরাস॥

সঞ্জনি বচন না বোলসি আধা।

**ছুহু রস্বতী উহ** রসিক-শিরোমণি

रुट्ठे तम मा कत्रह वांशा क्षा

প্রেম-রতন জমু কনরা-কলস পুন ভাগো যো হোয় নিরমাণ।

মোভিম-হার বার শত ট্টরে

গাঁথিয়ে পুন অফুপাম ॥

হরক কোপানলে মদন দহন ভেল

তুরা উরে যুগল মহেশ।

পরিহর মান কালু-মুখ হেরহ

জ্ঞান কহরে সবিশেষ। ৩৪ ॥ ৫১৭॥

ভূপালী।

ভোহারি কোর পর যো হরি ভোর। ত্যা নাম লেই ধ্বহ ভেল্ ভোর ॥ **⊘**₹

## **নীপ্রস্থাতর**

কতিছাঁ গৈলি বলি মুরছল সেই।
তৃত্ পুন ভোরী না বাবহ থেই।
এ ধনি বিছুপ্তলি সো দিন তৌই।
কৈছে রহলি এত মানিনী হোই॥
তোহে না হেরি তিল বুগ ছিল যাক।
সো বিরহানলে পড়ল বিপাক॥
ফুল পর তুরা সঞ্জে শুতল বেই।
তুয়া আগে ধুলি লোটায়ই সেই॥
অবে না সহ ফুল মাল্ডী দাগ।
বিদ্ধান মদন-বাণ তহি লাথে লাখ॥
ক্রছাঁ নাহ তুরা হংখ না জান্।
গোবিল্দান কহ তেছহ মান্॥ ৩৫॥ ৫১৮॥
নাটিকা রাগিণী

মানিনি হাম কহিরে তুরা লাগি।
নাহ নিকটে পাই
তাকর বড়ই সভাগি ॥ জ ॥

निमक्त-रक्षा का कम्बास्य क्रांनस्य

জল তাহি জীবন হোয় : প্ৰ-ৰিহীন তন্ত্ৰ ভান্ন শুণায়ত

নাহ সমীপে স্থান বত বৈভব

অন্তব্দ হোরত বেটি। তাকর বিরহে সকল স্থানিশাদ তুহঁ ধনি গুণবতী বুঝি করহ রীতি পরিজন ঐছন ভাষ। শুনইতে রাই হৃদর তেল গদ গদ অস্কুমতি ক্রল প্রকাশ। ৩৬॥ ৫১৯॥

## বরাড়ী।

তুহঁ যদি মাধব চাহসি লেহ।
মদন সাখী করি থত লেখি দেই।।
হোড়বি কেলি-কদম বিলাদ।
দুরে করবি নিজ গুরুজন-আশ॥
মো বিনে স্বপনে না হেরবি আন।
হামার বচনে করবি জল পান॥
রজনী দিবস গুল গায়বি মোর।
আন যুবতী কোই না করবি কোর॥
গুছন করজ ধরব যব হাত।
তবহি তুয়া সঞ্জে মরমক বাত॥
ভণহ বিভাপতি শুন বর-কান।
মান রহক পুন যাউক পরাগ॥ ৩৭। ৫২০॥

#### কামোদ।

স্থানরি বেরি এক কর অবধান। ক্ষেম অপ্রাধ প্রেম-বাদ করবি যুৱু কৈছে ধরব প্রাণ্॥ ফু॥

## গ্রীপ্রীপদকল্পতর ।

লেখি লহ করজ দাস করি স্কলরি জীবন বৌবন রহ ভাগি। তুরা খ্রণ-রতন প্রবণে মণি-কুর্তীল এবে ভেল ত্রিভঙ্গ বৈরাগী।

পীতাম্বর গলে করি কর-মুগলে
মিনতি করহ তুরা আগে।
হাম হৈছে লাখ লাখ শ্রাম লুটত
তুরা ধুলি চরণ সোহাগে॥

মনসিজ-করে ধহু হেরি কাতর তহু বিছুরল ধন জন মারা। তহু তর লাগি শরণ হাম লেরলু দেহ পদ-পক্ষক হারা॥

ঐছন মিনতি করণ যব নাগর ধনী গোচন জল পুর। হেরইতে বদন রোদন করু ছহ° জন অব ঘনস্থাম মন পুর॥ ৩৮। ৫২১।

ইত্যাদি সংকীর্ণ-সম্ভোগঃ।

## . ভূপালী।

রাই যবে হেরল হরি-মুখ ওর।
তৈথনে হল হল লোচন জোর॥
ববহ কহলহি লহ লহ বাত।
তবহু কয়ল ধনী অবন্ত মাথ॥

যব হরি ধরলহি অঞ্চল পার্শ।
তৈথনে চর চর তহু পরকাশ।
বিব পাঁহাঁ পরশল কগুক সঙ্গ।
তৈথনে পুলকে পুরল সব অঙ্গ।
পুরল মনোরথ মদন উপদেশ।
কহ কবিশেধর পিরীতি বিশেষ॥ ৩৯। ৫২২।

## স্থ হিনী।

দ্রে গেল মানিনী-মান।
অমিয়া-স্রোবরে ত্বল কান॥
মাগ্যে তব্ পরিরস্ত।
প্রেম-ভরে স্থবদনী তফ্ জফু স্তস্ত।।
নাগ্র মধুরিম ভাষ।
স্থালরী গদ গদ দীর্ঘ নিশাস॥
কোরে আগোরল নাহ।
করু সন্ধীরণ রস নিরবাহ॥
লহু লহু চুষ্ট ব্যান।
সর্ম বিরম হাদি সজল ন্যান॥
সাহসে উরে কর দেল।
মন্হি মনোভব তব্ নাহি গেল॥
ভরি-স্থাথ তব্হি মনোভব মন্দ॥

ভরি-স্থাথ তব্হি মনোভব মন্দ॥

তব কছু নাহক হৰ। তণ বিভাগতি হৰ কি হৰ ॥ ৪০ ॥ ৫২০ ॥ ইতি দ্বিতীয়-শাধায়াং সন্তদন-পরবং ॥

জ্বথ দানঃ প্রকারান্তরং॥ ভত্তিত-প্রগোরচক্রঃ॥

স্থু হই।

কৃষ্ণ কৃষ্ণ বলি গোরা কাঁদে খনে খনে।
কত স্থ্যধূনী বহৈ জ্বন নয়ানে॥
ক্থাদ্ধি চন্দন গোরা নাহি মাথে গায়।
ধূলায় ধূদর তম্ম ভূমে গড়ি বায়।
মানে মলিন মুখ কিছুই না ভায়।
রজনী দিবস গোরা জাগিয়া গোঙায়॥
ক্লেণ চমকিত অল ধরণ না বায়।
নানা ভাব গোরাচাদের বাস্ম ধোষ গায়॥ ১॥৫২৪॥

স্থী-বচনে ন মানো যথা।
প্রিয় স্থী নিকটে যাই কহে ক্রন্ত-গতি
শুন ধনি চতুরিণি রাধে।
চক্রাবলী সঞ্জে কামু রক্তনী আছু
কামে পুরায়ল সাধে॥
ঐছন শুনইতে বাত।
শুক্রণিত লোচন গর গার শুরুর
রোধে পুরুল স্ব গাত॥ এ ॥

আপনক কামে কামী বেই কামিনী রসিক-মর্ম নাহি জান। সোমঝু বিদগধ নাহক বলে ছলে কত না করল অপমান।। চঞ্চল মন্হি থির নাইি হোয়ত কামে লুবধ-চিত কান। এছন নাহক বদন না হেরব উদ্ধব দাস প্রমাণ ॥ ২ ॥ ৫২৫ ॥ শ্রীরাগ। ছুর সঞ্জে নয়নে না হেরবি নিয়ড়ে রহবি শির নামাই। পরশিতে শিরসি করহি কর বারবি যুক্তনে বোধ নির্মাই ॥ স্থন্দরি অতয়ে শিখায়ব তোয়। বিনহি মানে ধনি সো বহু-বল্লভ আপন বশ নাহি হোই॥ পুছুইতে গোরি চমকি মুথ মোড়বি হসইতে জনি তুহঁ হাস। কর্ইতে মিনতি ভনই নাহি ভনবি কহবি আনহি ভাষ॥ পদ্দুত্তে চরণে বারি দিঠি-পঙ্কজে প্ৰকৃবি সোম্থ-চন্দ। পোবিন্দাস কহ যাক হৃদয়ে রহ তা সঞ্জে এত পরবন্ধ ।। ৩ ।। ৫২৬।

# সিশ্বুড়া।

জ্বনত-বয়নী ধরণী নথে লেখি।
বো কহে খ্রামনাম তাহে না পেখি।
জ্বন বসন পরি বিগলিত কেশ।
জাভরণ তেজল ঝাপল বেশ।
নারস জ্বন কমল-বর-বয়নী।
ন্রন-লোরে বহি যাওত ধরণী।
ক্রন সময়ে আওল বনদেবী।
ক্রমে চলহ ধনি ভাহ্নক্সেবি।
অবনত বয়নে উত্তর নাহি দেশ।
বিদ্যাপতি কহে সো চলি গেল। ৪। ৫২৭।

## करियान।

মাধব অপরপ পেথলু রামা।
মানিনী মানে ধরণী পর লেথই
নরানে না হেরই প্রামা ॥
শুনইতে বিদগধ নাগর-শেথর
আকুল গদ গদ বোল।
কি করব যবে হাম রজনী বঞ্চল
তবহি হৃদর মঝু দোল॥
হামারি শপতি তোহে শুন শুন সহচরি
তুরিতে গমন কর্ম তাই।
বহুত যতন করি তাহে মানারবি
বৈছে স্ট্র হারে রাই॥

## **শ্রীশ্রীপদকল্পতরু**

শপতি বচনে সোই কিছু নাহি বোলল আওল মানিনী পাশ। হেরইতে রাই নিমুখ ভই বৈঠল কহততি গোবিন্দাস ॥ ৫ ৮৫২৮।

## গান্ধার ।

তোহারি বিরহ- বেদনে বাউর স্থলর মাধব মোর। ক্ষণে অচেতন ক্ষণে সচেতন ক্ষণে নাম ধরু তোর॥

রামা হে তো বজি কঠিন দেহ। তথ্য অপতথ্য না বুঝি তেজলি জগত-ত্লহ লেহ॥

তোহারি কাহিনী কহিতে জাগল
শুনই দেখই ভোর।
এ মর বাহিরে ধৈরজ না ধরে
পথ নির্থরে তোর।

্কত পরবোধি না-মানে রছসি
না-করে ভৌজন-পান।
্কিচি-মূরতি জীহন আছ্যে
কবি বিভাগতি ভাগা। ৬ । ৫২৯ ॥

মান্য ক্রিক ব্য**ক্তর্জার স্ত**ীন। সার্ভ ভালাপ তো বিমু সুধর্ময় শর্ম তেজল ि निसार्टे जन्म जन्म । ভতৰ ভূতৰে ফুর্ল কুন্তন কাম-চামর-বন্ধ। তেজহ দারুণ মান মানিনি ্বনাহ গাহক তোরি। তুহে সে মরকত- যুরতি মানই কাঁচা কাঞ্চন গোরি॥ নীল-উতপল- দাম-শ্রামর-धाम योगत (तह। কুসুম-শর জর বরিথে ঝর ঝর নয়ন সাঙল মেহ ৷৷ বিরহ-মোচন এ তুয়া লোচন-কোণে হেরবি কান। রায় চম্পতি বচন মানহ দাস গোবিন্দ ভান ॥ ৭ ॥ ৫৩० ॥ कारमान । ্বো বর শঠ গুণ ভক্তর গুরুতর

যছু ওপ ক্ষলনিধি-সার। ংহাস অবলা ভাতি তাহে ইঃথিত মতি ে কৈছনে পাওব সার। সঞ্জনি আর কত করু পরলাপ।
সোমুঝে বৈছন করলহিঁ অপমান
সো বড় হৃদয়ক তাপ।

যো বর-নারী সার করি লেওল

ट्या श्रेष द्याव आनत्म ।

তাকর লাগি জাগি দিন যামিনী

পিবউ সোমকরন্দে।

তাহে লাগি অল পাণী সব তেজউ

জপ করু তাকর নাম।

চম্পতি পতি কয় সেই যুবতী বর গায়ত তছু গুণ গাম ॥ ৮। ৫৩১॥

ধানশী।

তব চঞ্চল-মতিরয়মঘহস্কা।
অহমুত্তম-গতি-দিগ্ধ-দিগস্তা।।
দৃতি বিদ্রয় কোমল-কথনং।
পুনরভিধাস্থে নহি মধু-মথনং॥ জ॥
শঠ-চরিতোহয়ং তব বনমালী।
মৃত্-স্তদয়াহং নিজ-কুলপালী॥
তব হরিরেষ নিরত্ত্বশ-নশ্মা।
অহমসুব্দ্ধ-সনাতন-ধশ্মা॥ ৯॥ ৫৩২॥
ভিরোতা।

ন্তুন মাধ্ব রাধা স্বাধীনা ভেল। মতনহি কত প্রকার ব্যারল তবু দে সম্ভি নাহি দেশ ॥ তোহারি নাম ত অনুরে রর স্করী পর সুদ্ধার হব পানি।
তোহারি পিরীতি রো নব নব মানই মো অব না ভনরে বাণী।
তোহারি কেশ কুসুম তামুল তুণ ধরলহি রাইক আগে।
কোপে কমল-মুখী পালটি না হেরই বৈঠল বিমুখ বিরাগে ॥
হেন বুঝি কুলিশ- সার তছু অস্তর কৈছে মিটায়ব মান।
কহ বিশ্লাপতি, বচন অব সমুচিত আপে সিধারদি কান॥ ১০॥ ৫০০॥

वाना थानभी।

শুনি স্থী বচন মনহি অহ্মান।
নাগরী বেশ বনাওল কান॥
আগু পদ বাম বাম গতি চাহনী
বামে কুন্তল অহুপামা।
বাম তুলে বসন চুলায়ত খন ঘন
বৈছন পেথলু শ্রামা।
পট-অম্বর পরি অভিনব সাগরী
জ্বছনে করলু পরান।
চাক নিখোপরি কাম সিক্র পরি
লখই না পারাই কান দ

অমন চভূরবর কবর্তু না পেখলু ध मही-मखन गारव । ৰণিমর কয়ণ হহঁ ভূকে সাজল শৰ্ম শোভৱে তছু মাঝে ॥

পদতলে অরুণ- কিরুণ মণি পেথলু তেঞি হোয়ত অনুমান। জ্ঞানদাস কহে রাইক মনিরে নাগর করল পরান 🛚 ১১ 🎚 ৫৩৪ 🖡

#### কামোদ।

কামু উপেথি রাই মহী লিখই মানিনী অবনত মাধ। নিক্লপম নারী- বেশ ধরি সো হরি আওল সহচরী সাথ।

ভৰ সঞ্জনি কি ফল মানিনী-মানে। টাট কানাই কত ভন্নী জানত কো ৰুক্ কত অবধানে ৷

ভাষরী হৈরি স্থীক রাই পুছত লোকহ বজ-নৰ-মানা। ভূমা কৰী হোৱত বতনে চলি আওড ্ কোৰে কৰ্ছ ইৰ প্ৰামাৰ 99

কর্মান কোরে প্রদেশ্বী জানস
কাম্প কপট বিজ্ঞান ।
নাসা পর্মান হাসি দিটি ক্লিড 
ক্রেড গোবিস্ফাস ॥ ১২ ॥ ৫৩৫ ॥
ইতি অষ্টাদশ-পল্লবঃ ॥
অধ মানঃ প্রকারান্তরং বধা।

পুনদ্ জ্যুক্তি:। সান্ধার।

ভূরা বিনে কান আন নাহি জানত ভূল-শরে জর জর দেহ। ভূহু বিনে মান আন নাহি জানসি অপরূপ ভোহারি সংসহ॥

অপরূপ ভোহাবি হতেও ।

সুন্দুরি দুরে কর বচন-বিজ্ঞক ৷
ভোহারি বিরহ-

ধরই না পারই অল ॥ ধ্র ॥ কি কুহুবুইভাহে অভি তোহারি চরণে নতি ্রু কুহুইতে কথন না কুর। গানাং

এতহ' বিপক্তি মৰ । ত ভানইতে তৃহ' অব চাতৃরী না করহ দুর ।

(स्वरंक होन ) जीव मन् हिकरि

कर बनकाम इस जाति । १९७१ । १९७५ । १९७५ ।

## বিহাগড়া।

প্রেম আগুনি মনহি গুণি গু এ দিন বামিনী জাগি।

মদল-কুঞ্জর কুঞে রোয়ই

তোহারি রসক লাগি।।

কি ফল মানিনি মান মানসি কালু জানসি তোরি।

ভূহ নৈ জ্লখর- অলে শোভিত বৈছন দামিনী গোরী॥

নওল কিশলয় বলয় মলয়জ-

পদ্ধ পদ্ধজ-পাত।
শর্মে ছট ফট লুটই মহীতলে
তোবিহু দহই গাত।

জানহ পুন পুন সেন সেন পিয়া পরীখন সোই পুজে পাঁচ বাণ।

বোর সুজে বাচ বাব। রায় চম্পতি ও রস গাহক দাসু গোবিক ভাগ ॥ ২ ॥ ৫৩৭ ॥

## युवरे ।

ভন জন গুণবজি রাই।
ভো বিহু আকুল কানাই।
কিশ্লৱ-শ্রন উপেথি।
ভূমি উপুরে নথে লেধি।

তেল ধনি, জনক স্থান ।
কাপুর বুধ বেল নিয়ান ।
কাপুর বুধ করি অবগাই ।
বিলপুরে অবধি না পাই ॥
লো কগ-জীবন জান ।
তাকর জলত পরাণ ॥
ভূপতি কি কহব তোর ।
তোহে সে পুরুধ-বধ হোর ॥ ৩॥ ৫০৮ ।

#### ভথা রাগ।

ভন ভন হলবি রাধে।
কাথু সঞ্জে প্রেম করসি কাছে বাধে।
অহকণ বো জন ভুয়া গুলে ভোর।
ভূহ কৈছে তেজবি তাকর কোর।
নিশি দিশি বরানে না বোলই আন।
আন জন বচনে না পাতরে কান।
ভূরা নাগি ভেজন গুলুলন-আশ।
কাছে লাগি ভূহ তারে ভেলি উদাস।
গুলুল প্রুপ কৃতিছ নাই লেখি।
আপন দিব ভোরে হরি না উপেথি।
এ সব বচনে বদি রাধ্য লাল।
না লানিরে কৈছে ক্রিন গুরা প্রাণ।
আন্যাস কই কিউ উপ্রেশ্য রা বাণ।
আন্যাস কই কিউ উপ্রেশ্য রা

স্থহিনী। শ্রীমত্যুক্তি।

না কহ রে সথি উহার কথা।

বিজ্ঞণ স্থপরে না দেহ ব্যথা।।

বৈছন চতুর শঠের পহঁ।

কৈছন তাহার দৃতী দে তুহঁ।।

নিকুঞ্জে স্থপরে ধরি লয়ে।

তাহারে সেবউ না কহ এ।।

সোই কলাবতী নিবদে যাঁহা।

তুরিতে গমন করহ তাহা।।

এমতি তাহারে সাধহ ঘাই।

যে স্থপ পাওবি অবধি নাই।।

পুন না আসিহ আমার পাশ।

ভিনিয়া চলল রসিকদাস।। ৫ ।। ৫৪০।।

তথা রাগ। রাইক ঐছন অকরণ ভাষ। শুনি স্থী আওল কাফুক পাশ।। কৃহইতে ঐছন স্কল স্থাদ। গাদ গাদ মাধ্ব করই বিবাদ।। ৩।। ৫৪১।।

ইত্যাদি গীতং।

ধানশী। মাধব বোধ না মানয়ে রাই।

নিভূত নিকুজ-

গৃহে धनी निवमरे

তুরিতে গমন করু তাই।।

এত শুনি নাগর বিভাগ নাগরী-বেশ ধরি नथी नदक हन वसमानी। (याहे निकृत्व बाह्त वत्र-मानिनी जारा गाँर उभनीउ (जिन ॥ १।। as'र মঙ্গলা ৷ পটাম্বর পরি অভিনব নাগরী ঐচন করল পরান। শির পর সিথি করি কাম সিন্দুর পরি লথই না পারই আন।। দেধ স্থি অমুত রঙ্গ। রসিক-শিরোমণি রমণী-বেশ ধরি আওত দোতীক সম।। আ গুপদ ৰাম বাম গতি ধাবই মোহিনী চাহনী বামা। ভামুস্থতা পাশে উপনীত ভেলহিঁ স্থামরী পেখল রামা।। মণিমর কৰণ ছই ভূজে শোভই শৰ্ম শোভই ডছু মাঝ। এহেন চাতুরীপণ। কবছ না পেথলু এ মহী-মঙ্গ মাঝ।

অকণ-কিরণ গ্রামা- পদতলে পেথলু তেওিছ করিবে অপ্যাম।

বংশীব্যক কহন প্রাম্থা ৮/1 ৫৪৩ //

#### शननी।

নাগরী বেশ হেরি হরবিত সহচরী
করে ধরি আদর কেল।
কোপে কমল-মুখী চরণে ঠেলরে সখী
তাক সমুখে লই গেল।

স্থশ্বরি হেরহ এ নব রামা। মাথুর নগরক ইহ নব-রঙ্গিণী তোহে মিশব ইহ শ্রামা।।

ঐছন বচন শুনি বিমল-বয়নী ধনী বাহু প্সারি করু কোর। প্রশেহি জ্ঞানল রিসিক-শিরোমণি কো কহু কৌতুক গুর॥

টুটল মান আন মনে বৈঠল সহচরী মুখ হেরি হাস। আমল কমল-মুখ হেরইতে রসিককো পুরল মরম অভিলাব।। ৯।। ৫৪৪।।

## বরাডী।

শুমুখী-চরণে চিকণ কালা-বরণ কেন বা দেখি। স্থীর বচনে জীয়ত হাসিয়া নেহারে ক্মণ-মুখী। কনক মুকুর জিনিয়া চরণ
মুখানি রসের কুপ ।
তাহার মাঝারে পশিয়া পেথল্
পরাণ-নাথের রপ ॥
আপনা আপনি বয়ান হেরিয়া
ধরিতে না পারে হিয়া ।
এ রস পাসরি রসিক নাগর
কেমতে আছরে জীয়া ॥
কহিতে কহিতে রসের আবেশে
নাগরী নাগর ভেল ।
বংশী কহয়ে বঝিয়া বিশাখা

তথা রাগ।

नागती जानिया (मन्॥ >०॥ ८६०॥

মুধ বৰ মাজল বিদিক মুবারি।

মুন্দরী রহল করহি কর বারি॥

প্রেম সবহঁ গুণ হুহুঁ করি নেল।

মুন্দ নয়ন-রুগল কর দেল ॥

করে কর বারিতে উপজল হাস।

হুহুঁ পুলকান্মিত গদ গদ ভাষ॥

গুরুয়া কোপ তিরোহিত ভেল।

নাগর তবহঁ কোর পর নেল॥ ১১॥ ৫৪৬॥

ভভো বর্বা-সমরোহিত-বাস্কসজ্জারাং

কুষ্ঠে বিশ্বিভান্মান:।

## ভূপালী।

তুই রহ গরবিনী বাসক গেই।
সো ভিগি আওল শাঙন মেই।
তুই শুওল সুথমর পরিষয়।
সো ভরি আওল পাথর পছ।
এ ধনি দুর কর অসমর মান।
পূণ-কলে মিলল রসমর কান।
ঝলমল দামিনী বামিনী বোর।
কামিলী কি ভেজই কান্তক কোর।
ঘন ঘন গরজন অধ্বর মাহ।
বর্মান্ত কোন এ হেন বর-নাহ।
এতই কহত বব গতি মভি বাম।
না জানিরে কোই আবারল কাম।
গোবিন্দাস দেখত তব সাঁচ।
কাকর আকনে কো পুন নাচ। ১২॥ ৫৪৭।

#### কেদার।

শুন শুন শুণবৃতি রাবে।
পরিচর পরিছর কোন অপরাবে।
গগচুন উদর কত তারা।
টাদ আনহি অবভারা।
শান কি কহব বিলেধি।
লাখ ন্ধিনী-চয় কুৰি না কৃষি।

শুনি ধনী মনে ছাদি খুর।
তবহি মনহি মন পূর ।
বিজ্ঞাপতি কহে মিলন জেল।
শুনইতে ধুল স্বহি জৈ গোল ॥ ১০ ॥ ৫৪৮ ॥
ইতি উনবিংশতি প্রবং ॥
পুনক্ত মানঃ।

शाननी ।

এ সৰি মৰু বোগে কর অবধান।
রাই দরখন বিনে না বহে পরাণ।
তুর্ত অভি চতুরিনী কি কছব হাম।
বিছে করহ বার সিদ্ধি হয় কাম।
বহুত রতন করি বুঝারবি তার।
নহে প্রবোধবি ধরি তচু পার।
ইবে বদি তুরা বোল না তুলই রাই।
ইহ কেল ছুল দিরা পুজুবি বোটাই।
সোর কিনী বদি তেজই মান।
নিচরে জানিবি তুরা অস্পত কান।
বংশীবদনে কহ প্রব আশ।
চলল দোতী তব রাইক লাশানাত। ৫৪৯।

কাছ প্ৰবোধ কৰি কৰি আছিল সহচরী
নিলন মাইজ লাল বিলাল কৰি কৰি ক্ৰাণ্ডৰী
কহতহি চাতুৰী কৰি বিলাহৰা হাল বি

मानिनी अनुनुष्ठ वसन्हि निथ्छ हेर मही-मधन मात्। ইতি উবাচ শহচরী রুহে নিশ্বদ করি नवह विहूतन काम ॥ দোতী কহয়ে ধনি কাঁহে ভেল মানিনী ভোহারি সে নাগর-রাজ। বিষয়-কুত্ম শরে সোভেল জর জর नुष्टे निकुञ्जक माय ॥ ব্দনেক ষতন করি মোহে পাঠায়ল হরি জীউ রাথমে তুয়া আলে। বংশীবদন কহ হামারি বচন রাখ ি মিশ্ছ কাতুক পাশে ॥ ২ ॥ ৫৫ • ॥ জীবাপ। মানিনি দূর কর মানে। তুয়া বিৰে মোহন চিত-পুতলী সম তেজন ভোজন-পানে॥ কৌমল অমল শেক কুন্তুম-দল তুয়া বিহু তেজন শহানে। গন্ধ চতুঃস্ম অঙ্গ বিলেপন

তেজন ভাষ্য বরানে ।

কত করে ব্রতী ধ্গ-শত সেবই

তাহে বে বোধ না মানে ।

বো জুবা সাগি অব গত্ত উতাপিত

শ্বি বহত বুই সরাবে ।

ও বনি বনৰ কিন্তু কিন্তু

#### ভখা রাগ।

পছমিনি পুন পরবোধর" ভোর। পীতাখর পথ- প্রজ পরিবরি ভামিনি কাউরে রোর॥ ধ্র॥

পূছইতে পহিষ্ণে পাণি উল্টারসি পরিষদ পর করি মান। প্রির পরিবাদ পর্মি গরিহানসি পুরে পাইন্স গাঁচবাদ্যা

পিরীতিক পাঁতি পাঠে পরিহাসনি পছ-পূরণতি নাহি মান। পাছন প্তলী পরখি পুরে পেখলু পর-শীড়ন বাহি জান্।

প্রবাজনক ত্রের পরিয়ন্তন পুনবরী পার্ছ কোই। আন-পিনারী পরী পরিভারণ প্রেরিকালি কর তেনি বিভারকংয়

## ধানশী |

না বোল বাল কান্তর বোল ও কথা নাহিক মানি।

বিষম কপট তাহার প্রেম

ভাবে ভাবে হাম জানি।

নিকুঞ্জ কাননে সঙ্কেত করিয়া তাঁহা জাগাইল মোরে।

আন ধনী সনে সে নিশি বঞ্চিয়া বিহানে মিলল দুরে॥

সিন্দুর কাজর সব অঙ্গোপর কপটে মিনতি কেল।

ছল করি শির- সিন্দূর কাজর আমার চরণে দেল॥

শতগুণ হিয়া আনলে জলিল চলিয়া আইফু বাস।

ুএ হেন শঠের বদন নাহেরি কুহুয়ে অনস্তদাস ॥ ৫ ॥ ৫৫০ ॥

## ভিরোতা।

দোতীক বচন না গুনল রাই।
আপন মনহি বিচারল তাই॥
কান্তুক তুন কেশ ধক তছু আগে।
তরহি সুধামুধী নহ অনুরাগে॥

## এ এপদকলতক ।

কত কত মিনক্তি করিয়া কহ বাণী।
মানিনী-চরণে পসারল পাণি॥
হৃদ্দরি দ্রু কর অসময়-মান।
ইহ সুধ সময়ে মিলছ বর-কান॥
তেজিয়া নাগর ও সুধ-পুঞ্জে।
তুমা লাগি নুঠই কেলি-নিকুজে॥
ক্ষম অপরাধ চলছ সোই ঠাম।
ইহ সুধ জানি সময় অহুমান॥ ৩।। ৬৫৪॥

# কল্যাণী অথবা বরাড়ী।

### তাল-ত্রয়েন।

বিরচিত-চাট্-বচন-রচনং চরণে রচিত-প্রণিপাতং।
সম্প্রতি মঞ্ল বঞ্জন সীমনি কেলি-শর্মমুপ্রাতং॥
মুগ্রে মধু-মথনমুপ্রতমন্থার রাধিকে॥ জ্ঞ ॥
ঘন জ্বন-শুন-ভার-ভরে দর-মন্থর-চরণ-বিহারং।
মুগ্রিত-মণি-মঞ্জীরমুপেই বিধেহি মরাল-নিকারং॥
শুণ্ রমণীরতরং তরুণী জ্ঞান-মোইন-মধুরিপু-রাবং।
কুস্ম-শরাসন-শাসন-বন্ধিনি পিক-নিকরে ভঙ্গ ভাবং॥
অনিল-তরল-কিশার্ম-নিক্রেণ করেণ লভা-নিক্রম্ং।
প্রথমিব করভোক করোতি গতিং প্রতি মুঞ্জ বিলম্বং।
ফুরিতমনক-তর্ক-র্মানিব স্টিত-হরি-পরিরস্তং।
পুদ্ধে মনোহর-হার-বিমল-জ্ঞান ধারমুমুং কুচ-কুস্তং।।
অধিগতমন্থিল-স্থীভিরিম্বং ত্র বপুর্ণি রতি রণ-সজ্জং।
চিত্ত রণিত-র্মনা-বর-ভিত্তিম্যভিস্বর স্বন্মনজ্জং।।

यात-भत-ञ्रु छ्रा-नृत्थन करत्र मथीमवनश्चा मलीलः। চল বলয়-ৰুণিতৈরববোধয় হরিমপি নিজ-গতি-শীলং।। ত্রীঙ্কমনেব-ভণিতমধরীক্বত-হারমুদাসিত-গামং। হবি-বিনিহিত-মন্গাম্ধিতিষ্ঠতু কণ্ঠ-ত্টীমবিরামং।।৭॥৫৫৫॥

স্থরট।

সরস স্থামর সমর যামিনী

কামু কেলি-নিকুঞ্জ।

তো বিহু কিশ্লয়- শয়নে রোয়ত

रेयरक् मधुकत छङ्ग ॥

রোথ পরিহরি চলহ স্থন্দরি

যাহ হেরহ কান।

সময় কামদে কো কলাবতী

কাস্ত পর করু মান॥

তোহারি মরতি- জ্যোতি দশ দিশ

হেরি আকুল হোই।

নোই গুণমণি রূপ গুণি গুণি

গুমরি যামিনী রোই॥ এহেন দোতীক বচন শুনইতে

মান ভেশ অবসান।

नवर्षे मरहत्री वन्न नित्रथर

তবহিঁবেশ বনান। ৮। ৫৫৬।

ভূপানী।

रियह्म थनी-हिल मत्रविक दहांकि।

কতহ' যতন কবি সাধ**ন** দোতী।

বোই নিকুজে বিষাদই কান।
তিহি ধনী ভামিনী কর্মল পরান ॥
পদ ছই চারি চলই পুন থারি।
ধৈরজ চিত ধরহি নাহি পারি॥
মানিনী পর গর অস্তর থোর।
ঐছন পাওল কুঞ্জকি ওর ॥
যতনহি কার্মক সমূথে না গেল।
বৈছন পুরুথ-মুগ্রী সম ভেল॥
সহচরীগণ তব করই বিষাদ।
কো বিহি ঘটাওল ইহ পর্মাদ॥
কত কত দোতী করই পরহার।
শ্রেমদাস কছু কহই না পার ॥ ৯ ক্ষেত্র।

## कानडा कारमान।

मञ्जू जत-कू श्र-छन-एक नि-मन्दि । ध्यतिन त्रास्य माध्य-ममीशमिश

বিলস রতি-রক্তস-হসিত-বদনে।। নব-ভবদশোক-দল-পয়ন-সারে। প্রাবিশ রাধে মাধব-সমীপমিছ

বিগদ কুচ-কলস-জয়ল হারে।
কুস্ম-চর-রচিত উটি-বাদ-গেহে।
তাবিশ স্থাবে মাধ্ব-দানীপমিহ
বিশদ কুস্ম-স্কুমার-দেহে।

চল-মলম্ব-বন-প্রন-স্থরভি-শীতে।
প্রবিশ রাধে মাধ্ব-সমীপমিহ
বিলস রভি-বলিভ-লিভ-গীতে।
বিতত-বছ-বল্ল-ন্-ব-প্রব-ঘনে।
প্রবিশ রাধে মাধ্ব-সমীপমিহ
বিলস চিরমলস-শীল-জঘনে॥
মধু-মুলিভ-মধুপ-কুল-কলিভ-রাবে।
প্রবিশ রাধে মাধ্ব-সমীপমিহ
বিলস মলন-রস-সরস-ভাবে॥
মধুরতর-পিক-নিকর-নিনন-মুখরে।
প্রবিশ ধাধে মাধ্ব-সমীপমিহ
বিলস দশন-ক্তি-ক্তির-শিখরে॥
বিহিত-পর্যাবতী-স্থ-সমাজে।
কুক মুরারে মঙ্গল-শতানি
ভগতি জয়দেব-কবিরাজ-রাজে॥১০॥৫৫৮॥

#### কামোদ।

সহচরী বচনে সমতি তেলি মানিনী
নাহ নিকটে তব গেল।
মনমধ কতহ মনহি পরিপুরল
মনমধ জর জর ভেল।
স্থবদনী কুঞ্জে মিলল বরকান।
দারিদ ধন জয় বেই পুন পাওল

নাগর ঐছন মান। জ।

কত কত ভাৰ বিধায়ল অঙ্গহি
লোচন ছল ছল পানী।
কামুক বদন হৈরি ধনী আকুল
কহতাই গদ গদ বাণী ॥ ১১ ॥ ৫৫৯॥

श्रद्धती।

মাধৰ তোহে পিরীতি কক্ কোই। স্থকপট কঠিন হৃদয় তুয়া পুন পুন কত পরবোধব তোই॥ ঞ ॥ আন সঙ্কেত আনে সঞ্জে মিলন আন কহিতে কহ আন। এছন চাতুরী শঠ-পণ পুন পুন মানিনী সহজে পরাণ॥ হামারি মরম তুহঁ ভালে ভাল জানসি शंभ नर कामिनी नांत्री। কাম-কলঙ্কিনী যব কহ গুরজনে সো হথ সহই না পারি॥ প্ৰেম অধীন হাম নিরমণ প্রেমহি মো সঞ্জে করহ বিলাস। কামিনী ঠাম হেরি পুন তেজব **ट्यमान ककिनाव ॥ >२ ॥ १७० ॥** 

তুড়ী।

বিদ্যাতি-সরসিজ-গণ-চর-শর্মে। বারিত-সকল-সধী-জন-বন্ধনে॥ বলতি মনোমম সম্বর্গচনে ।
পূর্ব কামষিমং শশি-বদনে ॥ ঞ্জ ॥
অভিনব-বিস-কিশলম্ব-চম্ব-বলম্মে ।
মলমজ-বস্পরিসেচিত-নিলম্মে ॥
স্থ্যত্ ক্ষুণজাধিপ-চিত্তং ।
রামানক-রাম্ম-কবি-ভণিতং ॥ ১৩ ॥ ৫৬১ ॥

#### কেদার।

কতর মিনতি করু কান। মানিনী তেজল মান ॥ ছল ছল লোচন লোর। কাল কয়ল ধনী কোর॥ বঝল হিয় অভিলাষ। निधुवन ब्रह्हे विनाम ॥ চম্বন করইতে কান। বিশ্বিম ঈষত বয়ান। कक्षरक यव कत रमन। মুকুল হৃদধ্যে তব ভেল। নীবি পরশিতে কর কাঁপ। নীরস কমলে অলি ঝাঁপ॥ ঐছে না পুরয়ে আশ। নাগর গদ গদ ভাষ॥ ধনীক ক্ৰামিত চিত। यत्रम क्षार्व अक्रिक ॥

পেশৰ মন্হি অনুস্থ। জ্ঞান কৃহই ইছ রুস্থ ১৪ ॥ ৫৬২ ॥

#### তথা রাগ।

গলে গলে नांशन हित्र हित्र এक। বয়ানে বয়ান রহ আরতি অনেক॥ মনে রহু মনসিজ শুতল শেজে। নাহি পরকাশল থোরহি লাবে।। মণিময় দীপ উলোরল গেহ। সুকুসুম শেজহি ঝল মল দেহ।। কোকিল কুহরত ভ্রমর ঝক্কার। শারী শুক কত কপোত-ফুকার।। মলয় পবন বহ গন্ধ স্থগন্ধ। ছিজ-কুল-শবদ গীত-অত্বন্ধ।। স্থমর মন্দির কালিন্দী-তীর। শুতৰ হুহু জন কুঞ্জ-কুটার।। স্থীগণ হেরই ঝরকহি ঝাঁপি। আরতি অধিক তিরপিত অ'থি।। কোই কোই সেবই শেকক পাশ। कानमात्र कर श्रुवन यान ॥ ১৫ ॥ १७०॥

ইত্যাদি সংকীৰ্ণ-সম্ভোগঃ। অথ মানঃ প্ৰকারান্তরংগা

## ভাচিয়ারী।

তক পর রৈরা ভক ফুকারিরা

কহরে আপন শ্বরে।

क्रीश्रदेश होनेन धारेश

পদ্মা সহচরী ঘরে॥

শুকের বচন শুনি বিনোদিনী

অৰুণ যুগল আঁথি।

অবনত মুখে মুকুলিত স্বরে

কহে গদ গদ ভাৰি।।

পদ্মার স্থীর সৃষ্ঠি স্থলর

শ্রাম মধুকর-রাজ।

বৈছে রপবতী তৈছনে রপিক

त्यांत्र मत्न नाहि कांक ॥

কাম-কলা-রদে কয়ল সরদে

জানয়ে কামের রীত।

কাৰুকী বুঝিয়া কাৰ্ক নাগর

তা সঞে কয়ল প্রীত।।

তুহ যাই সথি এ সব বচন

কহৰি কাৰুক পাশ।

ভবিতে তুরিতে নাহ নিরছে

किन लेक्न मात्र ॥ ३७ ॥-६७४ ॥

#### थानश्री ।

সহচর লৈয়া বেখানে বসিয়া আছমে নাগর-রাজ। দুজী জ্বত-গতি যাইয়া নয়ন-

रेक्टिक करन काम ॥

চতুর নাগুর ধরি তার কর নির্থনে চশি যাই কি লাগি বিরুষ বদন তোহারি

বিবরি কহ বুঝাই ॥

সুধী কুহে শুনি শুকের শ্বদ আন সঞ্জে তুরা কাম। সুহুলে মানিনী ভৈগেল বিশুণ না শুনে ভোহারি নাম।।

এত শুনি হরি ব্যাব্দ পরিহরি

মিলল রাইক পাশ।
হৈরি ভেল ভীত মানিনী-চরিত
ক্ররে উদ্ধবদাস।। ১৭।। ৫৬৫।।

## प्रवर्षे ।

সুন্দরি দূরে কর বিপরীত রোষ।

ব্যান ব্যান ব্যান কর্মান বিদ্যালি ক্রমান বিদ্যা

বো বৈছে পাৰীক পাঠ পঢ়াওত তৈছনে কহতহি ভাগি। कैंशि मिरि कैंशि मूि काश विनमन छहे এ তুরা সহচরী সাখী । তুহুঁ যব মোহে ছোড়ি স্থ পাওবি হাম নাহি ছোডব তোয়। জুরা পদ-নথ-মণি- হার হৃদরে ধরি निभि निभि फित्रव द्वीय ।। এত ভূনি মানিনী এছে কাতর বাণী আকুল থেহ না পায়। অভিমান পরিহরি বৈঠল স্থন্দরী আধি নয়ানে মুখ চায়।। নাহ রসিক বর কোরে আগোরল ত্রহাঁক নয়নে ঝরু বারি। ছত্ত করে ছত্ত নয়ন লোর মুছই উद्भव साम विनश्ति ॥ ১৮। ৫५५ ॥ ইতি শুক-মুখাৎ শ্রবণং। ততোবংশী-ধ্বনি-শ্রবণেন যথা।

সিন্ধুড়া

যম্না সমীপ নীপ-তরু হেলন খ্রামর মুরলীক রজে। রাধা চক্রাবলী বিমল-মুখী গাওরে গীত পরবজে।। ভলি শলী রাই বেছিশ ভেল পর গর থব থব কলিতে জাক।

চক্রাবলী বলি কালী কালাওত বিলস্ড তাকর বল।

এত কহি মালিলী মলিন ভেল বিধু-মুখী চর চর অরুপ লয়ন।

ক্ষতিহি চপল- চরিত সঞ্জে পিরীতি আন্ধু হোরল সমাধান।

রাইক নীরস বচন শুলি এক স্থী মন মাহা ছথ-চম্ব পাই।

কান্ধুক নিরড়ে কহিতে স্ব বিবরণ উর্ব সঙ্গে চলি বাই। ১৯। ৫৬৭।

সুহিনী ৷

শুর শুন নিগজ কান।
কৈছন মুরলীক গান।
চক্রাবনী দলি গীত।
এ কিন্তে চলল চরিত।
শুনি ধনী করলহি মান।
কো করবি অব সমাধান।
শুনি হরি চমকিত ভেল।
লো স্থী সঞ্জে চলি গেল।
নাগর বেরইতে রাই।
অধিক রোধ নির্মাই ।

সমূথে বৃজ্ির ছই হাত।
নাগর কহে মৃহ্ বাত।।
হাম তৃরা কর ৩৩৭ গান।
না বৃঝি করসি তৃহ মান।।
কাহে ভেলি অরুণ নরান।
উদ্ধব দাস ৩৩৭ গান।। ২০॥ ৫৯৮।।

#### (क्स्रात्र

কর ঘোড়ি কাছ কয়ল কত কাকৃতি শ্রবণে সরল ভৈ রাধা। বিষুধ বদন পুন ফেরি নেহারই মুদিত উদিত দিঠি আধা।।

নাগর চতুর বৃঝিয়া তছু অন্তর যাই কয়ল ধনী কোর। হেরইতে ত্তঁক বদন হতঁ চর চর ত্তঁক গলয়ে দিঠি লোর॥

ধৈরজ ধরি ছত° ছত° মুখ চুখই গদ গদ মধুরিম ভাব। চামর বীজন করত স্থীগণ হেরত উদ্ধব দাস॥ ২১॥ ৫৬৯॥

अब वाका-अवनः गर्था।

ভিরোভা।

দেখ রাই কাই স্থী সনে ছহু বসিয়াছে নির্ভনে।

রস পরসঙ্গ কহিতে কহিতে

খনিত ভেল বচনে।।

কৈহৈ তুয়া মুখ বলি ঘাই কত চক্ৰাবলী মিছাই।

খামর-বদনে ভনিতে বচনে

কোপে ভর্ব রাই।।

কহে কি কহিল কটু ফে্রি উহ নাম শুনি পুন বেরি।

মো সঞ্জে কপট পিরীতি তোহারি

মরম বৃঝিত্ব তোরি।।

ধনী মুখ ফেরি চলি যাই। তব শ্রাম নাগর ক্ষেম ক্ষেম কহি

वाङ् धत्रन ताहै।।

কত সাধ্যে মধুর ভাথি

ভই সঞ্জ হুগল আঁথি। কহ শুনিতে হামারি জুড়াক শ্রবণ

অমিয়াবচন মাথি।।

ুত্রা চক্র নিচয় মুথ হেরি হোয়ত বহুত স্থুখ।

ভূহ উদটী বৃঝিয়া রোখে ভর্নি া পাওলি বছত ছথ ।। ধনী বৃঝিয়া বচন ছন্দ उब लाक्त के शन धना। তব ধৈরজ ধরিয়া অবনত মুখে

কহয়ে মধুর মন্দ।

তব সর্মে ভর্মে ভোর খাম রাই কয়ল কোর। হেরি উদ্ধবদাস হৃদয় আনন্দ

বৈছন চাঁদ চকোর ॥ ২২ ॥ ৫৭ • ॥

ইতি বাক্যখনন-মানঃ। অথ স্বপ্নদৃষ্টমানো যথা।

#### বিভাষ।

আপন মন্দিরে ভৃতিয়া স্থন্রী

দেথই ঘুমের ঘোরে।

কাতু আন সঞ্জে রভস করই

করিয়া আপন কোরে॥

আন রমণী বিহরে রজনী

আমার নাগর কোর।

দেখিতে দেখিতে পাইয়া চেতন

মান ভর্মে ভোর 🏗

অলুসে অবশ

ব্যান নয়ন

অকুণ ক্মল জোর।

কোপে ভরণ কহই বচন ঘোর। একি বিপরীত চপল চরিত হামারি সমুখে সল। গোরীচরণ সক্তি মোহন হেরই এ সব রক্ষ ॥ ২০॥ ৫৭১।

#### গান্ধার ।

প্ৰাত সহচরী সঙ্গতি বৈঠলি যানিনী মন ভাবই। শ্বাম-মুথ যহিঁ গ্ৰেপথি পুন নাহি

সোই দেশ হাম যাবই॥

গণক কি ক্লপে ধাবই ॥

রভদ পুন গুনি খ্রাম খ্রণমণি মনহি বিচারই। পাঞ্জি করে লই একলি নাগ্র

রাই তহি হেরি পুছই বেরি বেরি দেশ ইহ <েশ নরা হই। সোই কহে পুন কান্থ বিহর ন ভূবনে হেন না হোই॥

বাণী ইহ শুনি বোধে পুন ধনী পাঁজি তছু নেই ডারই। শুয়াম নির্থই রোধ প্রকটই শুল-বসন উম্বারই ॥ রাই চমকিনী হাসি<sup>°</sup> মূচকিনী সোই দেশক নাশই।

রায়রঘুপতি বরভ সৃক্তি

वृन्तिवन नाम ভाष्ट्र ॥ २८ ॥ ८१२ ॥

ইতি স্বপ্ন-দৃষ্ট-মান:। পুনশ্চ প্রকারান্তরং

## দৃত্যুক্তি।

কামিনি কান্থ কহল কত মোর। কোমল কেলি কুভূহল কমলিনী কোনে কঠিন তরু তোর॥

কলিন্দীকুল কদম্ব-কানন কুমুমিত কুঞ্জ-কুটীর।

কাম-কলহ করি কপটে কলাবতী কামুক করহ অথির ॥

পরশিতে কাম্ভ কররী কুচ কঞ্ক

কর সরম কর বারি। কুটিল কটাক- কুল্লম-শরে কোণিনী

किस्त्र ना कत हागात्रि॥

করইতে কোরে কাঁপি করু কাকলি

কোকিল-কৃষ্ণিত-ভাষে। কালি কুঞ্জবনে কৈতবে কি কছল

्र कहा जा (शांकिक संदर्भा २०॥ ६१०॥

ইতি বিংশতি-পল্লবঃ।

পূঁনন্দ মান: প্রকারান্তরং যথা। পূর্ব্বোক্ত: গ্রীগোরচক্র:। দৃত্যুক্তি:।

- সুহই |

শুনহ রাজার ঝি।
লোকে না বলিবে কি।।
মিছই করসি মান।
তো বিস্থাগল কান॥
আনত সক্তে করি।
তাহা জাগাইলে হরি॥
উণটি করসি মান।
বড় চণ্ডীদাস গান॥ ১॥ ৫৭৪।।

#### ্ ভৈরবী।

প্ৰতিক্তি বাগ নয়ন-ভঙ্গ ভেল।
আছুদিৰ বাঢ়ল অবধি না গেল।
না সো বয়ণ না হাম বয়নী।
ভূহ' মন মনোভব পেশল জনি।
এ স্থি সে সব প্ৰেম-কাহিনী।
কাল ঠাম কহবি বিছুবল জানি।
না খোজফু লোভী না খোজফু জান।
ছহ'ক মিলনে মধ্যত পাঁচ-বাণ।
অব সোই বিয়াগে ভূহ' ভেলি দোভী।
মুপুকুৰ প্ৰেমক ক্ৰিছন নীতি।

বৰ্জন কজ নরাধিপ মান। রামানন্দ রায় কবি ভাগ॥২॥ ৫৭৫॥

#### ধানশী ৷

ন্ধৰক মান গোপদি তুহঁ গোৱি।
ব্ৰলমো থল-জন-বচনে বিভোৱি।
বিকল মানিনি মান বাঢ়াহ।
তাকর দরশ পরশ অবগাহ॥
বিচারিতে দোষ-লেশ নাহি তাই।
শুণগণ ঐছন কাহা নাহি পাই॥
অভিসক্ল ইণে যদি করু বড়ুয়াই।
গোবিন্দ দাদ বচন হিয়ে নাই॥ ৩॥ ৫৭৬॥

## বরাডী।

যুচাও ঘুচাও আরে সথি ও রস জ্ঞাল। তোমার কামুরে মোর শতেক নমসার।

অমল কুলেতে কালী বেমত দিয়াছি গো তেমতি পাইমু পুরস্কার ॥ গ্রু ॥

শুরু-ভর ডেয়াগিফ্লাজে তিলাঞ্জলি দিয়ু তেজিফু গৃহের স্থুখ-সাধ। স্থি দোষ দিব কারে, এতেকে না পাইফু তারে বিধাতা সাধিলা তাহে বাদ।। যত্ন করি রোপিগাম ক্ষন্তরে প্রেমের বীজ নিরবধি সিঁচি আধি জলে। কেমন বিধাতা সে এমতি করিল গো অমৃত বরিশে বিধ ফলে॥

বংশীবদল দাস ছাড়ি নিদাক্কণ আশ তেক্সহাঁ দাক্ষণ অভিমান। তোমা বিনে সেই কান্ত, ক্ষণে ক্ষণে ক্ষীণ তত্ত্ব দাবনিলে দহে যেন প্রাণ॥ ৪ ॥ ৫৭৭॥

### নাটিকা া

স্ক্রি থার কত মান বাঢ়ায়সি ভোর। সোনব নাগর কাতর অস্তর স্থানে নয়নে বহে লোর॥

তুয়া বিহু কুহুম- শরনে ঘন কাঁপই ঘন ঘন বহত নিৰাস।
তোহারি পরশ বিহু ঘামই সব তহু ধরতর বিরহ হতাশ।

তুগা বিস্থান মনহি নাহি জানত তুরা গুলগণ করু গান। তোহারি পরশ লাগি ধাবই জরুবণ লোবহি করত সিনান ॥ ৫ ॥ ৫ ৭৮ ॥

## জয় জয়ন্তী

প্রাণ-প্রিয়-ছথ গুনি শশি-মুখী পুছই গদ গদ বোল :

অমল কুবলয়- নয়ান যুগলহি

গলয়ে ঝর ঝর লোর॥

বেশ বেশায়ল সবহি বিছুরল চললি পরিহরি মান।

তেজৰ কুল-ভয় নাহি গৌরব

মনহি জাগল কান।। পীন প্রোধর জ্বন গুরুত্ব

ভারে গতি অতি মন্দ।

আর্তি অস্তর প্ছ দূর্তর

বিহিক বিরচন নিন্দ।

গঢ়ল মনোরণে চলল স্থন্রী

বিশ্বন বিপদ না মান।

মিলল ভামিনী কুঞ্জ ধামিনী

দাস গোবিন্দ ভাগ ॥ ৬॥ ৫৭৯॥

## सुरु है।

মানিনী মিলল কুঞ্জক মাঝ।
আনন্দে নিমগন নাগর-রাজ।।
আগুসারি বিনয় করত কত ছক্ষ।
কতবিধ সেবন যাহে নিরবন্ধ।।
তবছ' বিমুখ ভেল মানিনী রাই।
কত পরকারে বুঝায়ল তাই।।

কো কিছু বচন করহ অবধান। রাধামোহন প্রত্থা করু গান।। ৭।। ৫৮০।।

#### 🗟 রাগ।

বদন না কর মলিন ছাঁদ।
বাদে কি আওরে পুণিমক চাঁদ।।
অধর বান্ধ্নী মধুর হাস।
নীরস না কর দীরঘ নিশাস।।
রাই হে অব তেজহ মান।
চরণে লাগি তোহে সাধরে কান।।
চঞ্চল নয়ন থঞ্জন জোর।
ভাঙ্গ-ভুজঙ্গম রাহ আগোর।।
কি কল মোহে এতহুঁ রোষ।
জগতে বিদিত দাসক দোষ।।
বচন-অমিয় বিহু যে নাহি জীয়ে।
মান-কুলিশ দরশায়িদ কিয়ে।।
গোবিন্দদাস চিতে এই আশ।
তেজন করয়ে মান অভিলাষ।।৮।।৫৮১।।
বিজ্ঞান করয়ে মান অভিলাষ।।৮।।৫৮১।।

#### তথা রাগ

বহুক্ৰ পদত্ৰে যব বছু কান।
স্থীগৰ কৃষ্টতে ভাৰল মান।।
স্তু ক্ষন গ্ৰাম গোচন লোৱ।
কাম জানি তব ক্ষণতি কোৱ।

কত কত প্রেম কয়ল পুন নাহ।
তই সন্ধারণ রস-নির্বাহ।।
রাধামোহন পহঁ গোপত যো কারী।
সো স্থ কো জন কহইতে পারি।।৯।।৫৮২।।

#### ধানশী :

গুলু মুথ দরশনে গুলু ভেল ভোর।
গুলু ক নারনে বহে আনন্দ-লোর।।
গুলু তারু পুলকিত গদ গদ ভাষ।
ক্রীমনবলোকনে লছ লছ হাস।।
অপরূপ রাধামাধব রঙ্গ।
মান বিরামে ভেল এক সঙ্গ।
ললিতা বিশাখা আদি যত স্থীগণ।
আনন্দে মগন ভেল দেখি গুলু জন।।
নিকুঞ্জের মাঝে গুলু কেলি-বিলাস।
দূরহি দূরে রহু নরোভ্য দাস।। ১০॥ ৫৮৩।।

#### তথা রাগ

নিমগন তৃহঁ জন রতি-রণ রজে।
থির দামিনী নব জলধর সজে।।
কুসুম শেজোপর রাধা কান।
তৃহঁ মন পেশক মনসিজ জান।।
ঘন ঘন চুম্ই চকিত নয়ান।
কুচ-যুগ পর ধ্রতর নথ হান।।

কুঞ্জহি ছত জন করু বহু কেবি।
জানদাস চিতে আনন্দ ভেবি॥ ১১ ॥ ৫৮৪।
এতানি গীতানি রাজো গেরানি।
ইতি একবিংশ-পল্লবঃ
ইতি বজ্বিধো মানঃ সহেতুঃ সম্পূর্ণঃ।
অর্থ নির্হেতু-মানঃ।
তত্ত কারণাভাবঃ প্রতিবিদ্ধ-দুর্হৌ যুপা।

তহচিত-শ্রীমহাপ্রভ:।

বরাড়ী।

অপরপ গৌরাকের লীলা।
অরধুনী সিনানে চলিলা ॥
রাধিকার ভাব হৈল মনে।
অন চাহে কাল জল পানে ॥
নিজ প্রতিবিধ দেখি জলে।
কোপিত অন্তরে কিছু বলে ॥
টীট নাগর স্থাম রায়।
আন জন সহিত ধেলার ॥
কোপ করি চলে নিজ বাদে।
কহে কিছু হররাম দানে ॥ ১ ॥ ৫৮৫ ॥

ভূপালী ৷

রসবতী দাই রসিক-বর সাম। আম-তমু মুকুরে হেরই অফুপাম॥ নিজ প্রতিবিশ্ব শ্রাম-অঙ্গে হেরি।
বাথে কহত ধনী আনন ফেরি ॥
নাগর এত কিয়ে চঞ্চল ভেলি।
হামারি সমুখে করু আন সঞ্জে কেলি।
এত কহি রাই করল তহি মান।
আন ঠামে চললি উপেথিয়া কান।
সহচরীগণ তবে কতয়ে বুঝায়।
উদ্ধর দাস মিনতি করু পায়॥২॥ ৫৮৬॥
শ্রীবাগ।

श्रमति कानन जुगा मृत कान। হরি নিজ মুকুরে হেরি নিজ ছাহকি তাহে দৌতিনী করি মান॥ জ॥ কুসুম-শরে জর জর কানন কঞ্জে বয়ান হেরি পুন ভোরি। ভাগ্যে মিলল পুন তোরে কমল-মুখি রোবে চললি মুথ মোড়ি॥ কত কত মুগধী যৈছে ভেল বঞ্চিত হরি পুন তাহে না লাগি। তুহু পুণবতী ভোহে যোহি মানাওত কি কহব তোহারি সোহাগি। তো বিস্থ শুক্তর শীক্তন ভূতবে ত্বসূত্র বিরহ হতাশে। ভুৱা কর পর্শ সরস বিনি ঝায়ত **्ञार्ड कर शांक्तिल नारम** ॥ २ ॥ ४৮९ ॥

#### ধানশী ৷

যাহা স্থীগণ সব রাই ব্রায়ত
তুরিতে আওল তাহা কান।
হেরইতে ক্মণ- ব্রনী ধনী মানিনী
অবনত করল ব্যান ॥

হেরইতে নাগর গদ গদ অস্তর মন মাহা ভেল বহু ভীতে। গলে পীতাম্বর চরণ-বুগল ধর কহুতহি গদ গদ চিতে॥

সুক্রি মিছাই করহ মুঝে মান। নিরহেতু হেতু প্রতিবিধ তেরি কহ আন। এ ॥

ভূয়া বিলে নয়নে আন নাহি হেরিয়ে আন সঞে না করিয়ে বাত। ভোহারি স্থিনী বিলে বাত না পুছিয়ে না ব্যিয়ে কাহঁক সাথ।

তব তুহঁ কাঁহে মান মুঝে করতহি না বৃথিয়ে তুরা মন কাজে। উদ্ধবদাস মিনতি করি কহতহি হেরহ নাগর-রাজে॥ ৪ ॥ ৫৮৮ ॥

#### তথা রাগ

নিজ প্রতিবিশ্ব বাই যব শুনল

অবনত করু মুখ লাজে।

নিরহেতু হেতু জানি হাম রোখলু

তেজলু নাগর-রাজে।

এত কহি রাই চীরে মুধ ঝাঁপল

বয়ান না নিকসয়ে বাণী।

বসিক শিরোমণি কোরে আগরণ

বাইক অন্তব জানি ॥

অপরপ প্রেমক রীত।

স্বহু স্থীগ্ৰ চিত-পুত্ৰী যেন

হেরত চত ক চরিত॥ এল।

পুন সবে হাসি মন্দির সঞ্জে নিকসল

গুলু জন ভেল এক ঠাম।

মদল-মতে দিধি- নিমগ্ন ছভ জন

উদ্ধব দাস অধ গান। ৫॥ ৫৮৯॥

#### সুহই।

निकुक मिन्दित त्रारे थादिनिना त्रस्त्र । আপন বরণ দেখে খামক অঙ্গে। आन इस्मी कहि निवायर मिठे ফিরিয়া চলিলা ধনী শ্রাম করি পীঠ। আকুল গোকুলচাদ পদারিয়া বাছ। अंतरमत है। ए त्यन अंतामत्य तीह ॥

দরশে বিরস কেনে শুন বিনোদিনি। শ্রাম অক কড কোটি দরপণ জিমি ॥ ৬॥ ৫৯০॥

ভিৱোতা সিন্ধুড়া।

মরকত-দরপণ শ্রাম হনর মাহ আমাপন মূরতি দেখি রাই।

শুক্রা কোপে অধ্য খন কাঁপই অক্ল মরান ভৈ বাই॥

দেখ দেখ কাফুক রঙ্গ

আননহি রমণী হৃদয়ে করি বঞ্চ উভন না দেখিরে চঙ্গা

যত অহুমানি বিমুধ ভৈ বৈঠই কান্তু সে পড়বহু ধনা। র

কাঁহে কমল-মূখি মোহে উপেখিসি

ভুহু° হাম নহ কিছু খন্দ।
কত পরকারে মিনতি করু মাধ্ব

তব ধনী উত্তর না দেশ।

দ্র দ্র ক্দর

यनकर्भ कर कर एस ।

চরণ-কমল করে পর্মশি মাথে ধক সরুস পর্মশ অভিজ্ঞাব।

তুৱা বিশ্ব সাতি দিবদ নাহি জানত কহতটি বোমক বাদণা গাঁৱ ইন্স ॥

#### সুহই

ভান ধনি কহ ভুষা কাণে।
জনি করু অরুণ নরানে।
হরি হির অধিক উজোর:
জনি মণিমর যে মুকুর ॥
কান্ধ কোরে নহে নারী।
প্রতিবিদ্ধ ভোল তোহারি॥
ইথে যদি ভূহাঁ করু আনে
স্বল্ল ইস্ব ভুষা মানে॥
উছ্ল কভিহাঁ না দেখি।
অবিচারে নাহ উপেথি॥
পোব দেখি না দ্বহ ভাই।
পোবিন্দাস বলি যাই। ৮॥ ৫ নং॥।

#### তথা রাগ।

এ ধনি এ ধনি বচন শুন।
মাধব মিলরে বহত পুণ।
এত পরিহার কররে যে।
ভাহারে ফুলরি বঞ্জে কে।
দোষ নাহি কিছু নয়ানে চাহ।
আপুন সরস পরশ দেহ।
হাসিরা ফুলরী চাহল ফিরি।
ও কর-কমল ধরল হরি।

ছহ<sup>°</sup>ক প্রল মনের আশ। বীজই বীজন চৈত্তলাস॥ ৯॥ ৫৯৩॥

(कमात्र।

বড় অপরপ আদ্ধি পেথলু হাম।

কি লাগিরা ভূহঁ করল মান॥

বিবরি কহিবে সন্ধানি হে।

এ কথা শুনিলে আউলার দে।।

অতি অদভূত কোথা না শুনি।

নাগরী উপরে নাগর মানি॥

এই অপরপ কোথার না দেখি।

হেন প্রেম ভূহুই শেখর সাধী।। ১০।। ৫১৪॥

श्नक निर्नाख ।

নট রাগ

রাধা মাধব সহচরী সাথ।
কত কত উপজরে রসমর বাত।
না জানিরে প্রেম-কলহ কিরে ভেল।
নিজ প্রতিবিদ্ব ভানে ছহঁ গেল।।
চিত-প্তলী সম সহচরী পারি।
কি কহব বচন কহই না পারি।
হহঁ জন ভেল অকারণ মান।
এক দিশে স্থল্যী আর দিশে কান।
বন মাহা ছহঁ পরবেশল বাই।
এক তদ্বর দুলে বৈঠলি রাই।।

একলি রোমত অবনত শির।
ঝর ঝর নয়নে গলমে ঘন নীর।।
অমি অমি মাধব আওল তাহি।
হেরত তরু-মূলে রোমত রাই ॥
কামুক নয়নে ঝরমে তব লোর।
ধীরে ধীরে যাই রাই করু কোর॥
কহ গোপীকান্ত দাস কিয়ে তেলি।
আন্তুত গুতুঁক প্রোমনস্বন্কলি॥ ১১।। ১৯৫॥

### বিহাগড়া।

চুড়রে সকল সধীগণ মেলি।

থাঁহা ছহঁ রোয়ত তাঁহা চলি পেলি।।

হেরল হহঁ জন রহ এক ঠাম।

রোয়ত স্থানী কোরহি শ্রাম।।

কহ গদ গদ তব নাগর কান।

কাঁহে তুহঁ রোয়দি কাঁহে কর মান।।

মোছই বদন আপন-পীতবাদে।

দ্রহি সহচরীগণ হেরি হাসে।।

সধীগণ মুথ যব হেরল রাই।

লাঞ্ছি অবনত কাফু মুথ চাই।।

উঠি চলল হহঁ সধী-মুথ দেখি।

ভুরিতহঁ মিলল হহঁ পরতেকি।।

ৰাজহি হুহু<sup>\*</sup> কিছু না কহরে ভাষ। কহে গোপীকান্ত পুরল মন আশ ॥১২॥৫৯৬॥

ততঃ সম্ভোগ-পদানি জ্ঞেয়ানি।
ইতি দাবিংশতি-পলনঃ।।

শহেরিব গতিঃ প্রেমঃ স্বভাবকুটিলা ভবেং।
ততে।হেতোরহেতোশ্চ যুনোমান উদ্গতি॥
সহেভঃ যড় বিধোমানোনিহে তির্বিধামতঃ।

অপাকারণ-মানঃ।।

কারণাভাসত চাপি পুন চাকারণাত্ত: ।। ইতি।

তিরোতা ভূপালী i

রসবতী রাধা রসময় কান।
কো জানে কাঁহে করল ছুলু মান।।
ছুলুঁ অতি রোধে বিমুখ হুই বৈঠ।
ছুলুঁ বুলাবন-বন মাহাইপৈঠ।।
কি কহব রে স্থি কহইতে হাস।
কিরে কিরে অন্তত ছুলুঁক বিলাস।।
লোচন লোরে ভরি ছুলুঁ পছ।
পাওল ভিমির নিজ্ঞক অন্ত।।
ছুলুঁ হুই। পুছুইতে ছুলুঁ মতি বাম।
ছুলুঁ কুলুলি নিজ সহচরী নাম॥
ভর্বে কহত মরমক বোল।
সহচরী বোধে ছুলুঁ ছুলুঁ কর্ম কোর॥।

ষ্ব হুহুঁমেলি আলিঙ্গন দেবা। গোবিন্দ দাস কৃহত কিয়ে ভেল॥১।৫৯৭।

সুহই |

লাজ-সায়রে হুহুঁ নিগমন ভেল।
হেরইতে সবহুঁ স্থা চলি গেল॥
নিবিজ তিমিরে হুহুঁ লুকায়ল যাই।
নিয়জে স্থাগণ হেরত তাই ॥
যাহা বাহা লুকায়ল রাধা প্রাম।
কৈত কত চাঁল উদর সোই ঠাম॥
কৈছে লুকায়ল লাজে ভেল ভীত।
স্থাগণ হেরত হুহুঁক চরিত॥
মব হুহুঁ নিয়জে স্থাগণ গেল।
বদন চাঁদ তব অবনত কেল॥
হাসি হাসি সহচরী হুহুঁ আগোর।
লেয়ল নিভ্ত নিকুঞ্জক ওর॥
কত কত কোতুক কেলি-বিলাস।
মোহন নির্থই স্হচরী হাস।। ২। ৫৯৮।।
ইত্যনস্তর্গ স্বাণিপদানি জ্ঞেরানি।

পুনশ্চ।

কামোদ।

রাখা মাধব

রতনহি মন্দিরে

निवमहे भवन ऋरथ।

রসে রসে দক্ষেণ

ৰন্দ উপজায়ন

কান্ত চলতহি রোখে।।

নাগর-অঞ্চল করে ধনি নাগরী হাসি মিনতি করু আগা। নাগর হৃদরে পাঁচ-শর হানল উরজ দরশি মন বাধা।।

দেশ সথি ঝুটক মান। কারণ কছু ছহঁ বুঝই নাহি পারিয়ে তব কাঁহে রোথল কান।। ধা।।

রোধ সমাপি পুন বহি পসারল তাহি মারত পাঁচ-বাণ। অবসর জানি মানবতী রাধা বিভাপতি ইহ ভাগ।। ৩। ৫৯৯।। ইতি মিধ্যামানঃ।

পুনশ্চ ।

কেদার।

ইছ মধু যামিনী মাহ। কাঁহে লাগি মান- দহনে তহু দহি দহি ছহঁ মুধ ছহঁ নাহি চাহ।। এছ।।

উহ সূপুক্ধ বর বিদগধ-শেধর এ অবিচল কুল-বালা। বিহি যো না জানল সদন ঘটারল জমু জলধরে বিধু-দালা॥ চাঁদ উদরে কিরে কুমুদিনী মুদিত
চাঁদনী বিমুথ চকোর।

ঐছন বামিনী কবহুঁ না পেথিরে
কিরে বিধি মতি ভোর॥
ছহুঁ তহু পর্শ ক্ষণেক পরশহি
অলধরে দামিনী-মালা।
ঐছন কামিনী সো স্পরুথ-বর
ছহুঁক ছলহু নব বালা॥
সহচরী বচন শুনিয়া ছহুঁ হর্ষিত
ছহুঁ মুথ হেরি ছহুঁ হাস।
ছবহুঁক অন্ত পূর্ল মনোর্থ
গোবিন্দ্দাস পরকাশ॥ ৪॥ ৬০০।
প্রশ্চ।

তথা রাগ

কিসের লাগিয়া রাই হইলা মানিনী।
ভাগ্যে মিলল যাহে মধুর যামিনী।
ভাগ্যে মিলরে হেন রদময় কাস্ত।
তোহে বিমুথ বিধি বুঝল নিভাস্ত।
অকারণ মানে খোয়াবি নিজ দেহ।
ঐছে কুমতি দরশায়ল কেহ।
ইছন সহচরা শুনইতে বাত।
স্থবদনী হাসি ঢুলাগত মাধ।
কো মানিনী কাঁহে সাধসি এহ।
কিমে প্রলাপসি না বুঝিয়ে খেহ।

নাগর কহ সথি কি কহসি বাণী।
কাঁহে ভূহুঁ ইহা মানিনী অন্ত্মানি॥
ভানি সহচরী সব হাসি উতরোল।
সো সথী অবনত কছু নাহি বোল॥
বিকসই হুহুঁ তবে বিবিধ বিলাস।
দূরহি নেহারই বল্লভ দাস॥৫।৬০১॥

मिनांद्य ।

কেদার দেখ বাধা-মাধ্ব-বঙ্গ তমু তমু হুই জন নিবিড় আলিখন আর্তির্ভদ-তর্ক। কিয়ে অহুভাব কলহ হুহু উপজল स्नती यानिनी (छन । এছন **প্রেম**- আরতি বিছুরাইয়া কো বিধি এত তথ দেব। मानिनी बहन क्वांडन যাহা নিজ স্থিনী সমাজ। অকৃহি অক্ব- সক্স-মুখ-ভঙ্গহি জর জর নাগর-রাজ। রাইক বদন মলিন হেরি সহচরী সচকিত লোচন হোই। কহ বিপরীত ত্রীত কাহে হেরিরে

ইছ স্থুপ ভাঙ্গণ কোই॥

অবনত আনন করি ধনী বৈঠল তব সধী ব্ঝল মান।

কহ যছনাথ- দাস তহিঁ কর ষোড়ি

मम्बर्धे व्याउन कान ॥ ७॥ ७०२ ॥ स्वर्धे ।

४२२ । प्रशी-উकिता

কোরে রহি তু ছহঁ মানহ দূর। ভিন ভিন অব হুহুঁ হুহুঁ মন ঝুর ৷ না বুঝিয়ে দারুণ প্রেম-তরঙ্গ। করইতে আন আন ভেল রঙ্গ ॥ স্থলরি ঐছন সো করু মান। পর-বেদন হিয়ে যো নাহি জান। তৃয়া লাগি যো হরি করত ধেয়ান। সো হথে তৃহঁ ধনী ভেল অগেয়ান। ধবণী বিলম্বিত বিবস বয়ান। কাঁহে বাঢ়ায়সি অকারণ মান॥ শ্রাম-কলেবর ধলিক সাথ। ম্বিন বদন ভেল হবরি গাত ৷ कमन-नम्राटन नीत चन चन भनहै। ভোহার কমল দিঠি নিঝরই ঝরই ॥ দো তমু ছট ফট মদনহি বাণে। তোহারি মরম ছথ মরমহি জানে॥ অক্ল-নয়নী বৈঠল পিয়া পাশ্ব **চরণে লাগি কছ গোবিক্লাস ॥ १ ।। ७०० ॥** 

# শ্রীকৃষ্ণস্থোক্তি:।

## कुड़ी।

রূপে শুণে যৌবনে ভূবন অরুপাম।
স্থপনে জপন মোর ভোহারি ও নাম।।
শুন বিনোদিনি রুসমন্ত্রি ধনি রাধা।
কবহুঁ করহ জনি ইহু রুস্-বাধা।। গুণ।
আঙ্কুল আগ পরশ যব পাই।
স্থাধর সায়রে রহি ওর না যাই॥
লোচন-ইঞ্চিত করু মোহে দান।
জ্ঞানদাস কহু অকারণ মান॥ ৮।। ৬০৪।।

## धाननी।

হাসি হাসি সহচরী যবহ জানাওল

হহ ভূমা নিরহেত্ মান।
তব ধনী লাজে অধিক মুথ অবনত
বুঝল রসিক বর-কান।।

যথীগণ ইন্দিতে রসিক-মুকুটমণি
কোরে আগোরল রাই।
আনন্দে ভূহ জন পুন ভেল নিমগন
ব কৌভুক ওর না পাই।।
ইহ আনভূত হহ বন্ধ।
উছন কতিই মা হেরিরে ভূবনে
ভন্তিতে লাগরে ধন্দা। দে।।

হহঁ হহঁ সরস

হহঁ হহঁ অধিক উল্লাস।

নিকটিহি চামর

করে করি হেরত

উহি রাধামোহন দাস।। ৯।। ৬০৫।।

ইতি অকারণ-মানঃ সম্পূর্ণ:।

ইতি বিভীয়-শাধায়াং এয়োবিংশতি-পল্লবঃ।।

সংকীর্ণ-সম্ভোগন্ত রুসোদ্গারঃ।।

#### কামোদ।

মান-দহনে মোর তমু ভেল জর জর শুতল মন্দির মাঝ। কামু নিয়ড়ে আসি চরণ সম্বাহই ঐছন বিদগধ-রাজ।। সোকর কিশলয়- পরশে তত্ত্ আকুল স্থী বলি করিত্ব সম্ভোষ। বাহু পদারি আলদি মুখ চুম্বই পুন মুখ হেরি লহু হাস।। সজনি কি কহব তাকর কাজ। ষে ছিল মনোরথ কয়লহি অভিমত कश्रेट नाहि त्रह नाज ॥ आ। ঐছে রসিক সঞে যোধনি রোধয়ে কৈছন তাকর চিত। হাম পুন তা সঞে কবহঁনা রোধব দলপতি কহ সমূচিত।। ১।। ৬০৬।।

## प्रकृति । **प्रकृति ।** प्रकृति ।

শুন সাঙ্গাতিনি নাগর-চতুর-পণা। বিনহি সাধনে ভালিলে কানাই মানিনীর মান-পণা॥

মুখের শিকার করিতে আছিত্ ু মুকুর লইরা মুঠে ৷ টীট কানাঞি অঙ্গ নিরথয়ে দাড়াঞা আমার পিঠে।

চিকণ কালিয়া আধেক দেখিত্ব আধ মুকুরের পাশে। গীম মোড়া দিয়া . ফিরিয়া চাহিতে **पूर्व** निया निया शास्त्र ॥ २ ॥ ५० १ ॥

## ্রতথা রাগ।

সজনি কি কহৰ কৌতুক ওর। ্বলখিতে হাত হাত মোর সরবস মান-রতন গেও চোর ॥ ঞ ॥

अवने वंशान यवह हा देवर्ज् বিগশিত কুন্তল-ভার। উর অধুর সরি গাঁধিরে মোতিম-হার॥

লহ লহ পদ করি নৃপুর পরিহরি
কৈছে আওল সেই টীট।
শার শপথি দেই স্থীগণে নিষেধই
লুকি রহল মঝু পিঠ॥

স্থামদ চন্দনে মন চঞ্চল ভেল হেরইতে বৃদ্ধিম গীম। চিবুক চিকুরে ধরি মুখ সমূখে করি চুম্বরে বয়নক সীম॥

ঘন ঘন চুম্বন দৃ চ পরিরম্ভন রহল হিয়ে হিয়ে লাগি। কবিশেথর কহ মদন শুতি রহ চমকি উঠয়ে জরু জাগি॥ ৩॥ ৬০৮॥

#### ধানশী।

শ্রাম-তমু কিয়ে তিমির বিরাজ।
সিন্দুর-6 ফ কিয়ে আরকত সাজ॥
তরল তার কিয়ে টুটল হার।
নথ-পদ কিয়ে নব শশীক সঞ্চার॥
ঐছে দোষাকর হেরইতে কান।
প্রাতরে পহিল রজনী ভেল ভান॥
পুর অমুমানিতে হাম ভেল ভোর।
টীট কানাঞি করল মোহে কোর॥

তবহুঁ যতন করি করইতে মান।
হাস-কুমুদে তহি সব করু আন॥
মানিনী-মান-গরব ভেল চুর।
নাগর আপন মনোরথ পুর॥
তবহুঁ না জানল দিন কিরে রাতি।
গোবিন্দদাস কহ সমুচিত শাতি॥৪॥৬০১।

## ভূপালী |

আছিত্ব হাম অতি মানিনী হোই। ভাঙ্গল নাগর নাগরী হোই ॥ কি কহব রে স্থি আজুক রঙ্গ। কামু আওল তহিঁ দোতীক সঙ্গ ॥ জ ॥ বেণী বানাইয়া চাঁচর কেশ। নাগর শেথর নাগরী-বেশ n পহিরলি হার উরজ করি উরে। চরণহি নেয়ল রতন-নূপুরে॥ পহিলহি চলইতে বামপদাঘাত। নাচত রতিপতি ফুলখমু হাত॥ হেরি হাম সচকিত আদর কেল। অবনত হেরি কোর পর নেল ৷ সো তমু সরস পরশ যব ভেল। মানক গ্ৰৰ বসাত্ৰ গোল ॥ নালা পরশি রহল হাম ধন্র। বিস্থাপতি কহে ভাৰৰ হল ॥ ৫

## जुशाली।

বড়ই চতুর মোর কান।
সাধন বিনহি ভাঙ্গল মঝু মান॥
বোগি-বেশ ধরি আওল আজ।
কো ইহ সমঝুব অপরূপ কাজ॥
শাস বচনে হাম ভিথ লই গেল।
মঝু মুথ হেরইতে গদ গদ ভেল॥
কহ তব্ মান-রতন দেহ মোর।
সমুঝল তব হাম স্থকপট সোর॥
বো কিছু কয়ল তব কহইতে লাজ।
কোই না জানল নাগর-রাজ॥
বিভাপতি কহ স্থানির রাই।
কিয়ে তুহুঁ সমুঝবি সো চতুরাই॥ ৬॥ ৬১১॥
ইত্যাদি সংকীণ-সম্ভোগন্ত র্যোদগারঃ।

#### তত্র মিলনং।

শক্ষরাভরণ বা ধানশী।
চলিল নিতম্বিনী যমুনা সিনানে।
সন্ধিনী রন্ধিণী গল গতি-ভানে॥
তৈল হলদি কোই আমলকী নেল।
স্থাবন মট লাই কোই চলি গেল॥
জানি নাগরবর চলু ধীরে ধীরে।
আগুসরি আগুল কালিন্দীর তীরে॥

একলি কাছ খেলই জল মাহি।
সহচরী মেলি ধনী মিলল তাহি॥
আন জন কোই নাহি তব্ সাথ।
নাগর হেরি চুলায়ত মাথ॥
কাহঁক জল দেই কাহঁক পদ।
কাহঁক চুম্বই ধাই নিশক।
হেরি সব সহচরী চমকিত ভেল।
ঝটিতহিঁ ধাই রাই লই গেল।
ক্ঠ-মগন জলে ছহঁ এক ঠাম।
প্রল ছহঁক মনোরথ কাম॥
কহ কবিশেধর সহচরী পাশ।
হোর দেখ রাধা কাফু বিলাস॥ ৭॥ ৬১২॥

## তথা রাগ।

ত্রিতহি হৃদরী কাহক পরিহরি আওল সহচরী মাঝ। লাজহি বদন- কমল নাহি তোলয়ে দ্রহি হেরয়ে রসরাজ।

সহচরী নিরছে মিললপুন মাধব হৈরি সবে চমকিত ভেল। কাহঁকে চুম্বট কাঁচুলী ফারই কত কত ভাতি বিলসি তকু মাধব
ুত্রিতে চলল নিজ গেহ।
ি মাপি তীরে উঠি স্বদনী
মোছল আপন দেহ।

নিজ নিজ মন্দিরে আওল স্থীগণ কত কত কোতুক রঙ্গে। চরণ পাথালই শেথর স্হচ্রী

আপন গণ লেই সঙ্গে॥৮॥৬১৩॥

## অথ প্রার্থনা।

জয় রে জয় রে মোর গৌরাঙ্গ স্থন্দর জয় নিত্যানন্দ রায়। জয় সীতানাথ গৌর ভকতগণ সবে দেহ পদ-ছায়॥

জর জয় মোর আচার্য্য ঠাকুর অন্তঃ-পতিত-গ**ি**। করুণা করিয়া স্বচরণে রাধ

এ মোর পাপিষ্ঠ মতি॥

তোমার চরণে ভরসা কেবল না দেখি আর উপায়। মোর হুই মনে রাথ শ্রীচরণে এই মাগো ভুয়া ঠায়॥

## a anne e i

মনে মনোরথ
সকল জানহ তুমি।
পূর সব আশ
কি আর কহিব আমি॥

ইতি সংকীর্ণ-সম্ভোগন্ত রসোদগার:। দ্বিতীয়-শাথায়াং চতুর্ব্বিংশতি-পল্লবঃ।

ইতি পদ-কল্পতরু-গ্রন্থে দিতীয়-শাখা সম্পূর্ণ।॥

